Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हिन्दी का सामान्य ज्ञान

डा० हरदेव बाहरी

S
7
-H

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों को
हिन्दी भाषा का पूरा ज्ञान कराने के लिए
अत्यन्त उपयोगी तथा व्यावहारिक पाठ्य पुस्तक

हिन्दी का सामान्य ज्ञान

भाग १

डा. हरदेव बाहरी
इलाहाबाद विश्वविद्यालय

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हिन्दी का सामान्य-ज्ञान भाग १

- आम लोगों को शिकायत है कि हिन्दी का विद्यार्थी, साहित्य तो पढ़ता है और कई वर्ष पढ़ता है, किन्तु भाषा पर कभी ध्यान नहीं देता। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने अनुभव किया है कि भाषा की शिक्षा इतनी उपेक्षित है कि विद्यार्थियों की अभिव्यक्ति प्राय: दोषपूर्ण होती है। लोक-सेवा-आयोगों को शिकायत है कि भाषा में दक्षता न होने के कारण प्रत्येक विषय में विद्यार्थियों का स्तर गिरता जा रहा है। बी० ए०, एम० ए०, बी० कॉम०, एम० कॉम० तक सभी विषयों की शिक्षा और परीक्षा का माध्यम हिन्दी है, किन्तु बहुधा छात्र-छात्राओं को हिन्दी नहीं आती।
- यह सन्तोष का विषय है कि कुछ विश्वविद्यालयों ने स्नातक कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए सामान्य हिन्दी अनिवार्य कर दी है। हिन्दी के विकास की दिशा में यह शुभ लक्षण है।
- यह पुस्तक सब तरह के विद्यार्थियों, अध्यापकों तथा हिन्दी भाषा सीखनेवालों के लिए उपादेय होगी।

(शेष दूसरे फ्लैप पर देखें)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

185498

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हिन्दी का सामान्य ज्ञान

भाग १

डॉ० हरदेव बाहरी

Central Library
185498
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

लोकभारती प्रकाशन
१५-ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद-१

097
185498
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

RPS
097
ARY-H

लोकभारती प्रकाशन
१५ए, महात्मा गांधी मार्ग
इलाहाबाद-१
के द्वारा प्रकाशित

●

प्रथम संस्करण
नवम्बर, १९७१

●

कापीराइट
डॉ० हरदेव बाहरी

●

सम्मेलन मुद्रणालय
इलाहाबाद
द्वारा मुद्रित

विद्यार्थी संस्करण
मूल्य : ६. ००

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दो शब्द

बड़े हर्ष की बात है कि सामान्य पढ़ा-लिखा आदमी आज भाषा के महत्त्व को समझने लगा है। पहले तो हिन्दी प्रदेश के लोग समझते थे कि हिन्दी तो हमारी मातृभाषा है; भला हमें क्या कठिनाई है! किन्तु अब यह माना जाने लगा है कि हिन्दी अपने वर्तमान रूप में किसी को भी घुट्टी में नहीं मिलती : यह तो सीखने से आती है। दक्षिण, पूर्व और पश्चिम के विद्यार्थी, अपने अध्यवसाय के कारण हिन्दी प्रदेश के विद्यार्थियों को मात करने लगे हैं। कुछ समय से उत्तरी भारत में भी भाषा को सावधानी से सीखने का चाव दिखाई देने लगा है। विद्यालयों और विश्वविद्यालयों के अध्यापक और विद्यार्थी अपनी हिन्दी को सुदृढ़, पुष्ट और शुद्ध एवं परिपक्व बनाने की चिन्ता कर रहे हैं। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने भी अनुभव किया है कि भाषा की शिक्षा पर कम ध्यान दिया जाता है जिससे विद्यार्थियों की अभिव्यक्ति अत्यन्त दोषपूर्ण होती है। लोक सेवा आयोगों को शिकायत है कि भाषा में दक्षता न होने के कारण प्रत्येक विषय में विद्यार्थियों का स्तर गिरता जा रहा है। बी० ए०, एम० ए० तक कला, विज्ञान, वाणिज्य आदि अनेक विषयों की शिक्षा और परीक्षा का माध्यम हिन्दी हो गयी है, किन्तु बहुधा छात्र-छात्राओं को हिन्दी नहीं आती। अतः कई विश्वविद्यालयों में स्नातक-कक्षाओं के परीक्षार्थियों के लिए सामान्य हिन्दी अनिवार्य कर दी गयी है। हिन्दी के विकास की दिशा में ये सब शुभ लक्षण हैं।

यह पुस्तक सब तरह के विद्यार्थियों, अध्यापकों तथा हिन्दी भाषा सीखने वालों के लिए उपादेय होगी। इसमें हमने उच्चारण, शब्द-भण्डार, शब्द-निर्माण, प्रयोग, व्याकरण, वाक्य-रचना आदि सभी भाषागत तत्त्वों पर बहुत गहराई से विचार किया है। उदाहरण और सूचियाँ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तैयार करने में हमने हिन्दी के बड़े-बड़े शब्दकोशों और अच्छे-से-अच्छे व्याकरण-ग्रंथों का अवगाहन कर डाला है, और सब उपयोगी सामग्री को यथास्थान सँजोकर सुलभ और सुबोध प्रणालियों में ढाल दिया है।

हिन्दी भाषा का ज्ञान करानेवाली बीसियों पुस्तकें हैं, किन्तु मेरा दावा है कि इतनी भरपूर सामग्री उन सब का संग्रह कर लेने पर भी प्राप्त न हो सकेगी।

मुझे विश्वास है कि सभी स्तरों के हिन्दी पाठक और विशेषतया विश्वविद्यालयों के विद्यार्थी इसे उपयोगी पायँगे और मेरे परिश्रम से लाभ उठायँगे।

यह इस पुस्तक का पहला भाग है। दूसरे भाग में हिन्दी की उच्चतर शब्द-सामर्थ्य और विविध रचना-शैलियों का विवरण प्रस्तुत किया जायगा।

१०, दरभंगा कोठी, —**हरदेव बाहरी**

इलाहाबाद

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

डॉ० राम स्वरूप आर्य, बिजनौर
की स्मृति में सादर भेंट-
हरप्यारी देवी, चन्द्रप्रकाश आर्य
संतोष कुमारी, रवि प्रकाश आर्य

विषय-सूची

१. भाषा और हिन्दी भाषा पृ० १-५४

२. उच्चारण और वर्तनी पृ० ५५-८२

३. शब्द-भंडार पृ० ८३-१३९

४. शब्द-रचना या शब्द-निर्माण पृ० १४१-१८८

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१
भाषा और हिन्दी भाषा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भाषा और हिन्दी भाषा

(क) भाषा किसे कहते हैं ?

विस्तृत अर्थ—'भाषा' शब्द का प्रयोग कई प्रसंगों में होता है। कवियों ने जड़ पदार्थों में भी इसकी कल्पना की है।

'एक तारा टूटकर क्या कह गया।'

यही कह गया कि सब कुछ नश्वर है, सबको यहाँ से चला जाना है। किन्तु तारा तो कुछ बोला नहीं। कवि वास्तव में कहना चाहता है कि एक तारा टूटकर मानों कुछ कह गया। सारी कल्पना कवि की अपनी है। वह तो 'गंगा की लहरों की भाषा' भी समझता जान पड़ता है। किन्तु कोई पूछे कि उस भाषा के शब्द क्या हैं, वाक्य क्या हैं, क्या उसे ग्रामोफोन-रिकार्ड में भरा जा सकता है, क्या उस भाषा को हम भी बोल सकते हैं ? नहीं।

कहते हैं, भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है। किन्तु अभिव्यक्ति के बीसियों माध्यम हो सकते हैं। रेलवे गार्ड लाल-हरी झंडियों से अपनी इच्छा प्रकट करता है; बसवाला सीटी से, सड़क पर खड़ा हुआ मुसाफिर हाथ के संकेत से, मास्टर डंडा दिखाकर, एवं पुत्र की गलती पर रोषयुक्त पिता माथे पर बल लाकर अपना भाव व्यक्त कर लेता है। कवि रत्नाकर की नायिका आँखों-आँखों और हिचकियों-हिचकियों में बहुत कुछ कह जाती है—

नैकु कही बैननि अनेक कही सैननि औ
रही-सही सोऊ कहि दीनी हिचकीनि सौं ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha
एक आधुनिक कवि के मन के सारे उद्‌गार नयनों में आ जाते हैं और वे कहते हैं—

मेरे नयनों की भाषा तुम पढ़ ही लोगे।

यह तो 'मूक भाषा' है, अव्यक्त और इन्द्रियातीत। ये संकेत हैं, और इन संकेतों को भाषा नहीं कहा जा सकता है, क्योंकि इनमें ध्वनि नहीं है। इन संकेतों की सीमाएँ निश्चित हैं। इनसे सभी तरह के भावों और विचारों की अभिव्यक्ति संभव नहीं है, क्योंकि भाव और विचार अनन्त हैं।

पहाड़ पर लोग गोले छुटाकर दूसरों को किसी आनेवाले भय से सावधान कर देते हैं। दरवाजा खटखटाकर हम उसे खुलवाना चाहते हैं। भोंपू से हमें ख़तरे की सूचना मिलती है। मोटर-कारवाला हार्न बजाकर लोगों को सड़क के एक किनारे हो जाने को 'कहता' है। इन सबमें ध्वनि तो है, लेकिन ये भी संकेत हैं, इन्हें 'भाषा' नहीं कह सकते। भाषा बोलने की चीज है और वह किसी प्राणी के मुख से निकली हुई ध्वनि से बनती है।

क्या पशुओं और पक्षियों की वाणी को भाषा की संज्ञा दी जा सकती है?

विहंगों की भाषा में छिपा
न जाने किस निरुपम का भेद।

ये कवि तो पक्षी की भाषा को नहीं समझ पाये, लेकिन लोककथाओं में आता है कि कोई राजमन्त्री पेड़ों की भाषा जानता था, कोई राजकुमार पक्षियों की भाषा समझता था। गाँव का किसान गाय और बछड़े की भाषा का अर्थ समझता है। कुत्ते पालनेवाले कुत्ते की 'भाषा' से जान जाते हैं कि उसे भूख लगी है या कोई ग़ैर आदमी बाहर से आया है।

किन्तु भाषाविज्ञानी नहीं मानता। वह पशु-पक्षियों की वाणी को 'भाषा' नहीं कहता। पशु-पक्षियों की ध्वनियों से शब्द और वाक्य

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha
नहीं बनते। मानव समाज में ऐसी भाषाएँ भी हैं जिनमें ११-१२ ध्वनियाँ हैं, किन्तु उन ११-१२ ध्वनियों के जोड़-मेल से हज़ारों-हज़ारों शब्द बनते हैं। पशु-पक्षियों में अधिकतम नौ ध्वनियाँ पाई गयी हैं, परन्तु ऐसे जीव भी उनके जोड़-मेल से शब्द नहीं बना पाते। वैदिक युग में कौवे की जो ध्वनियाँ थीं, वही आज भी हैं; और अमेरिका के कुत्ते की जो-जो ध्वनियाँ हैं. वही पाकिस्तान के कुत्ते की भी हैं। कोई विकास नहीं, कोई देशकाल-गत भेद नहीं।

सीमित अर्थ—'भाषा' शब्द संस्कृत की 'भाष्' धातु से व्युत्पन्न हुआ है। इसका अर्थ है 'व्यक्त वाणी'—"भाष् व्यक्तायां वाचि।" इस शब्द में भाषा का ठीक-ठीक लक्षण समाहित है। केवल मनुष्य की वाणी ही व्यक्त है; उसका विश्लेषण हो सकता है, उसे लिखा जा सकता है, उसका अनुकरण किया जा सकता है और उसका अर्थ होता है, जिससे वह अनन्त भावों, विचारों और इच्छाओं की अभिव्यक्ति का माध्यम बनती है।

पशु-पक्षी केवल चार प्रकार की भावनाओं और इच्छाओं की अभिव्यक्ति वाणी द्वारा करते हैं—भय आनेवाला हो, भय आ पड़ा हो, भूख-प्यास लगी हो और प्रेम-वासना जगी हो। इसीलिए ऐसी वाणी अध्ययन का विषय नहीं हो सकती।

कुछ प्रमुख भाषाविज्ञानियों की दी हुई परिभाषाएँ यहाँ उद्धृत की जाती हैं—

"भाषा मानवीय वाणी है, और एक ऐसी सक्रियता है जिससे लोग मुख के अवयवों से उच्चरित व्यक्त ध्वनियों के माध्यम से अपने विचारों और भावों को अभिव्यक्त करते हैं।"—ए. सी. वुलनर।

"भाषा मुख्यतः प्रतीकों की श्रवणात्मक व्यवस्था है।"—सापिर।

"भाषा मनुष्यों के बीच संचार-व्यवहार के माध्यम के रूप में एक प्रतीक-व्यवस्था है।"—वेन्द्रे।

"भाषा यादृच्छिक वाक्प्रतीकों की वह व्यवस्था है जिसके माध्यम

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

से मानव समुदाय परस्पर व्यवहार करता है।"––ब्लाक एवं ट्रेजर।

"भाषा सीमित और व्यक्त ध्वनियों का नाम है जिन्हें हम अभिव्यक्ति के लिए संगठित करते हैं।"––क्रोचे

"मनुष्य और मनुष्य के बीच वस्तुओं के विषय में अपनी इच्छा और मति का आदान-प्रदान करने के लिए व्यक्त ध्वनि-संकेतों का जो व्यवहार होता है, उसे भाषा कहते हैं।"––श्यामसुंदरदास।

"जिन ध्वनि-चिह्नों द्वारा मनुष्य परस्पर विचार-विनिमय करता है, उसको समष्टि रूप से भाषा कहते हैं।"––बाबूराम सक्सेना।

भाषा की विशेषताएँ—ऊपर हम कह आये हैं कि भाषा का संबंध **मानव से है**, किसी दूसरे पदार्थ, प्राणी, पशु, पक्षी की ध्वनियों को भाषा नहीं कहा जा सकता। भाषा का दूसरा लक्षण यह है कि **भाषा ध्वनिमय है**। संकेतों को भाषा नहीं कहा जायगा, भले ही वे भी मनुष्यों के व्यवहार में आते हैं। तीसरी विशेषता यह है कि इसमें ध्वनियाँ व्यक्त होनी चाहिए। फुर्रर्ऽर्र व्यक्त ध्वनि नहीं है। घोड़े को चलाने के लिए जो टिटकारी मारते हैं, बच्चा जो किलकारी करता है, या तिक्त वस्तु खाने पर हम जो सी-सी करते हैं, या ठहाके की जो ध्वनि है, वह भी व्यक्त नहीं है। उससे भी कोई वाक्य नहीं बनता। ये ध्वनियाँ ऐसी होनी चाहिए जिनका हम विश्लेषण कर सकें, जिनका अनुकरण कर सकें और बार-बार उसी तरह बोल सकें। इसीलिए ये **ध्वनियाँ मुख से उच्चरित होंगी**। हाथ से चुटकी भी मानव की पैदा की हुई ध्वनि है, किन्तु वह व्यक्त नहीं, वह मानव मुख से उच्चरित नहीं होती। व्यक्त होने के कारण ही ध्वनियों का जोड़मेल नाना प्रकार से हो सकता है। और इसी कारण वे सुनी और समझी जाती हैं। भाषा की चौथी विशेषता यह है कि वह **प्रतीकात्मक** होती है। इन ध्वनियों के मेल से जो शब्द बनते हैं, वे उन वस्तुओं और व्यापारों के प्रतीक मात्र हैं। 'पानी' शब्द में वह पदार्थ नहीं है जो तरल है, शीतल है या गर्म भी किया जा सकता है, अथवा जो पीने, नहाने,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

धोने आदि के काम आता है। 'पानी' शब्द उस पदार्थ का प्रतीक मात्र है। ये प्रतीक या शब्द याहच्छिक होते हैं, अर्थात् अपनी इच्छा से उस पदार्थ का यह नाम रखते हैं; दूसरे कोई और नाम रख देते हैं। 'फट , फट' करती जाती एक पेट्रोल की गाड़ी को **'फटफटिया'** कह दिया गया। पानी के लिए ही किसी भाषा में **'जल'**, किसी में **'नीर'**, किसी में **'वाटर'**, और किसी में **'ग्राब'** शब्द गढ़ लिया गया। आदि में सब शब्द कभी-न-कभी गढ़े ही जाते हैं। यादृच्छिकता तभी चलती है जब किसी वस्तु या व्यापार का नया नाम दिया जाता है। लेकिन एक नाम जब समाज में प्रचलित हो जाता है, तब उसे सबको ग्रहण करना पड़ता है और वह रूढ़ हो जाता है; तब स्वेच्छाचारिता समाप्त हो जाती है। तभी भाषा की सारे समाज में एकरूपता बनी रहती है।

सभी विद्वानों ने इस बात पर बल दिया है कि भाषा एक व्यवस्था है। यह उसका अवश्यम्भावी गुण है। पशु-पक्षी अपनी ध्वनियों का संगठन नहीं कर सकते। लेकिन हमारी स[illegible] एक व्यवस्था में रहती हैं। हिन्दी में / **क** / का महाप्राण / **ख** / है तो / **ग** / का / **घ** / और / **च** / का / **छ** / महाप्राण रूप विद्यमान है। ध्वनियों के संयोजन में भी एक व्यवस्था है। हम णङडे, ड़ोञ, ङटेट्झ आदि शब्द नहीं बना पाते, क्योंकि हिन्दी भाषा की व्यवस्था में ण, ङ या ड़ शब्द के आदि में नहीं आते, ङट तथा ट्झ का संयोग नहीं होता, तथा ङ, ञ स्वतंत्र व्यंजन नहीं हैं। वाक्य के गठन में भी प्रत्येक भाषा की एक व्यवस्था है।

अंग्रेज़ी में हम 'In the house of Rama there lived a person' कहते हैं, किन्तु हिन्दी में 'में वह घर का राम वहाँ रहा एक आदमी' नहीं कह सकते। वाक्य में हमारे शब्दों की व्यवस्था भिन्न है।

मूलतः यादृच्छिक शब्दों का रूढ़िगत अर्थ क्या माना जाय, ध्वनियों का संगठन कैसे हो, वाक्य में शब्दों का क्या रूप और क्रम

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हो, इन सब बातों का संबंध समाज से है। भाषा की परिभाषा देते हुए प्रायः विद्वानों ने कहा है कि यह आदान-प्रदान या व्यवहार का माध्यम है। इसका एक संकेत तो यह है कि भाषा के सभी तत्त्व (वाक्य, शब्द, ध्वनि) अर्थवान् होंगे। निरर्थक शब्दों के द्वारा हम अपने विचारों और भावों का आदान-प्रदान कैसे कर सकेंगे? दूसरा संकेत यह है कि भाषा का संबंध समाज से है। हम अकेले में सोचते तो हैं, लेकिन विचार लेने या देने के लिए तो दूसरे व्यक्ति चाहिए। यह समाज चाहे छोटा हो (घर में दो ही प्राणी हों) या बड़ा (जैसे हिन्दी बोलने-समझनेवाले करोड़ों लोगों का जनसमूह), भाषा के लिए है आवश्यक। समाज में ही भाषा जीवित रहती है। दूसरी ओर, वह समाज को संगठित करने का साधन भी बनती है। समाज में भाषा की परम्परा सुरक्षित रहती है। भाषा किसी की पैतृक सम्पत्ति नहीं है। यदि किसी भारतीय बच्चे को अपने माँ-बाप से अलग करके फ्रांस में पाला जाय, तो वह उसी समाज से भाषा का अर्जन करेगा; उसकी भाषा फ्रांसीसी होगी। कुछ वर्ष पूर्व लखनऊ के एक अस्पताल में लगभग १२ वर्ष का एक लड़का लाया गया था, जो मनुष्य की तरह कुछ भी नहीं बोल पाता था। खोज करने पर पता चला कि उसे कोई भेड़िया उठा ले गया था और तब से वह भेड़िये की माँद में पलता रहा। उसमें सभी आदतें भेड़िये की सी थीं; और तो और, उसकी ध्वनियाँ भी भेड़ियों की सी थीं।

भाषा की एक विशेषता यह भी है कि वह अनुकरण से आती है। परम्परा से जो भाषा समाज में अर्जित रहती है, उसी को मनुष्य अनुकरण द्वारा सीखता है।

सामाजिक और अनुकरणमूलक होने के कारण ही भाषा परिवर्तनशील है। समाज में रहनेवाले मानवों का न तो शारीरिक गठन एक-सा होता है, न मानसिक। बाहर के प्रभाव भी पड़ते ही हैं। संस्कृति के विकास से भाषा विकसित होती है और संस्कृति के ह्रास

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

से भाषा का ह्रास हो जाता है। दो संस्कृतियों के मेल से भाषाओं में भी आदान-प्रदान होता है। यह परिवर्तन होता ही रहता है। संस्कृत बदली, प्राकृत बदली, हिन्दी भी बदली है, अभी और बदलेगी। 'भाषा बहता नीर है।' भाषा का कोई अन्तिम स्वरूप नहीं है। इस दृष्टि से कोई भाषा पूर्णता को प्राप्त नहीं हुई। इसकी प्रगति अजस्र रूप से होती रहती है। प्रत्येक भाषा का अपना इतिहास होता है, वह अपनी विकास-प्रक्रिया में कठिनता से सरलता की ओर, स्थूलता से सूक्ष्मता की ओर, और अप्रौढ़ता से प्रौढ़ता की ओर बढ़ती चलती है। प्रत्येक भाषा, चाहे वह एक जंगली टापू के कतिपय निवासियों की ही क्यों न हो, अपने समाज के भावों और विचारों को अभिव्यक्त करने में पूर्णतया समर्थ होती है। प्रत्येक भाषा की अपनी सीमा होती है। अपनी सीमा के बाहर उसका रूप परिवर्तित हो जाया करता है या दूसरी भाषा की सीमा शुरू हो जाती है।

भाषा के स्तर या रूप—सामान्यतः यह कहा जाता है कि 'मुण्डे-मुण्डे मतिर्भिन्ना शुण्डे शुण्डे सरस्वती।' किसी सीमा तक यह उक्ति ठीक है, क्योंकि एक ही भाषा बोलनेवाले किन्हीं दो व्यक्तियों को सुनिए तो उनकी ध्वनियों में, ध्वनिगुणों में, लहजे में, शब्दों के चयन में और सारी बात करने के ढंग में अंतर पायँगे। यहाँ तक कि किसी व्यक्ति को वही बात फिर कहने को कहा जाये तो उसी में अंतर आ जायगा। हर आदमी की शैली निराली है। इसे **व्यक्ति भाषा** कहते हैं। इसी तरह से हर परिवार, हर गाँव, हर ज़िले और हर प्रदेश की अपनी भिन्न विशेषता होती है। वकीलों, डाक्टरों, अध्यापकों, धोबियों, दर्जियों, चोरों, सबकी अपनी-अपनी **वर्ग-भाषा** होती है। स्त्रियों और पुरुषों की भाषा में भी अन्तर होता है। कुछ लोग, जैसे व्यापारी या फ़ौजी, एक गुप्त भाषा का विकास कर लेते हैं।

लेकिन वास्तव में ऊपर गिनायी हुई बोलियाँ हैं, भाषाएँ नहीं। बोली का क्षेत्र सीमित होता है; उसे शासन अथवा शिक्षा में कोई विशेष

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मान्यता प्राप्त नहीं होती, उसका कोई पारम्परिक साहित्य नहीं होता, और प्रायः उसका कोई लिखित रूप ही नहीं होता। भाषा का क्षेत्र बहुत विस्तृत होता है, उसके क्षेत्र में कई बोलियाँ होती हैं, उसे राज्य द्वारा मान्यता प्राप्त होती है, उसकी अपनी लिपि होती है और उसकी एक साहित्यिक परंपरा होती है। अवधी, कन्नौजी, बघेली, हरियाणी आदि बोलियाँ हैं, हिन्दी भाषा है।

भाषा के भी कई स्तर होते हैं। ये बोलियाँ भी एक प्रकार से भाषा के स्तर हैं। ये उसके रूप भी कहे जा सकते हैं। इनके ऊपर भाषा का सामान्य रूप है जिसे हर बोली बोलनेवाले समझते हैं और दूसरी बोली बोलनेवाले के सम्पर्क में आने पर उसका व्यवहार भी करते हैं। ऐसी सामान्य भाषा के गठन में सब बोलियों का हाथ रहता है। हिन्दी का सामान्य रूप वह है, जो पश्चिम में अम्बाला से लेकर पूर्व में भागलपुर तक, और उत्तर में हिमालय की तराई से लेकर दक्षिण में खंडवा और रायपुर तक व्यवहृत होता है।

लिपि के विकास से किसी भाषा का लिखित रूप होने लगता है और उसमें साहित्य का विकास होता रहता है। इससे उस भाषा में स्वच्छता, प्रौढ़ता, स्थिरता और सूक्ष्मता आती है। साहित्यिक भाषा अधिक प्रांजल, सुसंस्कृत और स्थायी होती है। शिक्षित वर्ग में प्रतिष्ठित होने के नाते उसे परिनिष्ठित भाषा भी कहा जाता है। हिन्दी का परिनिष्ठित रूप वही है, जो भारत में ही नहीं, विदेशों में भी स्कूलों, कालेजों और विश्वविद्यालयों में अध्यापकों और विद्यार्थियों में प्रचलित है, जिसमें रेडियो पर समाचार सुनाये जाते हैं, जिसमें पत्र-पत्रिकाएँ छपती और प्रकाशित होती हैं।

जब किसी सामान्य अथवा परिनिष्ठित भाषा को राज्य द्वारा शासन कार्यों में स्थान मिलता है तो उसे राजभाषा कहते हैं। यह आवश्यक नहीं है कि किसी देश की अपनी ही भाषा राजभाषा भी हो। अंग्रेज़ों ने वर्षों हमारे देश में अंग्रेज़ी को राजभाषा बनाये रखा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

किन्तु स्वतन्त्र देशों में अपनी धरती की भाषा ही राजभाषा होती है, उसी के माध्यम से शासक जन-जन तक पहुँच पाता है। भारत में कई राज्य हैं——तमिलनाडु, बंगाल, गुजरात, महाराष्ट्र, आंध्र आदि। सबमें जनता की भाषा को मान्यता प्राप्त है। तमिल, बँगला, गुजराती, मराठी, तेलुगु आदि **प्रादेशिक** भाषाएँ अपने-अपने प्रदेश में राजभाषाएँ हैं। किन्तु पूरे भारत देश की राजभाषा हिन्दी है।

राजभाषा से बड़ा स्तर राष्ट्रभाषा का है। इसे सम्पर्क भाषा भी कहा जाता है। काका कालेलकर के शब्दों में "राष्ट्रभाषा को हम और भी कई नाम देंगे। उसको 'सबकी बोली' कहेंगे, 'क़ौमी ज़बान' कहेंगे, 'हृदय की भाषा' कहेंगे, 'स्नेहभाषा' या 'ऐक्य भाषा' कहेंगे और फिर सबसे बढ़कर 'स्वराज्य-भाषा' कहेंगे।" सरकार की भाषा कोई हो, सारे राष्ट्र की जनता में व्याप्त भाषा राष्ट्रभाषा ही है। मध्यकाल में फ़ारसी और उसके बाद अंग्रेज़ी काल में अंग्रेज़ी सरकारी कामकाज की भाषा रही है, लेकिन उन युगों में भी हिन्दी राष्ट्रभाषा स्वीकृत की जाती रही है। राष्ट्रभावना के साथ राष्ट्रभाषा का महत्त्व और भी बढ़ जाता है।

कई भाषाएँ अपने-अपने राष्ट्र से बाहर कई राष्ट्रों में व्यवहृत होने लगती हैं——अंग्रेज़ी और फ्रांसीसी ऐसी ही **अन्तर्राष्ट्रीय भाषाएँ** हैं। एस्प्रांटो आदि कुछ कृत्रिम भाषाएँ भी हैं जिनका अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में प्रयोग होता है।

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(ख) भाषाओं की भिन्नता

यूरोप में आज प्रायः सर्वत्र आर्य परिवार की भाषाएँ बोली जाती हैं। निश्चय ही आर्यों की दिग्विजय से पहले वहाँ की मूल भाषाएँ भिन्न थीं। उनके अवशेष आज भी किन्हीं पहाड़ी प्रदेशों में विद्यमान हैं। इसी प्रकार दक्षिणी अमेरिका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड आदि के अनेक देशों में इस समय आर्य भाषाएँ प्रचलित हैं, जो उन-उन देशों में यूरोपीय उपनिवेश बस जाने पर प्रचार-प्रसार पा गयीं। किन्तु यूरोपीय जातियों के प्रसार से पहले वहाँ सैकड़ों भाषाएँ थीं, जो भिन्न प्रकृति की थीं। इनके बोलनेवाले आदिवासी आज भी लाखों की संख्या में विद्यमान हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि भाषाओं की भिन्नता का मुख्य आधार भौगोलिक है। मूलतः सभी महाद्वीपों की भाषाएँ एक-दूसरे से भिन्न थीं। भाषा के लिए हज़ारों मील लम्बे समुद्र पार करके और बड़े-बड़े पहाड़ लाँघकर जाना कठिन होता है। एक महाद्वीप के भीतर ही देख लीजिए—जहाँ कोई बहुत बड़ा पर्वत आ गया, इधर-उधर की भाषाएँ भिन्न हो गयीं। हिमालय के इस पार की भारतीय भाषाओं और उस पार की तिब्बती-चीनी में कितना अन्तर है! भारत ही में देख लीजिए; विन्ध्याचल के दक्षिण में आर्यभाषाओं का प्रभाव तो अवश्य पड़ा, किन्तु वहाँ की भाषाएँ मूल रूप से द्रविड़ परिवार की हैं। सिन्धु नदी के उस पार बिलोची, पश्तो आदि ईरानी परिवार की भाषाएँ हैं तो इस पार भारतीय आर्य भाषाएँ हैं। दिल्ली के पास यमुना नदी बहती है, उसके दाहिने किनारे पर हरियाणी और बायें किनारे पर खड़ीबोली बोली जाती है। दक्षिण पूर्व में सुमात्रा, जावा, बाली,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बोर्नियो, अंडमान, निकोबार, फिजी, न्यूगिनी, फ़िलीपाइन आदि सैंकड़ों छोटे-बड़े टापू हैं। उन सबमें अलग-अलग भाषा बोली जाती है।

जब भौगोलिक सीमाएँ टूटती हैं और यातायात की सुविधाओं के फलस्वरूप देश एक-दूसरे के निकट आते हैं, तो भाषाएँ भी एक दूसरी से प्रभावित होती हैं। ये प्रभाव कितने गहरे होते हैं, इसका निर्णय दूसरे घटक करते हैं। उन घटकों में ऐतिहासिक और राजनीतिक प्रमुख हैं। कोलम्बस का नयी दुनिया की खोज करना, दक्षिणी अमेरिका में स्पेन का चाँदी की खानों का पता लगाना, व्यापार और राजनीति तथा नवजागरण से उत्पन्न समुद्रावगाहन की चेष्टा से यूरोपीय जातियों में होड़ पैदा होना आदि ऐसी ऐतिहासिक घटनाएँ हैं जिनके परिणाम-स्वरूप दूर-दूर के देशों तक अंग्रेज़ी, फ्रेंच, जर्मन, डच, पुर्तगाली आदि भाषाओं का प्रसार हुआ और इनका राजनीतिक प्रभाव इतना अधिक बढ़ा कि उन-उन देशों के आदिवासियों की भाषाएँ दबने लगीं, और कई जगह लुप्त भी होने लगीं।

यूरोप में न जाने कितनी भाषाएँ थीं, जो मर गयी हैं और जिनके नाम तक ज्ञात नहीं हैं। उनकी जगह आर्य भाषाएँ फैल गयी हैं। भारत में भी ऐसी ही स्थिति रही है। आर्यों के आने के पहले यहाँ दक्षिण और पश्चिम में द्रविड़ जातियाँ थीं और उत्तर तथा पूर्व में कोल-संथाल आदि जातियाँ थीं। किन्तु इतिहासकारों का कथन है कि ये लोग भी भारत के मूल निवासी नहीं थे। उन आदिम जातियों और उनकी भाषाओं का क्या हुआ, कोई नहीं जानता। द्रविड़ भाषाएँ और विशेषतः कोल-संथाल जातियों की भाषाएँ सीमित क्षेत्रों में बोली जाती हैं। आर्य-भाषा का प्रचार-प्रसार बहुत बड़े क्षेत्र में हुआ। हाल ही की बात है। भारत में लगभग ८०० वर्ष पठानों और मुगलों का और २०० वर्ष अंग्रेज़ों का राज्य रहा। इन सभी शासकों की भाषाओं—तुर्की, फ़ारसी, अंग्रेज़ी का व्यापक प्रभाव पड़ा है; इसे भारत की प्रत्येक आधुनिक भाषा में देखा जा सकता है। इस प्रभाव के कारण हिन्दी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha
की एक नयी शैली का जन्म हुआ है, अर्थात् उर्दू, जिसे बहुत से लोग भाषा कहते हैं।

अंग्रेज़ी और देशी भाषा अथवा डच या फ्रेंच और देशी भाषा के मेल से दक्षिणी चीन, अफ्रीका, मारिशस आदि में मिश्रित भाषाओं का विकास हुआ जिनके अपने-अपने नाम हैं।

किसी युग में जापान पर चीन के ज़मींदारों का प्रभाव था; वह जापानी भाषा और लिपि में साफ़ दिखाई देता है। आज सोवियत राज्य के अन्तर्गत प्रत्येक देश में रूसी बोली पढ़ी, लिखी और समझी जाती है।

इसी तरह जर्मनी, हालैंड, फ्रांस और किसी ज़माने में ईरान का जहाँ-जहाँ राजनैतिक प्रभाव रहा है, वहाँ-वहाँ वे भाषाएँ या तो गड़ गयी हैं या छा गयी हैं। कई जगह भाषा में समूल परिवर्तन हुआ है और कई जगह मात्र प्रभाव पड़ा है।

भाषा और धर्म के संबंध को प्रायः लोग नहीं मानना चाहते। एक धर्म के माननेवाले कई भाषाएँ बोलते हैं—जैसे ईसाई भारत में अपने-अपने प्रदेश की भाषा बोलते हैं—थोड़े से अंग्रेज़ी भी जानते हैं; हिन्द-एशिया के ईसाई हिन्द-एशियाई भाषा बोलते हैं, आदि आदि। बौद्ध लंका, बरमा, चीन, जापान, लद्दाख और भारत में फैले हुए हैं—सब अपनी-अपनी भाषा का व्यवहार करते हैं। हिन्दू भी कोई एक भाषा तो नहीं बोलते। अफ़ग़ानिस्तान में जो हिन्दू और सिख हैं, वे पश्तो ही बोलते हैं। यदि धर्म और भाषा का कोई संबंध होता, तो धर्म बदलते ही उसकी भाषा बदल जाती। किन्तु ऐसा होना असंभव-सा है।

इस प्रश्न का दूसरा रुख भी है। सब बड़े-बड़े धर्म किसी ऐसे ग्रन्थ से जुड़े हुए हैं, जो एक विशिष्ट भाषा में है। मुसलमान चाहे भारत का हो, चाहे पश्तो भाषी अफ़ग़ानिस्तान का और चाहे तुर्की-भाषी ताशकंद का, वह अपना कलमा (मंत्र) अरबी में पढ़ता है, नमाज़

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अरबी में पढ़ता है, आपस में सलाम भी अरबी में करता और अपने बच्चों के नाम भी अरबी के रखता है। भारत के हिन्दुओं और मुसलमानों की सांस्कृतिक शब्दावली का अन्तर देखिए—

हिन्दू	मुसलमान	हिन्दू	मुसलमान
पिता	**अब्बा**	**पूजा**	**नमाज़**
माँ, अम्माँ	**अम्मी**	**प्रार्थना**	**दुआ**
मौसी	**ख़ाला**	**उपवास, व्रत**	**रोज़ा**
नरक	**दोज़ख़**	**पाठ**	**तलावत**
स्वर्ग	**बहिश्त**	**माला**	**तस्बीह**
दान	**ख़ैरात**	**जंतर**	**तावीज़**
दर्शन	**दीदार**	**स्नान**	**गुसल**
पाप	**गुनाह**	**मांस**	**गोश्त**
पुण्य	**सवाब**	**बधाई**	**मुबारक**
कृपा	**फ़ज़ल**	**ज्योतिषी**	**नजूमी**
तीर्थ	**हज**	**गुरु**	**पीर**
अरथी	**जनाज़ा**	**नमस्कार**	**सलाम**

भारत में प्रायः ईसाई परिवारों में अंग्रेज़ी का मोह देखने की चीज़ है।

बाइबिल मूलतः हिब्रू में है, किन्तु यहूदियों से जातिगत वैमनस्य के कारण हिब्रू को ईसाइयों ने मान्यता नहीं दी। किन्तु रोमन कैथलिक गिरजा-घरों में सर्वत्र लैटिन (धार्मिक लैटिन) का थोड़ा-बहुत प्रयोग होता है। भारत के ईसाइयों को बाइबिल का अंग्रेज़ी अनुवाद प्राप्त हुआ। बाइबिल के नाते अंग्रेज़ी से मोह हो गया। इसी तरह यहूदियों के मंदिरों में सर्वत्र हिब्रू, सिखों के गुरुद्वारों में, चाहे वे ईरान में हों, अफ़गानिस्तान में हों और चाहे पटना, पूना, लंदन या न्यूयार्क में, गुरु नानक और अर्जुन आदि की वाणी का ही पाठ होता है। जापान

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha
के बौद्ध मंदिरों में भी '**बुद्धं सरणं गच्छामि, धम्मं सरणं गच्छामि, संघं सरणं गच्छामि**' का पाठ दोहराया जाता है। बौद्ध साहित्य पालि में है—यही नहीं कि बरमा, लंका, चीन आदि के बौद्धों को पालि से धार्मिक प्रेम है, बल्कि उन-उन देशों में पालि भाषा में भरपूर साहित्य भी लिखा गया है।

भाषाओं के प्रचार प्रसार में भी धर्म का बड़ा हाथ है। कल की छोड़िए, आज भी नागालैंड, मेघालय आदि में अंग्रेज़ी का प्रचार ईसाई मिशनरियों के कारण हो रहा है; यहां तक कि पढ़े-लिखे ईसाइयों के कारण वहाँ की राजभाषा भी अंग्रेज़ी है। बौद्ध धर्म के साथ पालि भाषा भी कई देशों में फैली। मिस्र की हैमिटिक भाषा का नाम-निशान बाकी नहीं रह गया। पहले वहाँ ईसाई धर्म का प्रचार हुआ तो लैटिन छा गयी, और बाद में इस्लाम के साथ अरबी आ गयी। इस समय मिस्र की भाषा अरबी है। यहूदियों का पहले कोई अपना देश नहीं था। सन् १९४८ में इज़रायल अस्तित्व में आया और यहूदियों को स्वतंत्रतापूर्वक अपने धर्म का संरक्षण-संवर्धन करने का अवसर मिला। तत्काल उन्होंने हिब्रू को, जो २००० वर्ष से मृतप्राय थी, पुनरुज्जीवित किया, उसका विकास करके उसे शिक्षा, शासन और ज्ञान-विज्ञान के उपयुक्त बना दिया।

मार्टिन लूथर प्रोटेस्टंट मत के संस्थापक थे। उन्होंने अपनी मातृभाषा (अपने क्षेत्र की भाषा) में बाइबिल का अनुवाद किया। इस बाइबिल के अनुवाद की भाषा का सारे प्रोटेस्टंट मत पर इतना प्रभाव रहा कि धीरे-धीरे लूथर की प्रादेशिक भाषा जर्मनी की सामान्य भाषा बन गयी।

भाषा सामाजिक वस्तु है। प्रत्येक समाज के विचार और संस्कार, उसकी आवश्यकताएँ भिन्न होती हैं। शिकारी युग के समाज से पशु-पालन युग के समाज की आवश्यकताएँ-धारणाएँ भिन्न थीं। इन आवश्यकताओं-धारणाओं की अभिव्यक्ति में अन्तर आया। फिर कृषियुग

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha
की आवश्यकता और भाषा भिन्न हो गयी। आज के वैज्ञानिक और औद्योगिक युग की भाषा निश्चय ही पूर्ववर्ती युग से भिन्न है। आज भी कुछ जातियाँ शिकारी युग में रह रही हैं, कुछ पशुपालन युग में, कुछ कृषियुग में और कुछ इस वैज्ञानिक युग में। इन सबकी भाषाओं में भेद होना स्वाभाविक है।

भाषाओं की विविधता उनकी मूल प्रकृति में निहित है। भाषा परिवर्तनशील है, किन्तु सभी भाषाओं में यह परिवर्तन एक-सा नहीं होता। रूस में एक भाषा है लिथुआनी। जंगली और कटे-कटे प्रदेश में होने के कारण इसका विकास नहीं हुआ, और इसी की सहोदरा भाषाएँ अनेक बाह्य और आन्तरिक कारणों से परिवर्तित हो गयीं। प्रभाव भी तरह-तरह के होते हैं। बँगला, उड़िया और बिहारी सब मागधी प्राकृत की बोलियाँ मात्र थीं। बंगला पर चीनी और बरमी परिवारों के प्रभाव पड़ते रहे, ध्वनियों का परिवर्तन अपने ढंग से हुआ; साहित्यिक स्तर पर आकर इस पर संस्कृत का अत्यंत व्यापक प्रभाव पड़ा; किन्तु बिहारी और उड़िया पर ये प्रभाव भिन्न प्रकृति के थे। उड़ीसा में आन्ध्र और महाराष्ट्र का राजनीतिक प्रभाव रहा, बिहारी से खड़ी बोली हिन्दी का सम्पर्क बढ़ता गया। तीनों में साहित्यिक विकास भी अपने-अपने ढंग का हुआ, और लिपि भी एक-दूसरी से भिन्न विकसित हुई। इन सब कारणों से बँगला, उड़िया और बिहारी तीन अलग भाषाएँ हो गयीं।

पद्धति की दृष्टि से प्रत्येक भाषा स्वच्छन्द होती है। कोई भाषा शासक जाति से अथवा अपनी आकर-भाषा या सांस्कृतिक भाषा से, अथवा सम्पर्क में आनेवाली विजातीय भाषाओं से कौन सी नयी ध्वनियाँ, कौन-से नये शब्द या अर्थ ग्रहण करेगी, अथवा अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए नये शब्दों या अर्थों का निर्माण कैसे करेगी, कहना बहुत कठिन है। सबका ढंग निराला है। इसी से भिन्नता बढ़ती है। कोई भाषा किसी शिकंजे में जकड़ी नहीं रहना चाहती—वह शिकंजा चाहे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha
शब्दावली का हो, चाहे व्याकरण का। शिकंजे में कसी-जकड़ी भाषा अपना दम तोड़ देती है, जैसे संस्कृत। भाषा में परिवर्तन होते ही रहना चाहिए——यह स्वच्छंद गति उसका जीवन है, और यही उसकी भिन्नता का कारण है।

एक ही स्रोत से निकलनेवाली बोलियाँ अपने-अपने क्षेत्र की प्राकृतिक दशा, जलवायु, उपज, सामाजिक आवश्यकता, आदि की भिन्नता के कारण भिन्न-भिन्न हो जाया करती हैं। भाषा की इसी प्रवृत्ति को **विकेन्द्रमुखी प्रवृत्ति** कहते हैं। एक लैटिन भाषा से इटालियन, फ्रेंच, स्पेनिश, पुर्तगाली, आदि भाषाएँ बन गयी हैं।

भाषाओं की बड़ी पहचान इस बात में है कि उनमें परस्पर बोध-गम्यता नहीं के बराबर होती है। इसे यों समझा जाय कि एक बाप के चार बेटे हैं। उनमें बड़ा घनिष्ठ संबंध होता है। हर एक बेटे की तीन चार सन्तानें हो जाती हैं——अब इन चाचा-ताया के लड़कों में उतनी निकटता नहीं रह जाती। इसके बाद इनके पुत्र और फिर पौत्र और प्रपौत्र होते जाते हैं, तो इन बीसियों 'भाइयों' में बहुत से ऐसे होते हैं जो एक दूसरे को पहचानते तक नहीं। बोलियों और भाषाओं की यही गति है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(ग) भाषा का महत्त्व

हमारे ऋषियों ने वाग्देवता की स्तुति में कहा था कि इसकी महिमा सहस्रमुखी है। बात सही है। वाग्देवता की कृपा से ही हम पशुओं की श्रेणी से निकलकर मनुष्य बने, समस्त जीवधारियों के शिरोमणि हुए। इसी से हमारी मेधा का, हमारे ज्ञान का, हमारी प्रतिभा का विकास हुआ। इसी से हमने परिवार का, समाज का, राष्ट्र का और अन्तर्राष्ट्रीय मंचों का निर्माण किया। इसी से हमने अपने व्यापार को बढ़ाया। इसी के द्वारा हमने कलाएँ सीखीं और सिखायीं, लिखना-पढ़ना सीखा। भाषा के माध्यम से हम हजारों वर्ष पहले के मनीषियों के विचारों से अवगत होते हैं, इसी के माध्यम से हम घर बैठे देश-देशान्तर की संस्कृति से परिचित हो जाते हैं। साहित्य हो चाहे विज्ञान, इतिहास हो चाहे दर्शन, सभी विषयों की रक्षा भाषा करती है। जीवन का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है, जहाँ भाषा के बिना काम चल सकता हो।

छान्दोग्योपनिषद् के सातवें अध्याय में नारद को उपदेश देते हुए ऋषि सनतकुमार ने भाषा के महत्त्व पर अपने जो विचार प्रकट किये हैं, वे बहुत मूल्यवान् हैं। उनका कहना है कि यदि वाक्तत्त्व न होता तो धर्म-अधर्म, सत्य-असत्य, उचित-अनुचित, अहृदय-सहृदय की पहचान, विवेचना अथवा व्यवस्था न हो पाती। भाषा की उपासना करनेवाला शक्ति और सिद्धि का अधिकारी होता है।

आचार्य दण्डी ने कितने सुन्दर शब्दों में कहा है कि भाषा एक ज्योति है जिसके बिना यह संसार अंधकार में डूबा रह जाय :—

इदमन्धतमः कृत्स्नं जायेत् भुवनत्रयम् ।
यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरासंसारं न दीप्यते ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भाषा की शक्ति ज्ञान की शक्ति है। हमारे सारे ज्ञान का आधार भाषा ही है। भाषा की सहायता के बिना कोई व्यक्ति सोच-विचार नहीं कर सकता। जितना अधिक अधिकार किसी व्यक्ति का भाषा पर होता है, उतना ही उच्च स्तर का उसका चिन्तन-मनन भी होता है। जिनकी भाषा हीन होती है, जिनका शब्दभण्डार थोड़ा होता है, उनका चिन्तन भी अधूरा, स्थूल और अस्पष्ट होता है। शब्द-भण्डार वास्तव में अनुभव-भण्डार है। जिसका जितना अधिक अनुभव होता है, उतना ही बड़ा उसका शब्द-भण्डार होता है। भाषा की समृद्धि से मन और बुद्धि का भरपूर विकास होता है।

जिस तरह अन्तर्जगत् में भाषा मन और बुद्धि के क्रियाकलापों को व्यवस्थित करती है, उसी तरह बाह्य जगत् में वह लोक-व्यवहार का साधन है। इससे मनुष्य के सारे प्रयोजन सिद्ध होते हैं। इसके द्वारा वह धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष का उपार्जन करता हुआ अपनी जीवन-यात्रा पूरी करता है। वाणी के सूत्र से ही वह अपने सारे सम्बन्धों के स्थापन और रक्षण में समर्थ होता है। भाषा के बल से शत्रु मित्र हो जाते हैं, बड़े पक्के चोर-डाकू साधु-महात्मा बन जाते हैं, भगोड़े कायरों का खून खौलने लगता है, लोग बड़े-बड़े बलिदान करने पर उतारू हो जाते हैं। भाषा एक वशीकरण मन्त्र है। सच तो यह है कि सब मन्त्र भाषा में ही हैं।

अगले प्रसंग के अन्तर्गत हम देखेंगे कि भाषा का संस्कृति और सभ्यता से कितना घनिष्ठ सम्बन्ध है। किसी व्यक्ति के कुल, गुण, कर्म, स्वभाव की पहचान उसकी वाणी से हो जाती है। मनुष्य की वाणी से ही उसकी आत्मशक्ति, दृढ़ता, निर्बलता, विश्वास, धैर्य, कायरता, दीनता, क्षमाशीलता आदि का परिचय मिलता है।

भले बुरे सब एक सों जब लौं बोलत नाहिं ।
जान परत हैं काक पिक ऋतु बसन्त के माहिं ॥

वास्तव में ध्वनिमय वाणी ही भाषा है। उर्दू में भाषा को 'ज़बान'

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

और अंग्रेज़ी में tongue (जैसे 'मदर टंग') कहते हैं। लिखित भाषा उसका प्रतिरूप है। एक बिंब है तो दूसरा प्रतिबिंब, एक को वास्तुकला कहा जाये तो दूसरा उसका चित्र या फ़ोटो मात्र है। किन्तु दोनों का अपना-अपना महत्त्व है। वाणी की महिमा का थोड़ा-बहुत बखान ऊपर किया गया है। वाणी के साथ-साथ स्वर का योग उसमें भाव भर देता है। आप उसमें दया, क्षमा, क्रोध, वीरता, दीनता, मधुरता, कटुता, सब ला सकते हैं। वाणी हृदय के अन्तस्तल तक पहुँचती है। वीणा या वंशी जब मानव-वाणी का अनुकरण-मात्र कर लेती है, तो उसमें कितनी मोहक शक्ति आ जाती है। और वास्तविक वाणी, अर्थवान्, व्यक्त वाणी, क्या-क्या प्रभाव नहीं डालती? उसकी छाप लिखित भाषा की अपेक्षा कहीं अधिक होती है। इसीलिए हम देखते हैं कि किसी के पत्र या लिखित कथन का उतना प्रभाव नहीं पड़ता, जितना उसकी बातों का। बात की चोट सीधे पड़ती है। हास्य-विनोद के दो वाक्य सुनकर दिल की कली खिल जाती है। आदर-स्वागत के दो शब्द हृदय को द्रवित कर देते हैं। दो मीठे बैन ऐसे जीवों को बाँध देते हैं, जो जन्म-मरण के साथी हो जाते हैं। अपने प्रिय संबंधी या मित्र की मृदुल शब्दावली सुनकर आदमी दुःख-दर्द को भूल जाता है। दूसरी ओर क्रोध या तिरस्कार की ज़रा सी बात दिल को जला देती है, दिमाग़ को ख़राब कर देती है। व्यंग्य और उपालंभ की बात भयंकर युद्ध अथवा हत्या करा देती है! हँसी-ठट्ठे के दो शब्द दो घरानों का मटियामेट कर देते हैं। अपमान का एक शब्द दो मित्रों के मन में गाँठ डाल देता है, दो सगे भाइयों को जानका दुश्मन बना देता है।

किन्तु ध्वनिमय भाषा का क्षेत्र सीमित है, लिखित भाषा का प्रयोग हम देश और काल की सीमाओं को लाँघकर करते हैं। आज भी हम ऋग्वेद के ऋषि की, मनु महाराज की, कालिदास अथवा तुलसी की, शेक्सपियर अथवा दांते की बात पढ़ सकते हैं। लंदन या न्यूयार्क में बैठे अपने संबंधी से पत्राचार कर सकते हैं। आज प्रायः लिखित

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha
भाषा के द्वारा ही देश-देशांतर से विचार-विनिमय होता है। हज़ारों पत्र-पत्रिकाएँ और सैकड़ों पुस्तकें प्रतिदिन छपती हैं और एक देश की सूचना, वहाँ की ज्ञान-राशि, वहाँ की विचार-निधि नाना देशों में पहुँचाती हैं, और भविष्य के लिए भी उस निधि को सुरक्षित रखती हैं।

यह ठीक है कि भाषा मानव की सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha
R.P.S
097
ARY-H

(घ) भाषा और संस्कृति

संस्कृति—यह मानना होगा कि जड़ से चेतन का स्थान ऊँचा है, और चेतन में भी मानव सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। यजुर्वेद में मनुष्य को 'अमृतस्य पुत्रः' कहा गया है। मानव के मन और ज्ञान की उपलब्धियों का नाम संस्कृति है।

छान्दोग्य उपनिषद् में आता है कि किसी देश या समाज के भिन्न-भिन्न जीवन-व्यापारों में या सामाजिक सम्बन्धों में मानवता की दृष्टि से जो आदर्श प्रेरणा प्रदान करते हैं, उनकी समष्टि का नाम संस्कृति है। मन की अभिरुचियों के प्रशिक्षण और परिष्करण को संस्कृति कहा जायगा। 'संस्कार' का अर्थ ही है 'परिष्कृत करना'।

मनुष्य भी एक पशु है। पाशविक वृत्तियों का संस्कार-परिष्कार करके मनुष्यत्व की प्राप्ति, बल्कि देवत्व की ओर बढ़ने का नाम संस्कृति है। संस्कृति मानव की जय-यात्रा की पताका है। इस जय-यात्रा का लेखा-जोखा भाषा ही के माध्यम से हुआ है। मानव-विकास की विभिन्न अवस्थाओं और परंपरागत उपलब्धियों का ज्ञान साहित्य के द्वारा ही होता है। जिस देश अथवा समाज की भाषा को साहित्य में अभिव्यक्ति नहीं मिल पाती, उसकी सांस्कृतिक खोज का इतिहास सँजोया नहीं जा सकता।

भारत की सांस्कृतिक उपलब्धियों में सत्य, अहिंसा, वैराग्य, आस्तिकता, व्यक्ति-स्वतंत्रता, धार्मिक उदारता तथा सहिष्णुता का साक्षी उसके युग-युग का साहित्य है, जो वैदिक भाषा, संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश और अर्वाचीन भाषाओं में लिखा गया है।

सम्बन्ध—अमेरिका के एक विद्वान् सापिर ने अपनी पुस्तक

Central Library
185498
Gurukul ... Haridwar

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

'भाषा, Language' में बड़े ज़ोर से इस बात को प्रमाणित करने की चेष्टा की है कि भाषा और संस्कृति में कोई विशेष सम्बन्ध नहीं है और न ही किसी देश या जाति की भाषा से लोगों की संस्कृति का परिचय मिल सकता है। अंग्रेज़ी भाषा के बोलनेवाले इंग्लैंड, कैनाडा, अमेरिका, दक्षिणी अफ़रीका, भारत, आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड, बल्कि चीन और जापान में भी पाये जाते हैं, किन्तु उनकी संस्कृति तो अपने-अपने देश की है—सर्वत्र इंग्लैंड की संस्कृति व्याप्त नहीं है। भारत में अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं, लेकिन भारतीय संस्कृति तो एक है और एक रही है। काश्मीर से कन्याकुमारी तक और पश्चिम सागर से पूर्व सागर तक के इस विशाल भूखंड को भारत कहते आ रहे हैं—राजनीतिक दृष्टि से नहीं, सांस्कृतिक दृष्टि से। किन्तु इस एक सांस्कृतिक इकाई की अभिव्यक्ति अनेक भाषाओं और उनके साहित्यों के माध्यम से हुई है। हम जानते हैं कि यूरोपीय संस्कृति एक है, किन्तु फ्रेंच, जर्मन, डच, डेनिश, इटालियन, स्पेनी आदि भाषाएँ अनेक हैं। इससे यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि संस्कृति और भाषा का अनिवार्य सम्बन्ध नहीं है।

ऊपर के तर्क का दोष स्पष्ट है। किसी संस्कृति की अभिव्यक्ति एक भाषा के माध्यम से हुई है अथवा अनेक से, यह कोई बात नहीं है। आखिर माध्यम तो भाषा ही है ना! भारत की भाषाओं में जो समानता और एकता के तत्त्व हैं, वही उसकी सांस्कृतिक चेतना के सामान्य घटकों के परिचायक हैं, और जो भाषागत विभिन्नताएँ हैं, वे अपने-अपने मन और मस्तिष्क की उपज के विविध उपघटकों की द्योतक हैं। भारतीय संस्कृति के संदर्भ में जो यह कहा जाता है कि इसकी अनेकता में एकता और एकता में अनेकता है, वही भाषा में भी सही है।

व्यक्ति-संस्कृति—जिस प्रकार संस्कृति के स्तरभेद हैं, उसी प्रकार भाषाभेद भी हैं। प्रत्येक व्यक्ति के संस्कार अपने हैं। उनमें कुछ सर्व-सामान्य हो सकते हैं, किन्तु जिसे व्यक्तित्व कहते हैं, वह उसके निजी संस्कारों

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha
से बना होता है। इसीलिए हर आदमी के बोलने का ढंग अलग, उसका शब्द भंडार अलग और उसकी शैली अनूठी होती है। आप किसी व्यक्ति के गुण, कर्म, स्वभाव, आचार-विचार आदि का परिचय उसकी भाषा से पा सकते हैं। एक सभा में मैंने तीन महाशयों के व्याख्यान इन बातों की परख करने के विचार से सुने। उन वक्ताओं में से किसी को मैं नहीं जानता था। व्याख्यानों के अन्त में मैंने अपनी धारणाएँ उन्हीं के सामने जा रखीं। मैं उनकी भाषा, शब्द-सम्पत्ति, दृष्टान्त-शैली और शब्द-द्योतकता से ठीक-ठीक कल्पना कर सकता था कि एक सज्जन अलीगढ़ के पास के रहनेवाले हैं, किसी स्कूल में भूगोल पढ़ाते हैं, जाति के ब्राह्मण हैं और अधिक से अधिक बी० ए० तक शिक्षा प्राप्त हैं; दूसरे महाशय बनारसी हैं, व्यापार करते हैं और साथ ही समाज-सुधार के काम में लगन रखते हैं; और तीसरे साहब मथुरा अथवा आगरा के निकट के निवासी तथा कहीं लड़कियों के कालेज में प्रोफ़ेसर हैं और उन्हें संगीत-विद्या का अच्छा ज्ञान है।

आप सब लोग दूसरों की भाषा से इस प्रकार के प्रस्ताव बनाया करते हैं।

जातीय संस्कृति—व्यक्तिगत संस्कृति के अतिरिक्त जातीय अथवा समवायी संस्कृति का परिचय भी भाषा से होता है। हिन्दी में 'आप', 'पिता जी', 'डाक्टर साहब', आदि आदरसूचक शब्द क्यों हैं और अंग्रेज़ी में इसके पर्याय क्यों नहीं हैं? ये रूप हमारी मनोवृत्ति के द्योतक हैं। हम बड़ों के सामने होकर सम्बोधन करना भी उनका निरादर समझते हैं; हम उनके सम्मुख खड़े रहकर भी यह अनुभव करते हैं कि हमारी आँख नहीं उठ रही, हम नत-मस्तक हो समझते हैं कि कोई सामने नहीं है। अतएव हम उनसे बात करते हुए भी अन्य पुरुष **'आप'** का प्रयोग करते हैं—**क्या आप गये थे? आप जो चाहेंगे,** इत्यादि। हम एक के लिए बहुवचन का प्रयोग करते हैं! जो हमारी श्रद्धा और आदर-भावना का पात्र है, उसमें अनेक देवता वास करते

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha
हैं। जैसे, **पिता जी आए हैं, मास्टर साहब बैठे थे**। अपने लिए हम कहते हैं, **'दास कहता है', 'सेवक की यह विनती है।'** क्या इन भावों का अनुवाद किसी दूसरी भाषा में हो सकता है?

किसी भी भाषा की रचना का सही अनुवाद दूसरी भाषा में करना अत्यन्त कठिन होता है। इसका कारण यह है कि एक जाति के भाव और विचार, अनुभव और संस्कार दूसरी जाति से नहीं मिलते। उदाहरण-स्वरूप, भारतीय संस्कृति दर्शन-प्रधान और आध्यात्मिक रही है। हमारे ब्रह्म, पुरुष, अहंकार, यज्ञ, तपस्या, साधना, समाधि, ध्यान, धारणा, यम, नियम, जप, तप, वर्ण, आश्रम, भक्ति, श्रद्धा प्रभृति सहस्रों शब्दों का अनुवाद किसी विदेशी भाषा में संभव नहीं है। यूरोप की संस्कृति प्राकृतिक विज्ञान और भौतिकवाद से सम्बन्धित है, इसीलिए भारतीय भाषाओं में उनसे सम्बद्ध शब्दों के पर्याय नहीं मिलते। वनस्पति शास्त्र, भौतिकी, रसायन, चिकित्सा आदि से सम्बद्ध हजारों-लाखों शब्द हैं जिनका अनुवाद संभव नहीं है।

पौराणिक युग की संस्कृति के परिचायक ब्रह्मा, विष्णु, महेश, लक्ष्मी, काली, सरस्वती, दुर्गा, कुबेर आदि देवताओं के; अलका, गन्ध-मादन, आदि स्थानों के नाम हैं। ऐसे ही ग्रीक देवी-देवताओं के नाम हैं जिनका सम्यक् बोध हमारे लिए कठिन है। प्रत्येक देश की अपनी-अपनी संस्थाएँ हैं जिनके नाम वहीं की भाषा में सार्थक हैं।

किसी जाति का शब्द-भंडार उस जाति के संस्कारों और विचारों का रिकार्ड होता है। उसमें किन्हीं शब्दों का अस्तित्व, किन्हीं शब्दों का बाहुल्य, किन्हीं शब्दों की कमी, और किन्हीं का नितान्त अभाव उस संस्कृति पर अच्छा प्रकाश डालता है। हिन्दी में सम्बन्धियों के लिए जितने नाम हैं, उतने किसी अन्य भाषा में नहीं मिलते। माता-पिता को तो पशु-पक्षी भी जानते हैं, इनके लिए भिन्न-भिन्न शब्द पिछड़ी-से पिछड़ी जाति में भी पाये जाते हैं। भाई-बहन और बेटा-बेटी के लिए भी शब्द प्राप्त होते हैं। ज्यों-ज्यों पारिवारिक संगठन

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha
बढ़ता है, त्यों-त्यों ये सम्बन्ध और ये नाम बढ़ते चले जाते हैं। अंग्रेज़ी भाषा का इतिहास देखने से मालूम होता है कि इसमें **फ़ादर, मदर, ब्रदर, सिस्टर, सन, डॉटर** आदि शब्द तो पुरानी आर्यभाषा से न जाने कब से चले आ रहे हैं; **अंकल** (uncle), **आण्ट** (aunt), **नेव्यू** (nephew) आदि शब्द बहुत बाद में आये हैं, और यह स्पष्ट नहीं है कि अंकल का अर्थ चाचा है या ताया, मामा है या मौसा, अथवा नेव्यू भतीजा है या भांजा। ग्रैंड-सन, फ़ादर-इन-लॉ, सिस्टर-इन-लॉ आदि शब्द-रूपों की रचना से प्रकट है कि ये कल ही की कारीगरी हैं। अंग्रेज़ी की अपेक्षा हिन्दी में सम्बन्धों के अधिक नाम हैं। हिन्दी में ताऊ, चाचा, काका, मामा, फूफा, मौसा, जमाई, जेठ, देवर, नाती, पोता, परपोता, साला, बहनोई, भांजा, भतीजा, ससुर, दादा, नाना, ददियाससुर, ममियाससुर, चचियाससुर, ममेरा, चचेरा और फिर इनसे बने स्त्रीलिंग शब्द हमारी पारिवारिक विशालता और संगठनात्मकता के परिचायक हैं। एक हिन्दू की शादी के अवसर पर देखिए कि हमारा परिवार कितना बड़ा है, और इसकी तुलना एक यूरोपीय की शादी पर जुटे सगे-सम्बन्धियों से कीजिए।

हमारी भाषा में ५० प्रतिशत शब्द कृषिकार्य-सम्बन्धी हैं। किसान को बछड़ों-बछेरों की आयु, गुण और प्रकृति के अनुसार कई नाम आते हैं। खेतों के कई प्रकार हैं। अंग्रेज़ी में समुद्र और समुद्री जीवन से सम्बद्ध शब्दों का बाहुल्य है। अरबी में ऊँट के लिए सैकड़ों शब्दों की बहुतायत है। इस्कीमो की भाषा में कुल पाँच-छह सौ शब्द हैं और उनमें भी एक सौ के लगभग रेंडियर से सम्बद्ध हैं— वही उनकी संस्कृति का केन्द्र है। हमारी संस्कृति में गौ का क्या स्थान है, यह हमारे शब्द-समूह से जाना जा सकता है।

शब्दों से यह ज्ञान उपलब्ध होता है कि किसी जाति की संस्कृति किस दिशा की ओर, और किस विषय में विकसित हुई है। शब्द-भण्डार की सम्पत्ति संस्कृति की सम्पत्ति है। 'हिन्दी शब्द सागर' में दो लाख

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha
शब्दों का होना हमारी उच्च संस्कृति का द्योतक है। इस शब्द-भण्डार को बढ़ाना अपनी संस्कृति को उन्नत करना है। संसार में ऐसी जातियाँ भी हैं, जो चार-पाँच सौ शब्दों में अपना सारा काम चलाती हैं—उनके विचार ही इतने सीमित हैं, उनकी संस्कृति के पक्ष ही इतने संकुचित हैं कि वे इतने भर शब्दों को पर्याप्त समझती हैं।

यह भी याद रहे कि जिस जाति से संस्कृति के जो तत्त्व लुप्त हो जाते हैं, उनसे सम्बद्ध शब्दों का भी लोप हो जाया करता है। वैदिक और पौराणिक कर्मकांड से सम्बद्ध सैकड़ों शब्द अब केवल पुस्तकों की निधि बनकर रह गये हैं।

प्रत्येक भाषा का शब्द-क्रम भिन्न होता है, उसका वाक्य-गठन अन्य भाषाओं से निराला होता है, उसकी अभिव्यक्ति में अपनी एक विशेषता होती है। जापानी में श्री नेहरू नहीं कहते, नेहरू श्री कहते हैं; तीन-चार नहीं कहते, चार-तीन कहते हैं। फ़िलिपाइन की एक भाषा में 'सच-सच' (सच शब्द को दोहराने) का अर्थ हो जाता है 'शायद'। दूर क्यों जायें। हम संस्कृत में 'तं विना' (उसको बिना), 'तेन सह' (उससे साथ) कहते हैं। चीनी की लिपि चित्रात्मक है। स्त्री के लिए स्त्री का चित्र-सा डाल देते हैं। दो स्त्रियों के चित्र का अर्थ हो जाता है 'झगड़ा'।

सब जातियों की विचार-पद्धति अलग है, जो उनकी भाषा में प्रतिबिम्बित होती है। एक उदाहरण लीजिए। जिसे हम 'न्यायधर्म' कहते हैं, उसे अंग्रेज़ी में legal power (न्याय-शक्ति) कहते हैं, और जिसे हम राजधर्म कहते हैं, उसे अंग्रेज़ी में political power (राज्यशक्ति) कहते हैं। धर्म और शक्ति में जो द्योतकता की भिन्नता है, वही भिन्नता हमारी और उनकी संस्कृति में है। जिस व्यक्ति को आप अफसर कहते हैं और जिसमें किसी न किसी शक्ति के रहने का विचार झट यह शब्द जतला देता है, उसे हम कर्मचारी कहकर लोक-सेवक मानना चाहते हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शब्दों के अर्थों में संस्कृति के वे तत्त्व निहित हैं, जिनका उद्घाटन बड़े-से-बड़े इतिहासकार और आचार्य भी नहीं कर सकते। यहाँ थोड़े से उदाहरण देना उचित होगा। 'कनक' का अर्थ है 'गेहूँ', 'सोना' और 'धतूरा'। इसमें सन्देह नहीं है कि हमारे लिए गेहूँ भी सोना है—हमारी भूमि सोना ही उगलती है। सोने का मादक धतूरा होना बिहारी के इस दोहे में प्रकट है—

कनक कनक तें सौगुनी मादकता अधिकाय।
वा खाये बौरात हैं, या पाये बौराय।

'अराति' का अर्थ है 'शत्रु', परन्तु इसका मूल अर्थ है 'जो दान न करे'—राति का अर्थ दान होता है। इस अर्थ में कितना सांस्कृतिक सत्य भरा है! जो पुरुष दान नहीं करता, वह आर्य जाति का शत्रु माना जाता था।

'कंजूस' के लिए दो संस्कृत शब्दों की अर्थवत्ता देखिए। एक **'कदर्य'**, कुत्सितोऽर्यः स्वामीति, अर्थात् बुरा स्वामी। लक्ष्मी का यथार्थ अच्छा स्वामी वह है, जो उसका उचित भोग करता है; और जो उसे धरती में दबा-दबाकर रखता है, वह तो 'लक्ष्मीवाहन' है, उल्लू है, मूर्ख स्वामी है। दूसरा शब्द **'कृपण'**, कृप्यते असौ, अर्थात् कृपाभाजन है। सचमुच ऐसा आदमी दया का पात्र है, जो धन के रहते न आप खाता है, न किसी को खिलाता है।

इस प्रकार के सांस्कृतिक शब्दों में कितनी द्योतकता और उसके साथ आर्य संस्कृति का कितना ऊँचा आदर्श मिलता है! इसीलिए तो हम संस्कृत को अपनी संस्कृति की धरोहर मानते हैं। विचार-संघर्ष की एक स्थिति पर विचार कीजिए—

'धन्य' शब्द का मूल अर्थ था 'धन के योग्य, धनी।' अब इसका अर्थहै 'कृतकृत्य, सफल'। है भी सच—जिसके पास धन है वह धनी है, वह धन्य है, सफल है। सफलता के लिए धन एक बहुत बड़ा साधन है। वेद में भी प्रार्थना की गयी है **"पतयो स्याम रयीणाम्"**, अर्थात् हम धनों के स्वामी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हों। यह बात हमारी संस्कृति के अनुकूल है, निर्धन होना पाप माना गया है। संन्यासियों ने भले ही धन का तिरस्कार किया है, किन्तु हमारे जीवन का ध्येय जिन चार पदार्थों--धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष--की प्राप्ति रहा है उन में अर्थ या धन का महत्त्वपूर्ण स्थान है। दूसरी ओर, इस बात को भी नहीं भूला जा सकता कि हमने धन को 'माया' भी कहा है, जिसका अर्थ है 'धोखा, कपट'। इस अर्थ में एक चेतावनी है—यही कि दौलत चलती-फिरती छाँह है, धोखा है। इस धन का कोई विश्वास नहीं है--आज है, कल नहीं रहेगा।

हिन्दी के दो शब्द लीजिए--**कोठीवाली** (वेश्या), और **कोठी-वाला** (महाजन)। किसी युग में वह महा (बड़ा) जन (आदमी) था; हमारी जाति का नेता था। अब भी नाम से तो वह महाजन है, परन्तु काम से कोठीवाला हो गया है--कोठीवाली का साथी। दोनों के काम में जो सादृश्य है, वह इन शब्दों से भली भांति झलक रहा है।

हमारे सदाचार की बात इन दो शब्दों के मुख से सुनिए--**अवद्य** (पाप), और **तस्कर** (चोर)। ये शब्द आज हमारे शब्दभण्डार में नहीं रहे; मानों वह पाप का भय ही नहीं रह गया। हम पाप का नाम भी नहीं लेना चाहते थे। कह देते थे 'अवद्य', न कहने योग्य है। चोर को चोर न कहकर 'तस्कर' अर्थात् 'वह काम करनेवाला' कहते थे। चोरी या पाप का नाम तक लेना बुरा समझते थे; जैसे 'गोमांस' न कहकर हम 'दूसरा मांस' या 'बुरा मांस' कहते हैं।

अन्त में हम कुछ **मुहावरे और लोकोक्तियाँ** लें। इनमें हमारा युग-युग का चिन्तन और अनुभव भरा पड़ा है।

अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।

अलग पूत पड़ोसी जैसा।

आधी तजि सारी को धावे, आधी रहे न सारी पावे।

उधार खाना और फूस का तापना बराबर है।

ओछे की प्रीति, बालू की भीति।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आप भला तो जग भला।

आप काज महाकाज।

खाई खने जो और को ताको कूप तैयार।

गुड़ देने से मरे तो ज़हर क्यों दें।

घर की मुर्गी दाल बराबर।

चलती का नाम गाड़ी है।

टके का सारा खेल है।

दाम बनावे काम।

दुविधा में दोनों गये, माया मिली न राम।

थोथा चना बाजे घना।

धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का।

बड़े बोल का सिर नीचा।

साँच को आँच नहीं।

हमारे विश्वासों, अंधविश्वासों का पूरा लेखा जोखा इनमें आ जाता है।

च्यूँटी के पर लगना; ऊँट चढ़े पर भी बिल्ली का काटना; तोते की तरह आँखें फेर लेना; ग्रह टेढ़ा होना; धूप में बाल सफ़ेद करना; भीगी बिल्ली बताना।

'रामराज्य', 'ढाई दिन की बादशाहत', 'राजा बिक्रमाजीत', 'नादिर-शाही' आदि में हमारे इतिहास के कई पन्ने सिमिटकर एकजान हो गये हैं। 'अग्नि-परीक्षा', 'हुक्का-पानी बंद करना' आदि में हमारी सामाजिक प्रथाओं के अवशेष पड़े हैं।

'ईद का चाँद', 'गड़े मुर्दे उखाड़ना', 'घी के दिये जलाना', 'होली के छींटे', 'गुरु घंटाल', 'बड़ा दिन' आदि से यह परिचय मिलता है कि भारतीय संस्कृति के विकास में हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, सबका योगदान है। भारतीय संस्कृति सामासिक संस्कृति है।

•

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(ङ) भाषा और सभ्यता

संस्कृति और सभ्यता सर्वथा एक नहीं हैं; परन्तु दोनों का अन्तर इतना सूक्ष्म है कि बहुधा इन्हें पर्यायवाची माना जाता है, यह भूल है। संस्कृति का संबंध अन्तरंग से है और सभ्यता का बहिरंग से। संस्कृति आत्मा है और सभ्यता देह। प्रकृति ने हमें जो कुछ दिया है उसका अधिकाधिक उपयोग करना सभ्यता है, एवं बुद्धि द्वारा नये की सृष्टि करना संस्कृति है: सभ्यता उपयोग है और संस्कृति मानव की प्रगति है।

शहरी लोग जिन वस्तुओं का उपयोग करते हैं--मेज़, कुर्सी, सोफ़ा-सेट, टी-सेट, काफ़ी-सेट, लेमन-सेट, तरह-तरह के शर्बत, भाँति-भाँति के खाद्य और पेय पदार्थ,--वे प्रायः ग्रामीण लोगों में अप्राप्य हैं। दोनों के पहरावे में प्रायः अन्तर देखा जा सकता है। बहुत से गाँव के लोग शायद इन वस्तुओं के नाम तक नहीं जानते। वे नहीं जानते कि सोफ़ा-सेट पर पाँव लटका कर बैठना चाहिए, पानी या दूध में उँगली नहीं डालनी चाहिए, या किसी के कमरे में बिना आज्ञा प्रवेश नहीं करना चाहिए। इसी तरह बहुत से शहरी यह विचार नहीं करते कि जूता पहने-पहने खाना नहीं खाना चाहिए, दरी या कालीन पर जूतों समेत नहीं बैठना चाहिए, या बड़ों के सामने नंगे सिर नहीं जाना चाहिए। देहाती और शहरी सभ्यता का अन्तर ऐसी बातों से स्पष्ट हो जाता है। यूरोप और भारत की सभ्यता में बड़ा अन्तर है। परन्तु बहुत सी बातों का सम्बन्ध भाषा से नहीं है।

किन्तु, जब आप किसी को **'हो !'**, **'रे'**, **'ओ बाबू'** कहते सुनते हैं, और दूसरे को **'जी'**, **'हाँ जी'**, **'बाबू साहब'**, कहते पाते हैं, तो दोनों

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

की सभ्यता को भिन्न स्तर का मानते हैं। सभ्य, शिष्ट और सुशिक्षित मनुष्य अपनी भाषा का यथोचित प्रयोग करता है। छोटे के प्रति प्रयुक्त उसके शब्दों में स्नेह, और बड़ों के प्रति आदर भरा रहता है। इसी-लिए शिक्षा और सभ्यता का गहरा सम्बन्ध है, यद्यपि शिक्षित होकर भी कुछ लोग भाषा का यथास्थान, यथायोग्य व्यवहार नहीं करते। इन्होंने सुशिक्षा प्राप्त नहीं की है। शिक्षा केवल पुस्तकें पढ़ने का नाम नहीं है। बिना पुस्तक के भी माँ-बाप, बड़े-बूढ़े, बच्चों को सुशिक्षा देते रहते हैं। सभ्य मनुष्य की भाषा सत्य, मित, मधुर और धर्म्य होती है। असभ्य मनुष्य की भाषा में मिथ्यावादिता, वाचालता, कटुता और चुगलखोरी आदि विशेषताएँ मिलती हैं। वह बात-बात में गालियाँ बकता है। सभ्यता का यह तकाज़ा है कि वाणी में संयम हो, नहीं तो ऐसा वैसा आदमी सभा में बैठने योग्य कैसे होगा! सभ्य व्यक्ति किसी के दिल को चोट पहुँचानेवाली बात नहीं कहता। मधुर वाणी से वह सबको मोह लेता है और अपना सारा कार्य सिद्ध कर लेता है। दो व्यापारी व्यापार करते हैं। दोनों बड़े मेहनती और चतुर हैं। किन्तु एक की बात-बात में नम्रता और क्षमाशीलता है; दूसरा ज़रा सी बात पर बिगड़ जाता है। परिणाम यह होता है कि नम्र और मधुर वाणी वाला व्यापारी व्यापार में उन्नति कर लेता है और दूसरा हाथ मलता रह जाता है।

एक गरीब लड़की ने थोड़ा सा सामान ख़रीदा। दुकानदार ने कहा—**"बेटी, धन्यवाद! कभी-कभी इस दुकान पर अवश्य आया करो।"** इस ज़रा-सी बात ने उस लड़की पर ऐसा प्रभाव डाला कि वह सबसे कहती फिरती थी कि अमुक दुकानदार कितना भला है। थोड़े दिनों में उस दुकानदार की ख़ूब बिक्री होने लगी।

भाषा भावों और विचारों की अभिव्यक्ति है। जिसके जैसे भाव और विचार होंगे, वैसी ही भाषा होगी। इसको यों भी कह सकते हैं कि जिसकी जैसी भाषा होगी, विचार और भाव भी वैसे ही होंगे।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha
असभ्य व्यक्ति दिल्लगी भी करता है तो भद्दी भाषा में। एक्केवाले या बैलगाड़ीवाले अपने बैल या घोड़े को चलाने के लिए माँ-बहन की गालियाँ क्यों देते हैं? निम्न वर्ग के लोग विवाह के अवसर पर या होली आदि त्योहारों पर गंदे गीत क्यों गाते हैं? उन्हें ऐसे भावों की अभिव्यक्ति में मज़ा आता है। उनकी यही सभ्यता है।

सभ्य आदमी लोगों को बुलाने, पत्र लिखने या उनकी चर्चा करने में यथायोग्य भाषा का व्यवहार करता है। वह उनको **श्रीमान् जी, पंडित जी, बाबू जी** आदि शब्दों से सम्बोधित करता है। वह किसी का नाम पूछने में कहता है, **'आपका शुभ नाम क्या है।'** वह उचित स्थान पर **'कृपा', 'धन्यवाद',** आदि सभ्य शब्दों का व्यवहार करता है। किसी मित्र के साथ कोई अनजान आदमी हो तो वह उसी आदमी से नहीं पूछता कि आप कौन हैं, बल्कि अपने मित्र से पूछता है "**आपकी तारीफ़**?", "**आप कौन सज्जन हैं**?", "**आपका परिचय**?" कोई उससे सहमत न हो तो वह यह नहीं कहता कि "**आप ग़लती पर हैं**" या "**आप मेरी बात नहीं समझे।**" उसकी सभ्यता इन शब्दों में प्रकट होती है, "**मैं अपना मतलब ठीक नहीं समझा सका**" या "**मेरी बात स्पष्ट नहीं थी।**"

कई लोगों की आदत हो जाती है कि बात-बात में कुछ आवश्यक शब्दों को दोहराते रहते हैं, जैसे "**जो है सो**", "**भगवान् की दया से**", "**ऐसा कर करके**", या "**आप समझे।**" इनसे अगला आदमी खीझ जाता है।

सभ्यता का यह भी तक़ाज़ा है कि चार मित्रों में ऐसी भाषा में बात की जाये जिसे सामान्य रूप से सब समझते हों। यह नहीं कि दो आदमी तो ठेठ कन्नौजी में बात करते रहे और राजस्थान से आनेवाले या महाराष्ट्र से आनेवाले मित्र उनका मुँह ताकते रह गये।

सभ्य व्यक्ति बीभत्स भावों को छिपाकर बात करता है। इसी-लिए हमारी भाषा में **टट्टी** के लिए **पाखाना, शौच, जंगल, संडास**;

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मृत्यु के लिए **देहावसान, शरीरत्याग, निधन, स्वर्गवास; अन्धे** के लिए **सूरदास; मूर्ख** के लिए **सीधा-सादा, भोला-भाला;** आदि शब्द विद्यमान हैं।

यह ठीक ही कहा गया है कि भाषा का प्रश्न सभ्यता का प्रश्न है। अंग्रेज़ी पढ़े-लिखे अंग्रेज़ी सभ्यता को क्यों अपना लेते हैं और संस्कृत के पंडित सादा और सरल क्यों होते हैं? आप विचार करके देखिए। हमारी सभ्यता में सादगी देशी है, भोगविलास की वृद्धि फ़ारसी, तुर्की से हुई है, और आडम्बर अंग्रेज़ी सभ्यता से आया है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि थोड़ा-बहुत भोगविलास प्राचीन भारत में भी था, परन्तु ये शरबत, शराबें, प्याले और सुराहियाँ, हूरें, कोर्मा, कबाब, बर्फ़ी, जलेबी, फिरनी, पुलाव, गुलाब, इत्र और जलसे, दरबार, महफ़ल आदि शब्द और उनसे जुड़ी हुई सभ्यता तुर्की-फ़ारसी शासकों की देन है। हमारी तत्सम और तद्भव शब्दावली में धार्मिक, आध्यात्मिक और साहित्यिक शब्दों की प्रचुरता और लौकिक शब्दों की कमी इस बात का परिचायक है कि हम 'सादा जीवन और उच्च विचार' के भक्त रहे हैं। अंग्रेज़ी आडम्बर को अंग्रेज़ी से अपनाये हुए शब्दों में देख ही लीजिए।

एक ओर किसी भाषा का ग्रहण करना उसकी सभ्यता के ग्रहण करने का पर्याय है तो दूसरी ओर किसी सभ्यता के ग्रहण करने का अनिवार्य परिणाम है उससे सम्बद्ध भाषा का ग्रहण किया जाना। प्रत्येक सभ्यता अपने साथ नये पदार्थ लाती है और प्रत्येक पदार्थ अपने साथ लगा हुआ शब्द भी लाया करता है। यदि हम उस पदार्थ को अपनाते हैं, तो उससे सम्बद्ध शब्द को भी प्रायः अपनाना पड़ता है। देखिए फ़ारसी और अंग्रेज़ी से उधार लिये हुए शब्दों की सूचियाँ। हिन्दी के नेताओं तथा लेखकों का एक वर्ग ऐसा है, जो कहता है कि हम हिन्दी में संस्कृतमूलक शब्दों से भिन्न कोई शब्द स्वीकार नहीं करेंगे। कवि जयशंकर प्रसाद की कृतियों में अरबी-फ़ारसी या अंग्रेज़ी भाषा के शब्द नहीं के बराबर हैं। वे बौद्ध युग में विचरते रहे और आधुनि-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कता से अछूता रहने में अपनी बड़ाई मानते थे। बनारस के एक सज्जन को मैं जानता हूँ जिन पर "शुद्ध हिन्दी" का भूत-सा सवार है। वे टिकट को 'यात्रापत्र', और स्कूल को 'पाठशाला' ही कहेंगे। यह मनोवृत्ति मेरे विचार में व्यावहारिक नहीं है। इससे हिन्दी उपहासास्पद हो जाती है। सीमेण्ट को 'वज्रचूर्ण' और रेलवे सिगनल को 'लोहपथ-गामिनी पथप्रदर्शिका' ऐसे ही लोग कहना चाहते हैं। जिन्हें अपनी भाषा की पवित्रता का इस सीमा तक विचार हो, उन्हें अपनी सभ्यता में विदेशी सभ्यता का प्रवेश नहीं होने देना चाहिए। किन्तु न तो यह संभव है, न वह। कौन है जो बीसवीं शती के उत्तरार्द्ध में रहता हुआ पाँचवीं शती में साँस ले सकेगा? डाक्टर अब्दुल हक ने रेडियो को 'आला-ए-सौत' (शब्द-यंत्र) और श्यामसुन्दरदास ने रेलगाड़ी को 'वाष्पयान' कहा तो सही, पर क्या ये शब्द चल सके?

हमारी ही सभ्यता के द्योतक अनेक शब्द हैं—पहरावे में **धोती, अँगिया, साड़ी, पगड़ी**; आभूषणों में **कंठा, पायल, कर्णफूल**; खानों में **भात, पुलाव, पूरी, कचौरी, रसगुल्ला, पेड़ा**। क्या इनके ठीक पर्याय अंग्रेज़ी या किसी अन्य भाषा में मिल सकेंगे? क्या इनका अनुवाद हो सकता है? और तो और '**रोटी**' शब्द का अनुवाद अंग्रेज़ी में 'ब्रेड' करते तो हैं, किन्तु 'रोटी' और 'ब्रेड' एक ही चीज़ नहीं हैं। इसी तरह **कोट, पेंट, जेली, जैम, केक, चाकलेट, बिस्कुट** आदि का अनुवाद नहीं हो सकता। सभ्यता की भिन्नता के कारण शब्दावली की भिन्नता रहेगी ही; एवं सभ्यता के सम्मिश्रण से शब्दावली भी सम्मिश्रित अवश्य होगी।

किसी देश की सभ्यता पर किन-किन बाहरी सभ्यताओं का प्रभाव पड़ा है, इसका समाधान उस भाषा की शब्दावली के नाना तत्त्वों की खोज से किया जा सकता है।

अनेक शब्द ऐसे हैं जिनमें हमारी सभ्यता का इतिहास छिपा है। '**घड़ी**' शब्द को लें। एक समय था कि पानी के एक गड्ढे में छोटा-सा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

घड़ा (अर्थात् घड़ी, जैसे टोकरा का छोटा रूप टोकरी, प्याला का छोटा रूप प्याली) रख दिया जाता था जिसके पेंदे में छेद होता था। इस छेद से पानी भीतर जाता रहता था; और एक नियमित समय में वह घड़ा भरकर डूब जाता था। इस तरह लोग गिन लेते थे कि एक घड़ी हो गयी, दो घड़ियाँ हो गयीं। दिन-रात में ऐसी ६० घड़ियाँ हो जाती थीं। समय बतानेवाले यन्त्र का रूप अब बिलकुल बदल चुका है, परन्तु नाम वही है। '**पत्र**' का अर्थ है पत्ता। हमारे पुरखा पहले पत्तों पर ही लिख लेते थे--भोजपत्रों पर तो कल तक बड़े-बड़े ग्रंथ लिखे जाते रहे हैं। लेकिन सामान्यत: वे पत्र (पत्ते) पर ही चिट्ठी लिखते थे, इसलिए चिट्ठी का नाम 'पत्र' पड़ा। जब पत्तों से काग़ज़ बना या पत्तों की जगह काग़ज़ का व्यवहार होने लगा, तो भी '**पत्र**' पत्र ही रहा; और फिर जब अख़बार बन गया तो भी नाम वही रहा-- अर्थ भले ही बदल गया। झरोखा पहले गोलाकार होता था, जैसे गाय की आँख होती है, उसी से उसका नाम '**गवाक्ष**' रखा गया। चूँकि उस 'आँख' से रश्मियाँ झर-झरकर आती थीं, इसलिए उसका नाम 'झरोखा' भी पड़ा। इसी प्रकार के शब्द '**ग्रन्थ**', '**सूत्र**' और '**पुस्तक**' हैं। पहले ग्रंथ का यही रूप था कि बीच में ग्रन्थि या गाँठ लगाते थे। इन शब्दों से उनसे सम्बद्ध वस्तुओं के विकास की सब अवस्थाओं का पता चलता है।

अंग्रेज़ी का '**शेमीज़**' पहले तैराकों का पहरावा था, आज उसे औरतें पहनती हैं। '**जम्पर**' सिपाहियों और खिलाड़ियों के लिए होता था; आज स्त्रियों के ब्लाउज़ को ही जम्पर कहते हैं। इन शब्दों का इतिहास थोड़ा-बहुत अंग्रेज़ी सभ्यता का इतिहास है। आज भी हम उनकी स्त्रियों को पुरुषों की नक़ल करते देख रहे हैं।

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(च) हिन्दी भाषा का उद्‌गम और विकास

हिन्दी का इतिहास वस्तुतः वैदिक काल से आरम्भ होता है। उससे पहले इस आर्य भाषा का स्वरूप क्या था, यह सब कल्पना का विषय बना हुआ है, कोई लिखित प्रमाण नहीं मिलता। वैदिक भाषा ही प्राचीनतम हिन्दी है। इस भाषा के इतिहास का यह दुर्भाग्य है कि युग-युग से इसका नाम परिवर्तित होता रहा है, कभी वैदिक, कभी संस्कृत, फिर प्राकृत और अपभ्रंश और अब हिन्दी। तमिल, रूसी, चीनी, अंग्रेजी, जर्मन सभी परिवर्तित हो गयी हैं---उनका जो रूप १००० वर्ष पूर्व था, वह आज के भाषाभाषी के लिए सुबोध नहीं रह गया। लोगों ने उनके परिवर्तित रूप के प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक भेद तो बताये, किन्तु उनका नाम नहीं बदला। भारत में प्रत्येक युग की भाषा का नया नाम रखा जाता रहा है! बात कुछ ऐसी ही है कि एक बच्चे को घरवाले 'कल्लू' कहते थे, गाँव भर में उसे इसी नाम से पुकारा जाता था। स्कूल में दाखिल करने लगे तो मास्टर के कहने पर उसका नाम वल्लभ-दास दर्ज किया गया। हाई स्कूल पास किया, एक महात्मा से कहीं भेंट हो गयी। उनके पूछने पर इसने जब अपना नाम बताया तो उन्होंने कहा कि ब्राह्मण होकर अपने नाम के आगे 'दास' रखते हो! लड़का समझ गया; उसने अपना नाम बदलकर 'विद्याधर त्रिपाठी' रखा लिया। यह नाम कई वर्ष चला। एक कारख़ाने में नौकरी मिली। कारख़ाने के मालिक का नाम भी 'विद्याधर त्रिपाठी' था। लोगों को बड़ा भ्रम होता था। आखिर मालिक ने कहा कि या तो अपना नाम बदलो या कोई और नौकरी ढूँढ़ो। इसने नाम बदल लिया। अब हो गये 'लक्ष्मी दत्त तिवारी।' धार्मिक वृत्तिवाले आदमी थे। नौकरी से अवकाश

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्राप्त करने पर संन्यास ले लिया, और हो गए 'प्रकाशानन्द'। किन्तु ये प्रकाशानन्द एक समय में लक्ष्मीदत्त थे, उससे पहले विद्याधर, यही बल्लभदास थे और बचपन में कल्लू। कल्लू ही प्रकाशानन्द हो गये। इनका रूप भी बदला, बुद्धि भी विकसित हुई, उम्र भी बढ़ गयी, किन्तु वास्तव में व्यक्ति तो वही थे ना !

वैदिक ग्रौर संस्कृत हिन्दी के प्राचीन रूप हैं; पालि, प्राकृत और अपभ्रंश उसके मध्यकालीन रूप; और हिन्दी उन्हीं सबका वर्तमान रूप है। इनके रूपों में भिन्नता अवश्य है; परन्तु जैसा कि हम इस सारी पुस्तक में देखेंगे, समानता के लक्षण भी बहुत अधिक हैं।

प्राचीन आर्यभाषा, अर्थात् वैदिक और संस्कृत की मुख्य-मुख्य विशेषताएँ ये थीं—

१. यह भाषा विभक्ति-प्रधान थी। २. इसमें शब्द-निर्माण की बहुत भारी सामर्थ्य थी—उपसर्गों, प्रत्ययों की सहायता से एक धातु से बीसियों शब्द बन जाते थे, जैसे कृ धातु से **उपकार**, **प्रकार**, **अपकार**, **विकार**, **आकार**, **अधिकार**, **प्रतिकार**, **संस्कार**, **करण**, **अनुकरण**, **प्रकरण**, **उपकरण**, **कृति**, **विकृति**, **संस्कृति**, **प्रकृति**, **कृत**, **अधिकृत**, **उपकृत**, **संस्कृत**, **करणीय**, **कार्य**, **कर्तव्य**, **क्रिया**, इत्यादि।

३. इसमें तीन वचन, तीन लिंग और आठ कारक थे। सभी संज्ञाओं, विशेषणों और सर्वनामों के रूप और प्रयोग इनके अनुसार बदल जाते थे।

४. क्रिया में आत्मनेपद (जैसे बोधते) और परस्मैपद (जैसे गच्छति) के अनुसार क्रियाओं के भेद थे। ये क्रियाएँ दस गणों में विभक्त थीं और प्रत्येक गण की क्रिया से निराले रूप-भेद होते थे। प्रत्येक क्रिया के रूपान्तर दस लकारों (कालों और भावों) के अन्तर्गत भिन्न-भिन्न हो जाते थे।

५. क्रिया में लिंगभेद नहीं था।

६. उच्चारण में संयुक्त व्यंजनों का बाहुल्य था। हमारी जो

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वर्णमाला है, यह मूलतः प्राचीन भारतीय आर्यभाषा की थी। इसमें **ट, ठ, ड, ढ, ण** का व्यवहार धीरे-धीरे बढ़ता गया और **ऋ, ॠ** तथा **ष** का घटता गया है।

बौद्ध और जैन क्रांतियों के फलस्वरूप जनभाषाओं ने सिर उठाया। छठी शती ईस्वी पूर्व से मध्ययुगीन आर्यभाषाओं का युग आरंभ हुआ। इनमें पालि, बाद में प्राकृतों और उनके बाद अपभ्रंशों में भरपूर साहित्य लिखा गया। पालि में **ऋ, लृ, श, ष, ऐ, औ** और विसर्ग (:) का लोप हो गया। संयुक्त व्यंजन बदलकर द्वित (डबल) व्यंजन हो गये, जैसे **कर्म** से **कम्म**, **अक्षि** से **अक्खि**, **कार्य** से **कज्ज**। संज्ञा, सर्व-नाम और विशेषण की आठ विभक्तियों में से छह शेष रह गयीं। वचन दो रह गये—एक वचन और बहुवचन। लिंग तीन ही रहे। क्रिया में आत्मनेपद और परस्मैपद का भेद समाप्त हो गया। गण और लकार भी कम हो गये। इस प्रकार पालि व्याकरण संस्कृत व्याकरण की तुलना में सरल हो गया।

जब पालि भी जनभाषा से दूर रह गयी, तो प्राकृतों में साहित्य लिखा जाने लगा। नाटकों, काव्यों और कथाओं में इनका विस्तृत प्रयोग हुआ। इनमें तद्भव शब्दों की भरमार है। दो स्वरों के बीच में आने-वाले अल्पप्राण व्यंजनों का प्रायः लोप हो गया, जैसे **राजा** से **राया**, **काकः** से **काओ**, **कति** से **कइ**। महाप्राण व्यंजनों का /**ह**/ हो गया, जैसे **दधि** से **दहि**, **मुख** से **मुह**, **मेघ** से **मेह**। शब्द के बीच में पड़नेवाले /**म**/ का /**वँ**/ और /**प**/ का /**व**/ हो गया, जैसे **कमल** से **कँवल**, **भ्रमर** से **भँवर**, और **ताप** से **ताव**, **कपाट** से **कवाड**। इन शब्दरूपों में हिन्दी के बीज दर्शनीय हैं। प्राकृत में द्रविड़ भाषाओं की टवर्गीय प्रवृत्ति भी बढ़ती रही है। प्राकृत का व्याकरण पालि से भी सरल हो गया। वचन तो दो ही रह गये और लिंग भी दो रह गये—स्त्रीलिंग और पुल्लिंग। कारक चार रह गये, और क्रिया के रूपों में भी खूब छँटाई हुई।

साहित्यिक प्राकृतों के छह भेद माने गये हैं—माहाराष्ट्री, शौरसेनी,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मागधी, अर्धमागधी, पैशाची और अपभ्रंश। इनमें शौरसेनी से ब्रजभाषा और खड़ीबोली जैसी बड़ी-बड़ी बोलियों का विकास हुआ, अर्धमागधी से अवधी का, मागधी से बिहार की हिन्दी बोलियों का। अपभ्रंश गुजरात और राजस्थान की प्राकृत थी। आभीरों, गुर्जरों, जाटों और राजपूतों के साथ अपभ्रंश का भी साहित्यिक उत्थान हुआ। युग के साथ भाषा तो बदलती ही है। अपभ्रंश भी अपने बदले हुए रूप में साहित्य में प्रवेश करने लगी। अपभ्रंश की कई बोलियाँ थीं। सामान्य रूप से इनमें द्वित्त (डबल) व्यंजन, टवर्ग तथा महाप्राण व्यंजनों की बहुलता उल्लेखनीय है, जैसे

पढमु पविट्ठहु हिय तसु, पच्छा भवणि पविट्ठ।

अर्थात्, प्रथम पैठो हिय में उसके, पीछे भवन में पैठो।

अन्धा अन्ध कढाव तिम, वेण्ण वि कूव पडेइ।

अर्थात् अंधा अंधे को निकालने लगे, (तो) वे दोनों ही कुएँ में पड़ेंगे।

इसे अनेक विद्वानों ने पुरानी हिन्दी कहा है। इसका उच्चारण और व्याकरण हिन्दी के अधिक निकट है। अपभ्रंश की सबसे प्रमुख विशेषता इसके शब्द-भण्डार में है, जो देशी शब्दों से भरा पड़ा है। कुछ रोचक शब्द यहाँ दिये जाते हैं—**चेल्ला**, **चंगा**, **लुक्को**, **पागल**, **तलाय**, **सक्कर**, **कोंचा-ताला** (कुंजी-ताला), **टोप्पी**, **भित्तरि**, **बालु**, **सेर**, **लडको**, **साँवलो**, इत्यादि।

अपभ्रंश का युग सन् ११०० ई० के आसपास समाप्त हो गया, और अब हिन्दी आदि आधुनिक भाषाओं के युग का आरंभ हुआ। हिन्दी के निजी विकास का इतिहास पिछले नौ सौ से कुछ कम वर्षों का है। इस पूरे समय को तीन कालों में बाँटा गया है :—

(१) आदिकाल (११०० से १५०० ई० तक)

(२) मध्यकाल (१५०० से १८०० ई० तक)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(३) आधुनिक काल (१८०० से)

हिन्दी का आदिकाल उसका शैशव काल है। अभी वह अपभ्रंश के प्रभाव से पूर्णतया मुक्त नहीं हो पायी थी। हिन्दी का अपना स्वरूप बहुत स्पष्ट नहीं हो पाया था। कुछ नयी ध्वनियों का विकास हो रहा था, जैसे स्वरों में ऐ, औ, और व्यंजनों में ड़, ढ़, न्ह, म्ह। कुछ और व्यंजन ध्वनियों के उच्चारण में भी अंतर आ गया था। विभक्ति-चिह्नों के स्थान पर स्वतंत्र शब्दों का प्रयोग बहुत बढ़ गया था। शब्दसमूह की दृष्टि से आदिकाल की हिन्दी अपभ्रंश से बहुत भिन्न नहीं थी। उसमें तद्भव शब्द सर्वाधिक थे, तत्सम शब्द उनसे कम और देशी और भी कम थे। फ़ारसी-अरबी तत्त्व का प्रवेश भी होने लगा था। विदेशी शब्द पहले शासकवर्ग में आये, फिर मध्यम वर्ग में और अब जनसाधारण में व्याप्त हो रहे थे।

इस काल के साहित्य में प्रमुखतः अपभ्रंश-मिश्रित पश्चिमी हिन्दी का प्रयोग मिलता है। राजस्थानी, ब्रजभाषा और खड़ीबोली सब पश्चिमी हिन्दी की बोलियाँ हैं जिनमें बहुत सुंदर काव्य उपलब्ध है। पूर्वी हिन्दी विद्यापति और नाथों के काव्य में प्राप्त होती है। किन्तु इस पर पश्चिमी हिन्दी का प्रभाव स्पष्ट दिखायी देता है। कुल मिलाकर यह कहना सही होगा कि हिन्दी का कोई एक परिनिष्ठित रूप विकसित नहीं हुआ था।

मध्ययुग में हिन्दी में अनिश्चितता के स्थान पर निखार आ गया। पूर्व में मैथिली और अवधी; राजस्थान में मरुभाषा (मारवाड़ी); दक्षिण में सूफ़ी कवियों और बादशाहों की दक्खिनी; दिल्ली और उसके आस-पास खड़ीबोली; ब्रजमंडल में ब्रजभाषा का साहित्यिक रूप विकसित हुआ। कबीर आदि सन्तों की 'सधुक्कड़ी' भाषा का विकास भी प्रचुर मात्रा में हुआ। अपभ्रंश के रूप समाप्तप्राय हो गये।

अरबी-फ़ारसी का प्रभाव व्यापक हो गया। ध्वनियों में विशेषतः

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पढ़े-लिखे लोगों की भाषा में **क़, ख़, ग़, ज़, फ़** ये पाँच व्यंजन ध्वनियाँ सम्मिलित हो गयीं। इस युग की दरबारी भाषा फ़ारसी थी। अतः उच्च वर्ग के लोग फ़ारसी पढ़ते थे। फ़ारसी के सैकड़ों शब्द हिन्दी में घुलमिल गये। कबीर, तुलसी, बिहारी आदि कवियों ने भी उनका खुलकर प्रयोग किया। शब्दों के क्षेत्र में संस्कृत शब्दावली का भी बहुत व्यापक प्रचार हुआ। यह युग भक्ति आंदोलन का युग था। धर्म की चर्चा में संस्कृत शब्दों का प्रयोग अनिवार्य हो गया। आदिकाल की अपेक्षा बहुत अधिक तत्सम शब्द हिन्दी में प्रविष्ट हुए। इसीलिए तद्‌भव और देशी शब्दों का प्रयोग कुछ कम हुआ।

उत्तरी भारत में वैष्णव भक्ति के अधिक प्रचार के कारण हिन्दी की दो बोलियों का विशेष विकास हुआ। एक तो अवधी का जिसके दो रूप प्राप्त होते हैं--सूफ़ियों की ठेठ अवधी और तुलसी आदि राम-कवियों की साहित्यिक अवधी। बाद में अवधी का विकास रुक गया। दूसरा ब्रजभाषा का जिसने बहुत उन्नति की, और वे बोली से उठकर भाषा बन गयी। कृष्ण काव्य की तो लगभग एकमात्र भाषा ब्रजभाषा है। कृष्णकाव्य के लालित्य और माधुर्य का इतना प्रभाव पड़ा कि क्रमशः इसकी श्रेष्ठता सारे हिन्दी प्रदेश में प्रतिष्ठित हो गयी। सत्रहवीं शताब्दी के मध्य तक मैथिली, राजस्थानी और दक्खिनी हिन्दवी, ये सब अपने-अपने क्षेत्र में सिकुड़कर रह गयीं और इन क्षेत्रों की साहित्यिक भाषा भी ब्रजभाषा हो गयी। किन्तु साहित्यिक ब्रजभाषा जनभाषा से बहुत दूर पिछड़ गयी। केशव, रसखान, बिहारी, देव, घनानन्द आदि रीतिकालीन कवियों ने इसे कोमल-कान्त, अलंकृत, सरस, भावमयी और प्रौढ़ तो बना दिया; एवं भूषण, रसलीन आदि ने वीर रस में इसका प्रयोग करके इसको श्रृंगारी गर्त से निकालने की चेष्टा भी की; किन्तु सामान्य रूप से ब्रजभाषा सामाजिक चेतना की नहीं, सामन्ती विलास की भाषा बनी रह गयी।

इसकी प्रतिक्रिया में आधुनिक युग का आरंभ होता है। ब्रजभाषा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

की परम्परा क्षीण हो गयी, संत-परम्परा की मिली-जुली भाषा भी धीरे-धीरे समाप्त हो गयी और साहित्य में केवल खड़ीबोली का बोल-बाला हो गया। खड़ीबोली का परिनिष्ठित रूप बहुत धीरे-धीरे विकसित हुआ। भारतेन्दु काल तक की भाषा अस्थिर थी। व्याकरण के रूपों में अनिश्चितता और बहुरूपता थी; वाक्य शिथिल और अन्वय-हीन थे। भाषा को आदर्श और स्थिर रूप देने का बहुत कुछ श्रेय महावीरप्रसाद द्विवेदी को है। उन्होंने खड़ीबोली का रूप निखारने में बीसियों लेखकों और साहित्यकारों का पथप्रदर्शन किया। भाषा का परिष्कार और परिमार्जन करने में मैथिलीशरण गुप्त और उनके बाद छायावादी युग के कवियों का बड़ा हाथ है। अब तो यह उन्मुक्त हो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में व्याप्त है। इसके विकास में ईसाई मिशनरियों, पत्र-पत्रिकाओं, रेडियो, सिनेमा सबका महत्त्वपूर्ण योगदान है।

इस युग में तत्सम शब्दावली का पुनरुद्धार हुआ, और शिक्षित वर्ग की भाषा में तो तद्भवों की अपेक्षा तत्सम शब्दों का बाहुल्य हो गया। ऐसा होना आवश्यक था। हिन्दी ज्ञान-विज्ञान का माध्यम बनी। इसके लिए हज़ारों-लाखों शब्दों के निर्माण की आवश्यकता पड़ी। यह सामर्थ्य संस्कृत में ही है। अंग्रेज़ी का प्रभाव शब्दावली पर तो पड़ा ही, हिन्दी की शैली पर भी पड़ा। सैकड़ों शब्द अंग्रेज़ी और अन्य यूरोपीय भाषाओं से आये, साथ में नये ढंग की अभिव्यक्ति भी होने लगी। भारत की नाना भाषाओं से भी हिन्दी ने बहुत से शब्द ग्रहण किये हैं। हिन्दी अब जीवन के प्रत्येक क्षेत्र के लिए समर्थ भाषा है।

अंग्रेज़ी से **ऑ** ध्वनि को बहुत कुछ अपना लिया गया है जैसे **कॉलेज, डॉक्टर** में। मराठी और दक्षिण की भाषाओं का **ळ** भी हमारी लिपि में स्थान पा रहा है। संस्कृत की विशिष्ट ध्वनियों का शुद्ध उच्चारण करने का अधिकाधिक आग्रह है। **श**, **ष**, और **स** के उच्चारण में

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भिन्नता की जाती है, **व** और **ब** का, एवं **य** और **ज** का ठीक उच्चारण हमारी भाषागत संस्कृति का अंग बन गया है। अब **ऋषि विश्वामित्र** को **रिसि बिस्वामित्र** या **विस्वामित्तर** बोलनेवाले को सुशिक्षित नहीं माना जाता।

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(छ) हिन्दी की विशेषताएँ

विश्वभाषा—संसार में आज कितनी भाषाएँ बोली जाती हैं, यह निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता। कहते हैं, "कोस-कोस पर बदले पानी, चार कोस पर बानी" अगर आठ मील पर बोली बदल जाती है, तो अनुमान कीजिए कि इस भूमंडल के ८ करोड़ वर्गमील में फैले हुए क्षेत्र में एक करोड़ बोलियाँ तो होंगी ही। किन्तु जैसा कि हमने देखा, बोली और भाषा में अन्तर है। भाषाओं की कुल संख्या २७९६ बतायी जाती है। इनमें १३ भाषाएँ ऐसी हैं जिनमें प्रत्येक के बोलनेवालों की संख्या ७ करोड़ से ऊपर है—

भाषा	**बोलनेवालों की संख्या (करोड़ों में)**	**भाषा**	**बोलनेवालों की संख्या (करोड़ों में)**
चीनी	६५	फ्रेंच	१०
अंग्रेज़ी	४५	हिन्देशियाई	१०
हिन्दी	२६	पुर्तगाली	९
रूसी	२२	बँगला	९
स्पेनी	१४	इतालवी	८
जापानी	१२	अरबी	७
जर्मन	१२		

चीनी केवल राष्ट्रीय दृष्टि से एक भाषा है। वास्तव में यह कई भाषाओं का एक नाम है। उत्तर और दक्षिण की चीनी में इतना अंतर है जितना हिन्दी और बँगला में। भारत में प्रांतीयता की भावना इतनी प्रबल है कि हम अपनी-अपनी प्रादेशिक भाषा को आगे रखते हैं, पूरे देश की राष्ट्रभाषा हिन्दी हीन पड़ जाती है। यदि हम चीन

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

की तरह भारत की भाषा हिन्दी मानें, तो इसके बोलनेवालों की संख्या ५२ करोड़ से कम नहीं है। इस प्रकार वास्तव में हिन्दी का स्थान विश्व की भाषाओं में दूसरा होना चाहिए।

अंग्रेज़ी इंग्लैंड में ४-५ करोड़ की और अमेरिका में १४ करोड़ की भाषा है। इसके बोलनेवाले २६-२७ करोड़ लोग उन देशों में बसे हुए हैं जहाँ अंग्रेज़ों के उपनिवेश रहे हैं अथवा जहाँ उनका राजनीतिक प्रभाव प्रबल रहा है। हिन्दी को अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में इस तरह फैलने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ है। भारत के बाहर बर्मा, लंका, मारिशस, मलाया, दक्षिण और पूर्वी अफ्रीका में हिन्दी बोलने-समझने वालों की संख्या बहुत अच्छी-ख़ासी है। एशिया की यह एकमात्र भाषा है, जो अपने देश के बाहर भी व्यवहृत होती है। वितरण की दृष्टि से अंग्रेज़ी का महत्त्व चीनी और हिन्दी से अधिक है। अंग्रेज़ी बोलनेवाले सभी महाद्वीपों में फैले हुए हैं।

भारत की राष्ट्रभाषा—'हिन्द' शब्द 'सिन्ध' का फ़ारसी रूप है, जैसे 'सप्ताह' का 'हफ़्ता', अथवा 'सहस्र' से 'हज़ार'—संस्कृत का /**स**/ फ़ारसी में /**ह**/ हो जाता है। सिन्धु नदी के पार के पूरे महादेश को वे 'हिन्द' कहते थे। हिन्द की भाषा का नाम 'हिन्दी' है। इसी अर्थ में फ़िरदौसी, अलबरूनी (११वीं शती) अमीर ख़ुसरो (१४वीं शती) और अबुल फ़ज़ल (१६वीं शती) आदि ने हिन्दी शब्द को ग्रहण किया है। बंगाली, गुजराती, तिलंगी (तेलुगु), मराठी, कर्नाटकी (कन्नड़), बिलोचिस्तानी और कश्मीरी तक को उन्होंने हिन्दी की बोलियों में गिनाया है। 'तुज़के जहाँगीरी' में भी हिन्दी का अर्थ है '**हिन्दी की कोई भाषा**।' हमारी भाषा का यह नाम मुसलमान आगन्तुकों द्वारा दिया हुआ है। इस शब्द की सार्थकता इसी में है कि हम सब इसे हिन्द की भाषा मानें। प्रत्येक समुन्नत, स्वतन्त्र, स्वाभिमानी देश की अपनी राष्ट्रभाषा होती है। भारत में युग-युग से मध्यदेश की भाषा सारे देश का माध्यम बन जाती रही है। संस्कृत, पालि, प्राकृत, और अब हिन्दी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha
क्रमशः अपने-अपने युग में देश भर में प्रयुक्त होती रही है। दक्षिण के आचार्य——वल्लभाचार्य, विट्ठल, रामानुज, रामानन्द आदि इसकी राष्ट्रीय और सांस्कृतिक एकता को समझकर इसे अपने व्यवहार में लाते रहे। महाराष्ट्र के नामदेव और ज्ञानेश्वर, गुजरात के नरसी मेहता, पंजाब के नानक, असम के शंकरदेव, बंगाल के चैतन्य महाप्रभु आदि ने हिन्दी को अपने धर्म, सांस्कृतिक प्रचार और साहित्य का माध्यम बनाया था।

भारत के राष्ट्रीय उत्थान में हिन्दी की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। बंगाल के राजा राममोहन राय, केशवचन्द्र सेन, बंकिमचन्द्र चटर्जी, महर्षि अरविन्द, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, रवीन्द्रनाथ टैगोर प्रभृति महानुभावों ने कहा कि देश की एकता के लिए हिन्दी अनिवार्य है। यह उल्लेखनीय है कि हिन्दी का पहला छापाखाना, पहला हिन्दी समाचार-पत्र, हिन्दी को एम० ए० तक पाठ्यक्रम में स्थान देनेवाला पहला विश्वविद्यालय कलकत्ता में था। गुजरात से स्वामी दयानन्द, महात्मा गांधी प्रभृति भारत के मूर्धन्य नेताओं ने हिन्दी को सर्वात्मना देशोन्नति का मुख्य आधार माना है और इसे राष्ट्रीय एकता की भाषा कहा है। लोकमान्य बालगंगाधर तिलक, महापण्डित डॉ० भण्डारकर, गोखले, काका कालेलकर आदि महाराष्ट्रीय नेताओं ने, एवं दक्षिण के राजगोपालाचारी, कृष्णस्वामी अय्यर, और अनन्तशयनम् आयंगर जैसे महापुरुषों ने स्वीकार किया है कि राष्ट्रभाषा होने की क्षमता केवल हिन्दी में है, यही जन-जन की सामान्य भाषा है। भारत के मेलों और तीर्थस्थानों, यहाँ की रेलगाड़ियों और सार्वजनिक सभाओं में जाकर सुनिए——सर्वत्र हिन्दी बोली और समझी जाती है। अखिल भारतीय सेवाओं, व्यापार, यातायात और शिक्षा आदि के कारण लाखों अहिन्दी-भाषी परिवार हिन्दी से परिचित हैं। दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, एवं मद्रास, वर्धा, कटक, आदि की परीक्षाओं में डेढ़-दो करोड़ विद्यार्थी बैठ चुके हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हिन्दी से राष्ट्र का सम्मान है।

राजभाषा--१९५० ई० से हिन्दी भारत की राजभाषा है। इससे इसका गौरव बहुत बढ़ गया है। यह ठीक है कि अभी हम पूरी तरह अंग्रेज़ी की दासता से मुक्त नहीं हो पाये, किन्तु पिछले २०-२५ वर्षों में हिन्दी ने जो उन्नति की है, वह इतने थोड़े समय में किसी भाषा के इतिहास में नहीं हुई। हिन्दी इस समय उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, बिहार, राजस्थान, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश और दिल्ली की एकमात्र राज्य-भाषा है। अन्य राज्यों के साथ पत्र-व्यवहार में भी इसका प्रयोग होता है। भारत संघ की यह वैकल्पिक भाषा है, अर्थात् इसके साथ अंग्रेज़ी भी यत्र तत्र व्यवहृत होती है।

व्यावसायिक भाषा—देश का सारा वाणिज्य-उद्योग-व्यवसाय हिन्दी के माध्यम से सम्पन्न होता है। बंगाल की जूट मिलों से लेकर मैसूर के चंदन और रेशम के कारख़ानों तक हिन्दी ही व्यवसाय की भाषा है। अहमदाबाद के कपड़े के कारखानों में देखिए; भिल्लई, दुर्गापुर और राउरकेला के लोहे और इस्पात के कारख़ानों का निरीक्षण कीजिए--सर्वत्र हिन्दी ही का प्रचलन है।

हिन्दी मध्यदेश के लगभग २० करोड़ लोगों की मातृभाषा है। उन्हें यह अपनी माँ के दूध के साथ संस्कार के रूप में मिलती है। उनका प्रारंभिक ज्ञान इसी के द्वारा होता है। उनकी सारी शिक्षा का माध्यम हिन्दी ही है।

सांस्कृतिक दृष्टि से हिन्दी भारत की किसी आधुनिक भाषा से पीछे नहीं है। यह मानी हुई बात है कि तुलसीदास के उच्च, सांस्कृतिक धरातल को आज तक कोई कवि छू तक नहीं पाया। मध्य देश भारत का हृदय है। मध्यदेश की संस्कृति की संरक्षिका हिन्दी एक प्रकार से सारे भारत की विशुद्ध संस्कृति की धरोहर है। हिन्दी साहित्य इतना समृद्ध है कि आज इसका स्थान विश्व के बड़े-बड़े साहित्यों में होता है। यह हमारे लिए सन्तोष और गौरव की वस्तु है। हिन्दी में साहित्य की सभी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha
विधाओं—काव्य, नाटक, एकांकी, उपन्यास, कहानी, रेखाचित्र, रिपोर्ताज, निबन्ध, आलोचना, आदि—के प्रकाशन की शक्ति है। यह साहित्य प्रगतिशील है, और इसने देश के प्रत्येक जनतान्त्रिक आंदोलन में सहायता दी है। चारण काव्य में यह आंदोलन अपनी जन्मभूमि की रक्षा के हेतु और भक्ति काव्य में संस्कृति और धर्म के निमित्त मुखरित हुआ है। भारतेन्दु युग के कवियों ने भारत-दुर्दशा, और अंग्रेजों द्वारा किये जानेवाले शोषण का रोना रोते हुए अपनी प्रगतिशीलता का परिचय दिया। प्रेमचंद, निराला, मैथिलीशरण गुप्त, भगवतीचरण वर्मा, रामधारीसिंह दिनकर, माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्राकुमारी चौहान आदि साहित्यकारों ने हिन्दी साहित्य को जन-जन के भावों का प्रतीक बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

हिन्दी जीवित भाषा है। इसने अरबी, फ़ारसी, तुर्की, अंग्रेज़ी, डच, फ्रेंच, पुर्तगाली आदि विदेशी भाषाओं के अतिरिक्त देश की सभी भाषाओं—बँगला, पंजाबी, गुजराती, मराठी, तेलुगु, तमिल—से कुछ-न-कुछ अवश्य ग्रहण किया है और इस तरह अपने शब्द-भंडार और अपनी अभिव्यक्ति को समृद्ध किया है।

शक्तिशाली भाषा का प्रधान लक्षण यही है कि उसकी पाचन-शक्ति कमज़ोर न हो। भाषा की पाचन-शक्ति से अभिप्राय है दूसरी भाषाओं की ध्वनियों, शब्दों, मुहावरों और अभिव्यक्तियों को पचाने की शक्ति। जिस भाषा में यह पाचन-शक्ति जितनी अधिक होती है, वह उतनी ही सजीव, प्रगतिशील और भाषा की सामान्य प्रकृति के अनुरूप होती है। हिन्दी ने नाना तत्त्वों को अपना कर हिन्दी भाषियों की अनुभूतियों को विकासशील बनाया है, उनके विचारों में कलात्मकता और विविधता ला दी है।

हिन्दी संस्कृत की सच्ची उत्तराधिकारिणी है। संस्कृत का सारा रिक्थ इसी को मिला है। हिन्दी की वर्णमाला वही है जो संस्कृत की थी और उन अक्षरों का उच्चारण भी वही है जो संस्कृत में था। अन्य

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भाषाओं में कहीं तो आदिम आर्यभाषा का /ळ/ द्रविड़ भाषा से व्यापक हो गया (गुजराती-मराठी); कहीं /य//व/ का उच्चारण /ज//ब/ हो गया है (बँगला); कहीं घ झ ढ ध भ का उच्चारण /क्‌ह/, /च्‌ह/, /ट्‌ह/, /त्‌ह/, /प्‌ह/ हो गया है (पंजाबी); संयुक्त अक्षरों में कहीं /क्ष/ का /क्ख/, /त्व/ का /त्त/, /व्य/ का /ब्ब/ बोला जाता है, जैसे बँगला में; और कहीं 'पुत्र' को 'पुत्तर', 'शरीर' को 'श्रीर', 'क्रोध' को 'करोध' बोला जाता है, जैसे पंजाबी में। किन्तु हिन्दी ने उक्त सभी ध्वनियों को उसी रूप में सुरक्षित रखा है।

शब्दों की रचना और उनके अर्थों को देखिए। बड़ा आश्चर्य होता है कि हिन्दी ने उस पुरानी धरोहर को वैसे का वैसा रखा हुआ है। कुछ उदाहरण लीजिए:—

बँगला में निम्नलिखित अर्थ विचारणीय हैं—

अवाक्=विचित्र, जैसे अवाक् काण्ड।

दुर्दान्त=अच्छा, जैसे दुर्दान्त सिनेमा।

राग=क्रोध।	**कौशल**=छल
मत=अनुसार।	**गति**=अन्त्येष्टि।
बोध=शायद।	**प्रवृत्ति**=इच्छा
व्यापार=घटना।	**रीति**=प्रकृति।
कथा=बात।	**जिज्ञासा**=पूछना।
विलक्षण=अच्छा।	**अप्रस्तुत**=लज्जित।

दक्षिण की भाषाओं में संस्कृत शब्दों के क्या के क्या अर्थ हो गये हैं! **विश्वास**=प्रीति; **मंगल-कामना**=विवाह की इच्छा; **अवसर**=शीघ्रता, आवश्यकता; **अभ्यंतर**=आपत्ति; **संसार**=पत्नी; **अवधि**=कष्ट; **सम्पादन**=आय; **व्यवसाय**=कृषि; **शिक्षा**=दण्ड; **विचार**=शोक; **केवल**=कमीनापन; **प्रमाद**=बड़ा; **प्रभाव**=महत्ता।

भाषागत विशेषताएँ—ऊपर कहा गया है कि संस्कृत की सब ध्वनियाँ हिन्दी में प्रचलित हैं। /ऋ/, /लृ/, /श/, /ष/, और विसर्ग

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पालि प्राकृत में नहीं थे, किन्तु हिन्दी ने तत्सम शब्दों को अपनाते हुए इन सभी ध्वनियों को पुनरुज्जीवित किया है। परंपरागत ध्वनियों के अतिरिक्त हिन्दी में / ड़ /, / ढ़ /, / न्ह /, / ल्ह /, / म्ह / का स्वतंत्र विकास हुआ है। फ़ारसी-अरबी की / क़ /, / ग़ /, / ख़ /, / ज़ /, / फ़ / शिक्षित वर्ग में प्रचलित हैं—विशेषतया / ज़ / और / फ़ /, जो अंग्रेज़ी में भी हैं। अंग्रेज़ी का / **ऑ** / स्वर भी अपनाया गया है, जैसे कॉलेज, डॉक्टर में।

हिन्दी में स्वरगुच्छों का बाहुल्य है। उदाहरण—

अई—नई, कई में | **अए**—नए, गए में
आओ—जाओ, खाओ में | **आऊ**—उड़ाऊ, खाऊ में
आई—नाई, भाई में | **आए**—लाए, पाए में
इए—जिए, लिए में | **इआ**—छियालीस, दिया में
उआ—जुआ, हुआ में | **आइए**—जाइए, खाइए में
अउआ—कउआ, हउआ में।

हिन्दी का व्याकरण बहुत सरल है। संज्ञा, क्रिया आदि के सब रूप इस पुस्तक के दो पन्नों पर दिये जा सकते हैं। नियमों में अपवाद भी बहुत कम हैं। दो उदाहरण लीजिए—एक संज्ञा के रूपों का, एक क्रिया के रूपों का। क्रिया-धातु में –**आ** जोड़ने से भूतकाल और –**ता** जोड़ने से वर्तमान काल का कृदन्त बनता है, जैसे **लिख** से **लिखा** और **लिखता**, **चल** से **चला** और **चलता**, **सुन** से **सुना** और **सुनता**—इसी तरह सैकड़ों क्रियारूप सिद्ध होते हैं। अपवाद केवल भूतकालिक कृदन्त में **कर**, **ले**, **दे**, और **जा** के हैं जिनसे क्रमशः **किया**, **लिया**, **दिया** और **गया** रूप बनते हैं। बस।

संज्ञा में निम्नलिखित नियमों में कोई अपवाद नहीं हैं—

पुंल्लिग शब्द आकारान्त हो, तो बहुवचन में **आ** का **ए** हो जाता है जैसे **लड़का** से **लड़के**, **कमरा** से **कमरे**।

विभक्ति-चिह्न या परसर्ग लगने से पहले ऐसे ही शब्दों का एक-वचन भी एकारान्त होता है, जैसे **लड़के ने**, **कमरे में**, **दरवाज़े से**।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बहुवचन में **-ओं** हो जाता है, जैसे **लड़कों ने, कमरों में, दरवाज़ों से**। इसमें अपवाद दो तरह के हैं—एक तो रिश्तेदारों के नाम—**नाना, दादा, चाचा**; और दूसरे संस्कृत के संज्ञापद, जैसे **राजा, सखा, नेता** आदि।

ऐसे ही सरल नियम स्त्रीलिंग शब्दों के बारे में हैं।

हिन्दी की सरलता का यह प्रमाण है कि कश्मीर और हिन्दी प्रदेश के बीच में, अथवा सीमाप्रान्त और हिन्दीभाषी प्रदेश के बीच में पंजाब पड़ता है; किन्तु कश्मीरी या पठान जब पंजाब में आता है तो वह पंजाबी नहीं बोल सकता, न ही समझ सकता है; लेकिन हिन्दी अवश्य बोलता-समझता है।

बताया जाता है कि हिन्दी की सबसे बड़ी कठिनाई उसके लिंगभेद में है। यह लिंगभेद संज्ञा में ही नहीं, विशेषण और क्रिया में भी होता है, जैसे—

पुंल्लिग—**अच्छा लड़का जाता है**। स्त्रीलिंग—**अच्छी लड़की जाती है**। पहले तो विशेषण और क्रिया पर विचार कीजिए। याद रहे कि इनका स्त्रीलिंग उन्हीं शब्दों में भिन्न हो जाता है जो आकारान्त हैं, जैसे **अच्छा** से **अच्छी**, **जाता** से **जाती** या **गया** से **गयी**। यह भी सरल है। जो शब्द आकारान्त नहीं हैं उनमें लिंगभेद नहीं होता। देखिए—

पुंल्लिग—**सुन्दर लड़का जाए**। स्त्रीलिंग—**सुन्दर लड़की जाए**।

'सुन्दर' और 'जाए' में कोई परिवर्तन नहीं हुआ, क्योंकि ये शब्द आकारान्त नहीं हैं।

इसी प्रकार संज्ञा में भी लिंगभेद के नियम हैं। किसी भाषा का अनुशासन जाने बिना तो वह आती नहीं। हिन्दी से भी अधिक सरल सिंगापुर की मलाया भाषा है। क्या हम उसे स्वतः ही जान जायँगे? कुछ दिन तो परिश्रम करके उसके नियम जानने होंगे।

हिन्दी की लिपि अत्यन्त वैज्ञानिक है। वैज्ञानिक लिपि में एक ध्वनि के लिए एक निश्चित वर्ण होता है, और एक वर्ण-चिह्न से एक ही

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ध्वनि उच्चरित होती है। उदाहरणस्वरूप अंग्रेजी में ऐसा नहीं है-- /**श**/ के लिए **डिक्टेशन** में tio, **परमिशन** में ssio, **फ़ैशन** में sh और **appreciate** में ci मिलता है । S एक चिह्न है, परन्तु इससे **स, ज़, य, श** आदि कई ध्वनियाँ उच्चरित होती हैं। किन्तु हिन्दी में जैसा बोलो वैसा लिखो और जैसा लिखा हो वैसा बोलो—यह नियम बहुत व्यापक है।

हिन्दी बहुत ही सम्पन्न भाषा है। पिछले बीस वर्षों में, आवश्यकता पड़ने पर, इसने हज़ारों नये शब्दों का निर्माण करके अपने को ज्ञान-विज्ञान के प्रत्येक विषय के उपयुक्त बना लिया है।

शब्द-निर्माण की ही नहीं, हिन्दी में साहित्य-निर्माण, और सच पूछिए तो राष्ट्र-निर्माण की भी अद्भुत शक्ति है।

प्रश्न

(क)

१. भाषा का व्यापक अर्थ और अध्ययन की दृष्टि से संकुचित अर्थ समझाइए।

२. भाषा की प्रमुख विशेषताएँ क्या-क्या हैं ?

३. पशु-पक्षियों की वाणी को 'भाषा' क्यों नहीं कहा जा सकता ?

४. भाषा के नाना रूपों का वर्णन लिखिए, और भाषा तथा बोली का अन्तर समझाइए।

(ख)

५. संसार में भिन्न-भिन्न वर्ग की भाषाएँ क्यों हैं ?

६. भाषा और धर्म, तथा भाषा और समाज में क्या संबंध है ? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

७. भाषा की भिन्नता के कारण उसकी प्रकृति में निहित हैं। इस कथन की व्याख्या कीजिए।

(ग)

८. मानव-जीवन में भाषा का क्या महत्त्व है?

९. ध्वनिमय भाषा और लिखित भाषा के सापेक्ष महत्त्व पर प्रकाश डालिए।

(घ)

१०. भाषा और संस्कृति में क्या सम्बन्ध है?

११. भाषा के विकास में संस्कृति का और संस्कृति के विकास में भाषा का क्या हाथ है?

१२. भाषा किसी व्यक्ति अथवा समाज की संस्कृति का दर्पण है। इसे स्पष्ट कीजिए।

१३. हिन्दी की शब्दावली से हिन्दी प्रदेश की संस्कृति का क्या परिचय मिलता है?

(ङ)

४४. संस्कृति और सभ्यता का अन्तर स्पष्ट करते हुए, सभ्यता का भाषा से संबंध निश्चित कीजिए।

१५. किसी व्यक्ति की पहचान भाषा के किन तत्त्वों से की जा सकती है?

१६. हिन्दी प्रदेश पर जो विदेशी सभ्यताओं के प्रभाव पड़े हैं, उनका परिचय हिन्दी भाषा के माध्यम से दीजिए।

१७. शब्द हमारी सभ्यता और संस्कृति की धरोहर हैं। इस कथन की व्याख्या कीजिए।

१८. सभ्यता और संस्कृति के विकास से भाषा का विकास होता है और उनके ह्रास से भाषा का ह्रास होता है। समझाकर उत्तर दीजिए।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(च)

१९. प्राचीन भारतीय आर्यभाषा के लक्षण बताइए।

२०. मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाओं का परिचय दीजिए।

२१. संस्कृत से हिन्दी तक के विकास की स्थितियों का विवरण लिखिए।

२२. हिन्दी के आरम्भिक युग में इस भाषा की क्या स्थिति थी ?

२३. मध्यकालीन हिन्दी भाषा की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

२४. आधुनिक युग की हिन्दी की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

२५. हिन्दी के उद्गम और विकास पर निबन्ध लिखिए।

(छ)

२६. हिन्दी का विश्व की भाषाओं में क्या स्थान है ?

२७. राष्ट्रभाषा हिन्दी और राजभाषा हिन्दी की स्थिति पर प्रकाश डालिए।

२८. "हिन्दी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है।" इस कथन की पुष्टि कीजिए।

२९. हिन्दी भाषा का महत्त्व क्या है और क्यों ?

३०. हिन्दी संस्कृत की सच्ची उत्तराधिकारिणी है। इसकी व्याख्या कीजिए।

३१. हिन्दी की भाषागत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

२
उच्चारण और वर्तनी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उच्चारण और वर्तनी

वर्णमाला

लिखाई में आनेवाले ध्वनि-चिह्नों को वर्ण कहते हैं। वर्णों के समूह को वर्णमाला कहते हैं। हिन्दी जिस वर्णमाला में लिखी जाती है उसका नाम 'देवनागरी' है।

वर्णों के दो भेद हैं—स्वर और व्यंजन

स्वर—**अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ**

अ को **अ** भी लिखा जाता है। इसी प्रकार **आ, ओ, औ**।

ऋ केवल संस्कृत के तत्सम शब्दों में आता है। ऐसे शब्दों की सूची बना लेनी चाहिए—उदाहरण :—**अमृत, ऋग्वेद, ऋण, ऋतु, ऋषि, कृतज्ञ, कृति, कृपा, कृषि, कृष्ण, कृत्रिम, घृणा, तृण, तृतीय, तृष्णा, दृढ़, दृष्टि, दृश्य, नृत्य, पृष्ठ, पृथक्, मृत्यु, मातृभाषा, वृक्ष, वृद्धि, सृष्टि, हृदय**। लगभग सभी स्वरों की नासिक्य ध्वनि के साथ अनुस्वार ं अथवा अनुनासिक (चन्द्रबिन्दु) ँ लगता है, जैसे **अंग, इंच, उंगली; आँख, ईंट, ऊँट,** में।

नासिक्य चिह्न के बिना अनेक शब्दों में अर्थभेद हो जाता है—**कँटीली** (काँटोंवाली) झाड़ी और **कटीली** (काटनेवाली, तीखी) नजर; **भाग** और **भाँग**; **आधी** और **आँधी**; **रग** और **रंग**, **बगला** और **बँगला** में अर्थभेद स्पष्ट है। इसलिए जहाँ चिह्न लगना चाहिए, वहाँ अवश्य लगाओ। कई लोग **नही, मै, मे, उन्ही, कही, क्यो** आदि (बिना नासिक्य चिह्न के) लिखकर बड़ी भूल करते हैं। ं और ँ के प्रयोग में अन्तर है। **हँसमुख** को **हंसमुख** लिखेंगे तो उसका अर्थ होगा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

‘हंस पक्षी के-से मुखवाला’। किसी अच्छे शब्दकोश में से ऐसे शब्दों को ध्यान से छाँटिए।

अंग्रेज़ी शब्दों में आनेवाला/ऑ/अब चल पड़ा है, जैसे, कॉलेज, ऑफ़िस, डॉक्टर में।

संस्कृत शब्दों में ही विसर्ग /ः/ होता है, हिन्दी के तद्भव शब्दों अथवा देशी और विदेशी शब्दों में नहीं होता। निम्नलिखित शब्दों में विसर्ग का स्थान समझ लीजिए—

दुःख, दुःसह, अंतःकरण, अधःपतन, निःस्वार्थ, मूलतः, विशेषतः।

ं, ँ और ः को **अयोगवाह** कहते हैं, क्योंकि ये न स्वर होते हैं, न व्यंजन।

व्यंजन के साथ लगनेवाले स्वर के रूप को मात्रा कहते हैं। **अ** की मात्रा व्यंजन में मिल जाती है। शेष स्वरों की मात्राएँ इस प्रकार लिखी जाती हैं—

स्वर	**आ**	**इ**	**ई**	**उ**	**ऊ**	**ऋ**	**ए**	**ऐ**	**ओ**	**औ**
मात्रा	ा	ि	ी	ु	ू	ृ	े	ै	ो	ौ
उदाहरण	**क का**	**कि**	**की**	**कु**	**कू**	**कृ**	**के**	**कै**	**को**	**कौ**

इनमें ि व्यंजन से पहले, े ै व्यंजन के ऊपर, ु ू ृ व्यंजन के नीचे (पैर में), एवं ा, ी, ो, ौ व्यंजन के आगे (बाद में) लिखी जाती हैं।

र के साथ ु ू लिखने का ढंग यह है—**रु, रू**।

व्यंजन दो प्रकार के हैं—समान और संयुक्त। संयुक्त का अर्थ है मिले हुए, जुड़े हुए। समान व्यंजन अकेले-अकेले आते हैं।

क ख ग घ ङ   **च छ ज झ ञ**

ट ठ ड ढ ण   **त थ द ध न**

प फ ब भ म   **य र ल व**

श ष स ह

ऊपर की वर्णमाला वास्तव में संस्कृत की वर्णमाला है। हिन्दी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ड़ ढ़, और अरबी-फ़ारसी **क़ ख़ ग़** तथा फ़ारसी-अंग्रेजी **ज़, फ़** को भी वर्णमाला में स्थान मिलना चाहिए।

ऊपर हमने व्यंजन के जो रूप दिये हैं, उनमें **अ** की मात्रा मिली हुई है। **अ** की मात्रा न हो तो उन्हें यों लिखा जायगा—

क्, ख्, ग्, घ्, ङ्, इत्यादि।

नीचे जो चिह्न लगाया गया है, उसे हल् चिह्न कहते हैं और ऐसे व्यंजन को हलन्त व्यंजन कहते हैं।

जो संस्कृत शब्द हलन्त होते हैं उन्हें अवश्यमेव हलन्त लिखना चाहिए, नहीं तो सन्धि, समास आदि में बड़ी दिक़्क़त पैदा होती है। हलन्त व्यंजन आधा होता है; हल् चिह्न के बिना वह **अ**-युक्त व्यंजन है, इसलिए यदि **जगत्** और **शरद्** में हल् न होगा तो **जगदीश, जगन्नाथ, शरत्काल**, आदि शब्द नहीं बन पायेंगे। निम्नलिखित के अन्त में हल् चिह्न का ध्यान रहे—

अकस्मात्, परिषद्, पश्चात्, पृथक्, बुद्धिमान्,
श्रद्धावान्, शक्तिमान्, भगवान्, भविष्यत्, महान्,
तत्, सत्, मूल्यवान्, विधिवत्, विराट्, सम्राट्,
श्रीमान्, हनुमान्।

निम्नलिखित में हल् चिह्न ग़लत होगा—

पंचम, सप्तम, नवम आदि; **दृश्यमान, विराजमान, परम; पतित, गत, कृत, पठित** आदि; **शत-शत, शाश्वत; प्राचीनतम, नवीनतम** आदि।

क से **म** तक के व्यंजनों को गिनिए—२५ हैं; और देखिए कि ये ५-५ के वर्गों में बँटे हैं। **क** से आरम्भ होनेवाले पाँच व्यंजन (**क ख ग घ ङ**) कवर्ग कहलाते हैं। **च** से आरम्भ होनेवाले (**च छ ज झ ञ**) चवर्ग हैं। इसी तरह अगला टवर्ग है और उससे अगला (**त थ द ध न**) तवर्ग है। अन्तिम वर्ग का पहला वर्ण **प** है; **प फ ब भ म** को पवर्ग कहते हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

याद कर लीजिए कि प्रत्येक वर्ग के पहले कौन-कौन व्यंजन हैं, दूसरे कौन-कौन, तीसरे कौन-कौन, आदि, आदि।

कुछ व्यंजन दो तरह से लिखे जाते हैं—ध्यान रहे। **ख ख, ध ध, भ भ, छ छ, झ झ, ल ल, ण ण, श श**। इनमें सरकारी काम-काज के लिए जोड़े का पहला चिह्न प्रचलित है।

ङ, ञ, ण, ड़, ढ़ शब्द के आरम्भ में नहीं आते।

ष केवल संस्कृत शब्दों में आता है। ऐसे शब्दों की सूचियाँ बना लेनी चाहिए। जैसे **षष्ठी, उषा, कोष, दोष, द्वेष, धनुष, निषेध, पुरुष, भाषण, भूषण, भाषा, रोष, विषय, विष, हर्ष**।

संयुक्त व्यंजन—व्यंजनों के जोड़ने के कई ढंग हैं—

१. पहले व्यंजन की खड़ी पाई (।) हटाकर (आधा रूप)—जैसे, **सख्त, विघ्न, ज्वाला, सत्कार, ध्यान, प्यास, अभ्यास, तय्यार, व्यापार, कृष्ण, ग्वाला, अच्छा, गन्ना, धब्बा, तुम्हारा, बल्ली, ईश्वर, रास्ता**।

२. जिस व्यंजन के खड़ी पाई (ा) नहीं होती, उसका रूप वैसा ही बना रहता है; किन्तु या तो उसके नीचे हल् चिह्न (्) लग जाता है या बाद का व्यंजन इसके पैर में लिखा जाता है, जैसे—

बुड्ढा अथवा **बुड्ढा**	**भट्ठी** अथवा **भट्ठी**
पङ्ख अथवा **पङ्ख**	**द्वार** अथवा **द्वार**
उद्धार अथवा **उद्धार**	**चिह्न** अथवा **चिह्न**

३. दो-दो व्यंजनों का नया संयुक्त रूप **क्ष, त्र, ज्ञ, त्त, क्त, क्र** में देखिए। आजकल इन्हें **क्ष, त्र, ज्ञ, त्त, क्त, क्र** भी लिखने लगे हैं।

४. **क, झ, फ** का आधा रूप इनके अंत में झुकी हुई अंकड़ीदार रेखा का सिरा तोड़कर बनाया जाता है, जैसे **दक्का, ताफ़्ता, मुक्का** में।

५. कुछ व्यंजन आगे-पीछे और नीचे-ऊपर दोनों तरह से जुड़ते हैं। इनका ध्यान रहे। उदाहरण—

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शक्ल, शक्ल **अञ्जन, अञ्जन** **मुक्का, मुक्का**
बच्चा, बच्चा **धज्जी, धज्जी** **बिल्ली, बिल्ली।**
मुन्ना, मुन्ना **मग्न, मग्न।**

६. **र** संयोग में पहला हो तो रेफा बनकर साथी व्यंजन के सिर पर चढ़ बैठता है और उसकी कोई मात्रा हो तो उस मात्रा के ऊपर लिखा जाता है। विद्यार्थी इसके लिखने में प्रायः भूल करते हैं। उदाहरण देखिए––

कर्म, **कर्त्ता** (**आ** की मात्रा के ऊपर), **शर्मीला** (**मी** के ऊपर)।

यदि **र** दूसरा व्यंजन हो तो यह पैर में रहता है। खड़ी पाई वाले व्यंजनों के साथ ्र––**क्र**, **प्र**, **द्र** इत्यादि; छ, ट, ड, ढ, के साथ ्र–– **छ्र**, **ट्र**, **ड्र**, **ढ्र**।

७. **विद्या**, **नाट्य** और **क्यारी** में **य** के भिन्न-भिन्न रूप ध्यान देने योग्य हैं।

८. **ङ्**, **ञ्**, **ण्**, **न्**, **म्** को अपने वर्ग के व्यंजन के साथ लिखने का नियम रहा है, जैसे––

अङ्क, **पण्डित** (पन्डित नहीं) **सन्त**, **कम्पन**। अब इनके स्थान पर अनुस्वार लिखने की प्रथा भी प्रचलित है––जैसे **संबंधित**, **अंक**, **पंडित**, **संत**, **कंपन** आदि। किन्तु जिन शब्दों में अनुनासिकता स्वर में नहीं आती, उनमें आधा **ण्**, **न्**, **म्**, आवश्यक होता है, जैसे **कण्व**, **उन्हें**, **कान्फ्रेंस**, **तुम्हारा**।

९. **श्** दो तरह से लिखा जाता है––जैसे **नश्वर**, **नश्वर**; **पश्च**, **पश्च**। किन्तु **श्र** में एक ही रूप है।

अंक––१ या 1, २, ३, ४, ५ या 5, ६, ७, ८ या 8, ९ या 9 या ९, १०।

भिन्न लिखने के दो ढंग है, जैसे सवा के लिए **१¼** और **१।**, डेढ़ के लिए **१½** और **१॥**, पौने दो के लिए **१¾** और **१॥।**.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उच्चारण

हिन्दी जिनकी मातृभाषा है, उनके लिए इसके उच्चारण में कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए। किन्तु प्रत्येक व्यक्ति की बोली आड़े आती है, इसलिए बहुत से लोग जिनकी बोली में साहित्यिक हिन्दी की कुछ ध्वनियाँ नहीं हैं, वे पढ़-लिखकर भी उन विशिष्ट ध्वनियों का उच्चारण नहीं कर पाते। वे ग्रामीण स्तर से ऊपर नहीं उठते। वे /**श**/ और /**ष**/ को /**स**/ उच्चरित करते हैं और /**य**/ को /**ज**/ अथवा /**व**/ को /**ब**/ बोलते रहते हैं। बी० ए० और एम० ए० होकर भी वे '**बिस्वामित्र**', '**बिद्या**', '**जे लोग**', '**सासन**', '**सुद्ध**', '**भूसन**' बोलते हैं तो दूसरों को बड़ी खीझ होती है। कुछ लोग /**क्ष**/ का उच्चारण /**छ**/ करते हैं, जैसे **पक्ष** का **पच्छ**, **रक्षा** का **रच्छा**। कानपुर से पूर्व के लोग /**ण**/ को /**ड़**/ या /**ड़ँ**/ करके बोलते हैं। मैंने कालेजों और यूनिवर्सिटियों में **गुण** के लिए **गुँड़**, **भूषण** के लिए **भूषड़** या **भूसड़** का उच्चारण करते विद्यार्थियों को सुना है। ऐसे विद्यार्थी पढ़लिखकर भी देहातियों की कोटि में पड़े रह जाते हैं।

ऐसे विद्यार्थियों की वर्तनी (spelling) भी अशुद्ध होती है। शुद्ध बोलने वाले की ही लिखाई शुद्ध हो सकती है। हिन्दी में तो यह विशेष रूप से सही है। इसकी यह महत्त्वपूर्ण विशेषता है कि जैसा बोलें वैसा लिखें और जैसा लिखा हो वैसा ही बोलें। उच्चारण और वर्तनी का घनिष्ठ संबंध है।

सूचना—नीचे हम हिन्दी प्रदेश के विद्यार्थियों की दृष्टि से उच्चारण-संबंधी कुछ कठिनाइयों का संकेत करेंगे और आवश्यकता के अनुसार वर्तनी की चर्चा भी करेंगे।

स्वर

मात्रा की दृष्टि से स्वर दो प्रकार के हैं—

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ह्रस्व या लघु (छोटे) और दीर्घ (बड़े)। **अ, इ, उ, ऋ** ह्रस्व हैं और **आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ** दीर्घ हैं। दीर्घ स्वर के उच्चारण में ह्रस्व की अपेक्षा अधिक समय लगता है। उच्चारण और वर्तनी दोनों में ह्रस्व और दीर्घ का भेद अच्छी तरह समझने-करने की आवश्यकता है। नीचे हम कुछ सूचियाँ ऐसे जोड़ों की दे रहे हैं, जिनमें स्वर की ह्रस्वता और दीर्घता के कारण बड़ा भारी अर्थभेद है। यदि आप ह्रस्व को दीर्घ और दीर्घ को ह्रस्व बोलेंगे, तो और का और अर्थ समझा जायगा। एकान्त में बैठकर इनके उच्चारण का अभ्यास कीजिए—

अ-आ—**अब, आब; कल, काल, काला; जल, जाल, जाला; धर, धार, धरा, धारा; फल, फाल; मन, मान।**

निम्नलिखित में दीर्घ **आ** की मात्रा है। इसका ध्यान रहे। **आगामी, आवश्यकता, आशीर्वाद, आहार, चाहिए, शारीरिक, तात्कालिक, चातुर्य, नाराज़, पारलौकिक, बादाम, ब्राह्मण, भागीरथी, मालूम, व्यावसायिक, साप्ताहिक, सांसारिक।**

क, ख, ग आदि में जो निहित /**अ**/ है, उसके बारे में दो-चार बातें कहना आवश्यक है:—

१. शब्द के अन्त में अथवा शब्द के भीतर एक-दम बोले जानेवाले शब्दांश या अक्षर के अन्त में /**अ**/ का उच्चारण नहीं होता, जैसे **राग, रौशन, बालक** के /**ग**/, /**न**/, /**क**/ में /**अ**/ है तो सही, लेकिन उच्चरित नहीं होता। इसी प्रकार **मालती, कमला, सरला, बेचना** के /**ल**/, /**म**/, /**र**/, /**च**/ में /अ/ है, किन्तु इसका उच्चारण नहीं होता। संस्कृत के पंडित संस्कृत शब्दों में अवश्य /**अ**/ बोलते हैं; वही शुद्ध और संस्कृत की प्रकृति के अनुकूल है।

संयुक्त व्यंजन के बाद /**अ**/ हलका-सा उच्चरित होता है, जैसे **प्राप्त, शक्ल, नेत्र, स्वप्न** में।

जब एक व्यंजनवाला शब्द हो तो उसमें भी /**अ**/ बोला जाता है, जैसे **न, व** (और के अर्थ में)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इ, ई या **ऊ** के बाद आनेवाले /**य**/ में भी /**अ**/ का उच्चारण होता है, जैसे **प्रिय, भारतीय, राजसूय** में।

इ-ई—**किला, कीला; सिख, सीख; दिन, दीन;**

पिटना, पीटना; मिल, मील; भिड़, भीड़।

निम्नलिखित शब्दों में ह्रस्व **इ** की मात्रा का ध्यान रहे—

अतिथि, अभिनेता, अभिमान, आइए, आध्यात्मिक, साहित्यिक, सांसारिक आदि (यहाँ तीनों में इक प्रत्यय है), **कठिनाई, कोटि, कालिदास, कि, क्योंकि, जैसा कि, चाहिए, तिथि, तिलांजलि, निवासियों, लड़कियाँ, क्षति, हानि, परिचय, परिवार, नायिका, पाठिका, अध्यापिका; पूर्ति, कृति, स्थिति, सम्पत्ति, शान्ति** (इनमें -ति प्रत्यय है), **परिमार्जन, बलिदान, पाकिस्तान, पारितोषिक, प्रतिनिधि** (तीनों ह्रस्व इ), **पालिश, माचिस; मालिन, धोबिन, कहारिन** (इनमें-इन प्रत्यय है); एवं **मंदिर, महिमा, युधिष्ठिर, रचयिता, लिखित, लेकिन, शिविर, शनि, संस्कृति** (भाषा का नाम **संस्कृत** है), **समिति, सम्मति, सृष्टि।**

निम्नलिखित शब्दों में **ई** की दीर्घ मात्रा है—

आशीर्वाद, तरीका, दीवाली, नीरसता, नीरोग, पत्नी, पीताम्बर, प्रदर्शनी, बीमारी, भागीरथी, महाबली, महीना, शताब्दी, श्रीमती, समीक्षा, सूचीपत्र, स्त्री।

उ-ऊ—**बुरा, बूरा** **लुटना, लूटना** **घुस, घूस**

चुकना, चूकना **दुर-दुर, दूर-दूर** **बुझना, बूझना।**

निम्नलिखित शब्दों में ह्रस्व **उ** है। ध्यान से समझ लें।

उत्थान, कुआँ, दुबारा, धुआँ, रुई, रुपया, पुरुष, गुरु, उत्सुक, कुटुम्ब, कौमुदी, निरुद्यम, बहुत, मुकुन्द, रुद्र। निम्नलिखित संस्कृत के शब्दों के अंत में भी ह्रस्व **उ** है—

अणु, आयु, इन्दु, ऋतु, जन्तु, दयालु, धातु, पटु, पशु, प्रभु, बन्धु, बाहु, बिन्दु, भिक्षु, मधु, मृत्यु, वस्तु, वायु, शम्भु, शत्रु, हेतु।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ऊ (दीर्घ) वाले निम्नलिखित शब्द याद कर लें—

अनूदित, ऊधम, तूफ़ान, दूसरा, वधू, सिन्दूर, सूरज, रूठ, रूप
अन्त में ऊ—**आँसू, आड़ू, आलू, उर्दू, चाकू, जादू, झाड़ू, डाकू, तम्बाकू, नींबू, बदबू, बहू, बाबू, बिच्छू, लट्टू, लड्डू, लागू, शुरू, हिन्दू।**

/ऋ/ के लिए देखिए पीछे पृ० ५७ भी।

ए-ऐ बहुत स्पष्ट हैं। इनमें किसी भ्रान्ति की गुंजाइश नहीं है। केवल असावधानी के कारण विद्यार्थी वर्तनी की भूलें कर जाते हैं। निम्नलिखित जोड़ों में अर्थभेद है। इनमें **ए ऐ** का उच्चारण ज़ोर-ज़ोर से करके देखिए—

वेद, वैद	**केश, कैश**	**चेला, चैला**
मेला, मैला	**बेल, बैल**	**सेर, सैर।**

/ऐ/ के उच्चारण में मुँह और अधिक खुल जाता है। संस्कृत में /ऐ/ संयुक्त स्वर है और इसका उच्चारण /**अइ**/ करना चाहिए, जैसे **दैव** (उच्चारण दइव), **सैनिक** (सइनिक), **वैदिक** (वइदिक), **ऐश्वर्य** (अइ-श्वर्य), **शैल** (शइल), इत्यादि।

ओ-औ—/औ/ का उच्चारण भी /**ओ**/ की अपेक्षा अधिक खुला है। निम्नलिखित शब्दों में अर्थभेद भी कीजिए—

ओर, और	**कोड़ी, कौड़ी**	**खोलना, खौलना**
ओर, और	**शोक, शौक**	**बोना, बौना।**

संस्कृत शब्द में /औ/ का शुद्ध उच्चारण (अउ) है। **गौरव** (उच्चारण गउरव), **भौतिक** (भउतिक), **मौन** (मउन), **यौवन** (यउवन), **लौकिक** (लउकिक), **सौरभ** (सउरभ), इत्यादि।

उच्चारणगत **ऐ** (अइ) और **औ** (**अउ**) के अतिरिक्त संस्कृत में कोई संयुक्त स्वर नहीं हैं। इसलिए 'दायित्व' या 'स्थायी' को **दाइत्व** या **स्थाई** लिखना ग़लत होगा।

यदि **जय, निर्भय, विस्मय, नयन, प्रलय** आदि को /ऐ/ से लिखेंगे **जै, निर्भै, विस्मै, नैन, प्रलै**, तो इनका उच्चारण हो जायगा जइ, निर्भइ,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विसमइ, नइन, प्रलइ, क्योंकि संस्कृत /**ऐ**/ का यही उच्चारण है। इसलिए उक्त शब्दों में /**य**/ का ध्यान रहना चाहिए। इसी प्रकार **औगुण, औतार,** का उच्चारण तो **अउगुण, अउतार** हो जायगा, क्योंकि ये भी संस्कृत के शब्द हैं। इनके शुद्ध रूप हैं **अवगुण, अवतार**।

अनुस्वार ं और अनुनासिक ँ में उच्चारणगत अन्तर है। जब अनुनासिकता केवल व्यंजन में होती है, तब अनुस्वार या अनुनासिक चिह्न नहीं लगता, जैसे **कण्व, तुम्हारा, उन्हें**। जब अनुनासिकता व्यंजन और स्वर दोनों में होती है, तब विकल्प से अनुस्वार चिह्न लगता है, जैसे **संत, पंप, अंक, संबंध, इंजन** और **सन्त, पम्प, अङ्क, सम्बन्ध, इञ्जन**। किन्तु जब अनुनासिकता केवल स्वर में रहती है, तो अनुनासिक चिह्न चन्द्रबिन्दु ँ लगता है। या यों कहा जाय कि चन्द्रबिन्दुवाले अक्षर में केवल स्वर सानुनासिक होता है। यह अनुनासिकता कुछ कम होती है, पूर्ण से आधी। इसीलिए ऐसे शब्दों के उच्चारण में बलाघात नहीं पड़ता। उदाहरण—**कुँअर, चँवर, छँटाई, अँधेरा, गँवार, पँचमेल, भँवरा, मँडराना, हँसना, सँवारना**। इनमें ऐसा लगता है, मानों हम अनुनासिकता नहीं ला रहे।

लिखाई में जिन अक्षरों पर स्वर की मात्रा सिर पर आ जाती है, उनमें चन्द्रबिन्दु न लगाकर अनुस्वार ं लगाते हैं। पूर्ण शुद्धता तो इसी में होती कि उन पर चन्द्रबिन्दु रहता, किन्तु यहाँ छपाई में कठिनाई होती है।

लड़कियाँ, **हूँ** में चन्द्रबिन्दु ठीक है, **मैं, नहीं, गौं** में भी होना तो चाहिए, किन्तु वही स्थान मात्रा ने घेर रखा है।

/ह/ से पहले आनेवाले /अ/ का उच्चारण प्रायः हलके से /ऐ/ की तरह होता है, जैसे **बहन, पहला, वह, कहना, टहलना, ठहरना** आदि में। किन्तु ११ से १८ की संख्याओं में और अक्षर-विभाजन हो जाने पर उस /अ/ का अपना उच्चारण बना रहता है, जैसे **बारह, चौदह, सोलह, अठारह**, आदि; एवं **रहो, दहेज, महाराज** में।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मात्रा-परिवर्तन--शब्द का विस्तार होने पर किन्हीं-किन्हीं शब्दों की मात्रा में परिवर्तन आ जाता है। ऐसे शब्दों की सूचियाँ कोश से बनायी जा सकती हैं। उदाहरण--

आधा--अधमरा, अधपका, अधेली।

आम--अमचूर, अमियाँ, अमावट।

एक--इकट्ठा, इकहरा, इकलौता, इकतालीस।

खेती--खेतिहर।

घाट--पनघट, घटवार।

घोड़ा--घुड़दौड़, घुड़चढ़ा, घुड़साल।

जेठ--जिठानी, जिठौत।

ढीठ--ढिठाई। इसी तरह ढीला-ढिलाई, बोना-बुवाई।

तीन--तिपाई, तिनपतिया, तिबारा।

दो--दुबारा, दुपट्टा, दुनाली।

बाट--बटमार, बटखरा, बटाऊ।

बूढ़ा--बुढ़िया, बुढ़ापा, बुढ़ाना।

रानी--रानियाँ। इसी तरह बहुवचन में लड़कियाँ, खिड़कियाँ, आदि।

लाख--लखपती।

सात--सतखंडा, सतधारा, सतलड़ा।

सीखना--सिखाना, सिखलाई।

हाथ--हथकंडे, हथौड़ा, हथकड़ी।

हिन्दू--हिन्दुओं।

सूचना--देखिए 'युग्म शब्द'--अध्याय ४।

व्यंजन

व्यंजन के उच्चारण में भीतर से निकलनेवाली हवा को कहीं-न-कहीं रोकना होता है। हमारी लिपिमाला का वर्गीकरण इस बात को ध्यान में रखकर किया गया है कि व्यंजनों का उच्चारण-स्थान क्या-क्या है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

	१	२	३	४	५	
कवर्ग	क	ख	ग	घ	ङ	**कंठ्य**—कंठ में जीभ की जड़
चवर्ग	च	छ	ज	झ	ञ	**तालु-वर्त्स्य**—जीभ तालु और वर्त्स (जबड़े) के बीच
टवर्ग	ट	ठ	ड	ढ	ण	**मूर्धन्य**—मूर्धा, तालु के मध्यभाग पर जीभ
तवर्ग	त	थ	द	ध	न	**दन्त्य**—ऊपरी दाँतों पर जीभ
पवर्ग	प	फ	ब	भ	म	**ओष्ठ्य**—दोनों होंठ जुड़कर हवा को रोकते हैं।

इनके अतिरिक्त /**य**/ तालव्य है; /**र**/ और /**ल**/ वर्त्स्य (जबड़े पर जीभ); /**व**/ दंतोष्ठ्य; /**श**/ तालुवर्त्स्य; /**ष**/, /**ड़**/, /**ढ़**/ मूर्धन्य; और /**ह**/ कंठ्य है।

उच्चारण में दूसरा विचार प्रयत्न का है। ऊपर पाँच वर्गों के जो २५ व्यंजन गिनाये गये हैं, उनमें श्वास का जीभ से स्पर्श होता है, इसलिए इन्हें **स्पृष्ट व्यंजन** कहते हैं। इनमें भी चवर्ग के उच्चारण में श्वास थोड़ी रगड़ के साथ निकलता है—इन्हें **स्पृष्ट-संघर्षी** कहा जाता है। **य र ल व** में यह स्पर्श बहुत थोड़ा होता है, इन्हें ईषत् स्पृष्ट कहते हैं। ईषत् का अर्थ है 'थोड़ा'। **श ष स ह** के उच्चारण में रगड़ (घर्षण) होकर श्वास गरम हो जाता है, इसलिए इन्हें ऊष्म (गरम) या **संघर्षी व्यंजन** कहा जाता है।

कुछ व्यंजनों के उच्चारण में श्वास या प्राण अधिक निकलता है, कुछ में कम। एक तरह के व्यंजनों को **महाप्राण** और दूसरी तरह के व्यंजनों को **अल्पप्राण** कहते हैं। वर्ग के दूसरे और चौथे व्यंजन, अर्थात् **ख छ ठ थ फ** और **घ झ ढ ध भ**, तथा **ह**—ये ११ महाप्राण हैं। शेष अल्पप्राण हैं। बोलकर देखिए और अर्थभेद भी समझिए—

काट, खाट, काठ **बाग, भाग, बाघ**

पीट, फीट, पीठ **बाड़, भाड़, बाढ़**

जाल, झाल **तान, थान** **सात, साथ**

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

डाल, ढाल	जड़ना, झड़ना	दान, धान
पाठक, फाटक	साता, साथा	वेदना, वेधना
काना, खाना	चलावा, छलावा	बहार, भार।

निम्नलिखित शब्दों में दो-दो महाप्राण ध्वनियों का ध्यान रखिए—

खीझना, झूठ, धंधा, धनाढ्य, धुरंधर, धोखा, भाभी, भूख, खखार, छठा, झंखाड़, ठठेरा, ठंढा, ढीठ, थूथनी, फफोले, फुफेरा, भट्ठी।

जिन ध्वनियों के उच्चारण में गले में तरंग पैदा होती है, वे **सघोष** कहलाती हैं; जिनके उच्चारण में तरंग (नाद या घोष) नहीं होती, वे अघोष कहलाती हैं। स्वर सब सघोष हैं। व्यंजनों में तीसरे, चौथे और पाँचवें—अर्थात् **ग ज ड द ब, घ झ ढ ध भ, ङ ञ ण न म** और ईषत्स्पृष्ट या अंतःस्थ **य र ल व**—ये १९ व्यंजन सघोष हैं। शेष, अर्थात् वर्ग के पहले, दूसरे और ऊष्म व्यंजन (कुल १४) अघोष हैं।

सूचना—ये पारिभाषिक शब्द याद रहें। इनका उल्लेख इस पुस्तक में कई बार होगा।

कठिन ध्वनियाँ—उत्तर प्रदेश की अनेक बोलियों में **ण-न, व-ब, य-ज** और **श-स-ष** का भेद नहीं है, बल्कि **ण, व, य, श** और **ष** हैं ही नहीं। इसलिए इन बोलियों के बोलनेवाले विद्यार्थियों का उच्चारण दोषपूर्ण बना रहता है। आदर्श हिन्दी का शुद्ध उच्चारण छोटी कक्षाओं में सिखाया जाना चाहिए। किन्तु उन कक्षाओं के अध्यापक भी उसी जनपद के होते हैं और उनका अपना उच्चारण शुद्ध नहीं होता तो विद्यार्थी क्या सीखें! यूनिवर्सिटी तक आते-आते उनके ध्वनि-अवयवों में वह लोच नहीं रह जाती। संस्कारगत प्रौढ़ ध्वनियों का सुधार करना कठिन हो जाता है। उच्चारण की भ्रष्टता के कारण उनकी वर्तनी भी प्रायः भ्रष्ट रहती है। विद्यार्थियों के हित की दृष्टि से यहाँ हम उक्त ध्वनियों के उच्चारण की रीति बता देना चाहते हैं।

/**ण**/ के उच्चारण के लिए जीभ को वहीं ले जाना होता है, जहाँ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha
ट, ठ बोले जाते हैं, और इसका उच्चारण लगभग /ड़/ की तरह करना होता है, किन्तु अन्तर यह है कि /ड़ँ/ में अनुनासिकता अलग होकर पूर्ववर्ती स्वर के साथ युक्त हो जाती है, और /ण/ में अनुनासिकता लगातार व्यंजन के साथ जारी रहती है। **भोंड़ा** और **डाँड़** का धीरे-धीरे उच्चारण कीजिए। आप देखेंगे कि पीछे निरनुनासिक /ड़/ रह जाता है। अब **द्रोण** और **वाण** को धीरे-धीरे बोलिए। /ण/ की अनुनासिकता अन्त तक सुनायी देनी चाहिए। उत्तर प्रदेश के उत्तर पश्चिमी ज़िलों में यह ध्वनि विद्यमान है। शेष ज़िलों के विद्यार्थियों को अभ्यास करना चाहिए।

इस प्रसंग में यह भी याद रहे कि /ण/ केवल संस्कृत के तत्सम शब्दों में आता है। उत्तर-पश्चिमी ज़िलों में जो **खाणा**, **देणा**, **सुणना** आदि में /ण/ है वह आदर्श हिन्दी में /न/ होता है। शुद्ध रूप हैं **खाना**, **देना**, **सुनना**; क्योंकि ये संस्कृत के शब्द तो नहीं हैं ना! संस्कृत में /ड़ँ/ वाला कोई शब्द नहीं है। विद्यार्थी अपनी सूचियाँ तैयार करें। जैसे--

उच्चारण, उदाहरण, उद्धरण, कंकण, कण, कल्याण, कारण, किरण, कृष्ण, कोण, क्षण, क्षीण, गण, गुण, गौण, घोषणा, चरण, टिप्पणी, दर्पण, नारायण, निर्माण, परिणाम, प्रमाण, प्रणाम, पुराण, पुण्य, प्रणाली, प्राण, ब्राह्मण, भाषण, भूषण, मणि, मिश्रण, मरण, रक्षण, रमण, रावण, रणभूमि, रामायण, वेणी, वीणा, वाणी, व्याकरण, शरण, श्रावण, साधारण, स्मरण, हरण।

शब्द के आदि में /ण/ नहीं आता।

निम्नलिखित शब्दों में /न/ सही है--

अपमान, अभिमान, गमन, आगमन, चयन, जीवन, बन्धन, प्रार्थना, फाल्गुन, रसायन, वर्तमान, विज्ञान, विधान, सन्तान, समान, समाधान, स्थान, हैरान।

/**ब**/ का उच्चारण दोनों होंठों के जुड़ने पर होता है, इसीलिए

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha
इसे द्वयोष्ठय कहते हैं। किन्तु /**व**/ का उच्चारण इससे बहुत भिन्न है। ऊपर वाले दाँतों के बाहरी भाग को जब निचले होंठ का भीतरी भाग छूता है, तब /व/ उच्चरित होता है, इसलिए इसे दंतोष्ठ्य कहते हैं। संस्कृत के शब्दों में इसे इसी तरह बोलना चाहिए । पूर्वी ज़िलों के विद्यार्थियों को विशेष रूप से इसका अभ्यास करना चाहिए।

बोलिए--

वात, **बात** **वाला**, **बाला** **वेला** (समय), **बेला** (फूल)
वार (दिन), **बार** **वट्टी**, **बट्टी** **वली** (वारिस), **बली** (महाबली)
वाद, **बाद** (में) **वाह्य** (उठाने योग्य), **बाह्य** (बाहरी)।

/**व**/ वाले शब्दों की एक व्यावहारिक सूची तैयार कर लेनी चाहिए, जैसे **वचन**, **वधू**, **वध**, **वन्दना**, **वर्ग**, **वर्ष**, **वसन्त**, **वस्त्र**, **वाक्य**, **वाणी**, **वास्तव**, **वन**, **विष**, **वीणा**, **वस्तु**, **व्रत**, **व्याकरण**, **विकार**, **विद्या**, **विना**, **विवरण**, **विषय**, **वृद्धि**, **व्यंजना**, **वेश्या**, **वैश्य**, **व्यथा**, **व्यापार**।

हिन्दी शब्दों के अन्त में तथा हिन्दी-संस्कृत शब्दों के संयुक्त व्यंजनों में, /**व**/ के उच्चारण में होंठ दाँतों को नहीं छूता। बोलिए **जीव**, **पाव** भर, **पाँव**, **गाँव** तथा **स्वामी**, **विश्वास**, **उच्छ्वास**,**ग्वाला**, **द्वारा**।

/**य**/ का स्थान तालु है, और /**ज**/ का स्थान उससे थोड़ा-सा आगे जबड़े के निकट है। /**य**/ में थोड़ा संघर्षण भी होता है। /ज/ के उच्चारण में जीभ की नोक जबड़े के ऊपर छूती है, /**य**/ में जीभ का अग्रभाग चौड़ा हो जाता है। अभ्यास कीजिए और सूचियाँ बनाइए। /**य**/ /**ज**/ का भेद समझिए--

यव (जौ), **जव** (वेग) **यात** (गया हुआ), **जात** (पैदा)
यान (सवारी), **जान** (जीवन) **यूँ** (एवं), **जूँ** (एक कीड़ा)।

शब्द के अन्त में /**य**/ का उच्चारण /**ए**/ /**ऐ**/ के समान होता है, जैसे **अध्याय**, **राय**, **तय**, **भय**, **प्रलय**, **जय**, आदि में।

/**इ**/ के बाद कोई अन्य दीर्घस्वर आ जाय, तो दोनों के बीच में **य**-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha
श्रुति आ जाती है, जैसे **लड़कियाँ, पिया, पियो, नदियाँ,** आदि में। /**इ**/ के बाद /**ए**/ हो तो य-श्रुति विकल्प से आती है, जैसे **चाहिये, चाहिए; लिये, लिए।**

/**अ**/ /**आ**/ के बाद दूसरा /**आ**/ आ जाय, तो भी बीच में य-श्रुति आवश्यक होती है, जैसे **आया, पाया, गया।**

[श्रुति का अर्थ है कि एक स्वर से बदलकर दूसरे स्वर तक जाने में जीभ हलकी-सी /**य**/ की लोच लेती है—हलका सा /**य**/ सुनाई देता है।]

/स/ वर्त्स्य (जबड़े) की ध्वनि है, /**श**/ का स्थान थोड़ा और पीछे है और /**ष**/ का उसके भी पीछे, जहाँ टवर्ग बोले जाते हैं। किन्तु हिन्दी-वाले /**श**/ /**ष**/ का उच्चारण एक-सा करते हैं। /**स**/ से ये दोनों भिन्न हैं। /**श**/ का अच्छा अभ्यास करना चाहिए; क्योंकि यह ध्वनि संस्कृत के तत्सम शब्दों में भी है और फ़ारसी तथा अंग्रेज़ी से आये हुए शब्दों में भी। /**ष**/ केवल संस्कृत शब्दों में आता है। /**स**/ सबमें व्यापक है।

/श/ और /स/ के अर्थभेद वाले शब्दों का ठीक उच्चारण करके देखिए—

शंकर, संकर (दोग़ला)	**शकल** (टुकड़ा), **सकल** (सब)
शती (सैकड़ा), **सती** (पतिव्रता)	**शर** (बाण), **सर** (सरोवर)
शरद (ऋतु), **सरद** (ठंडा)	**शाख** (शाखा), **साख** (नाम)
शान (बड़ाई), **सान** (पत्थर)	**शाला** (मकान), **साला** (पत्नी का भाई)
शिला (चट्टान), **सिला** (सिया हुआ)	**शेर** (बाघ), **सेर** (वज़न)

निम्नलिखित शब्दों में /स/ का ध्यान रखिए—

अमावस्या, तपस्या, प्रशंसा, विकास, संकट, विश्वास, सुशील, स्रोत, संयोग, समान, प्रसाद।

निम्नलिखित को /श/ वाली सूची में लिख लीजिए—

अवकाश, आदर्श, दृश्य, नाश, प्रशंसा, विश्वास, निराशा, सारांश, शासन, सुशोभित, श्रवण, संशोधन, शाखा, शोचनीय।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

/ष/ वाले शब्दों की सूची में ये शब्द भी जोड़ लें—

वर्षा, षट्कोण, षष्टी, संतोष, कोष, कृषि, गवेषणा, भाषा, भाषण, तृषा, दोष, रोष, द्वेष, पोषण, भूषण, आकर्षण, मूषक, हर्ष, वेष।

संयुक्त व्यंजन

संयुक्त व्यंजनों की वर्तनी का प्रश्न वास्तव में उच्चारण का ही प्रश्न है। हिन्दी प्रदेश के विद्यार्थी प्रायः इनका प्रयोग ठीक करते हैं।

संयुक्त व्यंजन विशेष रूप से संस्कृत शब्दों में आते हैं। ऐसे शब्दों की सूचियाँ बना लेनी चाहिए। इनके भी वर्ग किए जा सकते हैं। अधिकतर शब्द ऐसे हैं जिनमें /य/ और /र/ का संयोग हुआ है। /य/ प्रायः संयोग में दूसरा व्यंजन होता है। उदाहरण—

संस्कृत—**अंत्याक्षरी, उद्देश्य, उपलक्ष्य, राज्य, व्यतीत, श्याम, स्वास्थ्य, ख्याति, प्राप्य, कर्तव्य, ज्योति, ज्योतिष, त्याज्य, द्रव्य, ध्यान, न्याय, कार्य, व्यापार, दृश्य, हास्य।**

हिन्दी—**क्यारी, क्यों, क्या, ज्यादा, ज्यों-ज्यों, प्यारा, प्यास, ग्यारह, त्यौहार, म्यान।**

संयोग में /र/ पहला व्यंजन भी हो सकता है, दूसरा भी। उदाहरण—

१. **आदर्श, असमर्थ, आशीर्वाद, आचार्य, कार्य, दुर्गति, दुर्दशा, पूर्ण, मर्यादा, मूर्ख, स्वर्ग** ('नरक' की वर्तनी देख लें)—लिखाई में रेफा का स्थान अगले अक्षर के ऊपर है, पहले नहीं।

२. **क्रम, उग्र, चक्र, क्रिया, क्रोध, ग्रंथ, ग्राम, ड्रामा, ट्राम, ग्रांट, द्रोह, दरिद्र, पत्र, नम्र, प्रणाम, प्रसाद, प्रेम, प्रदेश, प्रेरणा, भ्रम, स्रोत, सहस्र, अश्रु।**

याद रहे कि **नरक, परन्तु, परमाणु, परीक्षा, परमात्मा, स्मरण** आदि शब्दों में /र/ संयुक्त नहीं है, अलग है।

/ल/ और /व/ संयोगवाले शब्द अपेक्षाकृत कम हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उदाहरण--**बिल्व, शिल्प, तुल्य, मूल्य, शुल्क, उल्का, वल्कल, अल्प**, आदि। किन्तु, **ग्लानि, म्लान, म्लेछ, श्लोक, क्लेश, शुल्क** में /**ल**/ दूसरा व्यंजन है।

व--**द्वारा, द्वंद्व, विश्व, स्वभाव, श्वास, ज्वर, ज्वाला, क्वार्टर, ग्वाला, त्वचा, द्वेष, द्वीप, श्वेत, विह्वल** आदि में /**व**/ दूसरा व्यंजन है।

व्याकुल, काव्य, तीव्र, व्रत, व्यक्ति, व्यंजन, व्यथा, व्यर्थ, व्यवस्था, व्याख्या, व्यवहार, व्यापार, व्याकुल आदि में /**व**/ पहला व्यंजन है।

/क्ष/ संयुक्त व्यंजन है। इसको अब /**क्ष**/ करके लिखने लगे हैं। यही इसका उच्चारण है, /**छ**/ नहीं। यह केवल संस्कृत के तत्सम शब्दों में आता है। ऐसे शब्दों की सूची तैयार कर लें। उदाहरण--**क्षण, क्षति, क्षत्रिय, क्षमा, क्षीण, क्षेत्र, कक्ष, कक्षा, दीक्षा, अक्षय, तीक्ष्ण, नक्षत्र, प्रतीक्षा, प्रत्यक्ष, भिक्षा, पक्ष, विपक्ष, लक्षण, रक्षा, शिक्षा, समीक्षा, साक्षी**।

/ज्ञ/ के अनेक उच्चारण हैं। उत्तर में **ग्यँ** और दक्षिण में **ज्यँ** बोलते हैं। वास्तव में यह **ज्ञ** का संयोग है और यही उसका शुद्ध उच्चारण होना चाहिए। किन्तु प्रचलन में भी बड़ा बल होता है। हमें **ग्याँ** (ग्य नहीं) को स्वीकर करना है। यह बहुत ही थोड़े संस्कृत के शब्दों में प्रयुक्त होता है, जैसे **अभिज्ञ, अल्पज्ञ, कृतज्ञ, जिज्ञासा, ज्ञान, विज्ञान, संज्ञा, ज्ञात**,--इन सबमें '**ज्ञा**' ज्ञान के अर्थ में आया है। अर्थात् एक शब्द (ज्ञान) सबमें विद्यमान है। इसके अतिरिक्त **यज्ञ, आज्ञा** की वर्तनी का भी ध्यान रखें। **योग्य, भोग्य, आरोग्य, भाग्य** आदि में /**ज्ञ**/ नहीं लिखना है, क्योंकि इनमें **ग्यँ** का उच्चारण नहीं है।

/**ष्ट**/ और /**ष्ठ**/ के उच्चारण में स्पष्टता न होने के कारण बहुत सी भूलें हो जाती हैं। ध्यान रहे।

ष्ट--**इष्ट, अभीष्ट, यथेष्ट, चेष्टा, तुष्ट, दृष्ट, नष्ट, पुष्ट, हृष्ट-पुष्ट, भ्रष्ट, रुष्ट, शिष्ट, सृष्ट, स्पष्ट** में जो /**ट**/ है, वह कृदन्तीय -त प्रत्यय ही है जो /**ष्**/ के संयोग में आकर /**ट**/ हो गया है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ष्ठ—**कनिष्ठ, घनिष्ठ, श्रेष्ठ, ज्येष्ठ, बलिष्ठ, वरिष्ठ**, आदि में **-इष्ठ** प्रत्यय है जिसका अर्थ है 'सबसे अधिक'। **निष्ठा, अनुष्ठान, गोष्ठी, प्रतिष्ठा** में **स्था** (ठहरना) का **ष्ठा** बना है।

शेष संयोग—**भक्त, अक्ल, आत्मा, पत्नी, पंक्ति, तात्पर्य, निश्चिन्त, उद्घाटन, उच्छृंखल, आह्वान, आह्लाद, आवश्यकता, कृतघ्न, गृहस्थ, स्थान, स्थूल, रास्ता, जिह्वा, श्मशान, जन्म, लग्न, नेत्र, पौत्र, त्रुटि, इन्कार**। दो से अधिक व्यंजनों का संयोग—**उच्छ्वास, राष्ट्र, ओष्ठ्य, ज्योत्स्ना, ईर्ष्या, निष्क्रिय, लक्ष्मी, लक्ष्य, स्त्री, सामर्थ्य**, आदि। बहुत से ऐसे शब्दों में तीसरा व्यंजन /**य**/ या /**र**/ होता है।

[देखिए 'सन्धि' के अन्तर्गत भी]

कुछ और टिप्पणियाँ

१. दो स्पृष्ट व्यंजनों का संयोग शब्द के आदि में नहीं होता।

२. दो महाप्राण व्यंजन एक साथ नहीं जुड़ते। उनमें पहला अल्पप्राण हो और दूसरा महाप्राण हो, तो संयोग हो सकता है; जैसे इकट्ठा, मक्खन, अच्छा, समृद्धि, फुप्फुस, उत्खनन, उद्घाटन, उद्भूत में।

३. अघोष का संयोग अघोष व्यंजन से और सघोष का सघोष से हो सकता है।

वर्तनी की समस्या

यह सही है कि वर्तनी (spelling) को उच्चारण के अधिकाधिक अनुकूल होना चाहिए। हिन्दी बहुत कुछ इस नियम का पालन करती है। किन्तु यह नहीं कहा जा सकता कि हिन्दी की वर्तनी पूर्णतया उच्चारण के अनुरूप है। इसके कुछ कारण हैं, जिनपर विचार करना चाहिए।

१. (क) हिन्दी ने संस्कृत का सारा उत्तराधिकार पाया है, और उसमें वर्तनी भी वैसी बनी है। किन्तु कई अक्षरों का उच्चारण संस्कृत में ही बदल गया था, जैसे **ऋ** और **ष** का। इनका उच्चारण क्रमशः **रि** और **श** हो

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गया था, किन्तु वर्तनी में कोई अन्तर नहीं आया। इसलिए **ऋ** और **ष** वाले शब्दों को दिमाग में रखना पड़ता है।

संस्कृत का /**ण**/ भी पूर्वी हिन्दी, ब्रजभाषा आदि में नहीं रहा। इसका उच्चारण ठीक कर लिया जाय तो वर्तनी शुद्ध हो जायगी। देखिए पीछे पृ० ७०।

(ख) दूसरी बात यह है कि हिन्दी शब्द के अन्त में व्यंजन का /**अ**/ उच्चरित नहीं होता, जैसे **बात, पास, चल** में। किन्तु संस्कृत में व्यंजन यदि हलन्त नहीं होता तो उसके स्वर का उच्चारण अवश्य होगा। यदि उसका उच्चारण नहीं करना है, तो उसे हलन्त करना अनिवार्य है, जैसे **महत्, मनस्, भगवान्** में।

हिन्दीवाले प्रायः हिन्दी की बात को संस्कृत पर भी लागू कर देते हैं, और **महत, मनस, भगवान** आदि शब्द बिना हलन्त के लिखते रहते हैं। उससे वर्तनी में अराजकता आ गयी है।

निम्नलिखित संस्कृत शब्द हलन्त हैं। यदि इन्हें हलन्त नहीं लिखा जायगा तो इनके आगे लिखे सन्धियुक्त शब्द नहीं बन सकेंगे।

सत्—**सत्त्व, सत्पुरुष, सद्धर्म, सज्जन, सच्चरित्र**।

महत्—**महत्ता, महत्त्व, महत्तम**।

जगत्—**जगदीश, जगन्नाथ, जगद्विख्यात**।

[**जगतपाल** का अर्थ है जगत् को न पालनेवाला। त को हल् चिह्न नहीं लगेगा तो उसमें /**अ**/ माना जायगा, और शब्द होगा **जगत् अपाल**।]

दिक्—**दिगन्त, दिक्पाल, दिङ्नाग, दिगम्बर**।

इसी प्रकार **पृथक्, अर्थात्, अकस्मात्, बृहद्, तडित्, विद्युत्, किंचित्, पूर्ववत्, आपद्, सम्पद्, शरद्, परिषद्, संसद्, महान्, भगवान्, बलवान्, श्रीमान्**, आदि।

देखिए 'सन्धि' के अन्तर्गत 'व्यंजन संधि', और प्रत्ययों में तद्धित प्रत्यय **-मान्, -वान्**।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(ग) संस्कृत में रेफा /ˊ/ लगने पर संयोगवाला दूसरा व्यंजन विकल्प से द्वित्व होता है—जैसे **कर्त्तव्य, कर्तव्य; अर्द्ध, अर्ध; वर्द्धमान, वर्धमान; आर्य्य, आर्य; सर्व्व, सर्व**; इत्यादि। याद रहे कि ये दोनों रूप ठीक हैं। किन्तु वेकार के द्वित्व का कोई लाभ नहीं है, इसलिए इनका दूसरा रूप (बिना द्वित्व के), अर्थात् **कर्तव्य, अर्ध, वर्धमान, आर्य, सर्व**—जो हिन्दी में अधिक प्रचलित है—ठीक ही है।

किन्तु इसी चपेटे में और बहुत से शब्द आ गये हैं जिनमें व्यंजन-द्वित्व आवश्यक है, किन्तु लोग लगाते नहीं हैं; जैसे—

महत्व	अशुद्ध है, क्योंकि शब्द है	महत् + त्व (प्रत्यय) = **महत्त्व**
सत्व	,, ,, ,, ,, ,,	सत् + त्व (प्रत्यय) = **सत्त्व**
तत्व	,, ,, ,, ,, ,,	तत् + त्व (प्रत्यय) = **तत्त्व**
उज्वल	,, ,, ,, ,, ,,	उत् (उपसर्ग) + ज्वल = **उज्ज्वल**
निसंदेह	,, ,, ,, ,, ,,	निः (उपसर्ग) + संदेह = **निस्संदेह**
निसंकोच	,, ,, ,, ,,	निः (उपसर्ग) + संकोच = **निस्संकोच**

देखिए 'संधि' और 'उपसर्ग'।

(घ) हिन्दी में **-आई** प्रत्यय बहुत व्यापक है, जैसे **ऊँचाई, भलाई, कड़ाई, दिखाई, सुनाई**। संस्कृत के किसी शब्द में **-आई** नहीं होना चाहिए, क्योंकि संस्कृत में ये दो स्वर /**आ**/ और /**ई**/ एक-साथ होकर नहीं आते। इसलिए स्थाई, उत्तरदाई, अनुयाई, आतताई, आदि सब अशुद्ध हैं। शुद्ध रूप हैं **स्थायी, उत्तरदायी, अनुयायी, आततायी, धराशायी, न्यायी**।

(ङ) संस्कृत के पञ्चमाक्षर (**ङ् ञ् ण न् म्**) व्यंजन-संयोग में आधे लिखे जाते थे। अनुस्वार ˙ का प्रयोग अन्तःस्थ तथा ऊष्म व्यंजनों के साथ होता था। अनुनासिक ँ नहीं था। जब से इन पंचमाक्षरों के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग हुआ, तब से एक गड़बड़ी पैदा हो गयी है। अनुस्वार और अनुनासिक के प्रयोग में अन्तर है और यह अन्तर बनाये रखना चाहिए—देखिए पीछे पृ० ६६।

पंचमाक्षर की जगह भले ही अनुस्वार कर दें यदि वह अनुनासिकता

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्वर में भी हो। किन्तु जहाँ अनुनासिकता केवल व्यंजन में हो, वहाँ पर पंचमाक्षर ही होगा; जैसे--

जन्म, कण्व, सन्मार्ग, वाङ्मय, मृण्मय, गण्य, धान्य, काम्य, गम्य, साम्य, दैन्य, अन्य, प्रामाण्य।

यह तो शुद्ध उच्चारण का प्रश्न है। दूसरी ओर **य, र, ल, व, श, ष, स, ह** से पहले वाले अनुस्वार का पंचमाक्षर नहीं हो सकता; जैसे **संयम, संलग्न, संसार, भ्रंश, संवरण, अंश, कंस, वंश, प्रशंसा, संयोग, संरक्षण, संवाद, संशय, संशोधन, संस्कार, संसार, सं-स्मरण, हंस, संहिता**। ये सही हैं। सम्वाद, वन्श, सन्शोधन, सम्स्मरण, हन्स आदि पंचमाक्षर वाली वर्तनी अशुद्ध है।

२. हिन्दी के शब्दों में सबसे बड़ी भूल य-श्रुति की होती है। इसके लिए देखिए पीछे पृ०७१-७२।

अ, आ, इ, ई, ए, ऐ के बाद **-आ** की मात्रा आयगी तो बीच में **य** अवश्य लिखा जायगा। उदाहरण--**गया, नया; खाया, लाया; पिया, दीया, दिया; भैया, मैया।**

विद्वानों का कहना है कि जिन शब्दों के एकवचन में **य** आ गया हो, उनके बहुवचन और स्त्रीलिंग रूप में भी **य** रहना चाहिए।

गया--इसलिए **गयी, गये।**

नया--इसलिए **नयी, नये।**

दिया--इसलिए **दिये।**

लाया--इसलिए **लाये, लायी, लायीं।**

उन विद्वानों का यह भी कहना है कि आज्ञार्थ में **-ए** रूप अन्य-पुरुष के लिए होता है, जैसे--**वह लिखे, वह सुने**। इस **-ए** का पूरा निर्वाह करना चाहिए और कभी **-ये**, कभी **-ए** नहीं बना देना चाहिए, जैसे--

खाए-खाये   **सोए-सोये**   **जाए-जाये**

बनाए-बनाये   **चलाए-चलाये**   **पढ़ाए-पढ़ाये।**

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इसी का निर्वाह भविष्यत् काल में भी करना चाहिए, जैसे—

खाएगा	**सोएगा**	**जाएगा**
बनाएँगे	**चलाएँगे**	**पढ़ाएँगे।**

व्यवहार में दोनों रूप चलते हैं। प्रत्येक लेखक की अपनी शैली है। यही बात आदरसूचक आज्ञार्थ में लागू होती है—दोनों रूप चल रहे हैं।

जाइए, खाइए, चाहिए, दीजिए, जगाइए;
एवं **जाइये, खाइये, चाहिये, दीजिये, जगाइये।**

३. (क) विदेशी शब्दों की वर्तनी में अनिश्चितता और द्विविधा अधिक है। **क़ ख़ ग़ ज़ फ़** के नीचे बहुत से लोग बिन्दु नहीं लगाते। हम समझते हैं कि यह आवश्यक है।

(ख) बहुत से शब्द ऐसे हैं जिनमें उच्चारणगत यह निश्चय नहीं हो पाया कि दो व्यंजन संयुक्त हो जाने चाहिए या नहीं, जैसे—

शरम-शर्म	**सरदी-सर्दी**	**अँगरेज़ी-अंग्रेजी**
गरमी-गर्मी	**उलटा-उल्टा**	**बिलकुल-बिल्कुल**
हलका-हल्का	**गरदन-गर्दन**	**बरतन-बर्तन।**

इनमें पहले वाले रूप अधिक प्रचलित हैं।

४. समासयुक्त शब्दों को अथवा परसर्गों को पहले-वाले शब्द से सटाकर लिखना चाहिए या अलग—इसे मैं वर्तनी की समस्या नहीं मानता। विद्यार्थियों को इन बातों में उलझाने की आवश्यकता नहीं है। बनारस वाले इन्हें मिलाकर लिखते हैं, जैसे—

हंसराजजी, शब्दचमत्कार, रामने, लक्ष्मणको। 'धर्मयुग' में भी यही शैली रहती है, किन्तु सामान्य रूप से इन्हें अलग ही लिखा जाता है, जैसे— **हंसराज जी, राम ने, लक्ष्मण को।**
किन्तु, समास बड़े-बड़े शब्दों का हो तो बीच में हाइफ़न लगा देते हैं, और छोटे-छोटे शब्दों का हो तो उन्हें जोड़ देते हैं, जैसे—**शब्द-चमत्कार, वित्त-मंत्री, सिगरेट-केस**; एवं **हलचल, ग्रामवासी, वाद-**

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विवाद। दो से अधिक शब्दों में तो उन्हें अलग-अलग लिखा जाता है, जैसे

नागरी प्रचारिणी सभा; हिन्दी साहित्य सम्मेलन
कानपुर हिन्दी परिषद्; ज़िला सहकारी बैंक।

अभ्यास

१. ऐसे पाँच-पाँच शब्द लिखो, जिनमें निम्नलिखित व्यंजन आते हैं—

क्ष, त्र, ज्ञ, श, ष, ण, य, व।

२. निम्नलिखित में जहाँ अनुस्वार या अनुनासिक नहीं है, वहाँ ठीक-ठीक चिह्न लगाओ—

सत कबीर कही नही लिये गये। उसे दो बाते सुनाई। जिन लोगो ने कहा था, उन्ही से पूछो। वह हस दिया। वे लड़किया कहा गयी ?

३. निम्नलिखित शब्दों को शुद्ध करके लिखो—

आवश्यक्ता, बाबु, स्त्रि, बिमार, प्रनाम, कश्ट, निश्काम, बुड़ापा, पवितरता, पृथवी, भौचाल, पत्नि, हिर्दय, योज्ञ, ग्यान, क्यूंके।

४. चार-चार ऐसे शब्द लिखो जिनमें निम्नलिखित आधे व्यंजन संयुक्त रूप में आयें—

क्, ग्, त्, ल्, प्, स्, र्, न्।

५. निम्नलिखित में जहाँ हल् चिह्न छूट गया है, लगा दो—

सम्राट, उदघाटन, श्रदधावान, अर्थात, चतुर्थ, सप्तम, महत, गत, वाक, पठित, सुन्दरतर, नवीनतम, परिषद।

६. निम्नलिखित के उच्चारण में जीभ कहाँ लगनी चाहिए ?—

ट, ण, त, न, ल, ष, स, क, छ, श, ड़, य, र।

७. /य/ और /व/ का उच्चारण कैसे करना चाहिए? /य/ और /व/ वाले पाँच-पाँच शब्द लिखो।

८. ह्रस्व और दीर्घ स्वर में क्या अन्तर है? उदाहरण देकर स्पष्ट करो।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

९. नीचे लिखे व्यंजनों में से सघोष और महाप्राण चुनकर दो अलग सूचियाँ बनाओ--

क ग छ भ ल य घ घ र स व थ न ख।

१०. नीचे लिखे शब्दों में स्वर और व्यंजन अलग-अलग करो—

कवि, बंधु, आम, भाला, शीशी, गति, पुरुष, शून्य, देशीय, दैवी।

११. नीचे लिखे व्यंजनों का उच्चारण-स्थान बताओ--

ख छ ठ थ फ घ झ ढ ध भ य व स ह

१२. निम्नलिखित व्यंजनों के संयोग बनाओ--

प् य, र् क, क् र, त् र, क् ष, त् त, ड् ड, द् र, ड् य, श् व, ष् ट।

उदाहरण--क् त = क्त या क्त।

१३. निम्नलिखित में से शुद्ध रूपों को रेखांकित करो--

अच्छर, अक्षर	अठारह, अट्ठारह	अधिकांश, अधकांश
अनुशरण, अनुसरण	अनिष्ठ, अनिष्ट	अभ्यस्थ, अभ्यस्त
स्थान, अस्थान	अद्विातिय, अद्वितीय	अमरूद, अरमूद
अपरान्ह, अपराह्ण	अमावस्या, अमावश्या	अर्थात्, अर्थात
अस्थायी, अस्थाई	अहार, आहार	आधीन, अधीन
ईर्ष्या, ईर्षा	आसाढ़, आषाढ़	उचित्, उचित
कलस, कलश	कल्यान, कल्याण	कुम्हार, कुम्भार
क्रिपा, कृपा	गन्गा, गंगा	गर्मि, गर्मी
ग्रहिणी, गृहिणी	गोतम, गौतम	गृहीत, ग्रहीत
जन्माष्टिमी, जन्माष्टमी	जेष्ठ, जेष्ट, ज्येष्ठ	तालाश, तलाश
तृकाल, त्रिकाल	दयालु, दयाल	दहिना, दाहिना
दूल्हन, दुल्हन, दुल्हिन	द्रिश्य, दृश्य	नारायन, नारायण
नच्छत्र, नक्षत्र	नर्तकियाँ, नर्तकीयाँ	परन्तु, प्रन्तु
प्रसंशा, प्रशंसा	परीच्छा, परीक्षा	पूज्य, पुज्य
परस्थिति, परिस्थिति	पश्चिम, पशचिम	पुस्प, पुष्प
प्राण, प्रान	प्रांगण, प्रांगन	प्रथम, प्रथम्

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रसन्न, प्रशन्न	विशाल, बिशाल	विषय, बिषय
बुधवार, बुद्धवार	ब्रम्ह, ब्रह्म	भरथ, भरत
मात्रभाषा, मातृभाषा	मुनिगण, मुनीगण	यथेष्ट, यथेष्ठ
लिक्खा, लिखा	वास्तविक,वास्तिविक	बृद्धि, त्रिद्धि, वृद्धि
श्रंगार, शृंगार	सहस्त्र, सहस्र	स्रबण, श्रवण।

१४. निम्नलिखित को शुद्ध करो--

रिण, रितु, उज्वल, महत्व, निसंदेह, आतताई, ऊँचायी, वन्श, सन्सार, भेआ, नदिओं, जायिए, दीजीए, वर्त्तन, हानी, जादू, परीवार, लघू, स्रष्टी, पन्डित, प्रतिक्षा, प्रतीज्ञा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

३

शब्द-भंडार

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शब्द-भंडार

एक या एक से अधिक वर्णों के सार्थक योग को शब्द कहते हैं। जैसे **न**, **दो**, **राम**, **क्रम**, **गुरु**, **घर**, **खेल**, **स्कूल**, **ट्रेन**, **बीमार**, **साहित्यिक**।

जिन्हें हम निरर्थक शब्द समझ बैठे हैं, जैसे **तड़तड़**, **चींचीं**, **वोटी** (**रोटी-वोटी** में), **छाड़** (**छेड़-छाड़** में), **आमने** (**आमने-सामने** में), वस्तुतः यह भी प्रयोग में सार्थक हैं। तुलना कीजिए 'रोटी' और 'रोटी-वोटी' के अर्थ में। 'रोटी-वोटी' का अर्थ हो जाता है 'रोटी, दाल, चावल, आदि।' 'सामने' और 'आमने-सामने' के अर्थ में भेद है। **चीं-चीं**, **तड़तड़**, **खटखटाना**, **बड़बड़ाना**, **हिनहिनाना** आदि शब्द ध्वनियों के अनुकरण में बने हैं और हमारी भाषा में इनका स्वतंत्र प्रयोग होता है। इनका वाक्यों में अपना स्थान और अर्थ है। जो शब्द सचमुच निरर्थक होते हैं (जैसे **ङणमा**, **णोली**), इनको 'शब्द' की संज्ञा ही नहीं दी जा सकती, क्योंकि ये भाषा के अंग नहीं होते। भाषा में सभी शब्द सार्थक होते हैं।

हिन्दी के सार्थक शब्दों का वर्गीकरण मुख्यतः चार आधारों पर किया गया है—(क) स्रोत, व्युत्पत्ति या इतिहास के आधार पर; (ख) अर्थ के आधार पर; (ग) रचना (बनावट) के आधार पर; और (घ) व्याकरण (या वाक्य में प्रयोग) के आधार पर। इनमें तीसरे वर्ग के शब्दों की चर्चा अगले अध्याय में की जायगी, और चौथे वर्ग के शब्दों को 'व्यावहारिक व्याकरण' शीर्षक अध्याय के अन्तर्गत लिया जायगा। इस अध्याय में प्रथम दो वर्गों के शब्दों का विवेचन किया जा रहा है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

व्युत्पत्ति या इतिहास का आधार

व्युत्पत्ति की दृष्टि से हिन्दी भाषा में चार प्रकार के शब्द हैं—तत्सम, तद्भव, देशी और विदेशी। तत्सम का अर्थ है 'उसके समान' अर्थात् 'संस्कृत के समान।' संस्कृत के वे शब्द जो हिन्दी में ज्यों के त्यों प्रयुक्त होते हैं, तत्सम कहलाते हैं—जैसे **कक्षा, कथा, कर्म, कार्य, कल्याण, कवि, केश, क्रोध, अकाल, उदय, अस्त, वायु, अग्नि, आकाश, शरद्, वसन्त, समुद्र, पर्वत, नदी, पृथ्वी, अन्तरिक्ष, सायं, प्रातः, माता, पिता, भ्राता, हृदय, मस्तक, देवी, देवता, धर्म, जप, तप, सत्य, विद्या, अहिंसा, मन, प्राण।**

[पिछले अध्याय में हमने अनेक संस्कृत शब्दों की सूचियाँ दी हैं। अगले अध्याय में भी देखिए 'सन्धि', 'उपसर्ग', 'प्रत्यय' के अन्तर्गत।]।

शिक्षित वर्ग की भाषा में, साहित्य और ज्ञान-विज्ञान में संस्कृत शब्दों की प्रचुरता रहती है। हमारे पाठ्य विषयों में अधिकतर पारिभाषिक शब्दावली का आधार संस्कृत ही है।

'तद्भव' का अर्थ है 'उस (संस्कृत) से उत्पन्न या विकसित।' प्रायः संस्कृत शब्द हिन्दी तक आते-आते घिसपिटकर परिवर्तित हो गये हैं। **हस्त** से **हाथ**, **कर्ण** से **कान**, **बाहु** से **बाँह**, **दन्त** से **दाँत**, **जिह्वा** से **जीभ**, **कार्य** से **काज**, **कर्म** से **काम**, **कोष्ठ** से **कोठा**, **प्रकोष्ठ** से **परकोठा**, **द्वौ** से **दो**, **सप्त** से **सात**, **दशम** से **दसवाँ**, **अग्नि** से **आग**, **धूम्र** से **धुआँ**, **रात्रि** से **रात**, **संध्या** से **साँझ**, **दुग्ध** से **दूध**, **दधि** से **दही**, **घृत** से **घी**, **क्षीर** से **खीर**, **सूत्र** से **सूत**, **क्षेत्र** से **खेत**, **चक्र** से **चाक**, **सर्प** से **साँप**, **भ्रातृ** से **भाई**, **वधू** से **बहू**, **कुम्भकार** से **कुम्हार**, **लोहकार** से **लोहार**, **सत्य** से **सच**, **पक्व** से **पक्का**, **ज्येष्ठ** से **जेठ** बन गया है।

आगे इसी तरह के तत्सम और तद्भव शब्दों की सूची दी जा रही है। ये दोनों प्रकार के शब्द हिन्दी में यथास्थान प्रयुक्त होते हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
अंधकार	अँधेरा	कोकिला	कोयल	दक्षिण	दाहिना
अट्टालिका	अटारी	ग्रन्थि	गाँठ	दुर्बल	दुबला
लज्जा	लाज	श्वास	साँस	ग्राहक	गाहक
आश्चर्य	अचरज	गृह	घर	नग्न	नंगा
अश्रु	आँसू	छिद्र	छेद	नृत्य	नाच
अर्ध	आधा	जीर्ण	झीना	पत्र	पत्ता
एकत्र	इकट्ठा	दंड	डंडा	परीक्षा	परख
उज्ज्वल	उजला	शिथिल	ढीला	पौत्र	पोता
उच्च	ऊँचा	ताप	ताव	विकार	बिगाड़
कमल	कँवल	तीक्ष्ण	तीखा	बिन्दु	बूँद
कुपुत्र	कपूत	तैल	तेल	वृद्ध	बूढ़ा
काष्ठ	काठ	जामाता	दामाद	भिक्षा	भीख
कूप	कुआँ	दीपक	दीया	मस्तक	माथा ।

हिन्दी में प्रायः सभी सर्वनाम , बहुत से क्रियापद, क्रिया-विशेषण, आदि तद्भव हैं। संज्ञापदों की संख्या सबसे अधिक है। शिक्षित वर्ग की अपेक्षा जनसाधारण में तद्भव शब्दों का प्रयोग अधिक होता है।

विदेशी शब्द अरबी, फ़ारसी, तुर्की, आदि एशिया की भाषाओं से और अंग्रेज़ी, फ्रेंच, पुर्तगाली, डच आदि यूरोपीय भाषाओं से आये हैं। उदाहरण--

अरबी--असर, इजलास, एहसान, खत्म, खारिज, इरादा, इशारा, सलाह, लेकिन, अल्लाह, इमाम, ईमान, इन्कलाब, तहसील, ज़िला, हकीम, हलवाई, बालिग़, बुनियाद, ईद, मज़हब, मुसलमान, मुल्ला, साफ़, नक़द।

फ़ारसी—आबरू, आराम, आसमान, आफ़त, आमदनी, आवारा, आईना, उस्ताद, अगर, मगर, उम्मीद, अमरूद, बादाम, अंगूर, बारिश, मेहनत, गवाह, कारीगर, दर्ज़ी, दफ़्तरी, दलाल, जुलाहा, मज़दूर, बुखार, बदहज़मी, ज़ुकाम, दवा, जलेबी, समोसा, बर्फ़ी, बालूशाही, कुरता, पाजामा,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बुलबुल, मकान, दीवार, दरवाज़ा, बरामदा, आसान, मुश्किल, बेकार, चालाक, गंदा, ख़ुश, तेज़, सुस्त।

तुर्की--उर्दू, कूच, क़ैंची, क़ाबू, क़ुली, ख़ंजर, चाकू, चिक, चोग़ा, चेचक, चम्मच, तमंचा, तोप, तगार, तोशक, दारोगा, बारूद, बेगम, बहादुर, बख़्शी, मुचल्का, लाश, सराय।

इन स्रोतों से आनेवाले शब्दों की संख्या ३-४ हजार के बीच में है। इनमें फ़ारसी के शब्द अधिक हैं। यह स्वाभाविक ही है, क्योंकि फ़ारसी यहाँ के मुसलमानी राज्यकाल में राजभाषा रही है। अन्य एशियाई भाषाओं के शब्द इस प्रकार हैं--

चीनी से चाय, लीची।

जापानी से झम्पान, रिक्शा।

तिब्बती से डांडी।

यूरोपीय भाषाओं में अंग्रेज़ी शब्दावली का प्रभाव सबसे अधिक है। उदाहरण--

अपील, बोर्ड, चीफ़, कलक्टर, कोर्ट, फ़ाइल, गज़ट, जज, मजिस्ट्रेट, पुलिस, टैक्स, वोट, आफ़िसर, पेन्शन, पेपर, होल्डर, पेन, पिन, पेंसिल, स्कूल, कालेज, लाइब्रेरी। हस्पताल, नर्स, डाक्टर, वार्ड। सीमेंट, पेंट, प्लेट, जग, कप, लैम्प, सूटकेस, माचिस। बिस्कुट, चाकलेट, टाफ़ी, टोस्ट। प्रेस, कैमरा, मशीन, साइकिल, ब्रेक, मोटर, बस, लारी, बैटरी, बम, इंजन, क्रेन। बूट, पैंट, कालर, कफ़, फ़्राक, जम्पर, कोट, गाउन, हैट।

पुर्तगाली--अनानास, आया, आलपीन, कनस्तर, कमरा, क्रिस्तान, कोको, गमला, गिरजा, गोदाम, चाबी, तंबाकू, तौलिया, नीलाम, पपीता, पाव (रोटी), पादरी, पिस्तौल, बम्बा, बाल्टी, मारतौल, यीशू।

फ्रेंच--अंग्रेज़, कार्तूस, कूपन, लाम, फ्रांसीसी।

डच--तुरुप, बम (टाँगे का)।

रूसी--रूबल, ज़ार, वोदका, स्पुतनिक, सोवियत।

स्पेनी--अल्पाका।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

देशी––देशी या देशज उन शब्दों को कहते हैं, जो उपर्युक्त तीन वर्गों में से किसी में भी नहीं आ सकते। ये इस देश की अपनी उपज हैं। इतिहासकार बताते हैं कि आर्य जातियाँ मध्य एशिया से आयी थीं। संस्कृत भाषा यहाँ की देशी भाषा नहीं है। इसलिए संस्कृत के शब्दों को अथवा संस्कृत से बने शब्दों को देशी नहीं कहा जाता है। देशी शब्द वे हैं, जो यहाँ की आदिवासी जातियों से अपनाये गये हैं। उदाहरण––

कोल-संथाल आदि जातियों से––कदली (केला), कपास, बाजरा, ताम्बूल, मिर्च, सरसों, तोरी, भिंडी, भाटा, परवल, टींडा, गज (हाथी), झींगा, कोड़ी आदि।

द्रविड़ जातियों से––ऊखल, कज्जल, कठिन, काच, कानन, कुटि, कुटिल, कूटना, कुंड, कुंडल, कुद्दाल, कुंतल, केतकी, कोण, खल, घुण, चिकना, चतुर, चन्दन, चूड़ी, ताला, दंड, नीर, पिटक, पिंड, बल, बिल्ली, मयूर (मोर), माला, मीन, मुकुट, मुक्ता, वल्ली (बेल), शव, शूर्प, आदि। हमारे देखते-देखते डोसा, इडली, सांभर, पिल्ला आदि शब्द आये हैं।

दूसरे प्रकार के देशी शब्द वे हैं, जिन्हें अनुकरणात्मक अथवा ध्वन्यात्मक कहा जाता है। आवश्यकता होने पर लोग किसी वास्तविक अथवा काल्पनिक ध्वनि के अनुकरण में शब्द गढ़ लेते हैं, जैसे फटफट करती एक साइकिल गाड़ी को जाते देखा और उसका नाम '**फटफटिया**' रख दिया। ये शब्द देशी गढ़न के उत्तम नमूने हैं। हिन्दी में इनकी संख्या कई सौ है। उदाहरण––

संज्ञापद––अंडबंड, कड़कड़, कड़क, कपकपी, कलकल, काँय-काँय, किलकारी, खटका, खटपट, खरखरा, खर्राटा, खलबली, गड़गड़ाहट, चाट, चुटकी, छुच्छी, झंकार, झंझट, झुमका, ठठेरा, ठट्ठा, ठेस, ठिठुरन, भभक, पापड़, धक्का, भोंपू।

विशेषण––ऊटपटांग, ऊलजलूल, खचाखच, खुरखुरा, गिलगिला, घुन्ना, चटपटा, चिड़चिड़ा, चिपचिपा, चुलबुला, छिछला, टुच्चा, मुस्टंडा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

क्रियापद—कटकटाना, किटकिटाना, कूकना, खटखटाना, खनकना, सिसकना, खुरचना, घुड़कना, चटकना, चरमराना, चहकना, चूसना, छिटकना, झकझोरना, झींखना, टपकना, टर्राना, ठोंकना, थरथराना, बिदकना, सनसनाना, हकलाना, रिरियाना।

कई शब्द प्रतिध्वनि के रूप में गढ़ लिये जाते हैं, जैसे **सामने**, **पड़ोस**, **पता** और **पास** से पहले **ग्रामने**, **ग्रड़ोस**, **ग्रता**, **ग्रास**; और **गोल**, **रोटी**, **मेल**, **चुप**, **नंगा**, **छेड़**, **पकड़** के बाद क्रमशः **मटोल**, **बोटी**, **जोल**, **चाप**, **धड़ंगा**, **छाड़**, **धकड़**।

इनका भले ही कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है, लेकिन अपने शब्दों के साथ लगकर एक विशिष्ट अर्थ की सृष्टि करते हैं। तब यह सार्थक हो जाते हैं।

अर्थ का आधार

अर्थ के आधार पर हिन्दी शब्दों को कई वर्गों में बाँटा जा सकता है—

एकार्थी, अनेकार्थी (बह्वर्थी), समानार्थी (पर्यायवाची), विलोमार्थी (विपरीतार्थक), ध्वनिबोधक, युग्म, और विविध।

एकार्थी

एकार्थी वे शब्द हैं, जिनका एक ही अर्थ होता है, जैसे मनुष्य के नाम—**मोहनदास कर्मचंद गांधी**, **चर्चिल**, **हिटलर**, **स्टालिन**।

नगरों के नाम—**लंदन**, **मास्को**, **पेरिस**, **बर्लिन**, **दिल्ली**, **कलकत्ता**।

गाँवों और कस्बों के नाम—**जंघई**, **बिंदकी**, **फफूँद**, **टुंडला**, **भाऊपुर**।

पहाड़ों के नाम—**हिमालय**, **विंध्याचल**, **एण्डीज़**, **पिरनीज़**।

नदियों के नाम—**गंगा**, **यमुना**, **गोदावरी**, **टेम्स**, **मिसिसिपी**।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

महीनों के नाम--**जनवरी, फ़रवरी, अप्रैल, मई, चैत्र, आषाढ़, पौष।**

दिनों के नाम--**सोमवार, मंगलवार, बुधवार,** इत्यादि।

उपाधियाँ--**महामहोपाध्याय, निराला, रत्नाकर, गालिब।**

कलाएँ--**संगीत, वास्तुकला, साहित्य, काव्य, मूर्तिकला।**

विद्याएँ--**इतिहास, भूगोल, मनोविज्ञान, रसायनशास्त्र, भौतिकी।**

भाषाएँ--**अंग्रेज़ी, रूसी, उर्दू, संस्कृत, पालि, हिन्दी।**

बीमारियाँ--**यक्ष्मा, पक्षाघात, प्लेग, हैज़ा, फ़्लू,** आदि।

इनके अतिरिक्त सैकड़ों साधारण शब्द हैं, जिनका एक ही अर्थ होता है, जैसे **बोतल, शीशी, रेडियो, बस, पेंसिल, किताब, मेज़, कुर्सी, दरवाज़ा, दीवार, छत, पंखा, एक, दो, दस, बीस, नीला, पीला, लाल, हरा,** सबका एक-एक अर्थ है।

पारिभाषिक शब्दों का अर्थ एक ही होता है। यदि एक शब्द के कई अर्थ हों तो ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में भ्रान्तियाँ पैदा हो जायँ; कानून में एक शब्द के दो अर्थ हो जायँ तो किसी वाद का निर्णय ही न हो सके।

अनेकार्थी

हमें कोशों में एक-एक शब्द के कई अर्थ मिल जाते हैं, किन्तु भाषा के व्यवहार में उनका प्रायः एक-एक अर्थ होता है। बहुत थोड़े शब्द हैं, जिनके सचमुच एक से अधिक अर्थ हो सकते हैं, जिनके कारण अर्थ की अस्पष्टता बराबर बनी रहती है। ऐसे शब्द और प्रसंग बहुत कम होते हैं। सामान्यतः एक प्रसंग में अनेक अर्थों में से एक अर्थ लागू होता है। उदाहरण-स्वरूप **'गोली'** शब्द के कई अर्थ हैं; किन्तु दर्ज़ी के लिए वह धागे की गोली है, सिपाही के लिए वह बन्दूक की गोली है, वैद्य के लिए वह दवा की गोली है, किसी स्वामिनी के लिए वह छोकरी है, इत्यादि।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जेठ का अर्थ है 'पति का बड़ा भाई' और 'वैशाख के बाद का महीना'। किन्तु जब कोई स्त्री कहती है कि 'मेरे जेठ कल आनेवाले हैं' या 'यह मेरे जेठ का छोटा लड़का है' तो दूसरा अर्थ ग्रहण नहीं किया जाता। इसी प्रकार कोई कहता है 'जेठ में लू चलती है' तो पहला अर्थ लागू नहीं होता। नीचे की सूचियों में यह बात और अधिक स्पष्ट हो जायगी।

अनेकार्थी शब्दों के अर्थों का ज्ञान अपनी शब्दावली की समृद्धि के लिए अत्यन्त आवश्यक है, इससे आप भ्रांतियों से बच सकते हैं और किसी शब्द का प्रयोग ठीक-ठीक कर सकते हैं। इसके लिए कोई अच्छा शब्दकोश देखते रहना चाहिए। नीचे हम दो सूचियाँ दे रहे हैं। एक सूची में नमूने के तौर पर अर्थ को वाक्य द्वारा स्पष्ट किया जायगा। दूसरी सूची में अर्थ तो दिया गया है, लेकिन वाक्य में उसका प्रयोग आप पर छोड़ दिया गया है, ताकि आपका अभ्यास हो।

प्रथम सूची

अकाल—समय के बाहर—उसकी अकालमृत्यु पर शोक प्रकट किया गया।
—दुर्भिक्ष—पूर्वी बंगाल में अकाल पड़ गया।

अंक —नंबर (गिनती)—उसे परीक्षा में ४५ अंक मिले।
पूरी धनराशि को अंकों में लिखो।
—नाटक का भाग—प्रसाद के इस नाटक में चार अंक हैं।

उत्तर —दिशा—भारत के उत्तर में हिमालय है।
—जवाब—मेरे पत्र का उत्तर तुरंत दीजिएगा।

कल —मशीन—कपड़े सीने की कल; कल-कारखाने।
—आराम—उसे एक करवट कल नहीं पड़ती।
—आज से पिछला दिन—मैं वहाँ कल गया था।
—आज से अगला दिन—मैं वहाँ कल जाऊँगा।

काल —समय—भक्तिकाल में; प्राचीन काल का साहित्य।
—मृत्यु—उसका काल सिर पर मँडरा रहा था।

घन —बादल—आये घन, घनश्याम न आये।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

—हथौड़ा—लोहे को घन से पीटा गया। घन की चोट।
—संख्या का दो बार गुणा—४ का घन=४³=४×४×४=६४ होता है।

दंड —डंडा—ब्रह्मचारी दंड लेकर चल पड़ा।
—सज़ा—अपराधी को दंड दिया गया।
—व्यायाम—दंड-बैठक से फुर्ती आती है।

नाना —माँ का पिता—नाना जी आ गये।
—विविध—नाना प्रकार के लोग थे।

दल —पत्ता, जैसे तुलसी-दल, कमल-दल।
—समूह—जैसे सेना का दल।
—पक्ष—संसद् में कई दलों के प्रतिनिधि हैं।

नाथ —स्वामी—हे नाथ! मैं तेरे बिना अनाथ हूँ।
—नाक की मुँदरी—बैल के न नाथ न पगहा।

पत्र —पत्ता, जैसे भोज-पत्र, पत्र-पुष्प।
—चिट्ठी—आपका कृपापत्र मिला।

पद —शब्द, जैसे संज्ञापद, क्रियापद।
—छंद, जैसे कबीर के पद, सूर का अमुक पद।
—पैर, जैसे पद-कमल, पदार्पण करना।
—ओहदा—उसे एक ऊँचा पद मिलनेवाला है।

फल —मेवा—फल खाओ।
—नतीजा, जैसे परीक्षा-फल निकलनेवाला है।
—चाकू आदि का फल लोहे का होता है।

मुद्रा —रुपया—हमें विदेशी मुद्रा की आवश्यकता रहती है।
—मोहर, जैसे मुद्रांकन करना।
—आकृति—उसकी मुखमुद्रा देखकर मैं डरा।

मूल —जड़—इस बात के मूल में कोई रहस्य है।
—असली (वि०)—इसे मूल प्रति से मिलाकर देख लें।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राशि —ढेर, जैसे धन-राशि।

—मेषादि—उसकी राशि वृश्चिक / मिथुन है।

वर —दूल्हा—वर-वधू के उपलक्ष्य में जलपान।

—श्रेष्ठ—बन्धुवर, प्रियवर।

—वरदान—उसने देवता से यह वर माँगा।

वर्ण —रंग—कुछ लोग वर्णांध होते हैं।

—अक्षर—कवर्ग के अन्तर्गत पाँच वर्ण हैं।

—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये चार वर्ण थे।

विधि —क़ानून, जैसे विधि-संहिता।

—रीति—इस विधि से किया जा सकता है।

—विधाता—विधि ने जो भाग्य में लिख दिया।

हल —खेती करने के लिए हल की आवश्यकता होती है।

—समाधान—इस प्रश्न का हल क्या है?

हार —पराजय—उसकी जीत हो या हार, हमें क्या?

—फूलमाला—अतिथि के गले में हार डाला गया।

दूसरी सूची

अंबर—आकाश; कपड़ा (जैसे पीतांबर)

अधिकार—कब्ज़ा; हक़

अर्थी—टिकठी; चाहनेवाला (विद्यार्थी)

आम—एक फल; सामान्य

कर—हाथ (करकमल); टैक्स

काँटा—चुभनेवाला; तौलनेवाला

कुल—सब; वंश

केस—केश; case

ग्रहण—लेना; ग्रसन (चंद्रग्रहण)

चरण—पाँव; पंक्ति का आधा

चारा—घास; वश (वेचारा)

चौकी—लकड़ी की; थाने की

जड़—मूर्ख; मूल

जीता—विजयी; ज़िंदा

टीका—तिलक; व्याख्या

तीर—किनारा; बाण

तुलना—तौला जाना; मिलान

धुलाई—धुलाने का काम; दाम

पानी—जल; आब, चमक

पूर्व—पहले; पूरब दिशा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पृष्ठ—पीठ; पेज

भाग—हिस्सा; दौड़ जा

वार—दिन; हमला

सीना—छाती; सिलाई करना

फूल—पुष्प; अस्थि-शेष

भूत—प्रेत; बीता हुआ (काल)

विहार—घूमना (वन-विहार); आश्रम (बौद्ध-विहार)

सोना—(क्रि०) नींद लेना; स्वर्ण।

समानार्थक या पर्यायवाची शब्द

समानार्थक शब्दों को दो कोटियों में रखा जा सकता है—पूर्ण और अपूर्ण। पूर्ण पर्याय वे हैं, जो एक-दूसरे का स्थान ले सकते हैं, जैसे यह पहाड़ है, यह पर्वत है; आपका जैसा आदेश हो, आपका जैसा हुक्म हो; इसके अतिरिक्त, इसके अलावा; आपको बड़ा कष्ट हुआ, आपको बड़ी तकलीफ़ हुई; इत्यादि। अतिरिक्त उदाहरण—

अंक, नम्बर

अंधड़, तूफ़ान

अँधेरा, अंधकार

अकड़ना, ऐंठना

अक्ल, बुद्धि

अगर, यदि

अग्नि, आग

अघाना, छकना

अत्यन्त, अतीव

अथाह, अगाध

अमुक, फलाना

अनुपस्थित, ग़ैरहाज़िर

अमृत, सुधा

अर्ज़ी, प्रार्थना-पत्र

असर, प्रभाव

आँख, नयन, नेत्र

आकाश, गगन, आसमान

आज़ादी, स्वतंत्रता

आदमी, मनुष्य

आफ़िस, दफ़्तर, कार्यालय

आबादी, जनसंख्या

आमदनी, आय

आवश्यक, ज़रूरी

इंतज़ार, प्रतीक्षा

इंस्पेक्टर, निरीक्षक

इच्छा, चाह, मर्ज़ी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इस्पात, फ़ौलाद
इश्तहार, विज्ञापन
ईश्वर, परमात्मा
उकताना, ऊबना
उगाही, वसूली
उजला, साफ़
उतावला, अधीर
उत्तरदायित्व, ज़िम्मेदारी
उपज, पैदावार
ऋतु, मौसम
एजंट, अभिकर्ता
ऐक्टर, अभिनेता
ओर, तरफ़
कंठ, गला
कठोर, कड़ा, सख़्त
कतरब्योंत, काटछाँट
कथा, कहानी
कप, प्याला
कपड़ा, वस्त्र
कमज़ोरी, दुर्बलता
कर, टैक्स
करीब, निकट, पास
क़र्ज़, ऋण
क़सम, सौगंध, शपथ
कसरत, व्यायाम
काठ, लकड़ी
काम, कार्य

कारखाना, फ़ैक्टरी
कारण, वजह
कारावास, जेल, क़ैदखाना
कालेज, महाविद्यालय
किन्तु, परन्तु, लेकिन
किताब, पुस्तक
किनारा, तट
क़िला, दुर्ग
क़ीमत, मूल्य, दाम
कुम्हलाना, मुरझाना
कृपा, मेहरबानी
केवल, सिर्फ़
क़ैदी, बंदी
कोषाध्यक्ष, ख़ज़ांची
क्रोध, कोप, गुस्सा
क्षमा, माफ़ी
खटपट, अनबन
ख़बरदार, सावधान
ख़याल, विचार
खरीददार, गाहक, ग्राहक
ख़र्च, व्यय
ख़ास, विशेष
ख़िलाफ़, विरुद्ध
खुश, प्रसन्न
खुशामद, चापलूसी
ख़ून, रक्त
खोना, गँवाना

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गणित, हिसाब
ग़रीब, निर्धन, दरिद्र
गवर्नमेंट, सरकार
गवर्नर, राज्यपाल
गवाह, साक्षी
गहना, ज़ेवर
गिरावट, पतन
गीदड़, सियार
गुलाल, अबीर
गोश्त, मांस
घर, गृह
चंद्रमा, चाँद
चतुर, चालाक, होशियार
चाबी, कुंजी, ताली
चिन्ता, फ़िक्र
चिकित्सा, इलाज
चिकित्सालय, अस्पताल
चिड़िया, पक्षी, पखेरू
चिपचिपा, लसदार
चीज़, वस्तु
चुनाव, निर्वाचन
चौखटा, फ़्रेम
छापाखाना, प्रेस, मुद्रणालय
छेद, सूराख़
जंगल, वन, अरण्य
जगह, स्थान,
ज़बान, जीभ, जिह्वा

ज़बानी, मौखिक
ज़मीन, पृथ्वी, धरती, भूमि
जल, पानी
जल्दी, शीघ्र
जवानी, यौवन
जवाब, उत्तर
ज़हर, विष
जीत, विजय
जीवित, ज़िंदा
ज्वर, बुख़ार
झक्की, सिड़ी
झाग, फेन
झिझक, हिचक, संकोच
झुकाव, रुझान, प्रवृत्ति
झेलना, भुगतना
टाइम, समय, वक्त
डाँट, फटकार
ड्रामा, नाटक
ढंग, तरीका
ढूँढ़ना, खोजना
तंदुरुस्त, स्वस्थ
तनख़्वाह, वेतन
तन, शरीर, देह, काया
तरकारी, सब्ज़ी
तलवार, खड्ग
तीखा, तीक्ष्ण, तेज़
तुरंत, फ़ौरन, तत्काल

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

त्यौहार, पर्व
थमना, रुकना
दंड, सज़ा
दर्द, पीड़ा
दल, पार्टी, गुट
दास, गुलाम
दिलेरी, साहस
दुश्मन, शत्रु, वैरी
दोस्त, मित्र, यार
धंधा, पेशा
निद्रा, नींद
नींव, बुनियाद
नुकसान, हानि
नौका, नाव
न्याय, इन्साफ़
पति, घरवाला, भर्ता
पत्नी, अर्द्धांगिनी
औरत, घरवाली
पक्ष, पखवारा
पर्वत, शैल, पहाड़
पवन, वायु, हवा
पहला, प्रथम
पिता, बाप
पुत्र, बेटा, लड़का
पुत्री, बेटी, लड़की
प्रकाश, रोशनी
फूल, पुष्प, कुसुम, सुमन

बादल, मेघ
बाल, केश
बिजली, विद्युत्, तड़ित्
भौंरा, भ्रमर
मछली, मत्स्य, मीन
मदिरा, सुरा, शराब
मधुर, मीठा
मनाही, निषेध
माता, माँ
मोक्ष, मुक्ति, छुटकारा
मृत्यु, मौत, निधन, देहावसान
योग, जोड़
रंगमंच, स्टेज
राजा, नृपति, नरेश, भूपति
रिसना, चूना, टपकना
रात, रात्रि, रैन, रजनी
लाइन, रेखा, पंक्ति
लज्जा, शर्म
लीडर, नेता
विस्तार, फैलाव
शक्ति, ताक़त
शपथपत्र, हलफ़-नामा
सचाई, सत्य
सदी, शती, शताब्दी
सर्टिफ़िकेट, प्रमाणपत्र
स्त्री, नारी, महिला, औरत
हाथी, हस्ती, कुंजर।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

टिप्पणियाँ--किसी विद्वान् ने कहा है कि किसी भी भाषा में कोई दो शब्द पूर्णतया समानार्थक नहीं होते। ऊपर-ऊपर से हमें लगता है कि इनमें प्रत्येक समूह के शब्दों को एक दूसरे के स्थान पर प्रयुक्त किया जा सकता है। किन्तु, सभी समूहों में समानार्थकता नहीं है। नीचे हम कुछ उदाहरण दे रहे हैं। बायें स्तम्भ के वाक्य में तो ये शब्द एक दूसरे का स्थान ले रहे हैं, किन्तु दाहिने स्तम्भ के वाक्य में ऐसा नहीं हो सकता; अतः ये पूर्ण पर्याय नहीं हैं--

वे उत्तरप्रदेश के गवर्नर/राज्यपाल थे।	वे रिजर्व बैंक के गवर्नर हैं।
डाक्टर ने कहा, 'ज़बान/जीभ दिखाओ'।	उर्दू ज़बान में ग़ज़लें मिलती हैं।
वह जल्दी/शीघ्र पहुँच जायगा।	जल्दी करो।
मोहन एक ग़रीब/निर्धन विद्यार्थी था।	उस ग़रीब ने तुम्हारा क्या विगाड़ा है।
उत्तर प्रदेश की सरकार/गवर्नमेंट...	हाँ सरकार! मैं वहाँ नहीं था।
गणित/हिसाब में उसे ५० अंक मिले।	बनिये का हिसाब चुकता कर दो।
मेरा तो यह ख्याल/विचार है कि...	मेरा प्रार्थनापत्र विचाराधीन है।
अपने रक्त/ख़ून का दान कीजिए।	कल चौक के पास एक ख़ून हो गया।
इसके अतिरिक्त/अलावा यह बात है।	उसे अतिरिक्त अंक मिले।

शैली और वातावरण के भेद से भी शब्द-भेद प्रस्तुत हो जाता है। हम यह तो कह सकते हैं कि इस पुस्तक का मूल्य/दाम अधिक है या इस किताब की कीमत ज़्यादा है, लेकिन हम किसी कुंजड़े से यह न कहेंगे कि इस लौकी का मूल्य क्या है।

कुछ शब्द केवल साहित्य में व्यवहृत होते हैं, जैसे आँख के लिए नेत्र, नयन; समुद्र के लिए जलधि, आदि; किन्तु सामान्य भाषा में इनका प्रचलन नहीं है। सूर्य के पर्याय दिनकर, दिवाकर, प्रभाकर आदि कोशों में तो हैं, अथवा काव्य में तो मिलेंगे, अथवा पुरुषों के नामों में भी हैं, किन्तु सामान्य भाषा में इनका व्यवहार नहीं होता।

इस प्रकार पूर्ण पर्यायों की संख्या बहुत कम रह जाती है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

समानार्थक शब्दों में प्रयोग-भेद

अपूर्ण पर्याय वे हैं, जिनके अर्थ और प्रयोग में अन्तर होता है, किन्तु कमसमझ लोग पूरी शिक्षा के अभाव में इन्हें पूर्ण पर्याय मान बैठते हैं। सुशिक्षित और सुसंस्कृत व्यक्ति की यह विशेषता है कि वह शब्दों के सूक्ष्म भेद समझकर इनका प्रयोग करता है। उच्च कक्षाओं के विद्यार्थियों को शब्दों के चुनाव में सावधान रहना चाहिए। उनकी भाषिक शिक्षा के निमित्त हम ऐसे शब्दों की एक वृहत् सूची दे रहे हैं––

संज्ञाएँ

१. **अच्छाई**—उसमें यह भी एक अच्छाई है। **भलाई**––(भला कार्य) उसने मेरे साथ क्या भलाई की है?

२. **अज्ञ, अज्ञानी**––जिसे कुछ भी ज्ञान न हो। **मूर्ख**––जो समझाने पर भी न समझे। **अनभिज्ञ**—जिसे कुछ भी अनुभव न हो पाया हो।

३. **अधिवेशन**––पूरा––परिषद् का आठवाँ वार्षिक अधिवेशन था। **बैठक**––अधिवेशन की आज दूसरी बैठक थी।

४. **अध्यक्ष**––मुखिया––विभाग के अध्यक्ष। **सभापति**––अधिवेशन या बैठक के। सोसाइटी के **प्रधान**, प्रमुख कर्मचारी।

५. **अध्ययन**––साधारण पढ़ाई। **अनुशीलन**—गंभीर और सूक्ष्म अध्ययन। **स्वाध्याय**––मननपूर्वक अध्ययन।

६. **अनुकम्पा**—किसी के दुःख को देखकर कृपाभावना। **अनुग्रह**—दूसरे का इष्ट-सम्पादन। **कृपा**––हृदय का उदार भाव, जैसे मित्र की कृपा। **करुणा**—किसी के दुःख से व्याकुलता। **दया**—किसी का दुःख कम करने के लिए तरस खाना।

७. **अनुभव**––इन्द्रियों के माध्यम से। **अनुभूति**––अनुभव की आंतरिक तीव्रता।

८. **अनुराग**—वस्तुओं के प्रति लगाव। **आसक्ति**—मोह, चसका। **स्नेह**—छोटों के प्रति प्रेम। **प्रेम**—छोटे-बड़े सबके प्रति।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

९. **अन्याय**—नियम या कानून के अनुसार न होना। **अधर्म**—धर्म का उल्लंघन।

१०. **अपमान**—छोटे या बराबर वाले अपमान करते हैं। **तिरस्कार**—वस्तु या व्यक्ति के आदर की उपेक्षा।

११. **अपराध**—राज्य के नियमों का उल्लंघन। **पाप**—सामाजिक या धार्मिक नियम का उल्लंघन।

१२. **अभिमान**—अपने को बड़ा और दूसरों को छोटा समझना। **अहंकार**—बिना गुण के अपने को बड़ा समझना।

१३. **अभिवादन**—अपने परिचय के साथ प्रणाम। **नमस्कार**—बराबर के लोगों से। **प्रणाम**—अपने से बड़ों को।

१४. **अर्पण**—बड़ों को। **प्रदान**—छोटों को।

१५. **अवस्था**—पिता जी की अवस्था ५५ वर्ष है। **आयु**—कुल उम्र—ज्योतिषी ने बताया कि तुम्हारी आयु ८० वर्ष होगी।

१६. **अस्त्र**—जो फेंका जाय, जैसे बम, वाण। **शस्त्र**—जो हाथ में रखे-रखे चलाया जाय।

१७. **आकार**—उसका आकार गोल है। **रूप**—उसका रूप सुंदर है।

१८. **आग्रह**—थोड़ा-थोड़ा हठ। **अनुरोध**—प्रार्थनायुक्त आग्रह।

१९. **आचार**—व्यक्तिगत आचरण। **व्यवहार**—समाजगत (दूसरों के प्रति). आचरण।

२०. **आतंक**—अपने से अधिक सबल का। **आशंका**—भावी अमंगल की संभावना से उत्पन्न। **भय**—मन की संकुचित अवस्था।

२१. **आधि**—मानसिक कष्ट। **व्याधि**—शारीरिक कष्ट।

२२. **आनंद**—स्थायी तथा व्यापक। **हर्ष**—प्रसन्नता से रोमांच तक।

२३. **आराधना**—दया-याचना। **भजन**—ईश्वर-स्तुति और जप। **पूजा**—भक्तिपूर्ण स्तुति-प्रार्थना। **अर्चना**—नैवेद्यादि सहित पूजा।

२४. **आह्लाद**—क्षणिक किन्तु तीव्र, मानसिक। **आमोद**—मानसिक तथा शारीरिक। **उल्लास**—सफलता पर क्षणिक प्रसन्नता।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

२५. **आलोचना**—किसी पक्ष का विवेचन। **समालोचना**—संतुलित सम्पूर्ण आलोचना।

२६. **आशा**—अभीष्ट वस्तु की प्राप्ति की। **विश्वास**—सहायता मिलने का भरोसा।

२७. **इच्छा**—किसी साधारण वस्तु की चाह। **कामना**—किसी विषय की प्राप्ति की चाह। **संकल्प**—किसी कार्य को करने का दृढ़ निश्चय।

२८. **ईर्ष्या**—दूसरों की उन्नति देखकर जलना। **द्वेष**—कारणवश वैरभाव। **स्पर्धा**—उन्नति में दूसरे से बढ़ने की अभिलाषा।

२९. **उत्साह**—मन की उमंग। **उद्यम**—क्रियाशील रहना। **उद्योग**—भरसक या उत्साहपूर्ण सोद्देश्य प्रयत्न। **प्रयास**—साधारण प्रयत्न। **साहस**—मानसिक शक्ति से कार्य करने की प्रेरणा।

३०. **उदाहरण**—आपका आचरण दूसरों के लिए उदाहरण (नमूना) हो सकता है। **दृष्टान्त**—पौराणिक कथाओं से दृष्टान्त (प्रमाण) देकर सिद्ध करो।

३१. **उद्देश्य**—जिस सिद्धि की ओर मन प्रवृत्त हो। **ध्येय**—निशाना, जिस पर दृष्टि रखकर कार्य किया जाय।

३२. **उन्नति**—ऊपर उठकर विकास करना। **प्रगति**—आगे बढ़ना।

३३. **उपज**—खेत या दिमाग़ की पैदावार। **उत्पत्ति**—जन्म या आरम्भ।

३४. **उपस्थिति**—आदमियों की। **विद्यमानता**—वस्तुओं की।

३५. **उपहास**—हमारे लेख का उपहास किया। मज़ाक उड़ाया। **व्यंग्य**—'बड़ा विद्वान् है' कहकर व्यंग्य किया।

३६. **उपहार**—प्रायः बराबर वालों को। **भेंट**—प्रायः बड़ों को नम्रता से।

३७. **ऋषि**—मन्त्रों या आध्यात्मिक तत्त्वों का प्रकाश करनेवाला। **मुनि**—धर्म के तत्व का मनन करसेवाला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

३८. **ओज**--मन और शरीर की आन्तरिक शक्ति। **पौरुष**--ओज से प्राप्त कार्यक्षमता।

३९. **कंगाल**--भुक्खड़। **दरिद्र**--जिसके पास कुछ न हो। **निर्धन**--जिसके पास धन न हो। **दीन**--दरिद्रता के कारण स्वाभिमान-शून्य।

४०. **कर्तव्य**--उचित एवं आवश्यक कार्य। **कार्य**--साधारण काम।

४१. **कलंक**--किसी एक अपवाद के कारण लगा लांछन। **अपयश**--अधिक स्थायी और व्यापक बदनामी।

४२. **कविता**--मेरी कविता का शीर्षक है 'चाँदनी'। **काव्य**--तुलसी का काव्य भक्तिप्रधान है (कवि या कवियों का कृतित्व)।

४३. **कष्ट**--मन और शरीर दोनों की असुविधा। **दुःख**--मानसिक कष्ट। **क्लेश**--पूरे मन का अप्रिय भाव। **खेद**--भूल-चूक से चित्त की शिथिलता। **व्यथा**--कष्टकारक अनुभव। **वेदना**--अनुभूतियुक्त पीड़ा। **यातना**--तीव्र व्यथा। **यन्त्रणा**--दुःख के भार से कचोट पैदा करने की पीड़ा।

४४. **काम**--कोई साधारण कार्य। **पेशा**--रोटी कमाने का स्थायी कार्य।

४५. **कारण**--जिससे कार्य हो (पहले कारण, फिर कार्य)। **हेतु**--जिस उद्देश्य से कार्य किया जाय।

४६. **काल**--समग्र समय उसके जीवन-काल में यह न हो सका। **युग**--यह विज्ञान का युग है। **समय**--इस समय चार बजे हैं।

४७. **किराया**--मकान का किराया ८० रु० है। **भाड़ा**--रेल या बस का भाड़ा।

४८. **क्रूर**--कठोर हृदय और दुष्कर्मी। **निर्दय**--जिसके हृदय में दया न आये।

४९. **खटपट**--उनकी आपस में खटपट हो गयी है। **गड़बड़**--इस काम में कोई गड़बड़ दिखायी देती है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

५०. **खाल**—साधु ने चीते की खाल बिछा रखी थी। **चमड़ा**—खाल को साफ़ करके चमड़ा बनाते हैं।

५१. **खेल**—हाकी भी खेल है, और सिनेमा भी खेल है। **नाटक**—रंगशाला में नाटक खेला जाता है।

५२. **खोज**—कोलम्बस ने अमेरिका की खोज की। **आविष्कार**—नयी चीज बनाना—रेडियो का आविष्कार किसने किया?

५३. **गीत**—गाने योग्य कविता को गीत कहते हैं। **संगीत**—गाना-बजाना संगीत कहलाता है।

५४. **चिन्ता**—व्यर्थ चिन्ता करने से आदमी दुःखी होता है। **परवाह**—वह धनी है, पैसे की क्या परवाह!

५५. **चिह्न**—इस शब्द के ऊपर एक चिह्न लगा दो। **लक्षण**—सरलता साधु का प्रमुख लक्षण है।

५६. **चेष्टा**—अपनी शक्ति के अनुसार कुछ करना। **प्रयत्न**—सफलता के लिए प्रयत्न करना पड़ता है।

५७. **छाया**—पेड़ की छाया में। **परछाईं**—आदमी की परछाईं।

५८. **जाँच**—कल जो मारपीट हुई, उसकी जाँच एक जज करेंगे। **परीक्षा**—विद्यार्थियों को वर्ष के अन्त में परीक्षा देनी पड़ती है।

५९. **ज्ञान**—उन्हें व्याकरण का अच्छा ज्ञान है। **बोध**—उन्हें यह बोध हो गया कि संसार मिथ्या है।

६०. **टीका**—अर्थविश्लेषण सहित व्याख्या। **भाष्य**—विवाद-विवेचन सहित व्याख्या।

६१. **ठण्ड**—ठण्ड के मारे उँगलियाँ सुन्न हैं। **ठण्डक**—रात को थोड़ी ठण्डक हो जाती है।

६२. **ठोकर**—ठोकर पैर से लगायी जाती है। **धक्का**—हाथ के धक्के से लड़के को गिरा दिया। **टक्कर**—गाड़ी की टक्कर (भिड़ंत) से लड़का मर गया।

६३. **तट**—नदी या समुद्र का किनारा। **तीर**—पानी में जलमग्न

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पृथ्वी का सिरा। **पुलिन**--किनारे की नम भूमि। **किनारा**--जल या थल या किसी वस्तु का सिरा।

६४. **तर्क**--(युक्तियुक्त विचार) सिद्धान्त स्थिर करने के लिए। **युक्ति**--कुछ करने का ढंग।

६५. **तालिका**--विवरणयुक्त सूची। **सूची**--क्रमबद्ध नाम।

६६. **तुलना**--राक्षस की तुलना देवता से नहीं की जा सकती। **मिलान**--दोनों पोथियों का मिलान करके देख लो।

६७. **तृप्ति**--संतुष्टि से आकांक्षा का अभाव। **संतोष**--प्राप्त वस्तु को पर्याप्त मानना। **शान्ति**--स्थायी तृप्ति और शारीरिक या मानसिक हलचल का अभाव।

६८. **त्रुटि**--कमी--काम में थोड़ी त्रुटि रह गयी। **दोष**--अभियुक्त ने कहा कि मेरा कोई दोष नहीं। देखिए पीछे 'अपराध' भी।

६९. **थियेटर**--(बना हुआ स्थान) थियेटर में बैठकर नाटक या सिनेमा देखा था। **सिनेमा**--(चित्र)--सिनेमा का पहला शो देखने गये हैं।

७०. **द्वंद्व**--दो व्यक्तियों या दो भावों में। **संघर्ष**--व्यक्तियों या परिस्थितियों के साथ जूझना।

७१. **धर्म**--सर्वव्यापक नियम। **मत**--कुछ व्यक्तियों के नियम।

७२. **धारणा**--मेरी यह धारणा बन गयी है कि वह कुछ न कर पायेगा। **विचार**--मेरा विचार बदल सकता है।

७३. **नमस्कार**--बराबर वालों और बड़ों को। **प्रणाम**--पूज्य और बड़े लोगों को।

७४. **नमूना**--नमूने की एक प्रति मँगा लो। **बानगी**--मेरी कविताओं की बानगी देख लें।

७५. **नाप**--कपड़े की नाप। **माप**--दूध की माप।

७६. **निन्दा**--तथ्यों के आधार पर दोषारोपण। **अपवाद**--बात बनाकर की गयी बदनामी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

७७. **निवेदन**—नियमपूर्वक कुछ कहना। **प्रार्थना**—विनय के साथ माँगना।

७८. **निश्चय**—पक्की बात। **निर्णय**—एक बात पर मत देना—फ़ैसला।

७९. **नेता**—अमुक दल के नेता। **नायक**—सेना के नायक।

८०. **पत्नी**—पुरुष की विवाहिता नारी। **स्त्री**—कोई नारी। **महिला**—(शिष्ट प्रयोग) भद्र नारी।

८१ **पदार्थ**—दूध, फल, शहद आदि पदार्थ हैं। **वस्तु**—कपड़े, रेडियो, कलम आदि वस्तुएँ हैं।

८२. **परम्परा**—हम अनेक परम्पराओं को छोड़ रहे हैं। **मर्यादा**—मर्यादा का उल्लंघन नहीं करना चाहिए।

८३. **परामर्श**—साधारण (चाहे एक की) सलाह। **मन्त्रणा**—व्यक्तियों द्वारा निर्णीत (गुप्त) सलाह।

८४. **परीक्षक**—किसी की योग्यता की जाँच करनेवाला। **निरीक्षक**—प्रबंध देखने वाला।

८५. **पारितोषिक**—प्रतियोगिता में विजयी होने पर। **पुरस्कार**—किसी कार्य या सेवा के लिए।

८६. **पुलकित**—प्रेम या हर्ष से। **रोमांचित**—आनन्द या भय से।

८७. **पुत्र**—अपना (बेटा)। **बालक**—किसी का (लड़का)।

८८. **बल**—आपके कथन से मुझे बल मिला। **शक्ति**—रोग के कारण शक्ति नहीं रही।

८९. **बाधा**—आप मेरे मार्ग में बाधा खड़ी न करें। **अवरोध**—साहित्य की प्रगति में अवरोध आ गया है।

९०. **भक्ति**—ईश्वर या देवता से या वैसा प्रेम। **श्रद्धा**—बड़ों से (गुणादि के कारण) प्रेम। **उपासना**—ईश्वर से सान्निध्य, लाभ की क्रिया। **साधना**—किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए एकनिष्ठ मानसिक चेष्टा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

९१ **भाव**--मेरे मन में कोई वैरभाव नहीं था। **विचार**—दिमाग में कई विचार आते हैं।

९२. **मन्त्री**—मिनिस्टर। **सचिव**--सेक्रेटरी।

९३. **योग्यता**--काम करने की गुणयुक्त विशेषता। **क्षमता**—काम कर सकने की शक्ति।

९४. **राजा**—छोटे प्रदेश का स्वामी। **सम्राट्**--समुद्र पर्यन्त भूमि का स्वामी।

९५. **लज्जा**--बुरे काम को छिपाने की भावना। **ग्लानि**—कुकर्म पर मन में फटकार और पछतावा। **संकोच**—कोई काम करने में हिचक।

९६. **लोभ**—अधिक पाने की इच्छा। **लालसा**--अप्राप्य वस्तु की प्राप्ति की इच्छा।

९७. **विकास**—उन्नति—समाज का विकास। **विस्तार**—फैलाव, जैसे राज्य का।

९८. **विद्या**--जानने की—तुम्हें कोई विद्या आती है? **शिक्षा**—सीखने की--जैसे व्याकरण की शिक्षा।

९९. **वीरता**--वीर का नैसर्गिक गुण। **साहस**—भय पर विजय पाने का प्रयत्न। [देखिए 'उत्साह' भी]

१००. **वैर**--मन में पाली हुई उग्र शत्रुता। **शत्रुता**—दुष्टतापूर्ण हानि पहुँचाने की भावना।

१०१. **शंका**--किसी निश्चय के बारे में द्विविधा। **सन्देह**—(अनिश्चय) उस पर चोर होने का सन्देह है। **भ्रम**—निश्चय कर बैठना, जैसे रस्सी को साँप समझना। **आशंका**—अनिष्ट हो जाने की संभावना, जैसे युद्ध की। देखिए 'आतंक' भी।

१०२. **शील**—शील के साथ विनम्रता और शिष्टता का भाव रहता है। **स्वभाव**--किसी का स्वभाव अच्छा भी हो सकता है, बुरा भी।

१०३. **श्रम**—(शारीरिक) मज़दूरी। **परिश्रम**—(शारीरिक तथा मानसिक) मेहनत।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१०४. **सभ्यता**—रहन-सहन या व्यवहार से सभ्यता का परिचय मिलता है। **संस्कृति**—हमारे रीति-रिवाजों में संस्कृति झलकती है।

१०५. **समाचार**—आज का समाचार सुन लो। **सूचना**—मुझे इस बैठक की सूचना नहीं थी। **संदेश**—आपके पिता जी ने यह संदेश भेजा है।

१०६. **समीर**—शीतल और धीरे-धीरे चलता है। **पवन**—कभी धीरे, कभी तेज़ चलता है।

१०७. **समृद्धि**—सभी प्रकार की उन्नति से संपन्नता। **संपत्ति**—(आर्थिक)।

१०८. **सम्राट्**—राजाओं का राजा। **राजा**—एक साधारण भूपति।

१०९. **साथ**—यात्रा में उनका साथ हो गया। **संगति**—बुरों की संगति में बुरे हो जाओगे।

११०—**साधन**—रेल, बस, मोटर आदि यात्रा के साधन हैं। **माध्यम**—भाषा के माध्यम से विचार प्रकट किये जाते हैं।

१११. **सेवा**—गुरुजनों की। **शुश्रूषा**—रोगी आदि की। **परिचर्या**—दोनों प्रकार की सेवा।

११२. **हँसी**—(विनोदपूर्ण) हँसी-हँसी में कुछ कह दिया। **मज़ाक**—थोड़ा द्वेषपूर्ण उपहास। देखिए 'उपहास'।

विशेषण

११३. **अद्भुत**—अपूर्व, आश्चर्यजनक और विचित्र। **विचित्र**—सामान्य से निराला।

११४. **अद्वितीय**—जिसके जोड़ का कोई न हो। **अनुपम**—जिसकी उपमा न हो।

११५. **अधिक**—आवश्यकता से ज़्यादा। **काफ़ी**—न कम न अधिक।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

११६. **अनभिज्ञ**--लड़का छल-कपट से अनभिज्ञ था। **अपरिचित**--वह आदमी मेरे लिए अपरिचित था। **मूर्ख**--मूर्ख को समझाना व्यर्थ है।

११७. **अनिवार्य**--मृत्यु अनिवार्य है। **आवश्यक**--स्वास्थ्य के लिए पौष्टिक भोजन आवश्यक है।

११८. **अनुकूल**--परिस्थिति या जलवायु अनुकूल हो सकती है। **अनुरूप**--(सदृश) एक वस्तु दूसरी वस्तु के अनुरूप होगी।

११९. **अनेक**--(एक से अधिक) संख्या। **बहुत**--संख्या और परिमाण में; क्रिया-विशेषण भी।

१२०. **असूल्य**--जिसका कोई मूल्य निश्चित न किया जा सके, जैसे विद्याधन। **बहुमूल्य**--जिसका मूल्य सामान्य वस्तुओं से अधिक हो, जैसे हीरा।

१२१. **अलौकिक**--जो इस लोक में न हुआ हो। **असाधारण**--साधारण से अधिक विशिष्ट या जनसाधारण की शक्ति से परे।

१२२. **उत्तम**--वस्तुएँ, व्यापार आदि। **श्रेष्ठ**--व्यक्ति और जीवन।

१२३. **उपस्थित**--हाज़िर (आदमी), जैसे बैठक में चार सदस्य उपस्थित थे।

प्रस्तुत--कोई बात या प्रस्ताव या मत प्रस्तुत करना। प्रस्तुत प्रश्न यह है।

१२४. **ऊँचा**--यह मकान बहुत ऊँचा है। **लम्बा**--वह आदमी लम्बा नहीं था।

१२५. **ऊपरी**--ऊपरी वेषभूषा से गुण कैसे जाने जा सकते हैं? **बाहरी**--इस बाग़ में बाहरी आदमी नहीं जा सकते।

१२६. **कठिन**--यह विषय अत्यन्त कठिन है। **कठोर**--वह आदमी बहुत कठोर है।

१२७. **गहरा**--गहरा पानी; गहरी साँस भरना। **घना**--घना जंगल, घने बाल।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१२८. **चिन्तनीय**--(चिन्ता का विषय) उसकी आर्थिक दशा चिन्तनीय है। **विचारणीय**--(सोचने का विषय) यह समस्या विचारणीय है।

१२९. **त्रस्त**--भय से व्याकुल। **भयभीत**--थोड़े समय के लिए डरा-डरा।

१३०. **निपुण**--अच्छा जानकार। **कुशल**--कार्यविशेष में चतुर।

१३१. **निरर्थक**--जिसका कोई अर्थ न हो, जैसे निरर्थक शब्द। **व्यर्थ**--जो लाभप्रद न हो, जैसे प्रयत्न व्यर्थ गया। **बेकार**--बिना काम का, जैसे बेकार आदमी; चीज़ बेकार गयी।

१३२. **पर्याप्त**--जितना चाहिए था उतना, काफ़ी। **बहुत**--संख्या और परिमाण में अधिक।

१३३. **पुरातन**--जिसका चलन अब न हो। **सनातन**--जो सदा से चला आ रहा हो। **पुराना**--बहुत दिनों का, जैसे अन्न, सिक्का, कपड़ा। **प्राचीन**--कई शताब्दियों का, जैसे युग, इतिहास।

१३४. **प्रतिकूल**--विपरीत, उलटा--यह बात मेरी आशा के प्रतिकूल हुई। **विरुद्ध**--विरोध में--मुझे उसके विरुद्ध सब कुछ कहना पड़ा।

१३५. **प्रधान**--भारत के प्रधान मंत्री; प्रधान अधिकारी; **मुख्य**--प्रदेशों के मुख्य मंत्री, मुख्य बात यह है।

१३६. **मान्य**--आपका यह सिद्धान्त मान्य है। **स्वीकृत**--आपकी प्रार्थना स्वीकृत हुई।

१३७. **मोटा**--आदमी या कपड़ा मोटा हो सकता है। **गाढ़ा**--दूध या रंग गाढ़ा है।

१३८. **सतर्क**--उसने सतर्क होकर उत्तर दिया। **सावधान**--सड़क पर सावधान होकर (ध्यान देकर) चलिए।

१३९. **समस्त**--समस्त देश, समस्त राशि। **सारे**--सारे आदमी, सारे काग़ज़।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१४०. **साधारण**--इस बात को साधारण आदमी नहीं समझ सकता। **सामान्य**--भूख, प्यास आदि प्राणियों का सामान्य धर्म है।

१४१. **स्थायी**—उसे स्थायी सदस्य बनाया गया। **दृढ़**—अपने वचन पर दृढ़ रहो।

१४२. **हैरान**—यह सुनकर मैं तो हैरान रह गया। **परेशान**—वह कई दिन से परेशान है।

क्रियाएँ

१४३. दूध खौलाना; चावल उबालना; खाना पकाना।

१४४. किसी काम के लिए उकसाना; सही रास्ते से बहकाना।

१४५. गेंद उछलता है; तुम कूदकर वहाँ चले जाओ।

१४६. उसने यह कहा था; वह रेडियो पर बोल रहा था।

१४७. चाकू से काटना; कैंची से कतरना।

१४८. दाँतों से चबाकर खाना; गले में रखकर निगल जाना।

१४९. रेती से घिसना; पत्थर पर घिसना; सिल पर भाँग रगड़ना।

१५०. वह बाग़ में घूमने गया है; आप दाहिने से मुड़ जाइए।

१५१. आप यहाँ से चले जायँ; वह आँगन में टहल रहा था।

१५२. वह दिन भर 'राम-राम' चिल्लाता रहता है; बच्चा रो रहा है।

१५३. लकड़ी या पेट चीरना; काग़ज़ या कपड़ा फाड़ना।

१५४. सास बहू से झगड़ती है; पहलवान कुश्ती लड़ते हैं।

१५५. अँगारों पर या थोड़े से घी में भूनना; घी से भरी कड़ाही में तलना।

१५६. तंबू, शामियाना तानना; कपड़े फैलाना, पर फैलाना।

१५७. खोई हुई चीज़ की तलाश करना; चोरी के संदेह में तलाशी लेना।

१५८. हड्डी, लकड़ी, फूल तोड़ना; मटकी फोड़ना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१५९. किसी व्यक्ति या वस्तु को देखना; बड़े आदमी या देवता का दर्शन करना।

१६०. खिलाड़ी तेज़ दौड़ता है; चोर भाग गया।

१६१. उसका खाना मना कर दिया गया; उसने पुस्तक देने से इन्कार कर दिया।

१६२. कल मिलिएगा; दो रुपये प्राप्त किये।

१६३. आप इस मकान में रहते हैं; यहाँ कितने दिन ठहरोगे?

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विपरीतार्थक या विलोम शब्द

जो शब्द एक दूसरे से उलटा अर्थ देते हैं उन्हें विपरीतार्थक या विलोम शब्द कहा जाता है। नीचे बनावट के आधार पर इनके भेद दिये जा रहे हैं—

(१) भिन्न-भिन्न शब्द

अंधकार	प्रकाश	उदार	कृपण	गीला	सूखा
अँधेरा	रोशनी	उद्धत	विनीत	गुरु	लघु
अंत	आदि	उत्थान	पतन	गुप्त	प्रकट
अग्र	पश्च	उत्तर	दक्षिण	घना	तरल
अथ	इति	उत्तम	अधम	घाटा	लाभ
अधिक	कम	कनिष्ठ	ज्येष्ठ	घृणा	प्रेम
अपना	पराया	कोमल	कठोर	छोटा	बड़ा
अमृत	विष	कड़वा	मीठा	जन्म	मृत्यु
अस्त	उदय	कठिन	सरल	जड़	चेतन
आकाश	पाताल	कृश	स्थूल	जीत	हार
आगे	पीछे	खंडन	मंडन	जीवन	मरण
आड़ा	खड़ा	खरा	खोटा	ज्येष्ठ	कनिष्ठ
आय	व्यय	खास	आम	झूठ	सच
आरम्भ	समाप्ति, अन्त	गर्मी	सर्दी	टूटना	जुड़ना
		गुण	दोष	ठोस	तरल
उच्च,ऊँचा	नीच, नीचा	ग्रहण	त्याग	तीक्ष्ण	कुंठित
उतार	चढ़ाव	गिरफ़्तार	रिहा	तीव्र	मंद

८

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

थोड़ा	बहुत	पश्चिमी	पूर्वी	विधि	निषध
दीर्घ	ह्रस्व	पूरा	अधूरा	विस्तृत	संक्षिप्त
दिन	रात	प्रश्न	उत्तर	शीत	उष्ण
दरिद्र	सम्पन्न	बंधन	मोक्ष	शायद	अवश्य
दाख़िल	ख़ारिज	बच्चा	बूढ़ा	शत्रु	मित्र
धवल	श्याम	बद्ध	मुक्त	संधि	विग्रह
धनी	दरिद्र	बाहर	भीतर	सत्य	मिथ्या
निन्दा	स्तुति	बुराई	भलाई	सरल	कुटिल
निकट	दूर	भोला	चालाक	सुख	दुःख
निद्रा	जागरण	भूत	वर्तमान,	सृष्टि	प्रलय
पंडित	मूर्ख		भविष्य	स्थावर	जंगम
पक्का	कच्चा	मुख्य	गौण	स्थूल	सूक्ष्म
पुराना	नया	मधुर	कटु	स्वर्ग	नरक
पैना	भोथरा	मँहगा	सस्ता	स्वाभाविक	कृत्रिम
प्राचीन	नवीन	राग	द्वेष	हानि	लाभ
पाप	पुण्य	योगी	भोगी	ह्रस्व	दीर्घ
पाश्चात्य	पूर्वात्य	लाभ	हानि	हर्ष	विषाद।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(२) उपसर्ग द्वारा विलोम

अभिज्ञ	अनभिज्ञ	जय	पराजय
अर्थ	अनर्थ	ज्ञान	अज्ञान
आचार	अनाचार	धनी	निर्धन
आगमन	प्रत्यागमन	धर्म	अधर्म
आदर	अनादर	नियमित	अनियमित
आदि	अनादि	नीति	अनीति
आर्य	अनार्य	न्याय	अन्याय
आशा	निराशा	पक्ष	विपक्ष
आहत	अनाहत	पठित	अपठित
इष्ट	अनिष्ट	पूर्ण	अपूर्ण
ईश	अनीश	प्रसन्न	अप्रसन्न
उचित	अनुचित	मंगल	अमंगल
उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण	मान	अपमान
उदार	अनुदार	यश	अपयश
उपयुक्त	अनुपयुक्त	योग	वियोग
उपस्थित	अनुपस्थित	राग	विराग
एक	अनेक	लोक	परलोक
ऐश्वर्य	अनैश्वर्य	लौकिक	अलौकिक
कीर्ति	अपकीर्ति	वाद	विवाद
क्रय	विक्रय	शान्ति	अशान्ति
क्रम	व्यतिक्रम	शुद्ध	अशुद्ध
गमन	आगमन	श्वास	प्रश्वास
गुण	अवगुण	संभव	असंभव
घात	प्रतिघात	संतोष	असंतोष
चर	अचर	सम	विषम
चल	अचल	सुर	असुर
चेतन	अचेत	स्वस्थ	अस्वस्थ ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(३) उपसर्ग के परिवर्तन द्वारा विलोम

अतिवृष्टि	अनावृष्टि	सगुण	निर्गुण
अनुकूल	प्रतिकूल	सरस	नीरस
अनुराग	विराग	सचेत	अचेत
अनुग्रह	विग्रह	सज्जन	दुर्जन
अनुरक्ति	विरक्ति	सफल	निष्फल
अर्वाचीन	प्राचीन	सम्मान	अपमान
आकर्षण	विकर्षण	सम्मुख	विमुख
आदान	प्रदान	साक्षर	निरक्षर
आयात	निर्यात	साकार	निराकार
इहलोक	परलोक	सार्थक	निरर्थक
उन्मीलन	निमीलन	सापेक्ष	निरपेक्ष
उत्कृष्ट	निकृष्ट	सुजन	दुर्जन
उत्कर्ष	अपकर्ष	सुकर्म	दुष्कर्म
उपकार	अपकार	सुगम	दुर्गम
उन्नति	अवनति	सुगंध	दुर्गंध
प्रत्यक्ष	परोक्ष	सुअवसर	कुअवसर
प्रसाद	विषाद	सुपुत्र	कुपुत्र
विधवा	सधवा	सुकर	दुष्कर
विभव	पराभव	सुलभ	दुर्लभ
विवाद	प्रतिवाद	सुमति	दुर्मति
संपदा	विपदा	स्वतंत्र	परतन्त्र
संयुक्त	वियुक्त	स्वदेश	परदेश
सजीव	निर्जीव	स्वाधीन	पराधीन।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सूचना—निम्नलिखित विपरीतार्थक शब्द एक-साथ भी आते हैं—अपने-पराये, आकाश-पाताल, आय-व्यय, ऊँच-नीच, उतार-चढ़ाव, उत्थान-पतन, खरा-खोटा, गुण-दोष, जड़-चेतन, हार-जीत, जीवन-मरण, निन्दा-स्तुति, थोड़ा-बहुत, प्रश्नोत्तर, बाहर-भीतर, हानि-लाभ, सच-झूठ, स्थावर-जंगम, स्वर्ग-नरक, धर्माधर्म, क्रय-विक्रय, जय-पराजय, चर-अचर, चल-अचल, घात-प्रतिघात, पक्ष-विपक्ष, मान-अपमान, राग-विराग, लोक-परलोक, सुख-दुःख, शीतोष्ण, न्याय-अन्याय, जीना-मरना, हर्ष-विषाद, न्यूनाधिक, वाद-विवाद, श्वास-प्रश्वास, आयात-निर्यात, सज्जन-दुर्जन, आदि आदि।

युग्म शब्द (paronyms)

(समोच्चरित विभिन्नार्थक शब्द)

यहाँ हम ऐसे शब्दों के जोड़े दे रहे हैं जिनके उच्चारण में परस्पर बहुत थोड़ा अन्तर है, किन्तु अर्थ की दृष्टि से कोई सम्बन्ध नहीं है। किन्हीं जोड़ों में स्वर की मात्रा का, किन्हीं में व्यंजन का और किन्हीं में दोनों का हेर-फेर होने से और का और अर्थ हो जाता है।

अंटी (लच्छी), अंडी (रेशमी कपड़ा)
अंत (समाप्ति), अंत्य (आख़िरी)
अंतर (फ़र्क), अनन्तर (बाद में)
अंश (भाग), अंस (कंधा)
अगम (दुर्लभ), आगम (उत्पत्ति, शास्त्र)
अतल (जिसका तल न हो), अतुल (जिसके समान कोई नहीं)
अधन्ना (दो पैसा), अधन्य (हतभाग्य)
अनल (आग), अनिल (वायु)
अनादि (जिसका आदि न हो), अन्नादि (अन्न और दूसरी चीजें)
अनुसार (अनुकूल), अनुस्वार (नासिका चिह्न)
अपमान (निरादर), उपमान (जिससे तुलना हो)
अपेक्षा (तुलना में), उपेक्षा (तिरस्कार)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अभिनय (स्वांग), अविनय (गुस्ताख़ी), अभिनव (नया)
अभिमान (गर्व), अभियान (चढ़ाई)
अभिराम (सुंदर), अविराम (लगातार)
अभिहित (कहा हुआ), अविहित (न किया हुआ)
अभेद (अंतर नहीं), अभेद्य (न टूटने योग्य)
अमल (बिना मैल, कार्य), अम्ल (एसिड)
अमिट (जो मिट न सके), अमित (असीम)
अरथी (टिकठी), अर्थी (चाहनेवाला)
अरबी (अरब की भाषा), अरवी (एक कंद)
अर्घ (जलदान), अर्घ्य (पूजाद्रव्य)
अर्चन (पूजा), अर्जन (संग्रह)
अवयव (अंग), अव्यय (अविकारी शब्द)
अवलम्बन (सहारा), अविलम्ब (बिना देर किये), आलम्ब (लटकन)
अवश (विवश), अवश्य (ज़रूर)
अशक्त (असमर्थ), असक्त (अलिप्त), आसक्त (लिप्त)
आकर (खान), आकार (रूप)
अचार (खाने का), आचार (नियम), आचार्य (गुरु)
आदि (आरम्भ), आदी (आदतवाला)
आदेय (लेने योग्य), आधेय (रखने योग्य)
आभरण (ज़ेवर), आवरण (परदा)
आभास (संकेत), अभ्यास (फिर-फिर करना)
आयास (प्रयत्न), आवास (वासस्थान)
आसन (बैठने की जगह), आसन्न (निकट)
आहूत (बुलाया हुआ), आहुति (होम-बलि)
इति (अंत), ईति (आपदा)
इन्दिरा (लक्ष्मी), इन्द्रा (इन्द्राणी)
उदाहरण (दृष्टान्त), उद्धरण (अवतरण)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उद्धत (अक्खड़), उद्यत (तैयार)

उद्धार (मुक्ति), उधार (ऋण)

उन (वे का विभक्ति रूप), ऊन (भेड़ आदि के बाल)

उपयुक्त (ठीक), उपर्युक्त (ऊपर कहा हुआ)

उपस्थित (हाज़िर), उपस्थिति (हाज़िरी)

उबारना (उद्धार करना), उभारना (ऊँचा करना, उकसाना)

ऋचा (वेद-मंत्र), रचा (बनाया)

ओटना (बिनौले अलग करना), औटना (खौलना)

ओर (तरफ़), और (तथा)

कंकड़ी (रोड़ी), ककड़ी (खीरे की जाति की सब्ज़ी)

कँटीला (काँटेदार), कटीला (काटनेवाला, पैना)

कंकाल (अस्थि-पंजर), कंगाल (भुक्खड़)

कटौती (काट), कठौती (काठ का पात्र)

कटिबंध (कमरबंध), कटिबद्ध (तैयार)

कड़ाई (कड़ापन), कढ़ाई (काढ़ने का काम), कड़ाही (लोहे का छोटा कड़ाह)

कड़ी (सख़्त), कढ़ी (दही का सालन)

कथा (कहानी), कत्था (खैर का सत्त)

कदम (पैर), कदम्ब (एक पेड़)

कमर (कटि), कमल (पद्मपुष्प)

कमल (पद्मपुष्प), कम्बल (कम्मल)

करण (साधन), कर्ण (कान)

करता ('करना' का वर्तमान), कर्ता (करनेवाला)

करोड़ (१०० लाख), क्रोड़ (गोद)

कल्पना (सोच), कलपना (कुढ़ना)

कर्म (कार्य), क्रम (सिलसिला)

कान (कर्ण), कान्ह (कृष्ण)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

किला (गढ़), कीला (खूँटा, कील)
कुटी (झोंपड़ी), कुट्टी (कटाई)
कुल (वंश), कूल (किनारा)
कुमार (कुँवर), कुम्हार (बरतन बनानेवाला)
कृत (किया हुआ), कृत्य (कर्म)
कृति (रचना), कृती (पुण्यात्मा), कीर्ति (यश)
कृमि (कीड़ा), कर्मी (कर्मचारी)
केश (बाल), केस (मुकद्दमा)
कोड़ी (बीस), कोढ़ी (कोढ़वाला), कौड़ी (घोंघा आदि का घर)
कोर (सिरा), कौर (निवाला)
कोरा (अछूता), कोहरा (धुंध)
कोश (ख़ज़ाना), कोस (दो मील)
कोशल (अवध), कौशल (निपुणता)
क्रांति (उलट-फेर), क्लांति (थकावट)
क्षात्र (क्षत्रिय से सम्बद्ध), छात्र (विद्यार्थी)
खड़ी ('खड़ा' का स्त्रीलिंग), खरी (विशुद्ध), कढ़ी (दही का सालन)
खरा (शुद्ध), खड़ा (सीधा), खर्रा (लम्बा चिट्ठा)
खाड़ी (भूस्थित समुद्र), खारी (नमकीन), ख़ाली (रिक्त)
खाद (पाँस), खाद्य (आहार)
खोलना (बंधन हटाना), खौलना (उबलना)
गगरा (घड़ा), घघरा (लहँगा)
गट्टा (कलाई), गट्ठा (गट्ठर), घटा (बादल)
गड़ना (धँसना), गढ़ना (बनाना)
गण (समूह), गण्य (गिनने योग्य)
गदा (डंडेदार शस्त्र), गधा (गर्दभ पशु), गद्दा (तोशक)
गाड़ी (यान), गाढ़ी (गहरी)
गिरि (पर्वत), गिरी (बीज या गूदा)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गुटका (छोटी पोथी), गुटिका (गोली)
गुड़ (गन्ने का), गुण (अच्छा लक्षण)
गुर (क़ायदा), गुरु (आचार्य)
गूँधना (सानना), गूँथना (पिरोना)
गृह (घर), ग्रह (सूर्य चन्द्रादि नक्षत्र)
गोरा (सफ़ेद), घोड़ा (एक पशु)
चंट (चतुर), चंड (प्रचंड, तीव्र)
चक्रवाक (चकवा), चक्रवात (बवंडर)
चपत (धौल-धप्पा), चंपत (ग़ायब)
चरम (अंतिम), चर्म (चमड़ा)
चहकना (बोलना), छकना (भरपेट खाना)
चिता (शव जलाने के लिए), चिंता (फ़िक्र), चीता (बाघ-सा पशु)
चित्त (मन), चित (सिर के बल)
चीर (वस्त्र), चील (एक पक्षी)
चुनना (बीनना), चुन्ना (कीड़ा)
चेली (शिष्या), चैली (चिरी हुई लकड़ी)
चौक (आँगन), चौंक (एकाएक उठना)
चोरी (चोर का काम), चौंरी (पूँछ के बाल)
छत (छाजन), क्षत (घाव)
छीन (हर लेना), क्षीण (दुबला)
जन्ता (यंत्र, चक्की), जनता (लोग)
जरठ (बूढ़ा), जठर (पेट)
जलना (बलना), झलना (हवा करा)
जलाना (बालना), जिलाना (ज़िंदा करना)
जवान (युवक), ज़बान (जीभ, भाषा)
जामन (दूध जमाने का दही), जामुन (जंबू वृक्ष)
जाला (झिल्ली), ज्वाला (लपट)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha
जुआ (बैलों के कंधे की लकड़ी), जूआ (द्यूत खेल)
जुटाना (इकट्ठा करना), जुठाना (जूठा करना)
जूठा (उच्छिष्ट भोजन), झूठा (झूठ बोलनेवाला)
जोंक (एक कीड़ा), झोंक (झुकाव)
डाट (टेक), डाँट (फटकार)
डीठ (नज़र), ढीठ (निडर, धृष्ट)
डोल (एक बरतन), ढोल (बजाने का...)
ढलाई (ढालने की क्रिया), ढिलाई (शिथिलता)
तरंग (लहर), तुरंग (घोड़ा)
तरणि (सूर्य), तरणी (बेड़ा), तरुणी (युवती)
दशा (अवस्था), दिशा (तरफ़)
दाख (एक फल), धाक (दबदबा)
दारु (लकड़ी), दारू (शराब)
दिन (दिवस, रोज़), दीन (दयनीय)
दिया ('देना' का भूतकालिक रूप), दीया (दीपक)
दीप (दीपक), द्वीप (टापू)
दूत (चर), द्यूत (जूआ)
देव (देवता), दैव (भाग्य)
देश (मुल्क), द्वेष (वैर)
देहात (गाँव), देहांत (निधन)
दौरा (चक्कर), दौड़ा ('दौड़ना' का भूतकालिक रूप)
द्रव (तरल), द्रव्य (धन)
द्विप (हाथी), द्वीप (टापू), दीप (दीपक)
द्वारा (के रास्ते), दारा (स्त्री)
नकल (अनुकरण), नकुल (नेवला)
नग (नगीना, नंबर), नाग (साँप)
नाड़ी (शिरा), नारी (स्त्री), नाली (छोटा नाला)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नावक (वाण), नाविक (माँझी)

नाहर (बाघ), नहर (पानी की कुल्या)

निधन (मृत्यु), निर्धन (दरिद्र)

निर्जर (जिसे बुढ़ापा न हो), निर्झर (झरना)

नियत (निश्चित), नियति (भाग्य), नियुत (दस लाख)

निवृत्ति (मुक्ति), निर्वृत्ति (पूर्ति)

निश्चल (अटल), निश्छल (छलरहित)

निहत (मारा हुआ), निहित (छिपा)

नीड़ (घोंसला), नीर (पानी)

नीम (एक पेड़), नींव (आधार, बुनियाद)

पका (सीझा हुआ), पक्का (मज़बूत)

पट (कपड़ा), पट्ट (तख़्ता)

पटु (चतुर), पट्टू (ऊनी वस्त्र)

पड़ना (गिरना), पढ़ना (अध्ययन करना)

पतन (गिरावट), पत्तन (नगर)

पता (ठिकाना), पत्ता (पत्र)

पथ (मार्ग), पंथ (मत), पथ्य (हलका भोजन)

परदेश (दूसरा देश), प्रदेश (प्रान्त)

परवाह (ध्यान), प्रवाह (बहाव)

पराया (दूसरे का), प्रायः (बहुधा)

परिचारक (सेवक), प्रचारक (प्रचार करनेवाला)

परिच्छेद (विभाग), परिच्छद (ओढ़ना)

परिणत (सिद्ध), प्रणत (झुका हुआ)

परिणाम (फल), परिमाण (मात्रा), प्रणाम (नमस्कार), प्रमाण (सबूत)

परिमित (सीमित), परमिट (आज्ञापत्र)

परिणीत (विवाहित), प्रणीत (बनाया हुआ)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

परिवर्तन (बदलना), प्रवर्तन (उकसाना)
परिहार (त्याग), प्रहार (चोट)
पहाड़ (पर्वत), फाड़ (चीर)
पाणि (हाथ), पानी (जल)
पाव (चौथाई), पाँव (पैर)
पालतू (पाला हुआ), फ़ालतू (अतिरिक्त)
पाश (फंदा), पास (निकट)
पिला (पीने को दे), पीला (पीत रंग का), पिल्ला (कुत्ते का बच्चा)
पीड़ा (दर्द), पीढ़ा (चौकी)
पुरी (नगरी), पूरी (पूड़ी)
पुरुष (आदमी), परुष (कड़ा)
पुष्कर (जलाशय), पुष्कल (बहुत अच्छा)
पूछ (पूछने की क्रिया), पूँछ (पुच्छ, दुम)
प्रकार (तरह), परकार (रेखा खींचने का ज्यामिति-यंत्र), प्राकार (परिखा)
प्रकृत (यथार्थ), प्रकृति (स्वभाव, माया)
प्रणय (प्रेम), परिणय (विवाह)
प्रतिशोध (बदला), प्रतिबंध (मनाही)
प्रसाद (कृपा), प्रासाद (महल)
प्राप्त (पाया), पर्याप्त (काफ़ी)
प्रेषित (भेजा हुआ), प्रोषित (प्रवासी)
बचा (शेष, रक्षा कर), बच्चा (शिशु)
बली (बलवान्), बलि (चढ़ावा)
बहन (सहोदरा), वहन (ढोना)
बहाना (जाने देना), भाना (अच्छा लगना)
बाट (पत्थर, वज़न), बाँट (बँटवारा)
बाड़ (जंगला), बाढ़ (पानी की बढ़ती)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बान (आदत), वाण (तीर)
बार (दफ़ा), वार (चोट, दिन)
बास (गंध), वास (निवास)
बालू (रेत), ब्यालू (रात का भोजन)
बिताना (व्यतीत करना), बताना (कहना)
बिल (सूराख़), बिल्व (बेल फल)
बुरा (ख़राब), बूरा (शक्कर)
भक्ति (भजन क्रिया), भुक्ति (भोग), भक्त (भक्ति करने वाला), भुक्त (भोगा हुआ)
भट (योद्धा), भट्ट (पंडित)
भवन (मकान), भुवन (लोक)
मंदी (धीमी), मंडी (हाट)
मणि (रत्न), मणी (साँप)
मति (बुद्धि), मत (राय)
मद (गर्व), मद्य (मदिरा)
मल (दोष), मल्ल (पहलवान)
मात्र (केवल), मातृ (माता)
मानक (मानदण्डानुसार), मानिक (एक रत्न)
मिट्टी (धूल), मिट्ठी (चुम्बन)
मुख (मुँह), मुख्य (श्रेष्ठ)
मूल (जड़), मूल्य (क़ीमत)
मैदा (बारीक आटा), मेदा (पेट)
मैला (गंदा), मेला (जमाव)
मौर (मुकुट), मोर (मयूर पक्षी)
युक्त (जुड़ा हुआ), भुक्त (भोगा हुआ), मुक्त (छोड़ा हुआ)
योग (जोड़), योग्य (निपुण)
योगेश्वर (योग में सिद्ध), योगीश्वर (योगियों में श्रेष्ठ)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रिक्त (खाली), रक्त (खून, लाल)
रीस (ईर्ष्या), रिस (क्रोध)
लक्ष (लाख), लक्ष्य (ध्येय)
लगन (धुन), लग्न (लगा हुआ)
लता (बेल), लत्ता (कपड़ा)
लिपट (जुड़ जाना), लपट (ज्वाला)
लोभ (लालच), लोम (बाल)
लौटना (वापस होना), लोटना (करवट लेना)
वसन (कपड़े), व्यसन (लत)
वस्तु (चीज़), वास्तु (मकान)
वाद (मत), वाद्य (बाजा)
वारिद (बादल), वारिधि (समुद्र)
विजन (एकान्त), व्यजन (पंखा)
विपिन (जंगल), विपन्न (दुःखी)
विलक्षण (अद्भुत), विचक्षण (चतुर)
विवरण (ब्यौरा), विवर्ण (बिना रंग, फीका)
वृंत (डंठल), वृन्द (समूह)
व्यंग (विकलांग), व्यंग्य (ताना)
व्यंजन (क ख ग आदि), व्यजन (पंखा)
शंकर (शिव), संकर (मिश्रित जाति)
शकल (टुकड़ा), सकल (सब), शक्ल (रूप)
शप्त (शाप पाया हुआ), सप्त (सात)
शर (वाण), सर (सरोवर)
शशधर (चंद्रमा) शशिधर (शिव)
शांति (स्थिरता), श्रान्ति (थकावट)
शाम (सायं), श्याम (काला, कृष्ण)
शाला (घर), साला (पत्नी का भाई)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha
शिरा (नाड़ी), सिरा (अन्त), शिला (चट्टान)
शुक्ल (सफ़ेद), सुकुल (अच्छे कुलवाला), शक्ल (सूरत)
शूर (वीर), सूर (सूर्य)
शौक (चाव), शोक (वियोग-दुःख)
श्रवण (कान, सुनना), श्रमण (भिक्षु)
षष्टि (६० वर्ष), षष्ठी (छठी)
संखिया (एक विषैला पत्थर), संख्या (नम्बर)
सजा (सजाया हुआ), सज़ा (दंड), सज्जा (सजावट)
सत (सत्य), सत्त (सार)
सत्व (सार), स्वत्व (अधिकार)
सदेह (शरीर सहित), संदेह (शक)
समान (बराबर), सामान (सामग्री)
समिति (सभा), सम्मति (सलाह), सन्मति (अच्छी बुद्धि)
सम्मत (इच्छानुकूल), संवत् (वर्ष)
सर्ग (काव्य का अध्याय), स्वर्ग (तीसरा लोक)
सवर्ण (समान जाति का), सुवर्ण (अच्छे रंगवाला), स्वर्ण (सोना)
सास (पति या पत्नी की माँ), साँस (श्वास)
सुखी (सुखयुक्त), सूखी (शुष्क)
सुधार (संस्कार), सिधार (प्रस्थान)
सुधि (स्मरण), सुधी (समझदार)
सुर (देवता), स्वर (ध्वनि)
सूत (सूत्र, भाट), सुत (बेटा)
सौगंध (शपथ), सुगन्ध (अच्छी गन्ध)
हँसी (हँसने की क्रिया), हंसी (हंस की मादा)
हट (परे हो), हठ (ज़िद्द)
हरि (विष्णु), हरी (हरे रंग की)
हरिण (मृग), हरण (ले जाना)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वाक्यों या वाक्यांशों के लिए एक शब्द

जिन पृष्ठों पर समानार्थक शब्दों के सूक्ष्म भेद स्पष्ट किये गये हैं, उन्हें अच्छी तरह पढ़िए। यहाँ पर नीचे दाहिने हाथवाले एक शब्द के लिए एक वाक्य या वाक्यांश दिया गया है। पहले इस वाक्य या वाक्यांश को पढ़िए और शब्द को बूझने का अभ्यास कीजिए। यहाँ १६३ अतिरिक्त वाक्य और वाक्यांश देकर उनके लिए उपयुक्त शब्द दिये जा रहे हैं। कोई अच्छा-सा हिन्दी शब्द-कोश भी देखिए। इन शब्दों में कुछ समास बनाने से, और कुछ उपसर्ग या प्रत्यय लगाने से बनते हैं, एवं कुछ एक प्रकार के पारिभाषिक शब्द हैं।

वाक्यांश	एक शब्द
१. हाथी हाँकने का लोहे का डंडेदार हुक	अंकुश
२. शरीर के किसी अवयव का टूटना	अंगभंग
३. जो कहा न जा सके	अकथनीय
४. न करने योग्य	अकरणीय
५. जिस क्रिया का कर्म न हो	अकर्मक
६. जिसके पास कुछ न हो	अकिंचन
७. मल्लयुद्ध (दंगल) करने का स्थान	अखाड़ा
८. पूर्व और दक्षिण का कोण	अग्निकोण
९. जिसे छुआ न गया हो	अछूता
१०. जो जीता न जा सके	अजेय
११. अड़-अड़कर चलनेवाला	अड़ियल
१२. जिसकी तुलना न की जा सके	अतुलनीय
१३. जो कभी दिखाई न देता हो	अदृश्य
१४. जिसके जोड़ या बराबरी का कोई न हो	अद्वितीय

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१५. पहाड़ के ऊपर की सम भूमि	अधित्यका
१६. पढ़ाने-लिखाने का कार्य	अध्यापन
१७. जिसका कहीं अंत न होता हो	अनंत
१८. जिस बच्चे के माँ-बाप न हों	अनाथ
१९. जो वचन या वाणी द्वारा कहा न जा सके	अनिर्वचनीय
२०. जिसका अनुकरण करना उचित हो	अनुकरणीय
२१. नाक से बोला जानेवाला	अनुनासिक
२२. जिसके फलस्वरूप अपमान होता हो	अपमानजनक
२३. दोपहर बाद का समय	अपराह्ण
२४. देवलोक या इन्द्रपुरी की नर्तकी	अप्सरा
२५. जिसका पार न हो	अपार
२६. जिसका भाग्य अनुकूल न हो	अभागा
२७. पहले न होनेवाला	अभूतपूर्व
२८. जो कभी मरे नहीं	अमर
२९. जो मित्र न हो	अमित्र
३०. सौ करोड़ की संख्या	अरब
३१. जिसका वर्णन न हो सके	अवर्णनीय
३२. जिसकी संख्या सीमित न हो	असंख्य
३३. अचानक होने वाला	आकस्मिक
३४. आढ़त का व्यवसाय करने वाला	आढ़तिया
३५. अपने प्राण आप लेने वाला	आत्मघाती
३६. पैर से लेकर सिर तक	आपादमस्तक
३७. ऐसा व्रत जो मरने पर ही समाप्त हो	आमरण व्रत
३८. रुपये-पैसे से संबंध रखनेवाला	आर्थिक
३९. वह जिसका विश्वास ईश्वर, धर्मग्रंथ आदि में हो	आस्तिक
४०. पूरब और उत्तर के बीच की दिशा	ईशान
४१. जिसने अपना ऋण चुका दिया हो	उऋण

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

४२. सबसे ऊँचा	उच्चतम
४३. ऊपर से नीचे लाना	उतारना
४४. जिसमें अधिक उपज हो	उपजाऊ
४५. पहाड़ के नीचे की सम भूमि	उपत्यका
४६. जिसकी उपमा दी जाए	उपमेय
४७. ऊपर कहा हुआ	उपर्युक्त
४८. जल और थल दोनों में रहने वाला	उभयचर
४९. इन्द्रजाल करनेवाला	ऐन्द्रजालिक
५०. दोनों कानों को ढाँपने की बड़ी टोपी	कनटोप
५१. जो अपने कार्य से जी चुराता हो	कामचोर
५२. बेलों, वृक्षों आदि से ढँका घिरा हुआ सुरम्य स्थान	कुंज, निकुंज
५३. बुरी संगति में रहने वाला	कुसंगी
५४. सिंह या घोड़े की गरदन के बाल	केशर
५५. किसी के उपकार या एहसान को न माननेवाला	कृतघ्न
५६. जो गाँव से संबंधित हो	ग्रामीण
५७. घास छीलनेवाला	घसियारा
५८. महीने के किसी पक्ष की चौथी तिथि	चतुर्थी
५९. बरसात के चार महीने	चतुर्मास
६०. जिसका चिन्तन किया जाना चाहिए	चिन्तनीय
६१. रोगियों की चिकित्सा करने का स्थान	चिकित्सालय
६२. चूहों को फँसाने का पिंजरा	चूहेदानी
६३. किसी को सावधान करने के लिए कही जानेवाली बात	चेतावनी
६४. चौथे दिन आनेवाला ज्वर	चौथिया
६५, चारों ओर की सीमा	चौहद्दी
६६. विद्यार्थियों के रहने का स्थान	छात्रावास
६७. अन्न को पचानेवाली पेट की अग्नि	जठराग्नि
६८. जल में रहनेवाले जीव-जन्तु	जलचर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

६९.	जिसने अपनी इन्द्रियों को वश में कर लिया है	जितेन्द्रिय
७०.	जोतने का काम	जुताई
७१.	जेठ (पति के बड़े भाई) का पुत्र	जेठौत
७२.	जिसके लंबे-लंबे बिखरे हुए बाल हों	झबरा
७३.	सिक्के ढालने का कारखाना	टकसाल
७४.	उसी समय का	तत्कालीन
७५.	तीन युगों में होने या रहनेवाला	त्रियुगी
७६.	तीन लोकों का समूह	त्रिलोकी
७७.	तीन नदियों का संगम	त्रिवेणी
७८.	थाने का प्रधान अधिकारी	थानेदार
७९.	पतिपत्नी का जोड़ा	दंपती
८०.	कपड़ा सीने का व्यवसाय करनेवाला	दर्ज़ी
८१.	दस वर्षों का समूह	दशक
८२.	जो दर्शनशास्त्र जानता हो	दार्शनिक
८३.	वन में लगने वाली आग	दावाग्नि
८४.	जिसने गुरु से दीक्षा ली हो	दीक्षित
८५.	दूध ही पीकर रहने वाला	दुग्धाहारी
८६.	जिसमें जाना या जिसे समझना कठिन हो	दुर्गम
८७.	अनुचित या बुरा आचरण करनेवाला	दुराचारी
८८.	जिसे करना कठिन हो	दुष्कर
८९.	जो कठिनता से प्राप्त हो सके	दुष्प्राप्य
९०.	बहुत दूर की बात पहले ही सोच समझ लेने वाला	दूरदर्शी
९१.	पति के छोटे भाई की स्त्री	देवरानी
९२.	दैव या प्रारब्ध सम्बन्धी बातें जानने वाला	दैवज्ञ
९३.	यात्रियों के लिए धर्मार्थ बना हुआ घर	धर्मशाला
९४.	जिस पर लंबी-लंबी धारियाँ हों	धारीदार
९५.	नाक से लहू बहने का रोग	नकसीर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

९६.	नख से लेकर शिखा तक के सब अंग	नखशिख
९७.	जिसका जन्म और पालन-पोषण नगर में हुआ हो	नागरिक
९८.	ईश्वर की सत्ता पर विश्वास न करनेवाला	नास्तिक
९९.	जो एक अक्षर भी न जानता हो	निरक्षर
१००.	जिसका कोई आकार न हो	निराकार
१०१.	जिसे कोई भय न हो	निर्भय
१०२.	नीति को जानने-समझने वाला	नीतिज्ञ
१०३.	शरीर के एक पार्श्व का लकवा	पक्षाघात
१०४.	अपने पति के प्रति अनन्य अनुराग रखनेवाली	पतिव्रता
१०५.	अपने पद से हटाया हुआ	पदच्युत
१०६.	पानी में डूबकर चलनेवाली नाव	पनडुब्बी
१०७.	जो दृष्टि के क्षेत्र से परे या बाहर हो	परोक्ष
१०८.	जो दूसरों का उपकार करता हो	परोपकारी
१०९.	आटा पीसने वाली स्त्री	पिसनहारी
११०.	वह राज्य-प्रणाली जिसमें जनसाधारण का शासन हो	प्रजातंत्र
१११.	जो आँखों के सामने उपस्थित हो	प्रत्यक्ष
११२.	जो तुरन्त किसी बात या युक्ति को सोच ले	प्रत्युत्पन्नमति
११३.	पिता के पिता का पिता	प्रपितामह
११४.	वह जिससे प्रेम किया जाय	प्रेमपात्र
११५.	वह जो केवल फल खाकर निर्वाह करता है	फलाहारी
११६.	घूम-फिरकर सौदा बेचनेवाला	फेरीवाला
११७.	किसी देवता पर चढ़ाने के लिए मारा जानेवाला पशु	बलि
११८.	जिस स्त्री की सन्तान पैदा न होती हो	बांझ
११९.	छोटे कद का आदमी	बौना
१२०.	जो भाग्य का धनी हो	भाग्यवान्
१२१.	जिसकी आत्मा महान् हो	महात्मा
१२२.	किसी बात का गूढ़ रहस्य जाननेवाला	मर्मज्ञ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१२३. जो मान-सम्मान के योग्य हो	माननीय
१२४. महीने-महीने होने वाला	मासिक
१२५. मुँह पर निकलनेवाली फुँसियाँ	मुहाँसे
१२६. जिसे मोक्ष की कामना हो	मुमुक्षु
१२७. भेड़ का बच्चा	मेमना
१२८. जहाँ तक हो सके	यथासंभव
१२९. जितना शक्ति के अनुसार हो सके	यथाशक्ति
१३०. जैसे चाहिए वैसा	यथोचित
१३१. लोहू से रंगा या भरा हुआ	रक्तरंजित
१३२. रात को दिखाई न देने का रोग	रतौंधी
१३३. जो राजा या राज्य से द्रोह करे	राजद्रोही
१३४. जिसके रोंगटे खड़े हों	रोमांचित
१३५. जिसके पास लाख से अधिक संपत्ति हो	लखपति
१३६. जो अधिक बोलता हो	वाचाल
१३७. वसुदेव के पुत्र	वासुदेव
१३८. जो अपने धर्म के विपरीत आचरण करता हो	विधर्मी
१३९. जिसका पति मर गया हो	विधवा
१४०. जिस पुरुष की स्त्री मर गयी हो	विधुर
१४१. वह जिसे व्याकरण का पूरा ज्ञान हो	वैयाकरण
१४२. सौ वर्ष का समय	शताब्दी
१४३. शरण में आया हुआ	शरणागत
१४४. वह जो अन्न और साग-सब्ज़ी खाता हो	शाकाहारी
१४५. जो तेज़ चलता हो	शीघ्रगामी
१४६. छह कोनोंवाली आकृति	षट्कोण
१४७. छह-छह महीने पर होनेवाला	षाण्मासिक
१४८. सड़ी हुई वस्तु की गंध	सड़ायँध
१४९. जिसमें सात रंग हों	सतरंगा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१५०. जिसका आचार अच्छा हो	सदाचारी
१५१. वह जो किसी सभा का मेंबर हो	सभासद
१५२. जो सब कुछ जानता है	सर्वज्ञ
१५३. जो सबका प्यारा हो	सर्वप्रिय
१५४. पति या पत्नी के माता-पिता का घर	ससुराल
१५५. जिसका कोई आकार हो	साकार
१५६. सप्ताह-सप्ताह में होनेवाला	साप्ताहिक
१५७. सब लोगों से संबंध रखनेवाला	सार्वजनिक
१५८. दूसरे के स्थान पर काम करनेवाला	स्थानापन्न
१५९. हंस के समान मंद गति से चलनेवाली स्त्री	हंसगामिनी
१६०. मिठाई बनाने और बेचनेवाला	हलवाई
१६१. हिन्द की भाषा	हिन्दी
१६२. जिससे हृदय फटने लगे	हृदयविदारक
१६३. अगहन और पूस में पड़ने वाली ऋतु	हेमन्त

सूचना—देखिए 'समास' के अन्तर्गत भी।

—देखिए पर्यायवाची शब्दों के अर्थ-भेद।

समूहवाची शब्द

अँगूरों का गुच्छा
अनाज का ढेर
× किताबों का ढेर
खिलाड़ियों की टीम
गायकों की मंडली
घुड़सवारों का रिसाला/दल
चाबियों का गुच्छा
छात्रों का समुदाय
जहाज़ों का बेड़ा
टिड्डियों का दल
डाकुओं का गिरोह
तारों का पुंज
तोतों की कतार
नक्षत्रों का मंडल
पक्षियों का झुंड
पर्वतों की माला/शृंखला
पेड़ों का जंगल/झुंड
फूलों का गुच्छा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

फौजियों का जत्था
बकरियों का रेवड़
बैलों की जोड़ियाँ
भेड़ों का झुंड/रेवड़
मनुष्यों की भीड़
मूर्खों की मंडली
यात्रियों का दल/कारवाँ
राज्यों का संघ
राष्ट्रों का मंडल/संघ
लकड़ियों का ढेर/टाल/गट्ठर
लताओं का कुंज
लोगों की भीड़
विद्यार्थियों की श्रेणी
वृक्षों की पंक्ति, दे० 'पेड़' भी
सिपाहियों की सेना
स्वयंसेवको का जत्था
हाथियों का झुंड।

ध्वनिबोधक शब्द

आँसू छलछलाते हैं
इंजन भक् भक् करता है
ऊँट बलबलाता है
उल्लू घुघुआता/चीख़ता है
कबूतर गुटरगूँ गुटरगूँ करता है
कुत्ते भौंकते हैं
कोयल कूकती/कुहकती है
कौवा काँव-काँव करता है
गधे रेंगते हैं
गाड़ी छुक छुक करती जाती है
गाड़ी धड़धड़ाती आती है
गाय रँभाती है
गीदड़ हुआँ-हुआँ करता है
गोली सनसनाती जाती है
घंटा टनटनाता है, टनटन करता है
घड़ी टिक-टिक करती है
घुंघरू रुनझुन करते हैं
घोड़े हिनहिनाते हैं
चारपाई चूँ-चूँ करती है
चिड़ियाँ चहचहाती हैं
चहा चहचहाती है
चूहा चूँ चूँ करता है
झंडा फहराता है
झरना झरझर करता बहता है
तारे टिमटिमाते/जगमगाते हैं
तोता टें टें करता है, रटता है
दरवाज़ा खटखटाता है
दाँत पीसने में कचकच करते हैं
दाँत सरदी से कचकच करते हैं
दाँत सरदी से किटकिटाते हैं
दिल धड़कता है
नाक घुरघुर करती है

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नाक-मुँह से आदमी खुर्राटे भरता है
पंख फड़फड़ाते हैं
पताका फहराती है
पत्ते खड़खड़ाते हैं
सूखे पत्ते मरमराते हैं
पपीहा पिय-पिय करता है
बंदर चिचियाते/किकियाते हैं।
बंदर खीं-खीं करते हैं
बकरी मिमियाती (में में करती) है
बाघ गुर्राता है
बादल गरजते हैं
बिजली चमचमाती है
बिजली ज़ोर से कड़कड़ाती है
बिल्ली म्याउँ-म्याउँ करती है
भालू खों-खों करता है
भैंस चुड़कती है
भौंरा गुंजारता है
मक्खियाँ भिनभिनाती हैं
मुर्गा कुकड़ूँ-कूँ करता है
मुर्गी कुड़-कुड़ करती है
मेंढक टर्राते हैं
मोटर-कार पों-पों करती है
मोर कूकता/कुहकता है
शस्त्र झनझनाते हैं
शेर गरजता है
सांड़ डकारता है
साँप फुंकारता/फुफकारता है
सूअर किकियाता है
हवा सरसराती है
हाथी चिंघाड़ता है।

अभ्यास

१. हिन्दी शब्द-भंडार का वर्गीकरण किन आधारों पर किया जाता है?

२. व्युत्पत्ति की दृष्टि से हिन्दी शब्दों के भेद बताओ, और प्रत्येक भेद के अन्तर्गत पाँच उदाहरण दो।

३. निम्नलिखित शब्दों के तद्भव रूप लिखो—

रात्रि, अश्रु, अक्षि, निद्रा, ओष्ठ, चन्द्र, शय्या, व्याघ्र, वानर, शुष्क, द्विगुण, कार्य, ग्रन्थि, कर्पूर, श्रेष्ठी, ताम्र, भिक्षा, मुख, क्षेत्र, दश।

४. अर्थ के आधार पर शब्दों के भेद बताओ और प्रत्येक के पाँच उदाहरण दो।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

५. विपरीतार्थक शब्द बताओ——

सूखा, वृद्धि, हँसना, हर्ष, सुबह, शुक्ल, अकाल, सच, सामान्य, शत्रु, स्वाधीन, सपूत, स्तुति, सरस, सूक्ष्म, स्वामी, स्मरण, सुधा, संधि, सम्मान, दुष्कर, विस्तार, वादी, यश, भूख, मूक, मुक्त, हित, योगी, धूप।

६. निम्नलिखित के पर्यायवाची शब्द बताओ——

कमल, आकाश, चन्द्रमा, हवा, पक्षी, पत्नी, स्त्री, शरण, सूर्य, समूह, रात्रि, सुन्दर, पृथ्वी, बिजली, इच्छा।

७. निम्नलिखित शब्दों में अर्थ-भेद स्पष्ट करो——

महिला-नारी, अनुरूप-अनुकूल, अद्वितीय-अनुपम, अन्तःकरण-आत्मा, अनबन-खटपट, अर्चना-पूजा, अभिनंदन-स्वागत, आज्ञा-आदेश, कंगाल-दीन, ग्रन्थ-पुस्तक, दक्ष-कुशल, नायिका-अभिनेत्री, निबन्ध-लेख, पारितोषिक-पुरस्कार, प्रशस्ति-स्तुति, पर्यटन-भ्रमण, मित्र-बन्धु, विश्वास-श्रद्धा-भक्ति, वार्ता-बातचीत, साधारण-सामान्य, स्मृति-स्मरण, अभिमान-अहंकार, जाँच-परीक्षा, प्रधान-मुख्य, देखना-ताड़ना।

८. निम्नलिखित युग्म शब्दों का अर्थभेद वाक्यों द्वारा समझाओ——

अंगना-आँगना, अतल-अतुल, अथक-अकथ, आदि-आदी, कंगाल-कंकाल, वाद-वाद्य, विलक्षण-विचक्षण, लग्न-लगन, समान-सम्मान, उपेक्षा-अपेक्षा, कर्म-क्रम, अपर-अपार, प्रकार-प्राकार।

९. निम्नलिखित वाक्यांशों के स्थान पर एक शब्द लिखो——

(क) जिसके हाथ में चक्र है। (ख) जिसके समान दूसरा नहीं है।

(ग) जिसके पार देखा जा सके। (घ) जिसके हृदय में ममता नहीं है।

(ङ) जिसका जन्म पीछे हुआ हो। (च) जिसका जन्म पहले हुआ हो।

(छ) अनुचित बात के लिए आग्रह। (ज) जिसमें पाप नहीं है।

(झ) जो नया-नया आया हुआ हो। (ञ) जो अच्छे कुल में उत्पन्न हुआ हो।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(ट) जो तीनों कालों को देखता है। (ठ) जो बहुत और व्यर्थ बोलता है।
(ड) विदेश में प्रवास करनेवाला। (ढ) जो मुकद्दमे लड़ता रहता है।
(ण) जो सदा रहनेवाला है। (त) जो अपनी भलाई चाहता है।
(थ) लौटकर आया हुआ। (द) जो चक्र धारण करता है।
(ध) अपने परिवार के साथ। (न) अभिनय करनेवाली स्त्री।
(प) जो अपनी हत्या करता है। (फ) जो द्वार की रक्षा करता है।
(ब) जो प्रिय बोलता है। (भ) बहुत सी भाषाएँ बोलनेवाला।
(म) वह स्थान जहाँ मुर्दे जलाये जाते हैं। (य) पीछे-पीछे चलनेवाला।
(र) जिस पर विश्वास किया जा सके। (ल) जिसे जीता नहीं जा सकता।
(व) रात और सन्ध्या के बीच का समय। (श) उपकार के बदले में किया उपकार।
(ष) जो आदमी साँप पकड़ता है। (स) युग का निर्माण करनेवाला।
(ह) जहां नदियों का मिलन हो। (क्ष) जो सबको समान भाव से देखे।
(त्र) जो दूसरे के स्थान पर काम करे। (ज्ञ) जिसके कोई सन्तान न हो।

१०. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो:—

(क) चाबियों का....... (ख) जहाजों का ....
(ग) डाकुओं का........ (घ) लताओं का........
(ङ) यात्रियों का....... (च) राष्ट्रों का.......
(छ) सेना की......... (ज) पहाड़ों की.......
(झ) विद्यार्थियों की..... (ञ) गायकों की.......।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

११. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो:—

(क) मोर.........है। (ख) वायु......है।
(ग) सिंह........है। (घ) गाय......है।
(ङ) गीदड़.......है। (च) पत्ते......हैं।
(छ) तोता......है। (ज) मक्खियाँ......हैं।
(झ) गदहा......है। (ञ) साँप......है।

१२. निम्नलिखित शब्द-युग्मों को वाक्यों में प्रयुक्त करो:—

आकाश-पाताल, ऊँच-नीच, उतार-चढ़ाव, अन-बन, खरी-खोटी, हार-जीत, थोड़ा-बहुत, प्रश्नोत्तर, हानि-लाभ, सत्यासत्य, क्रय-विक्रय, पक्ष-विपक्ष, जीवन-मरण, सुख-दुःख, आयात-निर्यात।

१३. निम्नलिखित में प्रत्येक शब्द के जितने अर्थ हो सकते हैं, उतने वाक्यों में स्पष्ट करो:—

घर, टीका, थान, धुनना, नाम, पंच, पूर्व, पेट, नाक, फल, बड़ा, बनाना, बस, बाला, बेल, भरना, भाग, भाव, मूत, हल।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

४

शब्द-रचना
या
शब्द-निर्माण

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha
डॉ० राम[illegible] आर्य, बिजनौर
की स्मृति में सादर भेंट--
हरप्यारी देवी, चन्द्रप्रकाश आर्य
संतोष कुमारी, रवि प्रकाश आर्य

शब्द-रचना

रचना या बनावट के आधार पर शब्दों के तीन भेद किये जाते हैं--रूढ़, यौगिक तथा योगरूढ़। **रूढ़** वे शब्द हैं जिनके सार्थक खण्ड न हो सकें। जैसे **घोड़ा, हाथ, आग, जल, मैं, वह**। 'घोड़ा' में घो और ड़ा, अथवा घ् और ओड़ा, अथवा घोड़ और आ खंडों का कोई अर्थ नहीं है। इसी तरह यदि 'कुत्ता' शब्द के दो खंड कर दें--कुत् और ता, तो उनका पृथक् पृथक् कोई अर्थ नहीं होता। रूढ़ शब्दों को मूल शब्द या अयौगिक शब्द भी कह सकते हैं। हमारे शब्द-भण्डार में इनकी संख्या कई हज़ार है।

रूढ़ शब्द के साथ उपसर्ग, प्रत्यय अथवा कोई अन्य शब्द जोड़ा जाय तो वह यौगिक शब्द बन जाता है। जैसे पाठ+शाला=**पाठशाला**; पाठ+ई (प्रत्यय)=**पाठी**; सह+पाठी=**सहपाठी**। इसी प्रकार **शिक्षण, प्रशिक्षण, शिक्षक, शिक्षार्थी; मनोबल, बेमन, सुमन, सौमनस्य, मनस्वी, महामना; कृपा, अकृपा, कृपापात्र, कृपालु**; ये सब यौगिक शब्द हैं। इनमें प्रत्येक शब्द के सार्थक खंड बनते हैं।

जो शब्द बनावट में यौगिक होते हुए भी किसी विशिष्ट या रूढ़ अर्थ में प्रयुक्त होता है, उसे **योगरूढ़** कहते हैं। उदाहरणस्वरूप '**चारपाई**' के दो खंड हैं--चार और पाई; दोनों अर्थवान् खंड है। यह यौगिक शब्द है। किन्तु इस शब्द का प्रयोग हर उस चीज़ या जीव के लिए नहीं होता, जिसके चार पैर हैं। इसका एक विशिष्ट (रूढ़) अर्थ हो गया है अर्थात् 'खाट'। इसलिए यह योगरूढ़ शब्द है। इसी प्रकार **जलज**=जल में उत्पन्न; किन्तु जोंक, मछली, सेवार आदि के लिए अब इसका प्रयोग नहीं होता, केवल 'कमल' के लिए होता है। यह शब्द भी यौगिक होते हुए भी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अर्थ में रूढ़ हो गया है। योगरूढ़ का आधार तत्त्वतः अर्थ ही है। इसलिए इसे रचना की कोटि में नहीं लेना चाहिए। रचना की दृष्टि से दो ही भेद हैं— रूढ़ या मूल; एवं २. यौगिक। रूढ़ शब्दों के लिए देखिए हिन्दी का कोई शब्दकोश। इस अध्याय में यौगिक शब्दों की चर्चा की जायगी।

यौगिक शब्दों की रचना में पाँच प्रक्रियाएँ प्रमुख हैं—१. सन्धि, २. समास, ३. उपसर्ग या पूर्वप्रत्यय, ४. प्रत्यय या परप्रत्यय या पश्चसर्ग, और ५. अन्तःसर्ग।

सन्धि

'विद्यालय' दो शब्दों के योग या जोड़ से बना है—विद्या+आलय। एक शब्द का अंतिम अक्षर दूसरे शब्द के पहले अक्षर से जुड़ गया है। इसी प्रक्रिया का नाम 'सन्धि' है। सन्धि का अर्थ ही है जोड़। संधि करने में दो वर्णों का एक वर्ण हो जाता है। हिन्दी के तद्भव शब्दों में इने-गिने ऐसे हैं जिनमें सन्धि हुई है, जैसे अब+ही=**अभी**, कहाँ+ही=**कहीं**, वह+ही=**वही**, न+ही=**नहीं**। इसी प्रकार **जभी, तभी, कभी, सभी, यही, यहीं, वहीं**। वस्तुतः सन्धि संस्कृत (तत्सम) शब्दों में होती है। आप इकट्ठे आने वाले दो शब्दों को एक-साथ बोलिए। निश्चय ही उनमें ध्वनियाँ जुड़ जाती हैं। सन्धि एक ध्वनिगत प्रक्रिया है।

सन्धि तीन प्रकार की होती है—स्वर-सन्धि, व्यंजन-सन्धि, विसर्ग-सन्धि।

स्वर-सन्धि

१. दीर्घ सन्धि—अर्थात् एक ही स्वर के दो रूप—ह्रस्व और दीर्घ—एक साथ आ जायँ, तो दोनों जुड़कर एक दीर्घ स्वर हो जाता है।

–अ+अ—परम+अर्थ=**परमार्थ**; काव्य+अमृत=**काव्यामृत**।

अ+आ—पुस्तक+आलय=**पुस्तकालय**; धर्म+आत्मा=**धर्मात्मा**।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आ+आ--वनिता + आश्रम=**वनिताश्रम**; वार्ता + आलाप=**वार्तालाप**।

आ+अ--विद्या+अभ्यास=**विद्याभ्यास**; विद्या+अर्थी=**विद्यार्थी**

इ+इ--रवि+इन्द्र=**रवीन्द्र**; अति+इव=**अतीव**।

इ+ई--हरि+ईश=**हरीश**; अधि+ईश्वर=**अधीश्वर**।

ई+इ--लक्ष्मी+इच्छा=**लक्ष्मीच्छा**।

ई+ई--रजनी+ईश=**रजनीश**; मही+ईश=**महीश**।

उ+उ--भानु+उदय=**भानूदय**; गुरु+उपदेश=**गुरूपदेश**।

उ+ऊ--सिंधु+ऊर्मि=**सिन्धूर्मि**; धातु+ऊष्मा=**धातूष्मा**।

ऊ+उ--चमू+उत्तम=**चमूत्तम**।

ऊ+ऊ--भ्रू+ऊर्ध्व=**भ्रूर्ध्व**।

ऋ+ऋ पितृ+ऋण=**पितॄण**।

२. गुणसन्धि (ए, ओ)

अ/आ+इ=ए--स्व + इच्छा=**स्वेच्छा**; महा + इन्द्र=**महेन्द्र**।

अ/आ+ई=ए--राका+ईश=**राकेश**, परम+ईश्वर=**परमेश्वर**।

अ/आ+उ=ओ-बाल+उपयोगी=**बालोपयोगी**; महा+उदय=**महोदय**।

अ/आ+ऊ=ओ-सागर+ऊर्मि=**सागरोर्मि**; नव+ऊढा=**नवोढा**।

३. वृद्धिसन्धि (ऐ, औ)

अ/आ+ए/ऐ=ऐ--सदा+एव=**सदैव**; मत+ऐक्य=**मतैक्य**।

अ/आ+ओ/औ =औ--महा + ओषधि=**महौषधि**; जल+ओघ=**जलौघ**

अ/आ+ऋ=अर्--देव+ऋषि=**देवर्षि**; महा+ऋषि=**महर्षि**।

४. यण् सन्धि (यण्=य् व् र्)

इ/ई+कोई दूसरा स्वर, तो इ/ई का य्--यदि+अपि=**यद्यपि**; इति+आदि=**इत्यादि**; प्रति+एक=**प्रत्येक**; अभि+आस=**अभ्यास**; प्रति+उपकार=**प्रत्युपकार**।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उ/ऊ+कोई दूसरा स्वर, तो उ/ऊ का व्—सु+आगत=**स्वागत**; अनु+ईक्षण=**अन्वीक्षण**; लघु+ओष्ठ=**लघ्वोष्ठ**; वधू+आगम=**वध्वागम**।

ऋ+कोई दूसरा स्वर, तो ऋ का र्—पितृ+आज्ञा=**पित्राज्ञा**; भ्रातृ+आनन्द=**भ्रात्रानन्द**; मातृ+इच्छा=**मात्रिच्छा**।

५. अयादि सन्धि (अय्, आय्, अव्, आव्)

ए+अ/आ=अय्—ने+अन=**नयन**

ऐ+अ/आ=आय्—गै+अक=**गायक**

ओ+अ/आ=अव्—भो+अन= **भवन**

औ+अ/आ=आय्—पौ+अक=**पावक**; नौ+इक=**नाविक**।

व्यंजन-सन्धि

१. अघोष व्यंजन के बाद स्वर हो या सघोष व्यंजन हो तो अघोष का सघोष व्यंजन हो जायगा।* उदाहरण—

वाक्+ईश=**वागीश**; सत्+इच्छा=**सदिच्छा**; जगत्+अंबा=**जगदंबा**। दिक्+गज=**दिग्गज**; सत्+धर्म=**सद्धर्म**; तत्+रूप=**तद्रूप**। उत्+घाटन=**उद्घाटन**।

(१ क) त्/द् के परे ल हो, तो त्/द् का भी ल् हो जाता है, जैसे उत्+ लास=**उल्लास**; तत्+लीन=**तल्लीन**।

(१ ख) त्/द् के परे ज हो, तो त्/द् का भी ज् हो जाता है, जैसे सत्+जन=**सज्जन**; विपद्+जाल=**विपज्जाल**।

(२ ग) क्/च्/ट्/त्/प् के परे सानुनासिक (न,म) व्यंजन हो, तो क् का अपना वर्गीय अनुनासिक ङ, च् का अपना ञ, ट् का अपना ण्, त् का अपना न्, प् का अपना म् हो जाता है।

---

*वर्ग का पहला दूसरा व्यंजन अघोष और तीसरा, चौथा, पाँचवा व्यंजन सघोष होता है। **य र ल व** भी सघोष हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उदाहरण--

वाक्+मय=**वाङ्मय**; षट्+मास=**षण्मास**; जगत्+नाथ=**जगन्नाथ**; सत्+मार्ग=**सन्मार्ग**; उत्+नति=**उन्नति**।

(१ घ) त्/द् के बाद ह हो तो द्ध हो जाता है, जैसे उत्+हार=**उद्धार**; उत्+हृत्=**उद्धृत**।

२. सघोष के बाद अघोष व्यंजन हो तो सघोष का अघोष हो जाता है। जैसे--

उद्+तल=**उत्तल**; क्षुध्+पिपासा=**क्षुत्पिपासा**।

सूचना--व्यंजन सन्धि का प्रमुख नियम यही है कि दोनों जुड़े हुए वर्ण या तो सघोष होंगे या दोनों अघोष होंगे।

(२ क) त्/द् के परे ट हो तो जुड़कर ट्ट, च हो तो च्च; छ हो तो च्छ हो जाता है। उदाहरण--

त्/द्+ट—तत्+टीका=**तट्टीका**।

त्/द्+च--सत्+चरित्र=**सच्चिरत्र**; शरद्+चन्द्र=**शरच्चन्द्र**।

त्/द्+छ--महत्+छाया=**महच्छाया**

(२ ख) त्/द् के परे श हो तो भी च्छ होता है। जैसे--

सत्+शास्त्र=**सच्छास्त्र**; उत्+शिष्ट=**उच्छिष्ट**।

(२ ग) स्वर के परे छ हो तो छ का च्छ हो जाता है। जैसे--

आ+छादन=**आच्छादन**; परि+छेद=**परिच्छेद**

३. इ/उ के बाद वाले स का ष हो जाता है, जैसे

नि+सेध=**निषेध**; वि+सम=**विषम**; अनु+संगी=**अनुषंगी**।

४. र/ष/ऋ के बाद में आने वाले न का ण हो जाता है, जैसे--

भर्+अन=;**भरण** ऋ+न=**ऋण**; परि+मान=**परिमाण**; भूष्+अन=**भूषण**; तृष्+ना=**तृष्णा**।

५. श/ष के बाद त/थ का ट-ठ हो जाता है। उदाहरण--

तुष्+त=**तुष्ट**; पृष्+थ=**पृष्ठ**; नश्+त=**नष्ट**।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

६. ऊपर का कोई नियम लागू न होता हो तो हलन्त व्यंजन+स्वर का साधारण मात्रायुक्त जोड़ हो जाता है, जैसे--

अन्+आचार=**अनाचार**; निर्+उद्यम=**निरुद्यम**; पुनर्+ईक्षण =**पुनरीक्षरण**।

विसर्ग-सन्धि

१. सघोष व्यंजन से पहले अः का ओ होता है; जैसे--

तमःगुण=**तमोगुण**; तपःवन=**तपोवन**; मनःबल=**मनोबल**; अधःभाग=**अधोभाग**; वयःवृद्ध=**वयोवृद्ध**; मनःरंजन=**मनोरंजन**।

[अपवाद--पुनः और अन्तः में र् हो जाता है; जैसे **पुनर्गमन**, **अन्तर्गत**, **अन्तर्भूत**।]

२. अ से पहले अः का ओ होता है, जैसे कः अपि=**कोऽपि**।

[अ का ऽ चिह्न याद रहे। अन्तः, पुनः यहाँ भी अपवाद हैं--पुनःअपि=**पुनरपि**; अन्तःअग्नि=**अन्तरग्नि**।]

३. किसी और स्वर से पहले अः के विसर्ग का लोप होता है, जैसे अतःएव=**अतएव**।

४. क/ख तथा प/क से पहले अः का विसर्ग सुरक्षित रहता है; जैसे **मनःकल्पित**, **अन्तःकरण**, **पुनःकथन**, **प्रातःकाल**, **अधःपन**, **अन्तःपुर**, **पुनःफलित**।

[नमः और पुनः का नमस् और पुरस् होता है।]

५. अः/इः/उः+च/छ या श, तो विसर्ग का श्। उदाहरण--

पुनःचर्या=**पुनश्चर्या**, निःचल=**निश्चल**; निःशंक=**निश्शंक**; दुःशासन=**दुश्शासन**, दुःचरित्र=**दुश्चरित्र**, निःछल=**निश्छल**।

६. अः/इः/उः+त/थ/स, तो विसर्ग का स्। उदाहरण--

मनःताप=**मनस्ताप**, निःतेज=**निस्तेज**, निःसंग=**निस्संग**, निःसहाय=**निस्सहाय**, दुःतर=**दुस्तर**।

७. इः/उः+प/फ/क/ख/ट/ठ, तो विसर्ग का ष्। उदाहरण--

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

निःपाप=**निष्पाप**, निःफल=**निष्फल**, दुःप्राप्ति=**दुष्प्राप्ति**, दुःकर =**दुष्कर**, निःक्रिय=**निष्क्रिय**, चतुःकोण=**चतुष्कोण**। निःठुर= **निष्ठुर**।

८. अः+श्/ष्/स्, तो विसर्ग विकल्पतः सुरक्षित रहता है, जैसे **दुःशील, दुःस्वप्न, दुःसाहस, अन्तःशक्ति**।

९. इः+र, तो इः का ई, जैसे निःरोग=**नीरोग**; निःरस=**नीरस**; निःरव=**नीरव**।

सन्धि-संबंधी विशेष टिप्पणियाँ

१. याद रहे कि सन्धि में दो ध्वनियों का मेल होता है। इन ध्वनियों का जल्दी-जल्दी उच्चारण करने से जो ध्वनि बनती है, वही सन्धि है।

२. दो से अधिक संस्कृत शब्दों के सन्धियुक्त करने की पद्धति हिन्दी में नहीं है। संस्कृत में ऐसा होता रहा है, किन्तु इन शब्दों का हिन्दी में प्रचलन नहीं है, क्योंकि इनसे भाषा दुरूह और क्लिष्ट हो जाती है।

३. दीर्घ **ॠ** वाले शब्दों का हिन्दी में प्रचलन नहीं है जैसे पितृ+ऋण =**पितॄण**। किन्तु हिन्दी में पितृ-ऋण चलता है, क्योंकि यह सरल है।

समास

दो सम्बद्ध शब्दों को पास-पास लाकर मिलाने का नाम समास है। सन्धि में दो शब्द पास-पास रहते हैं, समास में दो शब्द पास-पास लाये जाते हैं। '**दहीबड़ा**' वास्तव में है 'दही में पड़ा हुआ बड़ा'। यहाँ दही और बड़ा को पास-पास ला दिया गया है, बीच के 'में पड़ा हुआ' का लोप कर दिया गया है। इसी तरह—

घन की तरह श्याम=**घनश्याम** ('की तरह' का लोप)

माँ और बाप=**माँबाप** ('और' का लोप)

सेना का नायक=**सेनानायक** ('का' का लोप)।

पास-पास लाकर बनाये हुए **यौगिक शब्द** को समास पद या

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

समासयुक्त शब्द कहते हैं। इन जुड़े हुए शब्दों को अलग-अलग करने की रीति को विग्रह कहते हैं, जैसे

पत्रोत्तर का विग्रह––पत्र का उत्तर

देशभक्ति का विग्रह––देश के प्रति भक्ति।

चारपाई का विग्रह––चार हैं पैर जिसके।

समास के चार भेद हैं––अव्ययीभाव, तत्पुरुष, द्वन्द्व और बहुव्रीहि।

समास में जो दो शब्द हैं, उनमें से किसी एक की प्रधानता है। अव्ययीभाव में पहले शब्द की प्रधानता है, तत्पुरुष में दूसरे की, द्वन्द्व में दोनों की, और बहुव्रीहि में न पहले की न दूसरे की, बल्कि तीसरा अर्थ निकलता है।

१. **अव्ययीभाव**––जिस समास में पहला पद प्रधान हो और समस्त पद अव्यय बन जाय। अव्ययीभाव का अर्थ है 'अव्यय हो जाना'। उदाहरण––

संस्कृत के––**यथासंभव**, **यथाशक्ति**, **प्रतिदिन**, **प्रत्यक्ष**, **परोक्ष**, **व्यर्थ**, **अनुदिन**, **आजीवन**, **यथास्थान**, **यथाशीघ्र**।

हिन्दी के––**निधड़क**, **अनजाने**, **बेखटके**, **भरपेट**, **धीरे-धीरे**, **धड़ाधड़**, **बार-बार**, **हाथोंहाथ**, **एकाएक**।

२. तत्पुरुष––**तत्पुरुष** का अर्थ है 'उसका आदमी'। इससे पहचान लीजिए कि जब दो शब्दों के बीच में विभक्तिचिह्न––को, से, के लिए, का/के/की, में/पर––का लोप हो तो तत्पुरुष होता है, और प्रधानता दूसरे पद की रहती है, जैसे **तत्पुरुष** शब्द में तत् (वह) प्रधान नहीं है, पुरुष (आदमी) प्रधान है। राजसभा भले ही राजा की या राज्य की है, पर है तो सभा।

विभक्ति के लोप से ही इसके छह भेद हो जाते हैं––

कर्म तत्पुरुष––**को** का लोप––संस्कृत के **स्वर्गप्राप्त**=स्वर्ग को प्राप्त; **शरणागत**=शरण को आया हुआ; **परलोकगमन**=परलोक को गमन। हिन्दी के––**गिरहकट**=गाँठ को काटनेवाला; **माखनचोर**=माखन को चुरानेवाला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

करण तत्पुरुष—**से, द्वारा** का लोप—**तुलसीकृत**=तुलसी द्वारा कृत; इसी तरह **चिन्तातुर, अकालपीड़ित, ईश्वरदत्त, गुणयुक्त**। हिन्दी के—**मनमाना**=मन से माना हुआ; **भुखमरा**=भूख से मरा; इसी तरह **मुँहमाँगा, मदमाता, दईमारा**।

सम्प्रदान तत्पुरुष—**के लिए** का लोप—संस्कृत के **देशभक्ति**= देश के लिए भक्ति; इसी प्रकार **हवनसामग्री, देवबलि, विद्यागुरु**। हिन्दी के **आरामकुरसी**=आराम के लिए कुरसी; **हथकड़ी**=हाथ के लिए कड़ी; **रसोईघर**=रसोई के लिए घर।

अपादान तत्पुरुष—**से** (अलगपन) का लोप—संस्कृत के **धर्मभ्रष्ट**= धर्म से भ्रष्ट; **पदच्युत**=पद से च्युत; **भयभीत**=भय से भीत; हिन्दी के **देशनिकाला, कनकटा, मुँहचोरा**।

सम्बन्ध तत्पुरुष—**का/के/की** का लोप—संस्कृत के **विद्यासागर**= विद्या का सागर। इसी तरह **राजकुमार, सेनापति, देशोद्धार, देवमन्दिर, गंगातट, कार्यसिद्धि, जलधारा, ऋषिकन्या**।

हिन्दी के **घुड़सवार**=घोड़े का सवार; इसी तरह **लखपति, रनिवास, पनचक्की, अमचूर**।

अधिकरण तत्पुरुष—**में/पर** का लोप—संस्कृत के **जलमग्न**=जल में मग्न। इसी प्रकार **वनवास, जगत्प्रसिद्ध**।

हिन्दी के **डिब्बाबंद, आपबीती**=अपने पर बीती; **पनडुब्बी**।

विभक्ति के अलावा अन्य पद भी लुप्त हो जायँ, तो उसे लुप्तपद तत्पुरुष समास कहते हैं, जैसे **अधिकारपत्र**=अधिकार देने का पत्र; **तुलादान**= तुला में बराबर तौलकर दिया जानेवाला दान। इसी तरह हिन्दी के **रेलगाड़ी**=रेल पर चलनेवाली गाड़ी; **पवनचक्की**=पवन से चलनेवाली चक्की; **दहीबड़ा**=दही में पड़ा हुआ बड़ा।

कर्मधारय तत्पुरुष वह समास है जिसमें एक पद विशेषण अथवा उपमाद्योतक हो, जैसे **अल्पसंख्यक, महावीर, अर्धचन्द्र, अकालमृत्यु, अंधविश्वास**; तथा **मुखचंद्र, चरणकमल**। हिन्दी के **भलामानस**,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कालापानी, छुटभैया, अधमरा।

जिस समास में पूर्वपद संख्यावाचक हो तथा पूरा शब्द समाहार (समुदाय) का द्योतक हो, उसे द्विगु तत्पुरुष समास कहते हैं। उदाहरण—संस्कृत के **त्रिलोकी, पंचवटी, त्रिकाल, सप्तसिन्धु**। हिन्दी के **अठवारा, चौराहा, दोपहर, पंसेरी, सतसई, दुपट्टा, चौपाई**।

३. द्वंद्व का अर्थ है 'जोड़ा'। दो शब्दों का विग्रह बीच में 'और' लाने से होता है। दोनों पद प्रधान रहते हैं। उदाहरण—

संस्कृत के **ऋषिमुनि**=ऋषि और मुनि; **राधाकृष्ण, अन्नवस्त्र, जीव-जन्तु, आचार-विचार, पाप-पुण्य, धर्माधर्म, वादविवाद, हरिहर**। हिन्दी के **माँ-बाप, भाई-बहन, दाल-रोटी, रुपया-पैसा, देख-भाल, नीचे-ऊपर, मार-पीट, आगा-पीछा, हाथी-घोड़े, खान-पान, लेन-देन**।

४. बहुव्रीहि समास एक भिन्न अर्थ दे देता है। **मन्दबुद्धि** का अर्थ न 'मन्द' है न 'बुद्धि', बल्कि 'जिसकी बुद्धि मंद है ऐसा आदमी'। प्रायः ऐसे शब्द संज्ञा या विशेषण बन जाते हैं। यह समास भी विभक्तियों के हिसाब से छह प्रकार का है—

कर्म बहुव्रीहि—**मुँहतोड़**=मुँह को तोड़ दे जो—यह विशेषण हो गया, जैसे मुँहतोड़ जवाब। इसी तरह **शाकप्रिय**=शाक प्रिय है जिसको।

करण बहुव्रीहि—**दत्तचित्त**=दिया गया चित्त जिसके द्वारा; **कृतकार्य**=किया गया कार्य जिसके द्वारा। इसी तरह **धृतराष्ट्र, कृत-संकल्प**।

प्रायः बहुव्रीहि समासों में सम्बन्ध कारक का अर्थ होता है, जैसे **पीताम्बर**=पीला है जामा जिसका; **चतुर्भुज**=चार हैं भुजाएँ जिसकी; **शांतचित्त**=शांत है चित्त जिसका—ऐसा आदमी। इसी तरह **दीर्घकाय, तीक्ष्णदृष्टि, प्रसन्नमुख, नतमस्तक**। ऐसे शब्दों में का/के/की से विग्रह करने का ध्यान रहे।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हिन्दी के **कनफटा**=कान फटा है जिसका; **बारहसिंगा, लमटंगा, सतलड़ा**।

अधिकरण बहुव्रीहि—**स्वरांत**=स्वर है अन्त में जिसके; **चक्रपाणि**=चक्र है हाथ में जिसके। **बारहदरी**=बारह दर हैं जिसमें।

इसी तरह **इकतारा, त्रिकोण, तिरंगा, रहमदिल**।
विग्रह में '**में/पर**' का ध्यान रहे।

उपसर्ग

जो शब्दांश किसी शब्द के पहले जुड़ते हैं उन्हें **उपसर्ग** कहते हैं। अपने में ये शब्द सार्थक नहीं होते, किन्तु जिस शब्द के साथ जुड़ते हैं, उसमें एक विशेषता ला देते हैं। उदाहरणस्वरूप बल का अर्थ है 'शक्ति'। 'प्र' उपसर्ग लगने से प्रबल=शक्तिशाली; निर् लगने से निर्बल='शक्तिहीन' अर्थ हो गया। इसी तरह 'हार' के पहले प्र लगने से प्रहार (अर्थ 'चोट'), सम् से संहार (अर्थ 'नाश'), वि से विहार (अर्थ 'घूमना'), आ से आहार (अर्थ 'खाना')। संस्कृत में इस तरह से यौगिक शब्द बनाने की अद्भुत शक्ति है।

Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar 165498

संस्कृत के उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
अति-	बहुत	अतिकठिन, अतिदूर, अत्यद्भुत, अतिभार।
	सीमा से परे	अतिमानव, अतीन्द्रिय, अत्युक्ति।
	विशिष्ट अर्थ	अतिसार (पेचिश), अत्याचार (जुल्म), अतीत (बीता हुआ)।
अधि-	ऊपर	अधिराज, अध्यक्ष, अध्यात्म, अध्यारोप।
	विशिष्ट अर्थ	अधिकार, अध्ययन, अध्याय।
अनु-	पीछे	अनुकरण, अनुचर, अनुज, अनुयायी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

	के साथ वाला	अनुनासिक, अनुदिन, अनुदान, अनुराग।
	विशिष्ट अर्थ	अनुग्रह, अनुभव, अनुरोध, अनुशीलन।
अप-	बुरा	अपयश, अपकार, अपव्यय, अपशकुन।
	उलटा	अपमंगल, अपमान, अपकर्ष, अपसव्य (बायाँ)
	विशिष्ट अर्थ	अपराध, अपस्मार (मिरगी)।
अपि-	निकट	अपिपक्ष (बहुत कम प्रयुक्त उपसर्ग)।
अभि-	सामने, की ओर	अभिमुख, अभ्यागत, अभ्यर्थना।
	अच्छा	अभिजात, अभिमान, अभिवृद्धि, अभिरुचि।
	अधिक	अभिनव, अभीष्ट, अभिभाषण।
	विशिष्ट अर्थ	अभिप्राय, अभियोग, अभिनय, अभिनन्दन।
अव-	नीचे की ओर	अवतीर्ण, अवनति, अवरोह, अवगाहन।
	उलटा	अवगुण, अवमान, अवरति।
	विशिष्ट अर्थ	अवकाश, अवसर, अवज्ञा, अवस्था।
आ-	सब तरफ से	आकांक्षा, आक्रमण, आक्षेप, आडम्बर।
	अपनी ओर	आगमन, आकर्षण, आदान, आयात।
	तक	आजीवन, आमूल, आबालवृद्ध।
	विशिष्ट अर्थ	आदर, आकाश, आदर्श, आरम्भ, आश्रम, आज्ञा।
उत्	ऊपर	उत्कर्ष, उत्थान, उत्पत्ति, उद्घाटन।
	अधिक	उत्तुंग, उत्तम, उद्योग, उद्रेक।
	विशिष्ट अर्थ	उत्पात, उद्देश्य, उच्चारण, उज्ज्वल, उत्सव।
उप-	पास	उपदेश, उपयुक्त, उपसर्ग, उपासना।
	छोटा, सहायक	उपनाम, उपमंत्री, उपाचार्य, उपाहार।
	विशिष्ट अर्थ	उपवास, उपमा, उपद्रव, उपयोग।
दुः (दुर् दुस्)	बुरा	दुरवस्था, दुराचार, दुर्जन, दुर्घटना, दुश्चरित्र, दुष्कर्म, दुःसाहस।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

	कठिनाई से	दुर्भेद्य, दुष्कर, दुर्लभ, दुस्तर।
नि-	बहुत, बड़ा	निगूढ़, निवास, निरूपण, निरोध।
	नीचे	निक्षेप, निकृष्ट, निम्न, निवर्तन।
	विशिष्ट अर्थ	निद्रा, निष्ठा, निवेदन, निमित्त।
नि:(निस् निर्)	बिना	निस्तेज, निरादर, निर्दय, नीरोग, निर्मूल, निष्कलंक, निस्तेज, निश्चल।
	वाहर	नि:श्वास, निर्यात, निर्झर, निष्क्रमण।
	विशिष्ट अर्थ	निर्णय, निर्देश।
परा-	परे	पराजय, परास्त, पराङ्मुख।
	विशिष्ट अर्थ	परामर्श, पराक्रम, पराभव।
परि-	चारों ओर	परिक्रमा, परिचर्या, परिचय, परिवर्तन।
	विशिष्ट अर्थ	परिहार, परिच्छेद, पर्याप्त, परिवार।
प्र-	अधिक बड़ा	प्रकोप, प्रख्यात, प्रबोध, प्राचार्य, प्रबल, प्रसिद्ध।
	पूर्ण का एक अंश	प्रदेश, प्रखंड, प्रपौत्र, प्रभेद।
	आगे	प्रगति, प्रणाम, प्रधान, प्रस्तुत, प्रेरणा।
	विशिष्ट अर्थ	प्रकृति, प्रभात, प्रकार, प्रहार, प्रणय।
प्रति-	विपरीत, बदले में	प्रतिक्रिया, प्रतिध्वनि, प्रतिबिंब, प्रतिरोध।
	लगभग, सदृश	प्रतिरूप, प्रतिलिपि, प्रतिमूर्ति।
	आगे	प्रत्यक्ष, प्रतिमुख, प्रत्याशा, प्रतीत।
वि-	विशेष	विख्यात, विजय, विद्रोह, विज्ञान, विनाश।
	रहित	विफल, विदेशी, विवर्ण, व्यर्थ।
	विपरीत	विकर्षण, विपक्ष, विषम, विस्थापित।
	नया अर्थ	विधान, विनोद, विरह, विहार, विषय।
सम्-	अच्छी तरह	संजीवनी, संतोष, संतुलन, संशोधन, संपूर्ण।
	साथ, मिलकर	संगीत, संग्रह, संगठन, संचय, संबंध।
	विशिष्ट अर्थ	संदेह, समय, समीप, समुद्र, संस्था।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सु	अच्छा	सुकर्म, सुपुत्र, सुदृढ़, स्वागत, सुरक्षा।
	सरलतापूर्वक	सुगम, सुकर, सुबोध, सुलभ, सुविधा।

एक से अधिक उपसर्गों का प्रयोग भी किन्हीं शब्दों के साथ मिलता है, जैसे अति+आ+चार=**अत्याचार**; अधि+नि+यम=**अधिनियम**; अभि+वि+अक्ति=**अभिव्यक्ति**; अभि+आ+गत=**अभ्यागत**; उत्+आ+हरण=**उदाहरण**; उप+नि+आस=**उपन्यास**; उप+निर्+वाचन=**उपनिर्वाचन**; उप+अधि+अक्ष=**उपाध्यक्ष**; निर्+अप+राध=**निरपराध**; निर्+अभि+मान=**निरभिमान**; दुस्+प्र+योग=**दुष्प्रयोग**; वि+आ+करण=**व्याकरण**; सु+वि+ख्यात=**सुविख्यात**; सम्+आ+धान=**समाधान**; सु+आ+गत=**स्वागत**; सम्+आ+चार=**समाचार**; निः+सम्+देह=**निस्संदेह**; सु+निः+चित=**सुनिश्चित**।

सु की तरह कु को और अधि की तरह अधः को भी इसी सूची में होना चाहिए था, किन्तु संस्कृत के आचार्यों ने इन्हें एक भिन्न कोटि में रखा है। कुछ विशेषण और अव्यय ऐसे ही हैं, जो उपसर्ग की भाँति प्रयुक्त होते हैं। उन्हें गति शब्द कहते हैं। उनमें प्रमुख निम्नलिखित हैं--

गतिशब्द	अर्थ	उदाहरण
अ	नहीं	(व्यंजन से पहले) अज्ञान, अधर्म, अकाल, अमर, अचल।
		(अन्, स्वर से पहले) अनाचार, अनादि, अनेक, अनुपम।
अधः	नीचे	अधोगति, अधःपतन, अधोमुख, अधोभाग।
अन्तः	भीतर	अन्तःपुर, अन्तरंग, अन्तर्दृष्टि, अन्तर्यामी, अन्तःकरण, अन्तस्तल, अन्तःप्रेरणा।
कु	बुरा	कुकर्म, कुपुत्र, कुपथ, कुरूप, कुमति।
तत्	वह	तत्काल, तत्पश्चात्, तदनुसार, तत्सम, तद्भव, तल्लीन, तन्मय।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पर	दूसरा	परोपकार, परदेशी, परपक्ष, परलोक, पराधीन।
पुनः	फिर	पुनरुक्ति, पुनर्जन्म, पुनःप्राप्ति, पुनरुद्धार, पुनःस्थापित।
पूर्व	पहला	पूर्वकल्पित, पूर्वनिश्चित, पूर्वपक्ष, पूर्वार्ध, पूर्वाह्न।
बहु	बहुत	बहुपतित्व, बहुभाषी, बहुमुखी, बहुमूल्य, बहुवचन।
स-	साथ	सगोत्र, सरस, सफल, सजीव, सचेत।
सह	साथ	सहयोग, सहकारिता, सहानुभूति, सहगान, सहपाठी।
सत्	अच्छा	सत्पुरुष, सत्संग, सद्गति, सच्चरित्र, सज्जन।
स्व	अपना	स्वतन्त्र, स्वस्थ, स्वजातीय, स्वदेश।

हिन्दी के उपसर्ग बहुत थोड़े हैं। उदाहरण—

अ	नहीं	अजान, अथाह, अबेर, अलग, अकाज।
अन	नहीं	अनबन, अनमोल, अनपढ़, अनसुनी, अनाड़ी।
अध	आधा	अधकचरा, अधपक्का, अधमरा, अधसेरा।
उन	एक कम	उनचास, उनतालीस, उनसठ, उनहत्तर।
औ	सं० अव-	औगुण, औघट, औढर।
क, कु	बुरा	कपूत, कुटेक, कुढंगा, कुठौर।
स, सु	अच्छा	सपूत, सुघड़, सुडौल, सुजान।
दु	सं० दुर्	दुबला, दुलारा, दुकाल।
नि	सं० निर्	निकम्मा, निडर, निधड़क, निहत्था।

विदेशी उपसर्ग—इनमें फ़ारसी-अरबी के उपसर्ग अंग्रेज़ी उपसर्गों की अपेक्षा अधिक हैं। उदाहरण—

कम कमबख्त, कम-अक्ल, कमसमझ, कमज़ोर।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ला, ना	नालायक, लापता, ला-इलाज, नापसंद, लावारिस, लापरवाह।
ग़ैर	ग़ैरमुस्लिम, ग़ैरसरकारी, ग़ैरज़िम्मेदार, ग़ैरहाज़िर।
बद	बदचलनी, बदतमीज़, बदशक्ल, बद-क़िस्मत, बदनाम।
बे (बिना)	बेखटके, बेजोड़, बेतुका, बेधड़क, बेसुरा, बेसमझ, बेकाम, बेकार, बेघर, बेईमान, बेचारा, बेचैन, बेदर्द, बेशर्म, बे-रोक-टोक, बेसुध, बेहद।
बिला	बिलावजह, बिलाशक, बिलाशर्त।
हर (प्रत्येक)	हर रोज़, हर आदमी, हर घड़ी, हर एक।

प्रत्यय

पहले कहा जा चुका है कि प्रत्यय उस शब्दांश को कहते हैं, जिसे किसी शब्द या धातु के **पीछे** लगाकर यौगिक शब्द बनाया जाये। जैसे—**मूर्ख** में -ता प्रत्यय जोड़कर '**मूर्खता**', **अच्छा** में -ई जोड़कर '**अच्छाई**', **कर** में -नी जोड़कर '**करनी**', **चल** में -अन जोड़कर '**चलन**'—ये यौगिक शब्द बन गये हैं।

प्रत्यय दो प्रकार के हैं। जो क्रिया-धातु या मूल क्रिया के साथ लगते हैं, उन्हें कृत् प्रत्यय कहते हैं और इनसे बने यौगिक शब्द को कृदन्त शब्द कहते हैं। जैसे— **आहट** प्रत्यय लगाकर हम **घबरा**(ना) से **घबराहट**, **चिल्ला**(ना) से **चिल्लाहट**, **बौखला**(ना) से **बौखलाहट**, **लड़खड़ा**(ना) से **लड़खड़ाहट** आदि कृदन्त बनते हैं। दूसरे प्रकार के प्रत्यय वे हैं, जो क्रिया से भिन्न शब्द (अर्थात् संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, या अव्यय) के साथ जुड़ते हैं। इन्हें तद्धित प्रत्यय और इनकी सहायता से बने यौगिक शब्दों को तद्धितांत शब्द कहते हैं। जैसे— **-य** प्रत्यय जोड़कर **स्वस्थ** से **स्वास्थ्य** (भाववाचक संज्ञा), **दन्त** से **दन्त्य** (विशेषण) बन गया है।

पहले हम संस्कृत के प्रत्ययों की चर्चा करेंगे, फिर हिन्दी के अपने, और इसके बाद विदेशी प्रत्ययों की। इनका विस्तृत अध्ययन दूसरी पुस्तक

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

में किया जायगा। इस पुस्तक में केवल ऐसे प्रत्ययों को उठाया जायगा जिनका हमारी भाषा में बहुत अधिक प्रचलन है।

संस्कृत प्रत्यय

क. कृत् प्रत्यय

१. -अ (भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए)। इसके कारण स्वर के परिवर्तन पर ध्यान दीजिए।

कम् (अच्छा करना)—**काम**
कृ (करना)—**कार** (जैसे विकार, संस्कार में)
जि (जीतना)—**जय**
खिद् (खीझना)—**खेद**
नी (ले जाना)—**नय** (प्रणय, विनय में भी)
मुह् (अचेत होना)—**मोह**
रुज् (टूटना)—**रोग**
वद् (बोलना)—**वाद**
वह् (उठाना)—**वाह** (जैसे, विवाह, प्रवाह में)
शुच् (शोक करना)—**शोक**
सृ (सरकना)—**सार** (जैसे संसार, प्रसार में)
स्पृश् (छूना)—**स्पर्श**।

२. -अ (कर्तृवाचक, करनेवाला अर्थ में, संज्ञा बनाने के लिए), धातु के स्वर में परिवर्तन होता है।

चुर् (चुराना)—**चोर**
कृ (करना) कर (जैसे दिनकर, भयंकर)
कृ (करना)—**कार** (जैसे भाष्यकार, स्वर्णकार
धृ (धारण करना)—**धर** (विषधर)
ज्ञा (जानना)—**ज्ञ** (जैसे शास्त्रज्ञ, रसज्ञ, मर्मज्ञ)
दा (देना)—**द** (जैसे फलद)
पा (पीना)—**प** (मधुप, सरस)
भृ (भरना)—**भर** (विश्वंभर)
सृप् (सरकना)—**सर्प**
हृ (हरना)—**हर** (जैसे गंध हर, रोगहर)

३. -अक (कर्तृवाचक संज्ञा बनाने के लिए)। यत्र-तत्र स्वर-परिवर्तन का ध्यान रखें।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आलुच् (चारों ओर देखना) **आलोचक**
कृ (करना)—**कारक**
जन् (पैदा करना)—**जनक**
दा (देना)—**दायक**
चिन्त् (सोचना)—**चिन्तक**
नृत् (नाचना)—**नर्तक**
नश् (नष्ट होना)—**नाशक**
पठ् (पढ़ना)—**पाठक**
याच् (माँगना)—**याचक**
खन् (खोदना)—**खनक**
गै (गाना)—**गायक**
रक्ष् (रक्षा करना)—**रक्षक**
लिख् (लिखना)—**लेखक**
शिक्ष् (सीखना)—**शिक्षक**
वच् (बोलना)—**वाचक**
सृज् (पैदा करना)—**सर्जक**
संचर् (संचार करना)—**संचारक**
हिंस् (मारना)—**हिंसक**।

रोचक, मोहक, वर्धक, रोधक, दायक आदि बहुत से ऐसे शब्दों का प्रयोग विशेषण की तरह होता है।

४. **-अन** (भाववाचक संज्ञाएँ बनाने के लिए)। शब्दों में **र/ष/ऋ** के करण **-अन** का **-अण** हो जाता है, उनका ध्यान रखें। सन्धि के नियम लागू होते हैं।

आक्रम् (चढ़ जाना)—**आक्रमण**
आगम् (आना)—**आगमन**
कृ (करना)—**करण** (जैसे अनुकरण)
गै (गाना)—**गायन**
चि (इकट्ठा करना)—**चयन**
तृ (तरना)—**तरण**
दा (देना)—**दान**
पाल् (पालना)—**पालन**
बंध् (बँधना)—**बंधन**
भुज् (खाना)—**भोजन**
मृ (मरना)—**मरण**
रक्ष् (रक्षा करना)—**रक्षण**
वच् (बोलना)—**वचन**
लक्ष् (देखना)—**लक्षण**
वृ (चुनना)—**वरण**
शि (सोना)—**शयन**
शास् (नियंत्रण करना)—**शासन**
श्रु (सुनना)—**श्रवण**
सृप् (सरकना)—**सर्पण**
सह् (सहना)—**सहन**
हृ (हरना)—**हरण**।

५. -अनीय (विशेषण बनाने के लिए)। इसका संबंध ऊपर वाले

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रत्यय से भी है। वास्तव में उसी से **-ईय** जुड़कर बना है। उदाहरण—

कृ—**करणीय**	मृज्—**मार्जनीय**
चि—**चयनीय**	रम्—**रमणीय**
गुप्—**गोपनीय**	रक्ष्—**रक्षणीय**
चिन्त्—**चिन्तनीय**	शुच्—**शोचनीय**
दृश्—**दर्शनीय**	सह्—**सहनीय**
निन्द्—**निन्दनीय**	स्मर्—**स्मरणीय** ।

६. -अना (भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए) उसी -अन का -आ द्वारा विस्तार हुआ है, जैसे **लक्ष्, लक्षण, लक्षणा**। अन्य उदाहरण—

अर्च् (पूजा करना)—**अर्चना**	भू (होना)—**भावना**
कम् (इच्छा करना)—**कामना**	रच् (बनाना)—**रचना**
घट् (घटित होना)—**घटना**	वंद् (नमस्कार करना)—**वंदना**
धृ (धारण करना)—**धारणा**	विद् (जानना)—**वेदना**
तुल् (तौला जाना)—**तुलना**	वंच् (ठगना)—**वंचना**
प्र+ईर् (आगे ले जाना)—**प्रेरणा**	सूच् (संकेत करना)—**सूचना**।

७. -आ (भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए)

इच्छ् (चाहना)—**इच्छा**	पृच्छ् (पूछना)—**पृच्छा**
कथ् (कहना)—**कथा**	भिक्ष् (माँगना)—**भिक्षा**
क्रीड् (खेलना)—**क्रीडा**	भूष् (सजाना)—**भूषा**
कृप् (रोना-पीटना)—**कृपा**	प्रशंस् (तारीफ़ करना)—**प्रशंसा**
चिन्त् (सोचना)—**चिन्ता**	बाध् (रोकना)—**बाधा**
जृ (जीर्ण होना)—**जरा**	शिक्ष् (सीखना)—**शिक्षा**
तृष् (प्यास लगना)—**तृषा**	स्पर्ध् (झगड़ना)—**स्पर्धा**
निन्द् (निन्दा करना)—**निन्दा**	सेव् (सेवा करना)—**सेवा**
पूज् (आदर करना)—**पूजा**	शुभ्, शोभ् (सजाना)—**शोभा**
परीक्ष् (चारों ओर से देखना)—**परीक्षा**	स्पृह् (उत्सुक होना)—**स्पृहा**
	प्रथ् (फैलना)—**प्रथा**।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

८. -इन् (ई) (कर्तृवाचक संज्ञा बनाने के लिए)। ऐसे कृदन्त शब्द विशेषण का काम भी देते हैं।

अर्थ (माँगना)—**अर्थी** (विद्यार्थी)
कम् (चाहना)—**कामी**
गम् (जाना)—**गामी**, जैसे शीघ्रगामी, अधोगामी
ग्रह (लेना)—**ग्राही**, जैसे दत्तकग्राही, पल्लवग्राही
दृश् (देखना)—**दर्शी**, जैसे दूरदर्शी, त्रिकालदर्शी
द्विष् (अप्रीति करना)—**द्वेषी**
भाष् (बोलना)—**भाषी**, जैसे मधुरभाषी, बहुभाषी
धृ (धारण करना)—**धारी**, जैसे छत्रधारी, शस्त्रधारी
वर्त् (होना)—**वर्ती**, जैसे पूर्व-वर्ती, निकटवर्ती
वद् (बोलना)—**वादी**, जैसे छायावादी, आतंकवादी
संयम् (काबू करना)—**संयमी**।

टिप्पणी—हिन्दी में सामान्य रूप से ऐसे शब्द ईकारान्त ही होते हैं, किन्तु शब्द-निर्माण के लिए **-इन्** रूप ध्यान में रहना चाहिए। देखिए समासों में (इन् से)-**इ** ह्रस्व—**मंत्रिपरिषद्**, **कर्मिगण**, **योगिजन**। स्त्रीलिंग में—कामिन् से **कामिनी**, गामिन् से **गामिनी**, संन्यासिन् से **संन्यासिनी**। -ता लगाने के लिए—**उपकारिता**, **स्पष्टवादिता**, **बहुभाषिता**, **उपयोगिता**। -त्व से पहले भी—**स्थायित्व**, **स्वामित्व**। इन सबमें हिन्दी वाला ईकारान्त रूप नहीं चलता।

९. -त (विशेषण बनाने के लिए)। बहुत ही महत्त्वपूर्ण प्रत्यय है। इसका अर्थ है 'हुआ', जैसे **कृत**, किया हुआ, **सुप्त**, सोया हुआ। अन्य उदाहरण—

ख्या (बताना)—**ख्यात**
गै (गाना)—**गीत**
जन्, जा (पैदा होना)—**जात**
ज्ञा (जानना)—**ज्ञात**
तृप् (अघाना)—**तृप्त**
त्यज् (छोड़ना)—**त्यक्त**
ध्वंस् (नष्ट करना)—**ध्वस्त**
दा (देना)—**दत्त**
धा (रखना)—**हित**
ध्यै (ध्याना)—**ध्यात**
नम् (झुकना)—**नत**
नी (ले जाना)—**नीत**

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पा (पीना)—**पीत** रञ्ज् (रंगना)—**रक्त**
पू (पवित्र करना)—**पूत** रम् (रमना)—**रत**
प्राप् (पाना)—**प्राप्त** वच् (बोलना)—**उक्त**
मद् (मस्त होना)—**मत्त** शक् (सकना)—**शक्त**
मा (मापना)—**मित** श्रु (सुनना)—**श्रुत**
मुच् (छोड़ना)—**मुक्त** सिच् (सींचना)—**सिक्त**
मृ (मरना)—**मृत** स्मृ (याद करना)—**स्मृत**
भृ (भरना)—**भृत** हृ (हरना)—**हृत**।

सूचना—इन्हीं के साथ उपसर्ग लगकर कई और शब्द बन जाते हैं। जैसे **आसक्त, विरक्त, विध्वस्त, विकृत, संस्कृत, अधिकृत, विस्तृत, विगत, संगत, विश्रुत, प्रतिश्रुत, विहित, संयत, प्रमत्त परित्यक्त**, इत्यादि।

(९ क) इसी -**त** का किन्हीं शब्दों में श/ष के कारण -ट हो गया है। उदाहरण—

दृश् (देखना)—**दृष्ट** तुष् (प्रसन्न होना)—**तुष्ट**
भ्रंश् (छूटना)—**भ्रष्ट** प्रच्छ (पूछना)—**पृष्ट**
जुष् (जुठाना)—**जुष्ट** शिष् (छोड़ना)—**शिष्ट, अवशिष्ट**
कष् (कसना)—**कष्ट** शस् (शासन करना)—**शिष्ट**,
नश् (नाश होना)—**नष्ट** जैसे, शिष्ट पुरुष
दंश् (काटना)—**दष्ट** प्रविश् (भीतर जाना)—**प्रविष्ट**।

(९ ख) किन्हीं शब्दों में सघोष महाप्राणता के कारण -**त** का -**ध** हो गया है। जैसे—

दह् (जलाना)—**दग्ध** क्षुभ् (उद्विग्न होना)—**क्षुब्ध**
नह् (बाँधना)—**नद्ध** मुद् (मोहित होना)—**मुग्ध**
बन्ध् (बँधना)—**बद्ध** वृध् (बढ़ना)—**वृद्ध**
बुध् (समझना)—**बुद्ध**. व्यध् (चुभोना)—**विद्ध**
लभ् (पाना)—**लब्ध** शुध् (शोधना)—**शुद्ध**

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लुभ् (लोभ करना)—**लुब्ध** क्रुध् (क्रोध करना)—**क्रुद्ध**।

(९ ग) इसी -**त** का एक रूप -न है, जिसे निम्नलिखित शब्दों में देखा जा सकता है—

भञ्ज् (टूटना)—**भग्न** मज्ज् (डूबना)—**मग्न**
जृ (जर्जर होना)—**जीर्ण** रुज् (पीड़ा देना)—**रुग्ण**
क्षि (कम होना)—**क्षीण** ली (समाना)—**लीन**
छिद् (छेद करना)—**छिन्न** शृं (फटना)—**शीर्ण**
तृ (तैरना)—**तीर्ण** हा (छोड़ना)—**हीन**।

(९ घ) -**त** का -**इत** निम्नलिखित शब्दों में याद रखने की बात है—

कथ् (कहना)—**कथित** भाष् (बोलना)—**भाषित**
आयुज् (परिकल्पित करना)—**आयोजित** भूष (सजाना)—**भूषित**
कंप् (काँपना)—**कंपित** विद् (जानना)—**विदित**
जागृ (जगना)—**जागरित** रच् (बनाना)—**रचित**
ग्रह् (लेना)—**गृहीत** रक्ष् (रक्षा करना)—**रक्षित**
तृष् (प्यास लगना)—**तृषित** लक्ष् (देखना)—**लक्षित**
त्वर् (जल्दी करना)—**त्वरित** शंक् (शंका करना)—**शंकित**
पठ् (पढ़ना)—**पठित** शोष् (सुखाना)—**शोषित**
परीक्ष् (परखना)—**परीक्षित** हस् (हँसना)—**हसित**।

देखिए आगे प्रत्यय सं० १९ भी।

१०. -तव्य (संज्ञा और विशेषण बनाने के लिए)। संस्कृत में इनकी संख्या बहुत अधिक है, किन्तु हिन्दी में सीमित है। कविता की बात तो और ही है। उदाहरण—

कृ (करना)—**कर्तव्य** दा (देना)—**दातव्य**
गम् (जाना)—**गन्तव्य** भू (होना)—**भवितव्य**
ज्ञा (जानना)—**ज्ञातव्य** प्राप् (पाना)—**प्राप्तव्य**
दृश् (देखना)—**द्रष्टव्य** वच् (बोलना)—**वक्तव्य**।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

११. -ति (भाववाचक संज्ञा बनानेवाला प्रत्यय)। वास्तव में जो -त (पीछे देखें संख्या ९) और उसके साथियों से कृदन्त शब्द बने हैं, उन्हीं में -इ ह्रस्व लगता है। मिलान कीजिए--

कृ--**कृति**	दृश्--**दृष्टि**	री--**रीति**
ख्या--**ख्याति**	तुष्--**तुष्टि**	वि+आप्--**व्याप्ति**
गै--**गीति**	प्रविश्--**प्रविष्टि**	श्रु--**श्रुति**
जन्, जा--**जाति**	बुध्--**बुद्धि**	सं(सृ)--**संसृति**
तृप्--**तृप्ति**	लभ्--**लब्धि**	सृज्--**सृष्टि**
नी--**नीति**	वृध्--**वृद्धि**	स्मृ--**स्मृति**
भृ--**भृति**	जागृ--**जागृति**	स्तु--**स्तुति**
प्राप्--**प्राप्ति**	मुच्--**मुक्ति**	दीप्--**दीप्ति**
रम्--**रति**	प्री--**प्रीति**	स्था--**स्थिति**
वच्--**उक्ति**	विभू--**विभूति**	स्तु--**स्तुति**
शक्--**शक्ति**	मन्--**मति**	युज्--**युक्ति**।

१२. -तृ (ता) (कर्तृवाचक, करनेवाला के अर्थ में)। उदाहरण—

कृ (करना)--**कर्ता**	भृ (भरण-पोषण करना)--**भर्ता**
जि (जीतना)--**जेता**	भुज्, भोज् (खाना)--**भोक्ता**
दा (देना)--**दाता**	वच् (बोलना)--**वक्ता**
नी (ले जाना)--**नेता**	श्रु (सुनना)--**श्रोता**।

दृश् से **द्रष्टा**, सृज् से **स्रष्टा** में **ऋ** का **र** और **ता** के स्थान पर '**टा**' का ध्यान रहे।

टिप्पणी--यद्यपि हिन्दी में इस कोटि के शब्दों में -ता है, किन्तु संस्कृत में ये शब्द मूलतः **कर्तृ**, **दातृ**, **भर्तृ**, आदि हैं और इनके अन्त में **तृ** है। समासों और शब्द-निर्माण में तृ-रूप से काम चलता है। उदाहरण--

पितृभक्त, **मातृभाषा**; **कर्तृत्व**, **नेतृत्व**, **वक्तृत्व**; (स्त्रीलिंग) **कर्त्री**, **नेत्री**, **दात्री**, **धात्री** आदि।

१३. -त्र (करण या साधनवाची), जैसे--

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अस् (फेंकना)—**अस्त्र** वस् (लगाना)—**वस्त्र**
क्षि (रहना)—**क्षेत्र** शस् (मारना)—**शस्त्र**
दंश् (काटना)—**दंष्ट्र** शास् (सिखाना)—**शास्त्र**
नी (ले जाना)—**नेत्र** श्रु (सुनना)—**श्रोत्र**
पा (पीना)—**पात्र** स्तु (स्तुति करना)—**स्तोत्र**।

१४. -मान (विशेषण बनानेवाला)—ध्यान रहे कि क्रिया में लगनेवाले -मान का न हलन्त नहीं होगा। उदाहरण—

(क) सीधे लगता है—**पचमान** (पचता हुआ), **यजमान** (यज्ञ करता हुआ), **वर्धमान** (बढ़ता हुआ); **विराजमान**, **वर्तमान**।

(ख) -य विकरण के बाद—**जाज्वल्यमान** (चमकता हुआ), **दृश्यमान** (दिखाई देता हुआ); **देदीप्यमान**, **बोध्यमान**, **विद्यमान**।

१५. -य ('के योग्य' अर्थ में विशेषण बनानेवाला), जैसे **कार्य** (करने योग्य), **क्षम्य** (क्षमा करने योग्य), **क्रेय** (बेचने योग्य), **खाद्य** (खाने योग्य), **गम्य** (जाने योग्य), **ग्राह्य** (लेने योग्य), **गेय** (गाने योग्य), **चिन्त्य** (चिन्तन योग्य), **ज्ञेय** (जानने योग्य), **त्याज्य** (त्यागने योग्य)। इसी प्रकार—

दा (देना)—**देय** पठ् (पढ़ना)—**पाठ्य**
निन्द् (निन्दा करना)—**निन्द्य** वह् (उठाना)—**वाह्य**
पूज् (पूजा करना)—**पूज्य** श्रु (सुनना)—**श्रव्य**
भिद् (तोड़ना)—**भिद्य** सह् (सहना)—**सह्य**
वध् (मारना)—**वध्य** सेव् (सेवा करना)—**सेव्य**
वच् (बोलना)—**वाच्य** शक् (कर सकना)—**शक्य**।

१६. -सा ('की इच्छा' अर्थ में भाववाचक संज्ञा बनानेवाला)
कित् (चंगा करना)—**चिकित्सा** पा (पीना)—**पिपासा**
कृ (करना)—**चिकीर्षा** मन् (विचार करना)—**मीमांसा**
ज्ञा (जानना)—**जिज्ञासा** लल् (चाहना)—**लालसा**
तिज् (सहना)—**तितिक्षा** लभ् (पाना)—**लिप्सा**

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भुज् (खाना)—**बुभुक्षा** युध् (लड़ना)—**युयुत्सा।**

ख. तद्धित प्रत्यय

टिप्पणी—फिर याद दिला दिया जाय कि तद्धित प्रत्यय क्रिया से भिन्न शब्दों में लगते हैं।

१७. -अ (भाववाचक संज्ञा बनानेवाला)—सदा मूल शब्द के स्वर में वृद्धि करके जुड़ता है। इसकी दो कोटियाँ हैं—

(१) विशेषण के साथ—

कुशल—**कौशल**	मृदु—**मार्दव**	लघु—**लाघव**
गुरु—**गौरव**	युवन्—**यौवन**	मध्यम—**माध्यम**
पटु—**पाटव**	मुनि—**मौन**	शुचि—**शौच।**

(२) संज्ञा के साथ

पुरुष—**पौरुष**	करण—**कारण**
देव—**दैव**	शिशु—**शैशव।**

१८. -इक (संज्ञा से विशेषण बनानेवाला)—बहुत महत्त्वपूर्ण प्रत्यय है। कुछ इने-गिने शब्दों को छोड़कर (जो शायद भूल-भूल में ही प्रचलित हो गये हैं), मूल के स्वर में वृद्धि होती है।

उदाहरण—

अध्यात्म—**आध्यात्मिक**	पितृ—**पैतृक**
अन्तर—**आन्तरिक**	पुराण—**पौराणिक**
अर्थ—**आर्थिक**	प्रकृति—**प्राकृतिक**
इच्छा—**ऐच्छिक**	प्रदेश—**प्रादेशिक**
त्रिकाल—**त्रैकालिक**	प्रारंभ—**प्रारंभिक**
निसर्ग—**नैसर्गिक**	भूगोल—**भौगोलिक**
नीति—**नैतिक**	मनस्—**मानसिक**
पक्ष—**पाक्षिक**	सुख—**सौखिक**
परिवार—**पारिवारिक**	मूल—**मौलिक**

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

परस्पर--**पारस्परिक** | लोक--**लौकिक**
प्रथम--**प्राथमिक** | वस्तु--**वास्तविक**।

वृद्धि रहित--**क्षणिक चमत्कारिक**।

१९. -इत (विशेषण बनानेवाला) देखिए ९घ भी--वे कृदन्त शब्द थे, अब उसी रूप में तद्धितांत शब्द लीजिए--

कंटक--**कंटकित** | कलंक--**कलंकित**
अंकुर--**अंकुरित** | खण्ड--**खण्डित**
कुसुम--**कुसुमित** | तरंग--**तरंगित**
तारांक--**तारांकित** | पुष्प--**पुष्पित**
निद्रा--**निद्रित** | प्रतिबिम्ब--**प्रतिबिम्बित**
पल्लव--**पल्लवित** | फल--**फलित**
पुलक--**पुलकित** | संबंध--**संबंधित**।

२०. -इमा (विशेषण से भाववाचक संज्ञा बनानेवाला)। उदाहरण--

गुरु--**गरिमा** | मधुर--**मधुरिमा**
दीर्घ--**द्राघिमा** | महा--**महिमा**
दृढ--**द्रढिमा** | रक्त--**रक्तिमा**
नील--**नीलिमा** | लघु--**लघिमा**
बंक--**बंकिमा** | शुक्ल--**शुक्लिमा**।

लोगों ने लाल से लालिमा (लाली) भी बना लिया है।

२१. -इन् (ई) (संज्ञा से 'वाला' अर्थ में संज्ञा तथा विशेषण बनानेवाला)--देखिए पीछे ८ भी। उदाहरण--

अनुभव--**अनुभवी** | प्रहर--**प्रहरी**
उपयोग--**उपयोगी** | लोभ--**लोभी**
काम--**कामी** | वसन्त--**वसंती**
भोग--**भोगी** | विराग--**विरागी**
योग--**योगी** | विरोध--**विरोधी**
कर्म--**कर्मी** | विषय--**विषयी**

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

धर्म—**धर्मी**	शास्त्र—**शास्त्री**
	हल—**हली**।

२२. -ईन (संज्ञा से विशेषण बनानेवाला)। उदाहरण—

कुल—**कुलीन**	नव—**नवीन**
ग्राम—**ग्रामीण**	प्राच्—**प्राचीन**
अधः—**अधीन**	अर्वाच्—**अर्वाचीन**।

२३. -ईय (संज्ञा से विशेषण बनानेवाला)। देखिए प्रत्यय सं० ५ भी। उदाहरण—

प्रांत—**प्रांतीय**	राष्ट्र—**राष्ट्रीय**
प्रदेश—**प्रदेशीय**	भवद्—**भवदीय**
भारत—**भारतीय**	स्वर्ग—**स्वर्गीय**
देश—**देशीय**	नगर—**नगरीय**
मंडल—**मंडलीय**	राज्य—**राजकीय**।

२४. -तः अथवा -तया (संज्ञा अथवा विशेषण से क्रियाविशेषण बनाने के लिए)। उदाहरण—

अंश—**अंशतः, अंशतया**	उदाहरण—**उदाहरणतः**
प्रत्यक्ष—**प्रत्यक्षतः**	मूल—**मूलतः**
प्रथम—**प्रथमतः**	विशेष—**विशेषतः, विशेषतया**
फल—**फलतः**	व्यवहार—**व्यवहारतः**।

२५. -मय (संज्ञा से विशेषण बनानेवाला प्रत्यय)। उदाहरण—

आनंद—**आनंदमय**	प्रेम—**प्रेममय**
जल—**जलमय**	मधु—**मधुमय**
ज्योतिः—**ज्योतिर्मय**	मंगल—**मंगलमय**
तेजः—**तेजोमय**	दया—**दयामय**
गद्य—**गद्यमय**	शांति—**शांतिमय**।
पद्य—**पद्यमय**	

तेजः और **ज्योतिः** और इसी तरह **मनः**, **तपः** आदि के विसर्ग का

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ध्यान रहे। विसर्ग के सन्धि में भिन्न-भिन्न रूप हो जायँगे।

२६. -ता (भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण) (क) संज्ञा से थोड़े-से शब्द—**कविता, जनता, दासता, पशुता, मानवता, मनुष्यता, शत्रुता, शिशुता।**

(ख) विशेषणों से सैकड़ों शब्द हैं। उदाहरण—

अग्रता	गहनता	नवीनता	रसिकता
अधिकता	कृतघ्नता	नागरिकता	राष्ट्रीयता
अनुकूलता	कुशलता	नम्रता	लघुता
अशिष्टता	धीरता	निर्लज्जता	विशेषता
आवश्यकता	जड़ता	प्रधानता	विभिन्नता
आत्मीयता	चंचलता	पत्रकारिता	शीघ्रता
उपयोगिता	जटिलता	प्राचीनता	शुद्धता
उदारता	दुर्बलता	भयंकरता	स्तब्धता
एकता	दरिद्रता	भारतीयता	शूरता
कृतज्ञता	धूर्तता	मधुरता	सुन्दरता
कुटिलता	निश्चितता	मूर्खता	स्थिरता
गंभीरता	तत्परता	योग्यता	सहकारिता।

२७. -त्व (भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए)। उदाहरण—

(क) संज्ञा से—**दासत्व, भ्रातृत्व, पुरुषत्व, बन्धुत्व, ब्राह्मणत्व, मातृत्व, मनुष्यत्व, कृतित्व, पशुत्व, मंत्रित्व, प्रतिनिधित्व।**

(ख) विशेषण से—**एकत्व, निजत्व, नित्यत्व, बहुत्व, लघुत्व, स्थायित्व।**

२८. -य (विशेषण से भाववाचक संज्ञा बनानेवाला)—इसमें पहले स्वर की वृद्धि (आ, ऐ, औ) हो जाती है। उदाहरण—

अधिक—**आधिक्य**	दुर्बल—**दौर्बल्य**	विचित्र—**वैचित्र्य**
अनुकूल—**आनुकूल्य**	धीर—**धैर्य**	शूर—**शौर्य**
उचित—**औचित्य**	प्रधान—**प्राधान्य**	सम—**साम्य**

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गंभीर—**गाम्भीर्य**	मधुर—**माधुर्य**	सुजन—**सौजन्य**
जड—**जाड्य**	विशिष्ट—**वैशिष्ट्य**	स्वस्थ—**स्वास्थ्य।**

२९. -मान् अथवा -वान् (संज्ञा से विशेषण बनाने के लिए)—शब्द के अन्त में अ, आ हो तो **-मान्** नहीं लगता, **-वान्** लगता है। संज्ञा से विशेषण बनानेवाले इस प्रत्यय का न् हलन्त है। तुलना कीजिए **-मान** (संख्या १४) से। उदाहरण—

आयुः—**आयुष्मान्**	शक्ति—**शक्तिमान्**
बुद्धि—**बुद्धिमान्**	श्री—**श्रीमान्**
ज्योतिः—**ज्योतिष्मान**	हनु—**हनुमान्**
गुण—**गुणवान्**	विद्या—**विद्यावान्** (**विद्वान्** भी)
धन—**धनवान्**	दया—**दयावान्**
बल—**बलवान्**	महिमा—**महिमावान्**
मूल्य—**मूल्यवान्**	श्रद्धा—**श्रद्धावान्।**

३०. -य (संज्ञा से विशेषण बनानेवाला—तुलना कीजिए संख्या १५ से)। यह -य संज्ञा के अन्तिम व्यंजन से संयुक्त हो जाता है। उदाहरण—

अन्त—**अन्त्य**	सभा—**सभ्य**
ग्राम—**ग्राम्य**	योग—**योग्य**
धन—**धन्य**	रहस्—**रहस्य**
दन्त—**दन्त्य**	मुख—**मुख्य।**

स्त्री-प्रत्यय

पुंल्लिग से स्त्रीलिंग बनाने के लिए जिन प्रत्ययों का प्रयोग होता है, उन्हें **स्त्रीप्रत्यय** कहते हैं। संस्कृत में निम्नलिखित स्त्रीप्रत्यय हैं—

३१. -आ, जैसे

बाल—**बाला**	वृद्ध—**वृद्धा**
प्रिय—**प्रिया**	वैश्य—**वैश्या**
महोदय—**महोदया**	शूद्र—**शूद्रा**

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पंडित—**पंडिता** शिव—**शिवा**
मृत—**मृता** शिक्षित—**शिक्षिता**
त्यक्त—**त्यक्ता** सुशील—**सुशीला।**

३१ क. जिन पुल्लिंग शब्दों के अन्त में -अक प्रत्यय होता है—देखिए संख्या ३—वहाँ पूरे -अक का -इका हो जाता है। जैसे—

अध्यापक—**अध्यापिका** उपदेशक—**उपदेशिका**
गायक—**गायिका** लेखक—**लेखिका**
पाठक—**पाठिका** शिक्षक—**शिक्षिका**
बालक—**बालिका** प्रचारक—**प्रचारिका**
याचक—**याचिका** नायक—**नायिका।**

३२. -ई, उदाहरण

(क) संस्कृत के मूल व्यजनांत शब्दों में, जैसे—

युवा—मूल युवन्—**युवती** विद्वान्—विद्वस्—**विदुषी**
महान्—मूल महत्—**महती** श्रीमत्—**श्रीमती**
भगवान्—भगवत्—**भगवती** स्वामी—स्वामिन्—**स्वामिनी**
मानी—मानिन्—**मानिनी** हितकारी—हितकारिन्—**हितकारिणी**

इसी तरह गामी से **गामिनी,** धारी से **धारिणी**, कारी से **कारिणी** -,**मान्**, -**वान्** प्रत्ययों के स्थान पर क्रमशः **मती, वती** हो जाता है। देखिए सं० २८।

आयुष्मान्—**आयुष्मती** बलवान्—**बलवती**
बुद्धिमान्—**बुद्धिमती** गुणवान्—**गुणवती**
शक्तिमान्—**शक्तिमती** दयावान्—**दयावती**
श्रीमान्—**श्रीमती** विद्यावान्—**विद्यावती।**

(ख) अकारांत संज्ञाओं के साथ, जैसे—

किशोर—**किशोरी** पितामह—**पितामही**
कुमार—**कुमारी** पुत्र—**पुत्री**

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गौर—**गौरी** नद—**नदी**

तरुण—**तरुणी** ब्राह्मण—**ब्राह्मणी**

नर्तक—**नर्तकी** सुंदर—**सुंदरी**

दास—**दासी** प्रदर्शन—**प्रदर्शनी**।

(ग) ऋकारान्त (दे० संख्या १२) शब्दों के ऋ का र होकर -ई प्रत्यय लगता है। जैसे—

अध्येता—अध्येतृ—**अध्येत्री** विधाता—विधातृ—**विधात्री**

कर्ता—कर्तृ—**कर्त्री** भर्ता—भर्तृ—**भर्त्री**

कवयिता—कवयितृ—**कवयित्री** धाता—धातृ—**धात्री**

दाता—दातृ—**दात्री** जनयिता—जनयितृ—**जनयित्री**

नेता—नेतृ—**नेत्री** हर्ता—हर्तृ—**हर्त्री**।

३३. -आनी। कुछ तो देवताओं के नामों के साथ और कुछ ऐसे शब्दों के साथ जिनके दो-दो स्त्रीलिंग रूप बनते हैं, -आनी प्रत्यय लगता है। जैसे—

भव—**भवानी** उपाध्याय—**उपाध्यायी, उपाध्यायानी**

रुद्र—**रुद्राणी** मातुल—**मातुली, मातुलानी**

इन्द्र—**इन्द्राणी** आचार्य—**आचार्या, आचार्याणी**

वरुण—**वरुणानी** मन्त्री—**मन्त्री, मन्त्राणी**

शर्व—**शर्वाणी** क्षत्रिय—**क्षत्रिया, क्षत्रियाणी**।

हिन्दी प्रत्यय

प्रसंग स्त्रीप्रत्ययों का चल रहा था, इसलिए पहले हिन्दी के स्त्रीप्रत्यय ही ले लें। संस्कृत के **-ई** और **-आनी** प्रत्यय हिन्दी के अपने शब्दों में भी चलते हैं।

३४. -ई (क) पुल्लिग, आकारान्त शब्द का -आ हटाकर; जैसे—

काका—**काकी** घोड़ा—**घोड़ी**

लड़का—**लड़की** चींटा—**चींटी**

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चाचा—**चाची**
दादा-**दादी**
मामा—**मामी**
बकरा—**बकरी**
बेटा—**बेटी**
मौसा—**मौसी**
चेला—**चेली**
गधा—**गधी**
पुतला—**पुतली**
नाना—**नानी**
साला—**साली**।

(ख) कुछ अकारान्त जीव-जन्तुओं के नामों के बाद

कबूतर—**कबूतरी**
कूकर—**कूकरी**
गीदड़—**गीदड़ी**
तीतर—**तीतरी**
लोमड़—**लोमड़ी**
मेढक—**मेढकी**
हिरन—**हिरनी**।

३५. -इया (क) निरादर या प्रेम में, बोलियों से आया है—

कुत्ता—**कुतिया**
चूहा—**चुहिया**
बच्छा—**बछिया**
बंदर—**बंदरिया**
बेटा—**बिटिया**
बूढ़ा—**बुढ़िया**
चिड़ा—**चिड़िया**।

(ख) छोटाई या लघुता बताने के लिए स्त्रीलिंग—

गगरा—**गगरिया**
डिब्बा—**डिबिया**
फोड़ा—**फुड़िया**
लठ—**लठिया**
लोटा—**लुटिया**
पुड़ा—**पुड़िया**।

कुछ-एक के दो-दो रूप प्रचलित हैं **लाठी, लठिया; बेटी, बिटिया; बंदरी, बंदरिया; गगरी, गगरिया; डिब्बी, डिबिया;** इत्यादि। -ई भी लघुवाचक प्रत्यय है, जैसे **घंटी, रस्सी, टोकरी, पहाड़ी, डोरी, थाली, नाली, प्याली,** आदि में।

३६. **-नी**, जानवरों के नामों के साथ—

ऊँट—**ऊँटनी**
बाघ—**बाघनी**
रीछ—**रीछनी**
शेर—**शेरनी**

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मोर—**मोरनी**

स्यार—**स्यारन**

हाथी—**हथिनी** ।

३७. -आनी, जैसे—

खत्री—**खत्रानी**

जेठ—**जेठानी**

देवर—**देवरानी**

चौधरी—**चौधरानी**

नौकर—**नौकरानी**

मेहतर—**मेहतरानी**

राजपूत—**राजपूतानी**

सेठ—**सेठानी** ।

३८. -इन (प्रायः पेशेवर लोगों के नाम के साथ)। उदाहरण—

अहीर—**अहीरिन**

कुँजड़ा—**कुँजड़िन**

ग्वाला—**ग्वालिन**

कसेरा—**कसेरिन**

चमार—**चमारिन**

जुलाहा—**जुलाहिन**

कलवार—**कलवारिन**

तंबोली—**तंबोलिन**

तेली—**तेलिन**

दर्ज़ी—**दर्ज़िन**

नाई—**नाइन**

धोबी—**धोबिन**

लुहार—**लुहारिन**

सुनार—**सुनारिन** ।

कुछ प्राणिवाचक शब्द भी इस वर्ग में आते हैं, जैसे बाघ से **बाघिन**, साँप से **साँपिन** ।

नाती से **नातिन**, और मालिक से **मालकिन** भी उल्लेखनीय हैं ।

३९. -आइन (जाति-नामों या उपनामोंके साथ); वास्तव में यह **-आ** सं० ३१, और **-इन** सं० ३८ के योग से दोहरा प्रत्यय बना है)। उदाहरण—

ओझा—**ओझाइन**

चौबे—**चौबाइन**

ठाकुर—**ठकुराइन**

तिवारी—**तिवराइन**

दुबे—**दुबाइन**

पांडे—**पँडाइन**

पाठक—**पठकाइन**

पंडित—**पंडिताइन**

बाबू—**बबुआइन**

बनिया—**बनियाइन**

मिश्र—**मिश्राइन**

लाला—**ललाइन**

मुंशी—**मुंशिआइन** ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हिन्दी के अन्य तद्धित प्रत्यय

४०. आ

(क) संज्ञा से विशेषण बनाने के लिए। उदाहरण—

गेरु—**गेरुआ** प्यार—**प्यारा**
चौतरफ़—**चौतरफ़ा** भूख—**भूखा**
खार—**खारा** प्यास—**प्यासा**
ठंड—**ठंडा** मैल—**मैला**।

(ख) साधारण संज्ञा से भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए। जैसे—

जोड़—**जोड़ा** धड़क—**धड़का**
चूर—**चूरा** बज़ाज़—**बज़ाज़ा**
खटक—**खटका** बोझ—**बोझा**
झोंक—**झोंका** सर्राफ़—**सर्राफ़ा**।

४१. -आई (विशेषण से भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए)। उदाहरण—

चतुर—**चतुराई** भला—**भलाई**
चिकना—**चिकनाई** बुरा—**बुराई**
ढीठ—**ढिठाई** महँगा—**महँगाई**
पंडित—**पंडिताई** विदा—**विदाई**।

४२. **-आवट** या **-आहट** (भाववाचक संज्ञा बनानेवाला प्रत्यय)। उदाहरण—

आम—**अमावट** मघा—**महावट**
कड़आ—**कड़ुआहट** चिकना—**चिकनाहट**।

४३. -इया (क) कर्तृवाचक, करनेवाला अर्थमें, संज्ञा बनाने के लिए। जैसे—

आढ़त—**आढ़तिया** मक्खन—**मखनिया**
गाडर—**गड़रिया** रस—**रसिया**

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बखेड़ा—**बखेड़िया** रसोई—**रसोइया**।

(ख) किसी स्थान से सम्बद्ध अर्थ में विशेषण बनाने के लिए। जैसे—

कन्नौज—**कन्नौजिया** असम—**असमिया**

कलकत्ता—**कलकतिया** मथुरा—**मथुरिया**

भोजपुरी—**भोजपुरिया** रामगढ़—**रामगढ़िया**।

लघुतावाचक -इया के उदाहरण देखिए सं० ३५ ख।

४४. -ई (संज्ञा या विशेषण से भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए)। उदाहरण—

अगाड़—**अगाड़ी** चोर—**चोरी**

कुर्क—**कुर्की** डाक्टर—**डाक्टरी**

किसान—**किसानी** महाजन—**महाजनी**

गहरा—**गहराई** दलाल—**दलाली**

खेत—**खेती** सवार—**सवारी**

गुंडा—**गुंडई** सावधान—**सावधानी**।

ऐसे सैकड़ों शब्द हैं।

४५. -ईला (संज्ञा से विशेषण बनाने के लिए)। उदाहरण—

छबि—**छबीला** पानी—**पनीला**

जहर—**ज़हरीला** पत्थर—**पथरीला**

तोंद—**तोंदीला** महक—**महकीला**

दाँत—**दँतीला** लच—**लचीला**

नोक—**नुकीला** लाज—**लजीला**

नशा—**नशीला** रेत—**रेतीला**

बर्फ़—**बर्फ़ीला** रस—**रसीला**।

४६. -पन (संज्ञा अथवा विशेषण से भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए) उदाहरण—

अक्खड़—**अक्खड़पन** बाल—**बालपन**

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ओछा—**ओछापन**
छोटा—**छुटपन**
टेढ़ा—**टेढ़ापन**
ढीला—**ढीलापन**
नीला—**नीलापन**
पंडिताऊ—**पंडिताऊपन**
पागल—**पागलपन**
बच्चा—**बचपन**
लड़का—**लड़कपन**
लँगड़ा—**लँगड़ापन**
बाँका—**बाँकपन**
लुटेरा—**लुटेरापन**
मैला—**मैलापन**
विधवा—**विधवापन**।

४७. -पा (**पन** का ही दूसरा रूप)। उदाहरण—

बहन—**बहनापा**
बूढ़ा—**बुढ़ापा**
रंडी—**रँडापा**
मोटा—**मुटापा**।

४८. -वाला (कर्तृवाचक संज्ञा बनाने के लिए)। जैसे—**टोपीवाला, धनवाला, गाड़ीवाला, बर्फ़वाला, शरबतवाला**।

हिन्दी कृत् प्रत्यय

याद रहे कि कृदन्त शब्द क्रियाओं से बनते हैं—

४९. (क) -अ (भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए)। जैसे—

खेल(ना)—**खेल**
चमक(ना)—**चमक**
जाँच(ना)—**जाँच**
झाड़(ना)—**झाड़**
उछल(ना)—**उछल**
टूट(ना)—**टूटफूट**
पहुँच(ना)—**पहुँच**
मार(ना)—**मार**
रोक(ना)—**रोक**
लटक(ना)—**लटक**
लूट(ना)—**लूट**
सेंक(ना)—**सेंक**
समझ(ना)—**समझ**
हार(ना)—**हार**।

(ख) समास में कर्तृवाचक जैसे— **-मार (सेंधमार, चिड़ीमार, पाकिटमार, लट्ठमार); -चूस (मक्खीचूस, स्याहीचूस); -तोड़ (मुँहतोड़, सिरतोड़)**।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

५०. -आ (कई अर्थों में प्रयुक्त होता है)।

(क) भाववाचक, जैसे—

घेर(ना)—**घेरा**
छाप(ना)—**छापा**
फेर(ना)—**फेरा**
रगड़ (ना)—**रगड़ा**
झगड(ना)—**झगड़ा**
झटक(ना)—**झटका**
लपेट(ना)—**लपेटा**।

(ख) समास में कर्तृवाचक संज्ञा, जैसे—

चढ़ा (नकचढ़ा, घुड़चढ़ा, सिरचढ़ा)
बोला (मिठबोला, बड़बोला)
ऐसे ही **कठफोड़ा, भड़भूँजा, गँठकटा** में।

(ग) विशेषण, जैसे—

मरा, पड़ा, धोया, बना-बनाया, बैठा, सोया।

(घ) करणवाचक संज्ञा, जैसे

झूल(ना)—**झूला**
झाड़(ना)—**झाड़ा**
ठेल(ना)—**ठेला**
पोत(ना)—**पोता**
फाँस(ना)—**फाँसा**।

५१. -आई (कार्य तथा दाम का बोध करानेवाली भाववाचक संज्ञाएँ) जैसे **रंग(ना)** से **रंगाई** (रंगने का काम, रंगने के दाम)। अन्य उदाहरण—

चर(ना)—**चराई**
खिला(ना)—**खिलाई**
जुता(ना)—**जुताई**
पढ़ा(ना)—**पढ़ाई**
धुला(ना)—**धुलाई**
पिसा (ना)—**पिसाई**
बनवा(ना)—**बनवाई**
लिखा(ना)—**लिखाई**।

खुदाई, दिखाई, चढ़ाई, लड़ाई, सुनाई, समाई आदि में केवल भाव है, दाम का अर्थ नहीं है।

५२. -आऊ (विशेषण बनाने के लिए), जैसे—

जला(ना)—**जलाऊ**
टिका(ना)—**टिकाऊ**

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चला (ना)—**चलाऊ**
दिखा (ना)—**दिखाऊ**
बिक (ना)—**बिकाऊ**
लाद (ना)—**लदाऊ**।

(देखिए आगे -ऊ सं० ५९ भी)।

५३. -अन (भाववाचक स्त्रीलिंग संज्ञा बनानेवाला)। उदाहरण—

ऐंठ (ना)—**ऐंठन**
गढ़ (ना)—**गढ़न**
लग (ना)—**लगन**
जल (ना)—**जलन**
रट (ना)—**रटन**
चुभ (ना)—**चुभन**
लटक (ना)—**लटकन**
दे (ना)—**देन**
सड़ (ना)—**सड़न**।

चलन पुल्लिग है। कतरन, छीजन, छीलन, झाड़न, फटकन, बटोरन आदि अब पदार्थों के नाम हो गये हैं।

५४. -आन (**-अन** का साथी प्रत्यय)।

उड़ (ना)—**उड़ान**
थक (ना)—**थकान**
उठ (ना)—**उठान**
मिला (ना) **मिलान** (पुं०)
चल (ना)—**चलान** (पुं०)
मुस्का (ना)—**मुस्कान**
ढल (ना)—**ढलान**
लगा (ना)—**लगान**।

५५. -आव (ा) (भाववाचक पुल्लिग संज्ञा बनानेवाला), जैसे—

घेर (ना)—**घिराव**
कट (ना)—**कटाव**
घूम (ना)—**घुमाव**
चल (ना)—**चलावा**
चढ़ (ना)—**चढ़ाव**
छल (ना)—**छलावा**
चुन (ना)—**चुनाव**
छक (ना)—**छकाव**
छिप (ना)—**छिपाव**
छुड़ा (ना)—**छुड़ावा**
जम (ना)—**जमाव**
पछता (ना)—**पछतावा**
पड़ (ना)—**पड़ाव**
बहका (ना)—**बहकावा**
बन (ना)—**बनाव**
पहिरा (ना)—**पहिरावा**
बच (ना)—**बचाव**
बुला (ना)—**बुलावा**
लग (ना)—**लगाव**
भुला (ना)—**भुलावा**

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बह(ना)—**बहाव** बढ़ा(ना)—**बढ़ावा**।

५६. -आवट या -आहट (भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए)।

उदाहरण—

थक(ना)—**थकावट**
दिखा(ना)—**दिखावट**
बन(ना)—**बनावट**
मिल(ना)—**मिलावट**
रुक(ना)—**रुकावट**
लिख(ना)—**लिखावट**
सज(ना)—**सजावट**
गड़गड़ा(ना)—**गड़गड़ाहट**
आसा—**आहट**
घबरा(ना)—**घबराहट**
चिल्ला(ना)—**चिल्लाहट**
जगमगा(ना)—**जगमगाहट**
बौखला(ना)—**बौखलाहट**
लड़खड़ा(ना)—**लड़खडाहट**

-आहट अनुकरणात्मक या ध्वनिबोधक शब्दों में जुड़ता है।

५७. -इया (क) कर्तृवाचक संज्ञा। उदाहरण—

जड़(ना)—**जड़िया**
धुन(ना)—**धुनिया**
नियार(ना)—**नियारिया**
नाच(ना)—**नचइया**
गा(ना)—**गवइया**
लख(ना)—**लखिया**।

(ख) दो-तीन शब्द विशेषण बन गये हैं—

घट(ना)—**घटिया** बढ़(ना)—**बढ़िया**।

देखिए लघुतावाची तद्धितान्त शब्द भी—सं० ४३।

५८ -ई (क)—भाववाचक संज्ञा, जैसे

घुड़क(ना)—**घुड़की**
धमका(ना)—**धमकी**
बोल(ना)—**बोली**
मर(ना)—**मरी**
लग(ना)—**लगी**
हँस(ना)—**हँसी**।

(ख) करणवाचक संज्ञा, जैसे

चिमट(ना)—**चिमटी**
गाँस(ना)—**गाँसी**
टाँक(ना)—**टाँकी**
फाँस(ना)—**फाँसी**
रेत(ना)—**रेती**।

देखिए ५० घ भी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

५६. -ऊ (कर्तृवाचक संज्ञा तथा विशेषण)। उदाहरण—

उतार(ना)—**उतारू**
काट(ना)—**काटू**
खा(ना)—**खाऊ**
चल(ना)—**चालू**
बिगाड़(ना)—**बिगाड़ू**
मार(ना)—**मारू**
रट(ना)—**रट्टू**
लग(ना)—**लग्गू**।

देखिए **-आऊ** सं० ५२ भी। वास्तव में दोनों एक हैं।

६०. -ना, नी (पुल्लिग-स्त्रीलिंग के भेद से। अनेक अर्थ)

(क) क्रियार्थक संज्ञा—**आना, जाना, खाना, पीना, लेना, देना, कहना, सुनना, पढ़ना, लिखना, उठना, सोना, जागना**—सैकड़ों शब्द जिन्हें हम क्रिया कहते हैं।

(ख) करणवाचक संज्ञा —**ओढ़ना, घोटना, बेलना**
—**ओढ़नी, कतरनी, धौंकनी, लेखनी, सुमरनी**

(ग) भाववाचक संज्ञा —**करनी, कटनी, बोनी, भरनी।**

(घ) विशेषण—**रोना** (मुँह), **लदना** (बैल), **हँसना** (आदमी)।

६१. -वाला (कर्तृवाचक संज्ञा)। उदाहरण—

आनेवाला, जानेवाला, खानेवाला, सोनेवाला, जागनेवाला, इत्यादि सैकड़ों शब्द हैं।

विदेशी (ारसी) प्रत्यय

विदेशी भाषाओं में से केवल अरबी-फ़ारसी के कुछ प्रत्यय हिन्दी में ग्रहण किये गये हैं, जिनका प्रयोग हिन्दी शब्दों के साथ भी होता है, किन्तु अब यह प्रवृत्ति समाप्तप्राय है। निम्नलिखित प्रत्यय उल्लेखनीय हैं—

६२. -ख़ाना (घर) स्थानवाची तद्धितान्त संज्ञाएँ—

कैदख़ाना	**तहख़ाना**	**बैठकख़ाना**
गाड़ीख़ाना	**तोपख़ाना**	**मुर्गीख़ाना**
ग़ुसलख़ाना	**दवाख़ाना**	**बढ़ईख़ाना**

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चिड़ियाख़ाना	चंडूख़ाना	मोटरख़ाना
छापाख़ाना	पागलख़ाना	मुसाफ़िरख़ाना
ढलाईख़ाना	बावरचीख़ाना	यतीमख़ाना
डाकख़ाना	दवाख़ाना	लुहारख़ाना।

६३. -ख़ोर (खानेवाला), संज्ञा तथा विशेषण—

घूसख़ोर	ग़ोताख़ोर	रिश्वतख़ोर
नमकख़ोर	चुगलख़ोर	शकरख़ोर
नशाख़ोर	मुनाफ़ाख़ोर	सूदख़ोर
ब्याजख़ोर	मैलख़ोर	हरामख़ोर।

६४. -ची (कर्तृवाचक, करनेवाला)

ख़ज़ाना—ख़ज़ानची	नक़ल—नक़लची
गुलेल—गुलेलची	मिडिल—मिडिलची
ढँढोरा—ढँढोरची	बन्दूक—बन्दूकची
तोप—तोपची	मशाल—मशालची।

६५. -दान

(क) विशेषण (जाननेवाला)

अंग्रेज़ीदान	फ़ारसीदान
उर्दूदान	नादान
कानूनदान	राज़दान।

(ख) रखने की चीज़—संज्ञा। -दानी (स्त्रीलिंग)

उगालदान	इत्रदान	पाव/पायदान
कलमदान	नमकदानी	पानदान
गोंददानी	नासदानी	राखदानी
चायदानी		सिंगारदान

६६. -दार (संज्ञा तथा विशेषण—रखनेवाला)—

कमानीदार	ज़िम्मेदार	पायदार
किनारेदार	जोड़दार	फलदार

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गुठलीदार	झाड़ीदार	भड़कदार
छल्लेदार	झालरदार	मालदार
चूड़ीदार	दानेदार	लचकदार
चक्करदार	धुएँदार	हवादार ।

६७. -बंद (बाँधे हुए)—संज्ञा तथा विशेषण। **-बंदी** से भाववाचक संज्ञा।

कमरबंद	तुकबंदी	नज़रबंद	मोहरबंद
नाकेबंदी	तख़्ताबंदी	नालबंद	मेड़बंदी
जत्थेबंदी	दलबंदी	नसबंदी	क़िलाबंदी
चकबंदी	घड़ाबंदी	बिस्तरबंद	हथियारबंद।

६८. -बाज़ (खेलनेवाला); -बाज़ी (खेल)

घूंसेबाज़	गपबाज़ी	ढोंगबाज़ी	तिड़ीबाज़
चंडूबाज़	अकड़बाज़	लफंगबाज़ी	लट्ठबाज़
चालबाज़	अखाड़ेबाज़	नख़रेबाज़	सौदाबाज़ी ।

६९. -वार (क्रम—विशेषण तथा क्रियाविशेषण)—

कक्षावार	तारीख़वार	ब्योरेवार
उम्मीदवार	तरतीबवार	सिलसिलेवार
कसूरवार	भाषावार	हफ़्तेवार

इनसे भाववाचक उम्मीदवारी, हफ़्तेवारी, इत्यादि

७०. -साज़ (बनानेवाला); -साज़ी (भाववाचक संज्ञा)

कानूनसाज़	घड़ीसाज़	पन्नीसाज़
जालसाज़	दुनियासाज़	रंगसाज़ ।
जिल्दसाज़	दवासाज़	

विशेष टिप्पणियाँ

१. एक शब्द के साथ एक से अधिक प्रत्यय वही जुड़ सकते हैं जो भिन्न-भिन्न प्रकार के पदों का निर्माण करते हैं। दोनों प्रत्यय भाववाचक संज्ञा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बनानेवाले नहीं हो सकते; जैसे दास से दास्य ठीक है, दासता भी ठीक है, दास्यता नहीं। इसी तरह उदार से उदारता और औदार्य तो ठीक है, किन्तु औदार्यता नहीं। बहुत से बहुलता और बाहुल्य हो सकते हैं, बाहुल्यता नहीं।

दो विशेषण बनाने वाले प्रत्यय, दो कर्तृ वाचक प्रत्यय, दो क्रियाविशेषण बनानेवाले प्रत्यय एक-साथ नहीं आ सकते। आवश्यक (आवश्यकीय नहीं), निराश (निराशापूर्ण नहीं)।

पूज्य ठीक है, पूजनीय भी ठीक है, पूज्यनीय अशुद्ध है। अधीन के बाद फिर -स्थ लगकर अधीनस्थ नहीं हो सकता।

२. संस्कृत के प्रत्यय हिन्दी में और हिन्दी के प्रत्यय संस्कृत शब्दों में नहीं लगाने चाहिए।

अभ्यास

१. यौगिक शब्द किन्हें कहते हैं? यौगिक शब्दों के निर्माण में कौन-कौन तत्त्व सहायक होते हैं? प्रत्येक के दो उदाहरण दो।

२. संधि किसे कहते हैं? सन्धि के भेद बताकर दो-दो उदाहरण लिखो।

३. 'समास' से क्या तात्पर्य है? समास के भेद बताकर दो-दो उदाहरण दो।

४. सन्धि और समास का अन्तर उदाहरण देकर स्पष्ट करो।

५. 'उपसर्ग' और 'प्रत्यय' में क्या अन्तर है? उदाहरण देकर समझाओ।

६. कृदन्त और तद्धितान्त शब्दों में क्या अन्तर है? पाँच-पाँच उदाहरण दो।

७. हिन्दी और संस्कृत के स्त्री-प्रत्ययों का परिचय प्रत्येक के तीन-तीन उदाहरण देकर स्पष्ट करो।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

८. निम्नलिखित में सन्धिविच्छेद करो—

शिवालय, विद्यार्थी, राजर्षि, सदैव, पित्रादेश, चयन, दिग्गज, दिगम्बर, जगन्नाथ, इत्यादि, पावक, बृहट्टीका, आच्छादन, निश्चय, नीरोग, निर्लज्ज, सच्छास्त्र।

९. निम्नलिखित में सन्धि करो—

भानु उदय, उत् चारण, गिरि ईश, गंगा उर्मि, परम औषध, उत् हृत, प्रति एक, जगत् ईश, उत् लास, दुः कर, तत् मय, सु आगत, प्रातः काल, तपः भूमि, सम् सार।

१०. निम्नलिखित को शुद्ध करो—

सदोपदेश, रीत्यानुसार, दुरावस्था, देविन्द्र, तदोपरान्त, उपरोक्त, अत्योक्ति, उछ्वास, उज्वल, जगत्गुरु, शरत्चन्द्र, सतगुरु, सम्हार, अधस्पतन, अन्तर्कथा, दुसाध्य, तेजमय, पुनर्उक्ति, मनःयोग, निस्छल।

११. नीचे लिखे समस्त पदों को शुद्ध करो—

उन्नतशील, घनिश्याम, निर्लज्जा, यथाविध, शान्तमय, स्वतन्त्रप्रिय, योगीराज, सन्यासीवर्ग।

१२. नीचे लिखे समस्त पदों (समासयुक्त शब्दों) का विग्रह करके समास का नाम बताओ—

मन्दबुद्धि, गंगाजल, महाकवि, नरनारी, मृगनयनी, नरेश, चौपाया, यथाशक्ति, लखपति, दाल-भात, चन्द्रशेखर, कठफोड़ा, भरपेट, भयभीत, घड़ाघड़, नवरात्र, लम्बोदर, कपड़ा-लत्ता, नररत्न, नवयुवक, गुरुसेवा, पापयुक्त, मालगोदाम, पुत्रशोक, रसभरा, चिड़ीमार, अनजाने।

१३. ऐसे शब्दों की सूची बनाओ जिनमें एक से अधिक उपसर्ग लगे हों।

१४. नीचे लिखे उपसर्गों की सहायता से दो-दो शब्द बनाओ और उनका वाक्यों में प्रयोग करो:—

सु, सम्, दुः, उत्, अ, आ, अधि, निः, पुनः।

१५. नीचे लिखे उपसर्गों का अर्थ बताकर दो-दो उदाहरण दो—

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अधि, उप, नि, कु, सह, निर्, अन्तः।

१६. निम्नलिखित शब्दों से भाववाचक संज्ञाएँ बनाओ—

पढ़, प्रभु, मधुर, बूढ़ा, लम्बा, पागल, मित्र, चोरी।

१७. निम्नलिखित शब्दों से विशेषण बनाओ—

आदर, वाञ्छा, पशु, मधु, अन्त, गुण, दया, शक्ति, चिन्त्, पुण्य, नशा, पहाड़, टिक(ना)।

१८. निम्नलिखित शब्दों से कर्तृवाचक संज्ञा बनाओ—

कृ, शिक्ष, वैर, धुन(ना), चाट(ना), नी, दा।

१९. निम्नलिखित को शुद्ध करो, और अशुद्धि का कारण समझाओ—

स्वत्व, धैर्यता, महानता, व्यस्ता, स्थायीत्व, उपयोगता, गौरवता, पूज्यनीय, आवश्यकीय, श्रद्धामान्, शान्तमय, निर्दोषी, गम्यनीय, शहरीय, निराशपूर्ण, प्रफुल्लित, अचंभित, लोकिक, व्यवहारिक, साहित्यक, भिज्ञ, सुबोधपूर्ण, सकुशलपूर्वक।

२०. निम्नलिखित पुल्लिंग शब्दों से स्त्रीलिंग शब्द बनाओ—

भिखारी, अनाथ, भंगी, हतभाग्य, सिंह, कवि, गायक, पड़ोसी, कर्ता, भगवान्, पुत्र, वरुण, क्षत्रिय, उपदेशक, वृद्ध, स्वामी, विद्वान्, देवर, सुनार, पंडित, लाला।

२१. निम्नलिखित प्रत्ययों की सहायता से दो-दो शब्द बनाओ—

संस्कृत— -अ, -आ, -अन, -ई, -इमा, -सा, -त्व, -अक, -आनी, -त्र, -अनीय, -आलु, -त, -इत, -ईय, -वान्, -य।

हिन्दी— -अ, -आ, -ई, -आई, -आवट, -आहट, -अन, -आव/आवा।

फ़ारसी— -दार, दान, बाज़, साज।

२२. कोश देखकर निम्नलिखित की परिभाषा (व्याख्या) लिखिए—

अंत्याक्षरी, अंतरीप, अभिनन्दनपत्र, अमावस्या, अमृत, अनर्गल, अर्थशास्त्र, अलगनी, असहयोग, अहिंसा, आकाशगंगा, आचमन, आपद्धर्म, आरति, आहुति, इतिहास, ईश्वर, उपनिवेश, उपनिषद्, उपाधि, आलोचना, ऊसर, ऋषि, औरस, कछार, कायाकल्प, काला पानी, कुहरा, खगोल,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ख़राद, खाई, गणतंत्र, गलफड़ा, चांदमारी, चुम्बक, चौपाई, ज्योतिष, ज्वालामुखी, झाड़फूंक, टापू, त्रिफला, नीलगाय, नैनसुख, पगहा, परमाणु, परिशिष्ट, बंदरगाह, बखिया, बीजगणित, भूगोल, भौतिकी, ब्रह्मचारी, मनोविज्ञान, महावर, राजधानी, राजनीति, रेखागणित, वनस्पति शास्त्र, वेधशाला, व्याकरण, षड्यन्त्र, सुंघनी, सूरजमुखी, स्वयंवर।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

५

व्यावहारिक व्याकरण

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

व्यावहारिक व्याकरण

शब्दभेद---वाक्य में प्रयोग का आधार

निम्नलिखित वाक्य को ध्यान से पढ़िए:—

बूढ़े ने विनयपूर्वक कहा—"हाय ! मैं क्या कहूँ कि हम क्या थे और आज क्या हो गये !"

इनमें 'बूढ़े', 'कहा', 'मैं', 'क्या', 'थे', 'हो', 'गये' पर विचार कीजिए कि क्या इनके और-और रूप भी हो सकते हैं। जैसे,

पहले 'बूढ़ा' संज्ञा लें। बूढ़ा आया। बूढ़े के लिए दवा दे दो। बूढ़ी औरत ने कहा। बूढ़ों का आदर करो। बुढ़िया आ गयी।

इस तरह बूढ़ा शब्द में कई विकार हुए।

अब 'कहना' क्रिया लें। उसने कहा। मैं क्या कहूँ। वह कहता है। मैं कह रहा था। तुम कुछ कहना चाहते थे। मैंने एक बात कही।

इसमें भी विकार हुए हैं।

'मैं' के रूप देखिए—मैं गया। मुझे दे दो। मुझसे कह दो। मेरा घर वहाँ है। हम (मैं का बहुवचन) गये। हमें दे दो। हमसे तो कह दो। हमारा घर वहाँ है।

इसी तरह शेष शब्दों से वाक्य बनाकर देखिए। एक और शब्द लीजिए, 'अच्छा' विशेषण। वाक्य में इसके भी अच्छे या अच्छी रूप हो सकता है।

वाक्यों में पड़कर जिन शब्दों के रूप में विकार हो जाता है, उन्हें **विकारी** शब्द कहते हैं। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रियापद हिन्दी में विकारी होते हैं। कुछ और उदाहरण लीजिए—

संज्ञापद—लड़का, लड़की, लड़के, लड़कों, लड़कियाँ, लड़कियों;

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha
सीता, सीताएँ, सीताओं ने; रात, रातें, रातों; बहू, बहुएँ, बहुओं।

सर्वनाम—तू, तुझ, तुझे, तुम्हें, तेरा, तुम्हारा; वह, वे, उस, उन, उसे, उन्हें; क्या, किस, किन; कोई, किसी, किन्हीं।

विशेषण—बड़ा, बड़े, बड़ी; नीला, नीले, नीली।

क्रिया—जा, जाना, जाता, जाऊँ, जाए, जाएँ, जाओ, जाती, जाते, जातीं, गया, गयी, गयीं।

इन सब शब्दों का रूप बदलता रहता है। इसीलिए इन्हें विकारी कहते हैं।

अब 'हाय !' 'कि', 'और' और 'आज' शब्दों के बारे में विचार कीजिए। इनका रूप नहीं बदलता। देखिए—

और—राम और श्याम। सीता और रीता। लड़के और लड़कियाँ। मैं आया और वह गये। हम आये और वह गया।

आज—वह आज जायगा। हम आज जायँगे। तू आज गया था। मैं आज जा रही हूँ। आज छुट्टी है।

'हाय' और 'कि' के बारे में भी यही बात है। ये शब्द **अविकारी** कहलाते हैं, क्योंकि इनमें विकार नहीं होता। 'आज' क्रियाविशेषण है, 'कि' तथा 'और' योजक हैं, 'हाय !' विस्मयादिबोधक है। 'के आगे', 'के भीतर' आदि शब्द सम्बन्धबोधक होते हैं। ये चार प्रकार के शब्द अविकारी हैं। कुछ और शब्द देखिए—

क्रियाविशेषण—धीरे, जल्दी, नीचे, ऊपर, अब, कल, वहाँ, कहाँ।

संबंधबोधक—में, से, के लिए, के नीचे, की ओर, के बाहर।

समुच्चयबोधक—एवं, तथा, किन्तु, लेकिन, परन्तु, कि, यद्यपि।

विस्मयादिबोधक—हा ! आहा ! हाहा ! वाहवाह।

सूचना—ऊपर आठ प्रकार के शब्दों के भारी-भारी नाम सुनकर पाठकों को घबराने या चौंकने की आवश्यकता नहीं है। अगले प्रकरण में इन सबकी व्याख्या की जा रही है। यहाँ विषय-प्रवेश मात्र कराया गया है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पहले प्रारंभिक जानकारी के लिए कुछ पारिभाषिक शब्दों की **व्याख्या** की जा रही है। ध्यान से पढ़िए। इस पुस्तक में ये पारिभाषिक शब्द कई बार आयेंगे। कुछ पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या हमने **यथास्थान** कर दी है। निम्नलिखित शब्द सामान्यतः आवश्यक हैं।

परिभाषाएँ

व्याकरण वह शास्त्र है जो शब्दों के रूपों और प्रयोगों का निरूपण करता है। किसी व्यक्ति का शब्दभण्डार कितना ही समृद्ध क्यों न हो, बिना व्याकरण के वह अपने शब्दों का भाषा में ठीक-ठीक प्रयोग नहीं कर सकता। 'भाषा' की परिभाषा देते हुए हमने पहले ही अध्याय में कहा था कि भाषा एक व्यवस्था है। वाक्य में शब्दों की व्यवस्था क्या होती है, यह व्याकरण का विषय है।

किसी वस्तु* के नाम को **संज्ञा** कहते हैं। मेरे कमरे में कई सामान्य वस्तुएँ हैं, जो प्रायः सब घरों में होती हैं। हमारे समाज ने इनके अलग-अलग नाम निर्धारित कर दिये हैं। **मेज़**, **कुर्सी**, **किताब**, या **पुस्तक**, **पलंग**, **चादर**, **दरी**, **चित्र**, **पंखा**, इत्यादि। ये सब शब्द संज्ञाएँ हैं। इस कमरे में कुछ लोग आ बैठते हैं—उनके भी नाम हैं—**विजय**, **दीपक**, **कमला**, **विमला**। ये व्यक्तियों के नाम हैं। ये भी संज्ञाएँ हैं। फिर इस कमरे की **चौड़ाई** है, **लम्बाई** है, **ऊँचाई** है अथवा उन वस्तुओं के गुणों के नाम हैं—मेज़ का '**भद्दापन**', कुर्सी का '**खुलापन**', किताब की '**उपयोगिता**', चादर की '**सफ़ेदी**', दरी की '**नीलाहट**', चित्र की '**सुन्दरता**', आदि। गुणों के ये नाम भी संज्ञाएँ हैं।

जिस नाम से एक ही प्रकार की सामान्य वस्तुओं का, पूरी जाति का, बोध होता है, उसे जातिवाचक **संज्ञा** कहते हैं, जैसे ऊपर गिनायी गयी मेरे कमरे की वस्तुओं के जो नाम हैं वे इसी तरह की वस्तुओं के सामान्य नाम

---

*वस्तु का अर्थ है जिसका अस्तित्व हो या जिसके अस्तित्व की कल्पना की जा सके।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha
हैं—वे आपकी वस्तुएँ भी हैं, उनकी भी हैं। इसी तरह **पेड़, पक्षी, माता, पिता, भाई, बहन, मित्र, शत्रु, लकड़ी, पत्थर, ईंट,** आदि जातिवाचक संज्ञाएँ हैं। **विजय, कुलदीप, कमला, विमला** तो विशिष्ट व्यक्तियों के नाम हैं। इन्हें **व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ** कहते हैं। इसी तरह नगरों, गाँवों, पर्वतों, नदियों आदि के विशिष्ट नाम व्यक्तिवाचक हैं; जैसे **दिल्ली, कलकत्ता, मंझनपुर, विंध्याचल, गोदावरी**। ये नाम सामान्य नहीं हैं। गुण, कर्म, स्वभाव का बोध कराने वाले नाम को **भाववाचक संज्ञा** कहते हैं, जैसे **खुलापन, उपयोगिता, सफ़ेदी, नीलाहट, हँसी, खुशी**। पहले चार शब्द गुणों के नाम हैं। **हँसी, खुशी, चिन्ता, क्रोध** भावों के नाम हैं। **लड़ाई, झगड़ा, नींद, जागृति** कर्मों या व्यापारों या अवस्थाओं के नाम हैं। **ज्वर, हैज़ा,** आदि रोगों के नाम; **दिन, रात, मिनट, वर्ष** आदि समय के नाम; **गणित, व्याकरण, विज्ञान** आदि विद्याओं के नाम भी भाववाचक संज्ञाएँ हैं।

सूचना—भाववाचक संज्ञाएँ किन शब्दों से बनती हैं और कैसे बनती हैं, इसके लिए देखिए प्रत्यय सं० ५, ८, ९, १०, १४, १५, १८, १९, २१, २२, २३, २५, २८, २९, ४०, ४५, ५० ग, ५२, ५९, ६० घ, ६३, ६६।

अब आप ये वाक्य पढ़िए—राम मेरा भाई है। राम स्कूल में पढ़ता है। राम के पास पुस्तकें हैं। राम ने एक दिन सारी पुस्तकें खो दीं। बाद में राम को पुस्तकें मिल गयीं।

किन्तु साधारणतया हम यों कहा करते हैं—

"राम मेरा भाई है। **वह** स्कूल में पढ़ता है। **उसके** पास पुस्तकें हैं। **उसने** एक दिन सारी पुस्तकें खो दीं। बाद में **उसे वे** मिल गयीं।"

यहाँ हम 'राम' शब्द को बार-बार दोहराने के बजाय **वह, उस, उसे** और पुस्तकों के स्थान पर **वे** का प्रयोग कर रहे हैं। ऐसे शब्द जो संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं, **सर्वनाम** कहे जाते हैं। 'सर्वनाम' इसलिए कहते हैं कि सब नामों की जगह इनका प्रयोग होता है। बहन, भाई, माता, पिता, घर, कमरा, कुर्सी, मेज़ सब के लिए **वह, वे,** प्रयुक्त हो सकते

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हैं। तुम सब का नाम बार-बार न लेकर '**तुम**' या '**आप**' शब्द से काम चल जाता है। इसी प्रकार अपना नाम न लेकर सब लोग '**मैं**' या '**हम**' का प्रयोग किया करते हैं। **मैं, हम, तू, तुम, आप, वह, यह, जो, कुछ, कोई, क्या**—ये और इनके विकारी रूप जैसे **मैं** से **मुझ, मुझे** आदि सर्वनाम हैं।

संज्ञा की विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं। लड़का कैसा है? **अच्छा** है, **बुरा** है। कमरा कैसा है? **खुला** है, **हवादार** है, या **तंग** है, **गंदा** है। दूध कितना है? **थोड़ा** है, **पावभर** है। आदमी कितने हैं? **पाँच** हैं, **पचास** हैं, **अधिक** हैं, **दुगुने** हैं। ये सब स्थूलाक्षर शब्द विशेषण हैं।

हिन्दी में बहुत से विशेषण अविकारी हो गये हैं। इस कारण से भाषा में सरलता आ गयी है। केवल उन शब्दों में विकार आता है जिनके अंत में **-आ** होता है। **अच्छा** से **अच्छे, अच्छी**; **भद्दा** से **भद्दे, भद्दी**। शेष में रूप-परिवर्तन नहीं होता, जैसे **सुन्दर लड़का, सुन्दर लड़के, सुन्दर लड़की, सुन्दर लड़कियाँ**। यहाँ 'सुन्दर' विशेषण अविकारी है, सर्वत्र एकरूप है।

काम या तो होता है या किया जाता है। **क्रिया** वह विकारी शब्द है जिससे किसी काम का होना या करना पाया जाय; जैसे **है, पढ़ता है, जा रहा है, सोऊँगा, पड़ा था।**

क्रिया के मुख्य दो भेद हैं—सकर्मक और अकर्मक। सकर्मक का अर्थ है कर्म-सहित। जिस क्रिया के साथ कर्म (वह संज्ञा या सर्वनाम जिस पर कर्म का फल पड़े) आवश्यक हो, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। अथवा यों कहा जाय कि वाक्य में जिस क्रिया के कर्ता और कर्म दोनों हों, उसे सकर्मक कहा जाता है; जैसे, **मैं मिठाई खाता हूँ, वह टोपी लाया, राम पुस्तक पढ़ता है। खाता हूँ** का कर्ता 'मैं' है और कर्म 'मिठाई'। **लाया** का कर्ता 'वह' है और कर्म 'टोपी'। **पढ़ता है** का कर्ता 'राम' और कर्म 'पुस्तक' है। ये तीनों सकर्मक क्रियाएँ हैं। जिस क्रिया में कर्म नहीं होता, उसे अकर्मक कहते हैं; जैसे, **राम आया, श्याम लौटा, लड़की जागी, मैं**

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बैठा में कर्म की आवश्यकता नहीं है। ये चारों अकर्मक क्रियाएँ हैं।

रचना या बनावट की दृष्टि से भी क्रिया के दो भेद हैं—मूल और यौगिक। यौगिक का अर्थ है कि किन्हीं और तत्त्वों के योग से बनी हुई। **लिखना, पढ़ना, आना, जाना, लेटना, देखना** मूल क्रियाएँ हैं। **जा पड़ना, लिख लेना, लिखवाना** और **हथियाना** यौगिक क्रियाएँ हैं। यौगिक क्रियाएँ तीन प्रकार की हैं—संयुक्त क्रियाएँ, प्रेरणार्थक क्रियाएँ और नामधातु।

जब एक से अधिक क्रियाएँ जुड़कर आएँ, तो उसे **संयुक्त क्रिया** कहते हैं : जैसे, **आना चाहता हूँ, लज्जित करना, खा चुका था**। इनमें पहली मुख्य क्रिया और बादवाली सहायक क्रिया होती है।

जब कर्ता किसी कार्य को स्वयं न करके किसी से कराये, अर्थात् किसी को करने की प्रेरणा दे तो उस क्रिया को प्रेरणार्थक क्रिया कहा जाता है। जैसे, मैंने काम कराया; उसने पत्र लिखवाया। इसी तरह **देना** से **दिलाना, दिलवाना; पढ़ना** से **पढ़ाना, पढ़वाना; सोना** से **सुलाना, सुलवाना** प्रेरणार्थक क्रियाएँ बनी हैं।

नामधातुए वे हैं जो नाम (संज्ञा और सर्वनाम) से बनती हैं; जैसे, **हाथ** से **हथियाना, अपना** से **अपनाना**।

वास्तव में **'ना'** के बिना जो क्रिया का मूल रूप शेष रहता है, उसे **धातु** कहते हैं। **-ना** वाले रूप को संज्ञार्थक क्रिया या संज्ञार्थक कृदन्त कहते हैं। जैसे **लेना, देना, लिखना, पढ़ना, सोना, करना, आना** आदि तो संज्ञार्थक क्रियाएँ हैं और **ले, दे, लिख, पढ़, सो, कर, आ** आदि धातुए हैं। 'संज्ञार्थक' कहने का तात्पर्य यह है कि इन -ना वाले क्रिया-रूपों का प्रयोग संज्ञा के अर्थ में भी होता है; जैसे, **वहाँ जाना अच्छा रहेगा; पढ़ने में बड़ा मज़ा आता है**।

धातुओं से जो संज्ञा, विशेषण, क्रियाविशेषण आदि रूप बनते हैं, उन्हें कृदन्त कहते हैं। जैसे **लिख** से **लिखना** (संज्ञार्थक कृदन्त), **लिखता, लिखा** और **लिखनेवाला** (ये तीन विशेषणार्थक कृदन्त) और **लिखकर** (क्रियाविशेषणार्थक कृदन्त) बनते हैं। संज्ञार्थक कृदन्त की बात हम ऊपर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कर चुके हैं। विशेषणार्थक कृदन्तों का प्रयोग देखिए—**चलती चक्की, बहता पानी, लिखा-पढ़ा आदमी, सोनेवाला नौकर**। यहाँ **चलती, बहता, लिखा-पढ़ा, सोनेवाला** अपनी-अपनी संज्ञाओं की विशेषता बताते हैं। -ता रूप वाले कृदन्तों को वर्तमानकालिक कृदन्त भी कहते हैं, क्योंकि इनसे कार्य के वर्तमान में होने का बोध होता है। **लिखा, पढ़ा** में **-आ** वाला रूप भूतकाल का द्योतक है। लिखा-पढ़ा का अर्थ है '**लिखा-पढ़ा हुआ**।' इन्हें भूतिकालिक कहा जाता है। **-वाला** से कर्तृवाचक कृदन्त बनते हैं। '**पढ़नेवाला**' का अर्थ है 'पढ़ने के काम का कर्त्ता' (करनेवाला)। **देकर, पढ़कर, सुनकर, करके** आदि क्रियाविशेषण बन जाते हैं; जैसे, **देखकर जाऊँगा, पढ़कर सुनाओ, सुनकर क्रोध आया, करके देखो**। इन सब में **-कर** रूप वाले कृदन्त अपनी-अपनी क्रिया की विशेषता बताते हैं। इन्हें पूर्वकालिक कृदन्त भी कहते हैं, क्योंकि इनसे यह बोध होता है कि एक काम पहले हुआ। 'देखकर जाऊँगा' में वक्ता कह रहा है कि पहले देखूँगा, फिर जाऊँगा।

क्रिया की रचना में भी वर्तमानकालिक कृदन्त और भूतकालिक कृदन्त का विशेष हाथ है। देखिए—वर्तमान कृदन्त—**चलता, होता** (यदि यह चलता तो अच्छा होता), **चलता** है, **चलता** था, **चलता** होगा, **चलता** रहेगा। भूतकृदन्त—**चला, चला** है, **चला** था, **चला** होगा।

अविकारी शब्दों को **अव्यय** भी कहते हैं क्योंकि इनका व्यय (ख़र्च) नहीं होता—ये उतने के उतने, वैसे के वैसे बने रहते हैं, जैसे **अब, नीचे, आज, कि, किन्तु, हा**। अव्यय के चार भेद होते हैं—क्रियाविशेषण, सम्बन्ध-बोधक, योजक या समुच्चयबोधक और विस्मयादिबोधक।

क्रियाविशेषण वे शब्द हैं जो क्रिया की विशेषता प्रकट करते हैं। नीचे लिखे वाक्यों में देखिए कि मोटे टाइप में छपे हुए शब्द आगे आने-वाली क्रिया के विशेषण के रूप में प्रयुक्त हुए हैं—

मैं **वहाँ** जाऊँगा। वह **कल** आया था। तुम **ऊपर** जाओ। आप **ठीक** कहते हैं। मैं **नहीं** गया था।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम से लगकर उसका सम्बन्ध वाक्य में आए हुए दूसरे शब्दों के साथ निर्धारित करते हैं, उन्हें सम्बन्धबोधक कहते हैं; जैसे—राम **का** भाई, बक्स मेज़ **के नीचे** पड़ा है। यह बात मेरे मन के **अनुकूल** है। इनमें 'का' राम और भाई का सम्बन्ध, 'के नीचे' बक्स और मेज़ का सम्बन्ध, एवं 'के अनुकूल' बात और मन का सम्बन्ध निश्चित करते हैं। इन्हें **परसर्ग** भी कहा जाता है, क्योंकि ये संज्ञा या सर्तनाम के वाद (पर=परे) जुड़ते (सर्ग) हैं।

योजक या समुच्चयबोधक वे अव्यय शब्द हैं जो दो शब्दों, वाक्यांशों या वाक्यों को एक दूसरे के साथ जोड़ते हैं या अलग-अलग पड़े शब्दों को इकट्ठा (समुच्चय) कर देते हैं। तुलना कीजिए—

अच्छा, शील्वान्	अच्छा **और** शीलवान्।
वह भला है, वह आलसी है	वह भला तो है **परन्तु** आलसी है।

और, एवं, परन्तु की तरह **तथा, अथवा, या, एवं, किन्तु, लेकिन, मगर, इसलिए, क्योंकि, यद्यपि, तथापि** भी समुच्चयबोधक हैं।

विस्मय (आश्चर्य), हर्ष, शोक, घृणा आदि भावों को प्रकट करनेवाले शब्दों को विस्मयादिबोधक अव्यय कहते हैं। हम विस्मय में **ऐ, ओ, हो**; हर्ष में **वाह वाह**! शोक में **हाय हाय**! घृणा में **छी छी**! आदि अनेक शब्द बोलते हैं। ये शब्द वाक्य से अलग रहते हैं।

विकार या रूपान्तर

१. संज्ञा की रूप-रचना के तीन आधार हैं—

लिंग वचन कारक

२. सर्वनाम की रचना के भी तीन आधार हैं—

पुरुष वचन कारक

३. विशेषण की रचना के चार आधार हैं—

लिंग वचन कारक तुलनावस्था

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

४. क्रिया की रचना के पाँच आधार हैं—

लिंग पुरुष वचन काल और भाव (अर्थ) वाच्य

इन आधारों को कोटियाँ भी कह सकते हैं। इन कोटियों का अध्ययन करना ही इस अध्याय का प्रमुख विषय है। बाद में अविकारी शब्दों के प्रयोग की चर्चा करेंगे।

संज्ञा की कोटियाँ

१. लिंग

जिस रूप से यह जाना जाय कि अमुक शब्द पुरुष जाति के लिए प्रयुक्त होता है अथवा स्त्री जाति के लिए, उसे लिंग कहते हैं—जैसे, नाना, घोड़ा, लड़का और पंडित पुरुष जाति के लिए प्रयुक्त होते हैं; नानी, घोड़ी, लड़की और पंडितानी या पंडिताइन स्त्री जाति के लिए प्रयुक्त होते हैं।

हिंदी में दो ही लिंग है—१. पुरुषलिंग या पुल्लिग और २. स्त्री-लिंग।

लिंग निर्णय—प्राणियोंके लिंग-निर्धारण में कोई कठिनाई नहीं है, क्योंकि जो शब्द पुरुष या नर जाति का बोध कराते हैं, वे पुल्लिग हैं और जो शब्द स्त्री जाति या मादा का बोध कराते हैं, वे स्त्रीलिंग हैं। उदाहरण :—

पुल्लिग—**बालक, कुत्ता, हाथी, साधु, बैल, मोर, चींटा, मुर्गा।**

स्त्रीलिंग—**अध्यापिका, चुहिया, बेटी, बहू, हथिनी, गाय, मोरनी, चींटी।**

प्राणिवाचक शब्दों में **पक्षी, उल्लू, कौआ, भेड़िया, चीता, खटमल, केचुआ** आदि पुल्लिग माने गये हैं। **चील, कोयल, बटेर, गिलहरी, जोंक, तितली, मछली, मक्खी, मैना** आदि शब्द नित्य स्त्रीलिंग होते हैं। यदि लिंग-भेद करना आवश्यक हो तो इनके पहले 'नर' शब्द

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

या 'मादा' शब्द का प्रयोग कर लिया जाता है; जैसे, मादा उल्लू, नर बटेर, मादा भेड़िया।

कठिनाई अप्राणिवाचक शब्दों के लिंग-निर्णय में होती है। पहचान के लिए कुछ नियम दिये जा रहे हैं, किन्तु ये अपूर्ण हैं, और एक-एक नियम के अनेकानेक अपवाद हैं। लोक-व्यवहार ही इनका सही प्रमाण है।

पुल्लिग शब्द

१. अर्थ की दृष्टि से निम्नलिखित अप्राणिवाचक शब्द पुल्लिग हैं—

(अ) **शरीर के ये अवयव**—बाल, सिर, माथा (मस्तक), होंठ, कान, मुँह, दांत, तालु, गला, गाल, पेट, सीना, हाथ, पाँव, अँगूठा, नख, रोम।

अपवाद—आँख, नाक, जीभ, उंगली, छाती, हड्डी, जाँघ, खाल, नस, आदि स्त्रीलिंग हैं। इनमें हड्डी, छाती, उंगली तो बनावट में -ई के कारण स्त्रीलिंग हैं।

(आ) **धातुओं के नाम**--सोना, रूपा, पीतल, ताँबा, राँगा, लोहा, सीसा, टीन, काँसा, इत्यादि।

अपवाद—चाँदी (-ई के कारण)। 'धातु' शब्द भी स्त्रीलिंग है।

(इ) **रत्नों के नाम**—हीरा, मोती, माणिक, मूँगा, जवाहर, पन्ना, नीलम।

अपवाद—मणि, चुन्नी (-ई के कारण)।

(ई) **ग्रहों के नाम**—सूरज, चाँद, तारे, मंगल, बुध, राहु, शुक्र, शनि, केतु, ध्रुव आदि।

अपवाद—पृथ्वी (-ई के कारण) स्त्रीलिंग है।

(उ) **देशों, नगरों, पर्वतों और समुद्रों के नाम**—भारत, जापान, रूस; लंदन, मास्को, कलकत्ता; हिमालय, विन्ध्याचल, एन्डीज़; हिन्द महासागर, लाल सागर, कृष्ण सागर।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अपवाद—दिल्ली, कराची आदि (-ई के कारण)।

(ऊ) **जल और स्थल के भागों के नाम**—देश, नगर, द्वीप, पहाड़, समुद्र, सागर, सरोवर, आकाश, पाताल, आदि।

अपवाद—पृथ्वी, नदी, घाटी, नगरी, पहाड़ी आदि (-ई के कारण)।

(ऋ) **समय के विभागों के नाम**—वर्ष, महीना, पक्ष, सप्ताह, दिन, दोपहर, चैत, वैशाख।

अपवाद—घड़ी, रात, सांझ, सुबह।

(ए) **अनाजों के नाम**—गेहूँ, चावल, जौ, बाजरा, मटर, उड़द, चना, तिल। मक्का, मूँग पश्चिमी ज़िलों में तो पुंल्लिग ही हैं। **अपवाद**—जुआर।

(ऐ) **पेड़ों के नाम**—पीपल, कचनार, जामुन, बड़, शीशम, देव-दार, सागौन, तमाल, अशोक आदि। **अपवाद**—नीम, खिरनी (-ई के कारण)।

(ओ) **द्रव पदार्थों के नाम**—घी, तेल, पानी, दही, मट्ठा, शर्बत, जूस, रस, सिरका, इत्र। **अपवाद**—कांजी, लस्सी (-ई के कारण) और लस्सी के साथ छाछ भी स्त्रीलिंग है।

२. बनावट या रूप की दृष्टि से पुंल्लिग शब्दों की यह पहचान है—

(अ) संस्कृत शब्दों में जिनके अन्त में—**ख**, या **-ज** आता है, जैसे दुःख, नख, मुख, लेख, सुख, शंख; जलज, मलयज, सरोज, अनुज।

(आ) जिन संस्कृत शब्दों के अन्त में कृत् प्रत्यय **-अ** (दे० प्रत्यय सं० १), **-अन** (प्रत्यय संख्या ४), **-त** (प्रत्यय रु० ९ से ९ घ), **तव्य** (प्रत्यय सं० १०), **त्र** (प्रत्यय सं० १३); **-अ** (प्रत्यय सं० १७), **-त्व** (प्रत्यय सं० २७), एवं**-य** (सं० ३०) होता है, वे **पवन**, **जय**, **विजय**, **सामर्थ्य** को छोड़कर सब पुंल्लिग हैं। उदाहरण वहीं देखिए।

(इ) हिन्दी शब्दों में जिनके अन्त में **-आ** आता है; जैसे, आटा, कपड़ा, गन्ना, घड़ा, पैसा, पहिया, मैदा, दरवाज़ा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(ई) जिन शब्दों के साथ हिन्दी तद्धित प्रत्यय -आ (देखिए प्रत्यय सं० ४० ख), -पन (प्रत्यय सं० ४६), -पा (सं० ४७); एवं तद्धित प्रत्यय -आ (सं० ५०), -आव(ा) (प्रत्यय सं० ५५), -ना (सं० ६०), -वाला (संख्या ६१) लगते हैं। उदाहरण वहीं यथास्थान देखिए।

(उ) विदेशी शब्दों में -ख़ाना (प्रत्यय सं० ६२), -ख़ोर (सं० ६३), और -दान (सं० ६५) से बननेवाले अप्राणिवाचक शब्द भी पुंल्लिग हैं।

(ऊ) वर्णमाला के अक्षरों में **इ**, **ई** और **ऋ** को छोड़कर शेष सब पुंल्लिग हैं, जैसे हम कहते हैं—अन्त में आ या ग आता है।

स्त्रीलिंग शब्द

१. अर्थ की दृष्टि से निम्नलिखित अप्राणिवाचक शब्द स्त्रीलिंग हैं—

(अ) नदियों के नाम—गंगा, यमुना, सतलुज, गोदावरी, मिसिसिपी।

(आ) भाषाओं के नाम—हिन्दी, पंजाबी, अंग्रेज़ी, उर्दू, रूसी।

(इ) तिथियों के नाम—चतुर्थी, एकादशी, अमावस्या, पूर्णमासी।

(ई) नक्षत्रों के नाम—अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, आदि।

२. रूप या बनावट की दृष्टि से निम्नलिखित अप्राणिवाचक शब्द स्त्रीलिंग हैं—

(अ) संस्कृत के वे शब्द जिनके अन्त में निम्नलिखित प्रत्यय आते हैं—

कृत् प्रत्यय	-अना (देखिए प्रत्यय सं० ६)
	-आ (देखिए सं० ७)
	-ति (देखिए सं० ११)
	-सा (देखिए सं० १६)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तद्धित प्रत्यय -इमा (देखिए सं० २०)
-ता (देखिए सं० २५)

(आ) संस्कृत के इकारान्त शब्द—छवि, रुचि, आदि।

(इ) हिन्दी के वे शब्द जिनके अन्त में निम्नलिखित प्रत्यय आते हैं—

तद्धित प्रत्यय -आई (देखिए प्रत्यय सं० ४१)
-आवट आहट (देखिए सं० ४२)
-इया (लघुता-वाचक) (देखिए सं० ३५ ख)
-ई (देखिए सं० ४४)

कृत् प्रत्यय -अ (देखिए सं० ४९ क)
-आई (देखिए सं० ५१)
-अन (देखिए सं० ५३)
-आन (दे० सं० ५४—दो तीन शब्दों को छोड़कर)
-आवट -आहट (देखिए सं० ५६)
-ई (देखिए प्रत्यय सं० ५८)

(ई) याद रहे कि ईकारान्त शब्द हिन्दी में विशेष रूप से स्त्रीलिंग हैं। इनमें संस्कृत के **नदी**, **पृथ्वी**, **नगरी**, **द्रोणी**, **शतघ्नी**, **स्थाली**, **चतुष्पदी**, **किंकिणी** आदि शब्द; हिन्दी के **लाठी**, **नाली**, **चिट्ठी**, **खेती**, **टोपी**, **उंगली**, **चाँदी**, **चुन्नी**, **पहाड़ी**, **घाटी**, **खिरनी**, **कांजी**, **लस्सी**, **रोटी**, **पूरी**, **कचौड़ी**, **इलायची**, **सुपारी** आदि सैकड़ों शब्द स्त्रीलिंग ही हैं; उर्दू के **गरमी**, **सरदी**, **बीमारी**, **घूसखोरी**, **घड़ीसाज़ी**, **जमाबंदी**, **जूएबाज़ी**, **चूहेदानी**, **जिम्मेदारी** आदि ईकारान्त शब्द भी स्त्रीलिंग हैं। (देखिए प्रत्यय सं० ६३, ६५ ख, ६६, ६७, ६८, ६९, ७०)।

(उ) उर्दू के वे शब्द जिनके अन्त में -त और -श प्रत्यय हों प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं। उदाहरण—

मुहब्बत कसरत शौकत शराफ़त

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

	उजरत	मेहनत	बरकत	सेहत
	अदालत	कीमत	मुलाकात	
एवं	कोशिश	गुज़ारिश	मालिश	
	नालिश	बारिश	तलाश।	

विशेष सूची

ऊपर के नियमों में लिंग-संबंधी पूरा समाधान नहीं हो पाया। बहुत से ऐसे शब्द (विशेषतः अकारान्त) एसे हैं जिनके सम्बन्ध में विद्यार्थियों को कठिनाई होती है। उनकी सूची नीचे दी जा रही है। इसे अच्छी तरह पढ़ लें ताकि लिंग के प्रयोग में कोई भूल न हो।

सूचना—लिंग के विषय को पुनः वाक्य के अन्तर्गत अगले अध्याय में उठाया जायगा। उसे भी अवश्य देखें।

पुल्लिग शब्द—अचकन, अदरक, अबीर, आयात, आलू, आसन, इन्तज़ार, इस्तीफ़ा, ऊन, औसत, कछार, कलह, कनस्तर, कायाकल्प, किवाड़, कीचड़, कुटीर, कुठार, कुदाल, कोटर, कोदों, खजूर, खराद, खूंट, गठन, गिरगिट, गुंजार, गुलाब, गुस्सा, गेंद, गोदाम, ग्रीष्म, घात, घूंट, चंचु, चन्द्रमणि, चम्मच, चंपक, चाबुक, चौपाल, चौसर, छंद, छोर, जंजाल, जुलाब, जेब, झंझावात, टमटम, टिकट, ठूंठ, ठेका, ठौर, डकार, डग, डौल, डर, ढोल, तंतु, तंबाकू, तराज़ू, तलाक, तार, तारा, ताल, ताव, तावीज़, तोड़-जोड़, तौल, तौलिया, थूक, दही, दाँव, धड़, धनिया, धावा, नफ़ा, नयन, नेत्र, पतंग, पनीर, पराग, पहिया, पित्त, पिस्तौल, पुल, पुलक, प्याज, प्रात, प्रलय, फाग, फाटक, फन, फ़र्श, बखिया, बटन, बाज़ार, बिल, बेर, बेल, भस्म, भेड़िया, भोर, मचान, मज़ाक, मटर, मरहम, मल, मवाद, मान, मेवा, मोम, मौसम, म्यान, यातायात, रबड़, राज्य, रिवाज, रूमाल, लटकन, लालच, लाइसेन्स, लेन-देन, वाष्प, विष, व्यक्ति, व्यय, शतरंज, शरबत, शहद, श्वास, संदूक, सन, समाज, साया, सींग, सीप, सिल्क, सेतु, सेब, सच, स्टेशन, स्वर्ग, हठ, हुंकार, हाशिया, हुलिया।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्त्रीलिंग—अकड़, अरहर, आयु, आय, ईंट, उड़ान, उलझन, ऊख, ओट, ओस, कटार, कलम, कील, कुशल, कोर-कसर, खड़ाऊँ, खस, खाज, खोज, खोह, गंध, गड़बड़, घास, घिन, घूस, चपत, चर्चा, चेचक, चोंच, चौखट, छत, छाछ, छाप, जय, ज़िच, जेब, झाड़, टकसाल, ठण्ड, डाढ़, ढाल, तरफ़, तरह, तलछट, तलाश, तह, तौल, थाह, देह, धरोहर, नकेल, नाक, नाप, नींव, नोकझोंक, पतझड़, पेचिस, फ़िक्र, बकवास, बग़ल, बटेर, बाँह, बारूद, बूँद, भौंह, मख़मल, मरोड़, माप, मूँग, मोहर, राह, रोकड़, लगाम, लालटेन, वायु, विजय, विनय, शक्कर, शपथ, शरण, शराब, समझ, ससुराल, साँस, सिगरेट, सुगन्ध, सुरंग, सौंफ, सौगन्ध, हींग, होड़।

अनिश्चित लिंग

कुछ शब्दों के लिंग-निर्णय पर अभी तक गंभीरता से विचार नहीं किया गया, और वे दोनों तरह से प्रयुक्त होते रहे हैं—स्त्रीलिंग भी, पुल्लिग भी। उदाहरण—

कलम, फ़िल्म, प्लेट, सिगरेट, साइकिल, तंबाकू, गेंद, खेल, आत्मा, पवन, प्लेग, पिस्तौल, मेल।

पुल्लिग से स्त्रीलिंग

सूचना—देखिए 'स्त्री-प्रत्यय' पिछला अध्याय, प्रत्यय संख्या ३१ से ३९ तक।

हिन्दी में कई-एक पुल्लिग शब्दों के स्त्रीलिंग शब्द नितान्त भिन्न शब्द ही होते हैं। उदाहरण—

पुत्र—कन्या	मरद—औरत
बेटा—बहू, पतोहू	राजा—रानी
पुरुष—स्त्री	ससुर—सास
पिता—माता	साला—सरहज

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भाई—बहन, भावज, भाभी	साहब—मेम
नर—मादा	बाप—माँ।
गाय—बैल	

२. वचन

संज्ञा के जिस रूप से यह बोध होता हो कि अमुक पदार्थ अथवा व्यक्ति एक है या अनेक हैं, उसे **वचन** कहते हैं।

हिन्दी में दो वचन होते हैं—एकवचन, और बहुवचन। लड़का, कपड़ा, टोपी, रात का एकवचन है। लड़के, कपड़े, टोपियाँ, रातें का बहुवचन है।

एकवचन से बहुवचन बनाने के नियम बहुत सरल हैं।

१. पुल्लिग शब्द यदि आकारान्त हो, तो -आ का -ए कर देने से बहुवचन हो जाता है; जैसे—

लड़का—लड़के	नाला—नाले
लोटा—लोटे	प्याला—प्याले
घंटा—घंटे	बेटा—बेटे
कपड़ा—कपड़े	कमरा—कमरे
बच्चा—बच्चे	गधा—गधे।

अपवाद

(क) संस्कृत के वे पुल्लिग शब्द जिनके अंत में -आ होता है, बहुवचन में नहीं बदलते। जैसे राजा, कर्ता, देवता, नेता, पिता, योद्धा।

(ख) साला, बेटा, पोता, भतीजा, भानजा के आ का ए तो होता है किन्तु अन्य संबंधवाची आकारान्त पुल्लिग शब्दों का रूप भी दोनों वचनों में एक-सा ही रहता है। जैसे काका, चाचा, ताया, मामा, बाबा, नाना, दादा, लाला, आदि।

२. जिन पुल्लिग शब्दों के अन्त में -आ से भिन्न कोई और अक्षर हो, तो उसका रूप दोनों वचनों में अपरिवर्तित रहता है। जैसे—

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

घर, मन, पत्थर, नाम ऋषि, मुनि

भाई, स्वामी, पक्षी मधु, साधु डाकू, आँसू, लड्डू

चौबे रासो, कोदो जौ ।

सूचना—उक्त प्रकार के शब्दों में वचनभेद करना आवश्यक हो तो जन या लोग (मनुष्यों के लिए), गण, वर्ग, आदि शब्द जोड़े जाते हैं; जैसे, **ऋषिलोग**, **आर्यजन**, **गुरुजन**, **देवतागण**, **तारागण**, **बन्धुवर्ग**, **पशुजाति**।

३. व्यक्तिवाचक और भाववाचक संज्ञाएँ एकवचन में ही प्रयुक्त होती हैं। यदि उनका बहुवचन रूप कर दिया जाय तो वे जातिवाचक संज्ञाएँ बन जाती हैं। उदाहरण—

जयचंदों ने देश का नाश किया है।

४. कुछ शब्द सदा बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं; जैसे, **लोग**, **दाम**, **समाचार**, **प्राण**, **होश**, **हिज्जे**, **दर्शन**।

५. आदरार्थ **जी**, **साहब**, **महाराज**, **महोदय**, आदि लगाने पर भी शब्द बहुवचन की तरह प्रयुक्त होते हैं; जैसे, **पिता जी आए। महाराज रणजीतसिंह सिंहासनारूढ़ हुए। डाक्टर साहब चले गये हैं। अध्यापक महोदय कह रहे थे।**

६. स्त्रीलिंग शब्दों के अन्त में -ई या -इ या -इया हो, तो इन अक्षरों के स्थान पर -इयाँ हो जाता है। उदाहरण—

तिथि—तिथियाँ	टोपी—टोपियाँ	डिबिया—डिबियाँ
रीति—रीतियाँ	नाली—नालियाँ	गुड़िया—गुड़ियाँ
जाति—जातियाँ	लड़की—लड़कियाँ	चिड़िया—चिड़ियाँ
राशि—राशियाँ	रानी—रानियाँ	बुढ़िया—बुढ़ियाँ ।

७. जिन स्त्रीलिंग शब्दों के एकवचन में इ/ई/इया से भिन्न अक्षर हों, उनमें -एँ जुड़ता है। उदाहरण—

क. बहनें, आँखें, बातें, झीलें, पुस्तकें, बाँहें।

ख. लताएँ, शालाएँ, बालाएँ, महिलाएँ, कथाएँ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha
ग. वस्तुएँ, बहुएं, लुएँ, जुएँ, गौएँ।

बहुत से लोग ख. वर्ग **के** शब्दों में -एँ के स्थान पर -यें लिखते हैं।

३. कारक

कारक का अर्थ है संज्ञा या सर्वनाम का वह रूप जिसका क्रिया के सम्पादन में उपयोग हो। उदाहरण के लिए--**पिता ने पुत्र को अपनी जेब से दो रुपये दिये**। इसमें 'दिये' क्रिया के संबंध देखिए—

पिता ने दिए। पुत्र को दिए। जेब से दिए। रुपये दिए। इस वाक्य में **ने, को, से** परसर्ग या कारक-चिह्न हैं।

कारक-चिह्न से पहले संज्ञा या सर्वनाम का जो रूप होता है, वह **तिर्यक् या विकृत रूप** कहलाता है। जिन आकारान्त पुल्लिग शब्दों के अन्त में -आ होता है, और जिनका बहुवचन में **-आ** का **-ए** हो जाता है, उनका तिर्यक् रूप इस प्रकार होता है--

एकवचन— एकारान्त, जैसे लड़के ने/से पूछा।

बहुवचन— ओंकारान्त, जैसे लड़कों ने/से पूछा।

शेष सब प्रकार के पुल्लिग अथवा स्त्रीलिंग शब्दों का तिर्यक् रूप एकवचन वही रहता है जो मूल या अविकृत शब्द का है; जैसे :—

घर में/से गया	भाई को/ने मारा
गुरु को/ने पूछा	रात को/में यह हुआ।
बहू को/ने रोका	

ऐसे ही शब्दों का तिर्यक् बहुवचन रूप **-ओं** जोड़ने से बनता है; जैसे

घरों में/से गये	भाइयों को/ने मारा
गुरुओं को/ने पूछा	रातों को/में यह हुआ।
बहुओं को/ने रोका	

टिप्पणी—भाई की ई का ह्रस्व होना और इ के बाद य का आना, तथा **बहू** के ऊ का ह्रस्व हो जाना पहले बताया जा चुका है। देखिए वर्तनी के अन्तर्गत।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

परसर्ग—कारक-चिह्नों को ही परसर्ग कहा गया है। पर का अर्थ है पीछे, सर्ग का अर्थ जोड़। ये चिह्न या स्वतंत्र शब्द संज्ञा और सर्वनाम के पीछे जुड़ते हैं, इसीलिए परसर्ग कहे जाते हैं।

यह अभी कहा गया है कि कारक क्रिया से सम्बन्ध जोड़ता है। इसलिए इस विषय की चर्चा क्रिया के उपरान्त की जायगी।

इस समय इतना याद रहे कि कारक और उनके परसर्ग निम्नलिखित हैं—

कारक	परसर्ग
कर्ता—क्रिया का सम्पादन करनेवाला	: -०, ने; लड़का गाया, लड़के ने मारा
कर्म—क्रिया का प्रभाव जिस पर पड़े	: -०, को; मैं ने रोटी खाई, मैंने राम को मारा
करण—क्रिया का सम्पादन जिस वस्तु के द्वारा हो	: -से; चाकू से काटा
सम्प्रदान—क्रिया जिसके लिए हो	: -को, के लिए; लड़कों को/के लिए रुपये दिए।
अपादान—क्रिया जिससे निकले	: से; पेड़ से गिर पड़ा। ।
सम्बन्ध—क्रिया से भिन्न के साथ संबंध	: -का/के/की; रामका बेटा
अधिकरण—क्रिया का आधार	: -में, पर; घर में या सड़क पर बैठा है।

ये परसर्ग कई अर्थ देते हैं। इनकी विस्तृत चर्चा के लिए देखिए पृ० २७१।

सर्वनाम की कोटियाँ

हमने सर्वनाम की तीन कोटियाँ बतायी हैं—वचन, पुरुष और कारक। सर्वनामों में लिंगभेद नहीं होता।

सर्वनाम के दो वचन और तीन पुरुष होते हैं। कारक वही हैं जो

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

संज्ञा के हैं। बोवलनेवाले को **उत्तम पुरुष** कहते हैं—बोलनेवाला 'मैं', बहुवचन 'हम'। जिससे बोला जाय उसे **मध्यम पुरुष** कहते हैं—'तू', बहुवचन 'तुम', आदर में 'आप'। जिस अन्य व्यक्ति या वस्तु के विषय में बात की जाय, उसे **अन्य पुरुष** कहते हैं। इसके लिए बहुत से शब्द हैं, इनके वचन का भी ध्यान रहे—

एक वचन	बहुवचन		एकवचन	बहुवचन	
वह	वे	निश्चय	जो	जो	संबंध
यह	ये				
कौन	कौन	प्रश्न	कोई	कोई	अनिश्चय
क्या	क्या		कुछ	कुछ	

वचन और पुरुष की दृष्टि से तो सर्वनाम सरल हैं, किन्तु कारक-रचना में थोड़ी जटिलता है। इस रूप का ध्यान रहे—

उत्तम पुरुष

एकव०—कर्ता मैं, मैंने; से, को, में, पर के साथ तिर्यक् रूप मुझ, मुझसे, मुझको, मुझमें, मुझपर; कर्म और सम्प्रदान **मुझे** (अतिरिक्त रूप); सम्बन्ध **मेरा**; सम्प्रदान **मेरे लिए**।

बहुव०—कर्ता **हम**; ने, को, से, में, पर के साथ तिर्यक् रूप भी **हम**—हमने, हमको, हमसे, हममें, हमपर; कर्म और सम्प्रदान **हमें** (अतिरिक्त रूप); सम्बन्ध **हमारा**; सम्प्रदान **हमारे लिए**।

मध्यम पुरुष—पूरी तरह उत्तम पुरुष के अनुकूल।

एकवचन—कर्ता **तू, तूने**; को, से, में, पर के साथ तिर्यक् रूप **तुझ**; कर्म और सम्प्रदान **तुझे** (अतिरिक्त रूप); सम्बन्ध **तेरा**; सम्प्रदान **तेरे लिए**।

बहुव०—कर्ता **तुम**; ने, को, से, में, पर के साथ तिर्यक् रूप भी **तुम**;

---

*सब बहुवचन सर्वनाम एक व्यक्ति के लिए प्रयुक्त हो सकते हैं किन्तु उनका प्रयोग बहुवचन में रहता है—अर्थ भले ही एकवचन होता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कर्म और सम्प्रदान **तुम्हें** (अतिरिक्त रूप); सम्बन्ध **तुम्हारा**; सम्प्रदान **तुम्हारे लिए**।

टिप्पणी—ये जो अतिरिक्त रूप हैं—मुझे, हमें, तुझे, तुम्हें—वे महत्त्वपूर्ण हैं। इनका प्रयोग मुझको, हमको, तुझको, तुमको के विकल्प में होता है। ये रूप अन्य सर्वनामों में भी चलते हैं—

अन्य पुरुष

वह से एकव० **उसे**, बहुव० **उन्हें**

यह से एकव० **इसे**, बहुव० **इन्हें**

जो से एकव० **जिसे**, बहुव० **जिन्हें**

क्या/कौन से एकव० **किसे**, बहुव० **किन्हें**

कोई से एकव० **किसी**, बहुव० **किन्हीं**

कुछ का ऐसा कोई रूप नहीं होता। अन्य पुरुष के शेष रूप आसान हैं।

तिर्यक्—एकवचन

वह का तिर्यक् **उस**, जैसे उसने, उसको, उससे, उसका, उसमें, . . .।

यह का तिर्यक् **इस**, जैसे इसने, इसको, इससे, इसका, इत्यादि।

जो का तिर्यक् **जिस**, जैसे जिसने, जिसको, जिसमें, जिसके लिए . .।

कौन/क्या का तिर्यक् **किस**, जैसे किसने, किसको, किससे, किस पर. .।

कोई का तिर्यक् किसी, जैसे किसी ने, किसी का, किसी से. . . .।

कुछ अपरिवर्तित रहता है। यह वस्तुओं के लिए एकवचन और बहुवचन दोनों में, तथा प्राणियों के लिए केवल बहुवचन में, प्रयुक्त होता है।

आप भी अपरिवर्तित रहता है।

बहुवचन

वे, तर्यक् रूप **उन**; जैसे उनका, उनसे, उनमें, उनके लिए, . . .।

ये, तर्यक् रूप **इन**; जैसे इनका, इनको, इन पर. . .।

जो, तर्यक् रूप **जिन**; जैसे जिनका, जिनके लिए, जिनसे, इत्यादि।

क्या/कौन, तिर्यक् रूप **किन**; जसे किनको, किनमें, किन पर, इत्यादि।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कोई, तिर्यक् रूप **किन्हीं**; जैसे किन्हीं का, किन्हीं से . . .।

टिप्पणी—**किन्हीं**=किन ही। इसी तरह **इन्हीं, उन्हीं, जिन्हीं** रूप भी बनते हैं। एकवचन में कोई=कौन ही। इससे किसी=किस ही। इसी तरह **उसी, इसी** भी बनते हैं।

विशेषण की कोटियाँ

विशेषण के विकार या रूपान्तर बहुत सरल हैं।

लिंग और वचन और कारक—जिस विशेषण पद के अन्त में **-आ** होता है, जैसे **अच्छा, नीला, बहरा** आदि। उसका रूप स्त्रीलिंग में ईकारान्त हो जाता है। इस प्रकार **अच्छी, नीली, बहरी** आदि।

ऐसे पदों के -आ का -ए करने से बहुवचन पुल्लिग हो जाता है—**अच्छे, नीले, बहरे**।

स्त्रीलिंग विशेषण का बहुवचन में वही रूप बना रहता है। उदाहरण—

छोटी लड़की—**छोटी** लड़कियां   नीली साड़ी—**नीली** साड़ियाँ
काली घटा—**काली** घटाएँ   भद्दी बात—**भद्दी** बातें।

संज्ञा के साथ कारक-चिह्न या परसर्ग लगने से पहले तिर्यक् रूप में केवल आकारान्त विशेषण प्रभावित होता है, अर्थात् पुल्लिग। उसका तिर्यक् रूप **-ए** होता है (देखिए आकारान्त संज्ञा में भी **लड़का** से **लड़के ने/को/से**), और यह रूप एकवचन तथा बहुवचन में समान रहता है। स्त्रीलिंग विशेषण सब स्थितियों में अपरिर्वातित रहता है।

इस प्रकार आकारान्त विशेषण विकारी हैं, शेष अविकारी हैं। उदाहरण—

पुल्लिग एकव०	बहुव०
मूल—अच्छा घोड़ा	अच्छे घोड़े
तिर्यक्—अच्छे घोड़े से/में/को	अच्छे घोडों/से/में/को
अविकारी या मूल—तेज़ घोड़ा	तेज़ घोड़
विकृत या तिर्यक्—तेज़ घोड़े ने/से	तेज़ घोड़ों ने/से।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ध्यान से देखें तो 'अच्छा' के चार प्रयोगों में दो ही रूप हैं—**अच्छा** और **अच्छे**। 'तेज़' का रूप वही बना रहता है क्योंकि यह विशेषणपद आकारान्त नहीं है।

स्त्रीलिंग	एकव०	बहुव०
मूल या **अविकृत**	काली घोड़ी	काली घोड़ियाँ
तिर्यक्	काली घोड़ी से/में/को	काली घोड़ियों से/में/को
मूल या **अविकृत**	तेज़ घोड़ी	तेज़ घोड़ियाँ
तिर्यक्	तेज़ घोड़ी ने/से	तेज़ घोड़ियों ने/से।

यहाँ पर न 'काली' में कोई और विकार आया, न 'तेज़' में। सब प्रयोगों में एक ही रूप बना रहा है।

विशेषण की चौथी कोटि है तुलनावस्था। संस्कृत शब्दों में **-तर**, **-तम** प्रत्यय लगते हैं; और इनका प्रयोग हिन्दी में भी बना हुआ है; किन्तु संस्कृत में दो और प्रत्यय भी थे, **-ईयस** और **-इष्ठ**। इनमें पहला तो लुप्त ही हो गया, दूसरा रूप अंशों में बना है, जैसे **श्रेष्ठ** (सबसे अच्छा), **कनिष्ठ** (सबसे छोटा), **बलिष्ठ** (सबसे बलवान्), **घनिष्ठ** (सबसे घना)।

-तर, **-तम** के उदाहरण अनेकों हैं, जैसे—

चपलतर, चपलतम	उच्चतर, उच्चतम
प्राचीनतर, प्राचीनतम	अधिकतर, अधिकतम
गूढ़तर, गूढ़तम	सुन्दरतर, सुन्दरतम।

हिन्दी में तुलनावस्था बताने का ढंग बहुत सरल है। रूप में कोई विशेष परिवर्तन नहीं होता।

वह उससे सुंदर/अच्छा है।	तुम सबसे अच्छे/सुंदर हो।
वह इससे छोटा/तेज़ है।	हम उन सबसे बड़े हैं।

कभी-कभी **अधिक/ज़्यादा/बहुत, और** अथवा **कम** शब्द बढ़ाकर भी काम लिया जाता है; जैसे—वह उससे अधिक/कम शूरवीर है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

'सबसे छोटा' आदि कहने का एक और ढंग भी है—**छोटे से छोटा, बड़े से बड़ा, ऊँचे से ऊँचा।**

क्रिया की कोटियाँ

१. क्रिया का **लिंग** भी विशेषण की तरह रूपांतरित होता है, अर्थात् जो रूप पुल्लिग में आकारान्त हैं, वे स्त्रीलिंग में ईकारान्त होते हैं। दूसरे रूप वैसे के वैसे बने रहते हैं। उदाहरण—

	वह जाता है	वह जाती है
	वह गया था	वह गयी थी
	वह जायगा	वह जायगी
किन्तु	वह लड़का जाय	वह लड़की जाय
	मैं जाऊँ	मैं जाऊँ
	हम लड़के जायँ	हम लड़कियाँ जायँ।

२. संज्ञा के अनुसार क्रिया के **वचन** भी बदल जाते हैं। जैसे

एकव॰ लड़का खेलता है; लड़की खेलती है।

बहुव॰ लड़के खेलते हैं; लड़कियाँ खेलती हैं।

एकव॰ मैं जाऊँ; तू जा; वह जाय।

बहुव॰ हम जायँ; तुम जाओ; वे जायँ।

एकव॰ घोड़ा खाता रहता था; घोड़ी गयी।

बहुव॰ घोड़े खाते रहते थे; घोड़ियाँ गयीं।

अधिक जानकारी के लिए देखें अगले अध्याय में 'अन्वय' के अन्तर्गत।

३. **पुरुष** तीन हैं। उनके अनुसार आकारान्त रूप तो परिवर्तित नहीं होते, किन्तु दूसरे क्रियारूपों में विकार आ जाता है। उदाहरण–

(क).मैं गया	**मैं खाता**	**मैं खाऊँगा**
तू गया	**तू खाता**	**तू खायगा**
वह गया	**वह खाता**	**वह खायगा**

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(ख) मैं जाऊँ

तू जा/जाय

वह जाय।

बहुवचन में भी यही नियम है। बहुवचन में आकारान्त रूप एकारान्त हो जाता है, किन्तु पुरुष के अनुसार उनमें रूपभेद नहीं होता। उदाहरण

हम खाते	हम गये	हम जायँगे
तुम खाते	तुम गये	तुम जाओगे
वे खाते	वे गये	वे जायँगे।

जो क्रियारूप आकारान्त नहीं होते, उनके बहुवचन में भी पुरुष के अनुसार परिवर्तन होता है। जैसे—

हम जायँ

तुम जाओ

वे जायँ।

४. **वाच्य** क्रिया का वह रूप है जिससे जाना जाय कि क्रिया का मुख्य विषय कर्ता है या कर्म या भाव। जैसे—

राम पत्र पढ़ता है।—**कर्तृवाच्य**।

मुझ से पत्र पढ़ा जाता है।—**कर्मवाच्य**।

यहाँ पढ़ा नहीं जाता।—**भाववाच्य**।

पहले वाक्य में क्रिया का संबंध कर्ता (राम) से है; दूसरे में कर्म (पत्र) से; और तीसरे में न राम से, न पत्र से, बल्कि भाव से है कि पढ़ा नहीं जाता—किसी से कोई पत्रादि।

कर्तृवाच्य में सकर्मक और अकर्मक दोनों तरह की क्रियाएँ हो सकती हैं; कर्म वाच्य में केवल सकर्मक क्रियाएँ और भाव वाच्य में अकर्मक क्रियाएँ। भाववाच्य क्रिया सदा पुल्लिग एक वचन रूप में रहती है। तुलना कीजिए।

लड़का खाना खाता है। लड़की गाती है।—**कर्तृवाच्य**

लड़के से पत्र लिखा गया। लड़के से चिट्ठी लिखी गयी।—**कर्मवाच्य**

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उधर खेला जाता है। मुझ से बैठा नहीं गया।—भाववाच्य

रूप की दृष्टि से कर्मवाच्य और भाववाच्य में कोई विशेष अंतर नहीं है—अर्थ का अन्तर है; और कर्म के होने या न होने का अन्तर है।

वाच्य-परिवर्तन

कर्तृवाच्य की मुख्य क्रिया को सामान्य भूतकाल में बदल लो, मुख्य क्रिया के काल को 'जाना' क्रिया में ले आओ, और लिंग, वचन और पुरुष को कर्म के अनुसार कर दो। जैसे—

लिखता है का वाच्य-परिवर्तन करने के लिए 'लिखता' का भूतकाल 'लिखा' और 'जाना' को 'लिखता है' के अनुरूप 'जाता है' कर दो। अब यदि कर्म है 'पत्र' तो वाक्य हुआ **पत्र लिखा जाता है**। यदि कर्म है 'चिट्ठी' तो वाक्य हुआ **चिट्ठी लिखी जाती है**। बहुवचन 'चिट्ठियाँ' हो तो **चिट्ठियाँ लिखी जाती हैं**। कर्ता के साथ 'से', 'के द्वारा' लगाकर बदल दो। अन्य उदाहरण—

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
राम ने पत्र लिखे।	राम से पत्र लिखे गये।
बढ़ई लकड़ी चीरता है।	बढ़ई से लकड़ी चीरी जाती है।
सुरेश मिठाई खायगा।	सुरेश से मिठाई खायी जायगी।
वे पुस्तकें लाये।	उनसे पुस्तकें लायी गयीं।
हम प्रतिदिन मिठाइयाँ खाते थे।	हम से प्रतिदिन मिठाइयाँ खायी जाती थीं।
माली फल तोड़ लाया।	माली से फल तोड़ लाया गया।

भाववाच्य बहुधा आज्ञा अथवा शक्तता अथवा अशक्तता के अर्थ में प्रयुक्त होता है। देखिए

मुझसे गाया नहीं जाता। यहाँ गाया नहीं जाता।

अब रोगी से बैठा जाता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

काल तथा भाव

काल तीन हैं—वर्तमान, भूत, भविष्यत्।

भाव या अर्थ कई हैं, किन्तु हिन्दी में तीन भावों—निश्चयार्थ, संभावनार्थ और आज्ञार्थ—के अनुसार रूप-रचना होती है। कथन, वर्णन, प्रश्न आदि निश्चय के अन्तर्गत आते हैं। वस्तुत: निश्चयार्थ का रूप कालों का ही रूप है, जैसे **वह पढ़ता है, उसने पत्र पढ़ा, वह कहाँ जायगा**?

आज्ञार्थ से आदेश सूचित होता है। एकवचन में धातु का रूप और बहुवचन में उस रूप के साथ **-ओ** जोड़ा जाता है। उदाहरण—

एकव०—तू जा, तू देख, तू खेल, तू पी, तू सुन, तू बोल।

बहुव०—तुम जाओ, तुम देखो, तुम खेलो, तुम पियो, तुम सुनो।

'होना' का बहुवचन आज्ञार्थ 'हो', 'देना' का 'दो' और 'लेना' का 'लो' होता है।

संज्ञार्थक क्रिया भी आज्ञा के अर्थ में प्रयुक्त होती है; जैसे, **मत जाना, कल यहाँ आना**, ज़रा मेरी बात सुनना।

आदर दिखाने के लिए—**-इये**, **-इयेगा** जोड़ा जाता है; जैसे, **उठिये, जाइये, लाइये; उठियेगा, जाइयेगा, लाइयेगा**; इत्यादि।

निम्नलिखित रूपों में **-ज-** का आदेश उल्लेखनीय है:—

होना से हूजिये, हूजियेगा   करना से कीजिये, कीजियेगा
लेना से लीजिये, लीजियेगा   देना से दीजिये, दीजियेगा
पीना से पीजिये, पीजियेगा।

यह रूप प्रार्थना के लिए विशेषत: प्रयुक्त होता है। इनके नकारात्मक रूप **न** या **मत** लगाने से बनते हैं; जैसे—

न जा, मत जा   न जाओ, मत जाओ
न जाइये, मत जाइये   न जाइयेगा, मत जाइयेगा
न जाना, मत जाना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आज्ञार्थ रूपों में लिंग के कारण विकार नहीं होता।

संभावनार्थ से संभावना के अतिरिक्त अनुमान, इच्छा, कर्तव्य आदि का बोध होता है। संभावनार्थ के रूप काल, पुरुष और वचन के अनुसार बदलते हैं—

भविष्यत् संभावनार्थ में लिंगभेद नहीं है।

	एकव०	बहुव०
उत्तम पुरुष	मैं करूँ	हम करें
मध्यम पुरुष	तू करे	तुम करो
अन्य पुरुष	वह करे	वे करें।

वर्तमान संभावनार्थ में लिंगभेद तो है, पुरुष-भेद नहीं है।

उत्तम पु०	मैं बोलता/बोलती	हम बोलते/बोलतीं
मध्यम पु०	तू बोलता/बोलती	हम बोलते/बोलतीं
अन्य पु०	वह बोलता/बोलती	वे बोलते/बोलतीं।

भूत संभावनार्थ में मुख्य क्रिया में लिंगभेद होता है और सहायक क्रिया में पुरुष-भेद होता है।

उत्तम पु०	मैं गया होऊँ	हम गये हों
मध्यम पु०	तू गया हो	तुम गये हो
अन्य पु०	वह गया हो	वे गये हों।

निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़िए—

आप बताइये।

देखिए, तकल्लुफ़ न जीजिए।

जब बैंक से रुपया लें तो नोट गिन लें।

आपका कर्तव्य है कि सबसे पूछ लें।

तुम्हारा कर्तव्य था कि सबसे पूछ लेते।

मैंने उससे कहा कि यह काम कर लो।

किसी का साहस नहीं है कि वहाँ जाये।

यदि आप आ जायें तो अच्छा हो।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आपको चाहिए कि उनसे पूछ लें।

जो विद्यार्थी जीवन में सफल होना चाहें वे अपनी भाषा पर ध्यान दें।

मैं चाहता हूँ कि वह छुट्टी ले ले।

जाओ, अपना काम करो।

जाओ, अपना-अपना काम करो।

मैं चाहता हूँ कि चाय पी जाये।

काल

१. भूतकाल के रूप भूत कृदन्त से बनते हैं। इस काल की क्रिया में अकर्मक और सकर्मक होने से प्रयोग-भेद होता है। अकर्मक क्रिया का रूप कर्ता के लिंग और वचन के अनुसार होता है; जैसे—

एकव० पुल्लिग—मैं गया, वह गया, तू गया।

एकव० स्त्रीलिंग—मैं गयी, वह गयी, तू गयी।

वहुव० पुल्लिग—हम गये, तुम गये, वे गये।

वहुव० स्त्रीलिंग—हम गयीं, तुम गयीं, वे गयीं।

यदि क्रिया सकर्मक हो तो उसका रूप कर्म के लिंग और वचन के अनुसार होता है, जैसे

मैंने, तूने, उसने, हमने, उन्होंने घोड़ा देखा।

" " " " " " घोड़ी देखी।

" " " " " " घोड़े देखे।

" " " " " " घोड़ियाँ देखीं।

किन्तु कर्म के साथ **को** परसर्ग लगा हो, तो क्रिया सदा एकवचन पुल्लिग रूप में होगी; जैसे

मैंने/हमने......घोड़े को/विल्ली को/घोड़ियों को/घोड़ों को देखा।

क्रिया के उपर्युक्त भूतकालिक रूपों के साथ सहायक क्रिया हूँ, है, हो, हैं; अथवा था, थे, थी, थीं; हूँगा, होगा, होंगे, होंगी, हूँगी आदि लगाकर भूतकाल के दूसरे भेदों के रूप सिद्ध होते हैं। उदाहरण—

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वह आया है।	तू गयी थी।
मैं गया हूँ।	तुम गयी थीं।
मैं गया हूँगा।	हम गये होंगे।
मैं गयी हूँगी।	हम गयी होंगी।

मैंने, उसने, तूने अनार खाया था या लीची खायी थी, या लीचियाँ खायी थीं।

निम्नलिखित वाक्यों को अच्छी तरह पढ़ लीजिए:—

उसने हल जोता। उन्होंने चिट्ठी लिखी।
लड़की ने एक आम खाया है।
दो लड़कों ने चार रुपये लिये थे।
लड़के ने यह काम किया होगा।
बाप ने बच्ची को देखा।
हमने सबको बुलाया था।
विद्यार्थी ने पेंसिलें, कापियाँ और किताबें खरीद ली थीं।
उसने कुछ बातें कहीं।
लड़की कमरे में आयी और बैठ गयी।
पत्र में ये सब बातें लिखी गयी थीं।
अभी-अभी एक गाड़ी भेजी गयी है।
इधर बहुत मकान बनाये जा रहे हैं।

२. वर्तमान काल के रूप वर्तमान कृदन्त (-ता रूप) से बनाये जाते हैं। इनमें कृदन्त का लिंग और वचन के अनुसार और सहायक क्रिया का वचन और पुरुष के अनुसार प्रयोग-भेद होता है।

	पुंल्लिग एकव०	बहुव०	स्त्रीलिंग एकव०	बहुव०
उत्तम पुरुष	मैं जाता हूँ	हम जाते हैं	मैं जाती हूँ	हम जाती हैं
मध्यम पुरुष	तू जाता है	तुम जाते हो	तू जाती है	तुम जाती हो
अन्य पुरुष	वह जाता है	वे जाते हैं	वह जाती है	वे जाती हैं।

सहायक क्रिया बदलने से अन्य क्रिया-भेद बनते हैं; जैसे—

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मैं/तू/वह बोलता था। हम/तुम/वे बोलते थे।
मैं/तू/वह देखता होता। हम/तुम/वे देखते होते।
मैं/तू/वह करता रहा। हम/तुम/वे करते रहे।
मैं करता रहूँगा। तू करता रहेगा। वह करता रहेगा।
हम करते रहेंगे। तुम करते रहोगे। वे करते रहेंगे।
मैं देखता हूँगा। तू देखता होगा। वह देखता होगा।
हम देखते होंगे। तुम देखते होगे। वे देखते होंगे।

इसी प्रकार स्त्रीलिंग में भी रूप बदलते हैं। स्त्रीलिंग में एकव० -आ और बहुव० -ए के स्थान पर -ई करना होता है। जैसे—

मैं बोलती थी, वे देखती होंगी। हम करती रहेंगी।

३. भविष्यत् काल के रूप संभावनार्थ रूपों की सहायता से बनते हैं। इनमें लिंग, वचन, पुरुष तीनों के अनुसार प्रयोग-भेद होता है। जैसे—

पुल्लिग	एकव०	बहुव०	स्त्रीलिंग एकव०	बहुव०
उत्तम पु०	जाऊँगा	जाएँगे	जाऊँगी	जाएँगी
मध्यम पु०	जाएगा	जाओगे	जाएगी	जाओगी
अन्य पु०	जाएगा	जाएँगे	जाएगी	जाएँगी।

निम्नलिखित वाक्यों पर ध्यान दीजिए—

ये औरतें काम करती हैं।
ये औरतें काम नहीं करतीं।
पहले मेरा भाई गाँव में रहता था।
वह आजकल शहर में रहता है।
जो बोएगा सो काटेगा।
वह सब कुछ जानता है।
वह सब कुछ जानता होगा।
मेरी बेटी अभी आती होगी।
शायद ग्यारह बजे होंगे।
अगर वह यह तमाशा न देखता।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अगर वह यह तमाशा न देखता होता।
मुझी से सारी बात कही जाती है।
मुझसे ऐसी रोटी नहीं खायी जाती।

अकर्मक-सकर्मक क्रियाएँ

अकर्मक	सकर्मक	अकर्मक	सकर्मक
अड़ना	अड़ाना	घिसटना	घसीटना
उड़ना	उड़ाना	घूमना	घुमाना
उखड़ना	उखाड़ना	चढ़ना	चढ़ाना
उछलना	उछालना	चलना	चलाना
उठना	उठाना	चिढ़ना	चिढ़ाना
उतरना	उतारना	चिरना	चीरना
उधड़ना	उधेड़ना	चुभना	चुभोना
उबलना	उबालना	छपना	छापना
उलझना	उलझाना	छँटना	छाँटना
कटना	काटना	छिड़ना	छेड़ना
खपना	खपाना	छिलना	छीलना
खसकना	खसकाना	छिपना	छिपाना
खिंचना	खींचना	छूटना	छोड़ना
खिलना	खिलाना	जमना	जमाना
खीझना	खिझाना	जगना-जागना	जगाना
खुलना	खोलना	जलना	जलाना
खेलना	खिलाना	जुड़ना	जोड़ना
गड़ना	गाड़ना	जुतना	जोतना
गलना	गलाना	झड़ना	झाड़ना
गिरना	गिराना	झुकना	झुकाना
घटना	घटाना	टलना	टालना

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अकर्मक	सकर्मक	अकर्मक	सकर्मक
टूटना	तोड़ना	बढ़ना	बढ़ाना
ठहरना	ठहराना	बनना	बनाना
डरना	डराना	बसना	बसाना
डूबना	डुबोना	बहना	बहाना
ढलना	ढालना	बिकना	बेचना
तनना	तानना	बिगड़ना	बिगाड़ना
तरसना	तरसाना	बिखरना	बिखेरना
तपना	तपाना	बिछना	बिछाना
तुलना	तोलना	बीतना	बिताना
थमना	थामना	बुझना	बुझाना
दबना	दबाना	बोलना	बुलाना
देखना	दिखाना	भागना	भगाना
धुलना	धोना	भीगना	भिगोना
निकलना	निकालना	मरना	मारना
निभना	निभाना	मिटना	मिटाना
पचना	पचाना	मिलना	मिलाना
पड़ना	डालना	मुड़ना	मोड़ना
पहुँचना	पहुँचाना	रहना	रखना
पिटना	पीटना	लुटना	लूटना
पिसना	पीसना	लेटना	लिटाना
फँसना	फँसाना	सँवरना	सँवारना
फटना	फाड़ना	सजना	सजाना
फिरना	फिराना	सिकुड़ना	सिकोड़ना
फूटना	फोड़ना	सूखना	सुखाना
फूलना	फुलाना	सुनना	सुनाना
फैलना	फैलाना	हटना	हटाना
बँधना	बाँधना	हारना	हराना
बँटना	बाँटना	हिलना	हिलाना
बजना	बजाना		

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

७. प्रेरणार्थक क्रियाएँ

निम्नलिखित वाक्यों का अन्तर देखिए—

गोविंद जग उठा।

गोविंद ने उसे जगा दिया।

गोविंद ने उसे जगवा दिया।

तीनों वाक्यों में कर्ता एक ही है—गोविंद। किन्तु पहले वाक्य में गोविंद स्वयं जग जाता है, दूसरे में जगता कोई और है पर गोविंद उसे किसी प्रकार की प्रेरणा देता है जिससे वह अन्य पुरुष जग उठता है, और तीसरे वाक्य में गोविन्द किसी को जगने की प्रेरणा नहीं देता बल्कि किसी तीसरे व्यक्ति को प्रेरित करता है कि वह इस पुरुष को जगा दे। अतः **जगाना** और **जगवाना** दोनों में गोविन्द की प्रेरणा है। ऐसी क्रियाओं को प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं। सभी प्रेरणार्थक क्रियाएँ सकर्मक होती हैं। पिछले दो-तीन पृष्ठों पर जो सूचियाँ दी गयी हैं, उनमें कई-एक में प्रेरणा का आभास मिलता है।

बहुधा धातुओं के दो-दो प्रेरणार्थक रूप होते हैं—प्रथम में -आ, जैसे गिरना से गिराना; और द्वितीय में -वा-, जैसे गिरवाना।

अन्य उदाहरण—

१. धातु में -अ- (ह्रस्व) बीच में—

सामान्य रूप	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक
करना	कराना	करवाना
गलना	गलाना	गलवाना
चरना	चराना	चरवाना
चमकना	चमकाना	चमकवाना
पकड़ना	पकड़ाना	पकड़वाना
पढ़ना	पढ़ाना	पढ़वाना
समझना	समझाना	समझवाना
हटना	हटाना	हटवाना

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

२. धातु में -आ- (दीर्घ) बीच में—

जागना	जगाना	जगवाना
तारना	तराना	तरवाना
नाचना	नचाना	नचवाना
काटना	कटाना	कटवाना
छापना	छपाना	छपवाना
नापना	नपाना	नपवाना

३. धातु में -इ- (ह्रस्व) बीच में—

(क) घिसना	घिसाना	घिसवाना
खिलना	खिलाना	खिलवाना
गिनना	गिनाना	गिनवाना
लिपटना	लिपटाना	लिपटवाना
फिरना	फिराना	फिरवाना
मिटना	मिटाना	मिटवाना
भिड़ना	भिड़ाना	भिड़वाना
लिखना	लिखाना	लिखवाना
हिलना	हिलाना	हिलवाना
(ख) छिदना	छेदना/छिदाना	छिदवाना
सिकना	सेंकना/सिकाना	सिकवाना
मिटना	मेटना/मिटाना	मिटवाना
सिमटना	समेटना	सिमटवाना
(ग) पिसना	पीसना	पिसवाना
पिटना	पीटना	पिटवाना
छिनना	छीनना	छिनवाना
चिरना	चीरना/चिराना	चिरवाना
खिंचना	खींचना	खिंचवाना

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

४. धातु में -ई- (दीर्घ) बीच में—

रीझना	रिझाना	रिझवाना
बीतना	बिताना	बितवाना
भीगना	भिगोना	भिगवाना
सीखना	सिखाना	सिखवाना
जीतना	जिताना	जितवाना

५. धातु में -आ, ई, ए ओ (अन्त में)—

(क) खाना	खिलाना	खिलवाना
देना	दिलाना	दिलवाना
सोना	सुलाना	सुलवाना
पीना	पिलाना	पिलवाना
जीना	जिलाना	जिलवाना
सीना	सिलाना	सिलवाना
ढोना	ढुलाना	ढुलवाना
रोना	रुलाना	रुलवाना
(ख) गाना		गवाना
लेना		लिवाना

सूचना—आना, कुम्हलाना, गरजना, घिघियाना, टकराना, तुतलाना, पछताना, पड़ना, सकना, लँगड़ाना, सिसकना, होना, पाना से प्रेरणार्थक क्रिया नहीं बनती।

६. धातु में -उ- (ह्रस्व) बीच में—

घुलना	घोलना/घुलाना	घुलवाना
घुटना	घोटना/घुटाना	घुटवाना
डुलना	डोलना/डुलाना	डुलवाना
खुलना	खोलना/खुलाना	खुलवाना
मुड़ना	मोड़ना/मुड़ाना	मुड़वाना
रुकना	रोकना/रुकाना	रुकवाना

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जुतना	जोतना/जुताना	जुतवाना
तुलना	तोलना/तुलाना	तुलवाना

सुनना से सुनाना, सुनवाना; लुटना से लुटाना, लुटवाना; लुढ़कना से लुढकाना, लुड़कवाना; धुलना से धुलाना, घुलवाना।

७. धातु में -ऊ- (दीर्घ) बीच में—

फूलना	फुलाना	फुलवाना
भूलना	भुलाना	भुलवाना
मूतना	मुताना	मुतवाना
सूखना	सुखाना	सुखवाना
कूदना	कुदाना	कुदवाना
चूसना	चुसाना	चुसवाना
झूलना	झुलाना	झुलवाना

डूबना से डुबोना/डुबाना, डुबवाना; टूटना से तोड़ना/ तुड़ाना, तुड़वाना।

८. बीच में -ए-, ऐ, ओ, औ—

खेलना	खिलाना	खिलवाना
खोदना	खुदाना	खुदवाना
घोंटना	घुटाना	घुटवाना
चौंकना	चौंकाना	चौंकवाना
दौड़ना	दौड़ाना	दौड़वाना
नोचना		नुचवाना
बैठना	बिठाना	बिठवाना
बोलना	बुलाना	बुलवाना
भेजना		भिजवाना
रोकना		रुकवाना
लौटना	लौटाना	लौटवाना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सब स्वरों में ह्रस्वता आ जाती है, किन्तु -औ- लिखाई में बना रहता है।

टिप्पणी—तुलना कीजिए पिघलना, पिघलाना, पिघलवाना; किन्तु निकलना, निकालना, निकलवाना; पकड़ना से पकड़ाना किन्तु बिगड़ना से बिगाड़ना।

८. नामधातुएँ

संज्ञा, विशेषण या सर्वनाम से बननेवाली धातु को नामधातु कहते हैं। जैसे—

अपना	से	अपनाना	दाग	से	दागना
कड़ुआ	से	कड़ुआना	दुख	से	दुखाना
कफ़न	से	कफ़नाना	दोहरा	से	दोहराना
गड़बड़	से	गड़बड़ाना	धुआँ	से	धुआँना
खट्टा	से	खटाना	नाक	से	नकियाना
चक्कर	से	चकराना	पत्थर	से	पथराना
चिकना	से	चिकनाना	बात	से	बताना
गाँठ	से	गठियाना	बूढ़ा	से	बुढ़ाना
गरम	से	गरमाना	लंगड़ा	से	लँगड़ाना
झूठ	से	झुठलाना	लात	से	लतियाना
टक्कर	से	टकराना	लालच	से	ललचाना
डकार	से	डकराना	शरम	से	शरमाना
थूक	से	थूकना	साठ	से	सठियाना
			हाथ	से	हथियाना।

९. संयुक्त क्रियाएँ

जो क्रिया किसी क्रिया अथवा संज्ञादि शब्द के साथ दूसरी क्रिया का योग करने से बनती है, उसे संयुक्त क्रिया कहते हैं। रचना के ऐसे उदाहरण निम्नलिखित हैं—

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

क्रिया और क्रिया—जा बैठना, सुना देना, करने लगना, करते जाना।

संज्ञा और क्रिया—आरंभ करना, विदा होना, मोल लेना, पता लगाना, दिखाई देना, घाटा पड़ना, डींग मारना, ध्यान रखना।

विशेषण और क्रिया—दूर पड़ना, मीठा लगना, नष्ट करना, बुरा होना।

क्रियाविशेषण और क्रिया—दूर हटना, आगे बढ़ना।

क्रिया और क्रिया के संयोग को थोड़े और विस्तार से समझने-समझाने की आवश्यकता है। निम्नलिखित अंगों का ध्यान रहे:—

१. धातु और क्रिया—रो उठा, पूछ बैठा, चढ़ आये, सुना दो, चल सकता है, देख लूँगा, कूद पड़ा, सो रहना, रख छोड़ना, चल निकला, फाड़ डाला। (असीम प्रयोग)

२. वर्तमान कृदन्त और क्रिया—पढ़ता रहा, लिखते नहीं बनता, लिखती जाती है, चलता रहता है। (सीमित प्रयोग)

३. भूत कृदन्त और क्रिया—चला जाता है, देखा करें, गिरी पड़ी थी, कहा करते हैं, सुना जाता है—(सीमित प्रयोग)

४. संज्ञार्थक क्रिया और क्रिया—जाना चाहता है, लेना चाहिए, सोना होगा, बोलना पड़ता है। करने लगता है, जाने दो, करने न पाया था। (सीमित प्रयोग)

सूचना—दो से अधिक क्रियाओं के संयोग भी पाये जाते हैं; जैसे, कर लेना चाहता हूँ। करना पड़ रहा है। उठा ले जा सकता है। समझा जाने लगा था। कर डाला जायगा। लाया जा चुका था। चला-फिरा जा सकता है। बोले चला जा रहा है।

अर्थ की दृष्टि से संयुक्त क्रिया के १३-१४ भेद किये जा सकते हैं।

१. आरम्भ-बोधक—'लगना' जोड़ने से—पानी बरसने लगा।

२. समाप्ति-बोधक—'चुकना', 'लेना', 'देना', और 'जाना' लगाने से—घर जल गया; काम कर दिया; पैसा पा लिया; वह खा चुका है।

३. आकस्मिकता-बोधक—'उठना', 'बैठना', 'पड़ना', 'डालना'

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

के योग से—वह बीच ही में बोल उठा—मैं कह बैठा, वह गिर पड़ी; काम कर डालो। 'डालना' से उग्रता का बोध भी होता है; जैसे, मार डाला, फोड़ डालो।

४. निरन्तरता-बोधक—'जाना', 'रहना' लगाने से—पानी बरसता रहा; वह कहता गया; तोता बोलता रहता है।

५. अभ्यास-बोधक—'करना' के योग से—वह पढ़ा करता है; मैं जाया करता था; तुम लिखा करते हो।

६. शक्यता-बोधक—'पाना', 'सकना' के योग से—मैं जा सकता था; वह पढ़ सकता है; मैं कर पाऊँगा।

७. अवकाश-बोधक—'पाना' के योग से—वह जाने न पाया।

तुलना कीजिए—जा न पाया और जाने न पाया।

८. अनिष्टता-बोधक—'खाना', 'मारना' लगाने से—उसे कुत्ते ने काट खाया; एक चिट्ठी लिख मारी।

९. इच्छाबोधक—'चाहना' लगाने से—मैं जाना चाहता हूँ।

१०. अनुमति-बोधक—'देना' लगाने से—मुझे जाने दो; उसे करने दिया गया।

तुलना कीजिए—चल दिया, चलने दिया।

११. आवश्यकता-बोधक—'पड़ना', 'होना' 'चाहिए' के योग से—यह काम करना पड़ेगा; उसे जाना चाहिए; उसे लेना होगा।

१२. क्रिया की द्विरुक्ति से व्यापार के क्रम अथवा अतिशय का बोध होता है, जैसे पढ़ते-पढ़ते सो गया; कहती-कहती चली गयी; चली-चली वहाँ जा पहुँची; बैठे-बैठे थक गया।

१३. संज्ञा आदि के साथ संयुक्त क्रिया में संज्ञा आदि का अर्थ प्रधान रहता है, जैसे अपना बनाना, आदर करना, भस्म होना, ढीला पड़ना।

अभ्यास

१. प्रयोग की दृष्टि से शब्दों के भेद बताओ, और प्रत्येक के दो उदाहरण दो।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

२. संज्ञा क्या है ? संज्ञा के भेद बताओ और प्रत्येक के दो उदाहरण लिखो।

३. सर्वनाम किसे कहते हैं ? उदाहरण दो।

४. विशेषण किसे कहते हैं ? विकारी विशेषण की क्या पहचान हैं ? उदाहरण देकर समझाओ।

५. अकर्मक और सकर्मक क्रिया में क्या अन्तर है ? उदाहरण देकर समझाओ।

६. अविकारी शब्दों के भेद बताओ और उदाहरण भी दो।

७. संज्ञा की रूप-रचना के आधार क्या-क्या हैं ?

८. क्रिया की व्याकरणिक कोटियों के नाम बताकर 'करना' क्रिया से सब के उदाहरण लिखो।

९. निम्नलिखित के आज्ञार्थ में रूप बनाओ—मिलना, सोना, करना, खाना, पिरोना।

१०. 'देना' से भविष्यत् संभावनार्थ, वर्तमान संभावनार्थ तथा भूत संभावनार्थ के रूप लिखो।

११. निम्नलिखित वाक्यों में क्रिया को भूतकाल में परिवर्तित करके लिखो—

(क) वह कहाँ जा रहा है ?
(ख) मैं घर जा पहुँचता हूँ।
(ग) तू अच्छा गाता है।
(घ) राम और श्याम आते हैं।
(ङ) एक आता है और एक जाता है।
(च) ऐसा तो नहीं होना चाहिए।
(छ) तुम पहली कक्षा में पढ़ते हो ना ?
(ज) राम खाना खाता है।

१२. निम्नलिखित से सकर्मक क्रिया-रूप बनाओ—

चुभना, घुलना, छूटना, जुड़ना, गिरना, चिरना, छँटना, देखना, पड़ना, पिसना, बीतना, भीगना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१३. निम्नलिखित से प्रथम और द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया-रूप बनाकर वाक्यों में प्रयुक्त करो—पकड़ना, छापना, फिरना, छिदना, छिनना, सीखना, जीना, ढोना, रुकना, भूलना, लुटना और दौड़ना।

१४. नामधातु क्या है? पाँच उदाहरण दो।

१५. रचना की दृष्टि से संयुक्त क्रिया के भेद बताकर एक-एक उदाहरण दो।

१६. अर्थ के आधार पर संयुक्त क्रिया के भेद बताकर एक-एक उदाहरण दो।

१७. निम्नलिखित वाक्यों में क्या दोष है? प्रत्येक को शुद्ध करके लिखो:—

(क) यह शब्द लोप हो गया।

(ख) सारी सम्पत्ति नाश हो गयी।

(ग) दूध में कौन पड़ गया?

(घ) उन्हों के पिता आये हैं।

(ङ) यह लोग क्या चाहते हैं?

(च) वह अब नहीं जीने सकता है।

(छ) किसी का साहस नहीं है कि वहाँ जायगा।

(ज) आपको चाहिए था कि आप उनको देख आयें।

(झ) वह खाना खा करके जायगा।

(ञ) आप कहाँ काम करते हो?

१८. निम्नलिखित को नकारात्मक वाक्यों में बदलो—

(क) मैं बस से होटल जाऊँगा।

(ख) वह दिन भर वहाँ रहता है।

(ग) कृपया भीतर आ जाइए।

(घ) जाओ और चार पान ले आओ।

(ङ) मैं कल सिनेमा देखना चाहता था।

(च) आप क्या खरीदना चाहते हैं?

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(छ) होटल के पास पान की एक दुकान है।

१९. क्रिया के सही रूप का प्रयोग करो—

(क) तुम अभी कहाँ (जाना)?

(ख) मैं सिनेमा (देखना) कर (लौटना)।

(ग) कल वह मेरे साथ (जाना) थी।

(घ) कल शाम तक आप से (मिलना)।

(ङ) मद्रासी लोग चावल बहुत (खाना)।

२०. नीचे दो स्तम्भों में शब्द दिये गये हैं। एक में संज्ञा शब्द हैं, दूसरे में विशेषण। जो विशेषण जिस संज्ञा के लिए उपयुक्त है, उसे साथ रखकर लिखो:—

एक मोटा	कपड़ा
दो दुबली	किताबें
बहुत सस्ता	साड़ी
खुला और हवादार	लड़का
तीन बढ़िया	औरतें
अच्छी और टिकाऊ	घर

२१. निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थानों को भरो:—

(क) मद्रास में वे....दिन रुकेंगे।

(ख)....आप के साथ जाना चाहते हैं।

(ग) वे वहाँ कुछ कपड़े....।

(घ) हम....से चौक जायँगी।

(ङ) तुम....क्यों पी रहे थे?

(च)....को सेब खाना चाहिए।

(छ) तीन....परीक्षा में असफल रहे।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अव्यय

इस अध्याय के आरम्भ में बताया गया था कि अविकारी शब्दों का वाक्य के अन्य शब्दों के प्रभाव से रूप नहीं बदलता। इन्हें अव्यय भी कहते हैं। ये चार प्रकार के होते हैं—क्रियाविशेषण, सम्बन्धसूचक, समुच्चयबोधक या योजक, और विस्मयादि बोधक। इनमें क्रियाविशेषण अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। रचना के अनुसार इनके कई भेद हैं—

(क) रूढ़ शब्द, जैसे आज, कल, सदा; यहाँ वहाँ, पीछे, ऊपर, दाहिने, बायें; ऐसे, कैसे, धीरे, अवश्य; बहुत, कम, इतना, जितना; कैसा, अच्छा, सुंदर आदि।

टिप्पणी—जो शब्द मूलतः विशेषण हैं, क्रियाविशेषण होने पर भी उनमें से आकारान्त शब्दों में लिंगभेद और वचन-भेद होता है। उदाहरण—

विशेषण	क्रियाविशेषण
वह लड़का अच्छा है।	वह लड़का अच्छा गाता है।
वह लड़की कैसी है?	मणि कैसी चमकती है?
	तारे कैसे चमकते हैं?

(ख) यौगिक शब्द, जैसे—

१. दो क्रियाविशेषणों के योग से—जहाँ-जहाँ, पीछे-पीछे, जब-जब, आजकल, कभी-कभी, जब कभी, आगे-पीछे, ऊपर-नीचे, इधर-उधर, जैसे-कैसे, इत्यादि।

२. संज्ञा के साथ उपसर्ग लगाकर—अनुदिन, यथाशक्ति, प्रतिवर्ष।

३. संज्ञा के साथ प्रत्यय लगाकर—विनयपूर्वक, आज्ञानुसार, विशेषतः।

४. संज्ञा की द्विरुक्ति से—घर-घर, घड़ी-घड़ी, बार-बार, जगह-जगह।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

५. संज्ञाओं के योग से—देश-विदेश, रात-दिन, सचमुच।

६. कृदन्तों की द्विरुक्ति से—चलते-चलते।

७. 'कर' के योग से—विशेषकर, जी लगाकर, एक-एक करके।

८. संज्ञा के साथ परसर्ग लगाकर—सहज में, मन से, नम्रता से।

अर्थ के अनुसार क्रियाविशेषण के पाँच भेद हैं—

१. **कालवाचक**—अब, कब, जब, तब, आज, कल, परसों, नरसों, सवेरे, तुरन्त, फिर, अभी, जभी, कभी, कभी-कभी, कभी-न-कभी, नित्य, सदा, पहले, पीछे, ज्योंही, त्यों ही, एक बार, पहली बार, कई बार, बार बार, घड़ी-घड़ी, प्रतिदिन, आजकल,जब तक, कब तक, जन्म भर, लगातार, निरन्तर, रातभर, दिन भर, क्षण भर, इतनी देर में, जब से, शीघ्र, जल्दी।

२. **स्थानवाचक**—यहाँ, वहाँ, कहाँ, जहाँ, यहीं, वहीं, जहाँ-कहीं, जहाँ-तहाँ, जहाँ का तहाँ, कहीं-कहीं, कहीं न कहीं, सर्वत्र, हर जगह, अन्यत्र, निकट, पास, ऊपर, नीचे, ऊपर-नीचे, सामने, आगे, पीछे, साथ, बाहर, भीतर।

३. **दिशावाचक**—इधर, उधर, किधर, जिधर, दाहिने, बायें, इस ओर/तरफ़, उस ओर, चारों ओर, दूर, परे, आर-पार, इधर-उधर।

४. **रीतिवाचक**—इस प्रकार, ऐसे, उस प्रकार, वैसे, किस प्रकार, कैसे, जिस प्रकार, जैसे, किसी प्रकार, कैसे ही, यथा, मानों, सहसा, धीरे, धीरे-धीरे, अचानक, व्यर्थ, साक्षात्, सहज में, पैदल, मन से, ध्यानपूर्वक, जलदी, जलदी-जलदी, एकाएक, यथाशक्ति, अपने आप, ज्यों-ज्यों, ज्यों-त्यों करके, साफ़-साफ़, ठीक-ठीक, समयानुसार, अवश्य, ज़रूर, सही, ठीक, विशेषकर, यथार्थतः, कदाचित्, संभवतः, सचमुच, यथासंभव, क्यों, इसलिए, न, नहीं, मत, ही, भी, तो।

५. **परिमाण-वाचक**—अति, अत्यन्त, बहुत, सर्वथा, निरा, निपट, पूर्णतया, कहाँ तक, बिलकुल, थोड़ा, कुछ, लगभग, ज़रा, बस, केवल, नाममात्र, काफ़ी, पर्याप्त, अधिक, कम, इतना, उतना, कितना, जितना, थोड़ा-थोड़ा, बारी-बारी, क्रमशः।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

निम्नलिखित वाक्यों में क्रियाविशेषणों का अंतर समझिए—

१. वह **कल** स्कूल जायगा	वह **कल** स्कूल गया था।
२. घर के **आगे** एक पेड़ है।	**आगे** जो होगा सब ठीक होगा।
३. घर के **पीछे**।	चार दिन **पीछे**।
४. गाँव के **पास**।	परीक्षा **पास** आ गयी। मेरे **पास** पेन हैं।
५. गाँव **दूर** है।	परीक्षा का समय **दूर** है।
६. आप **कहाँ** रहते हैं?	**कहाँ** हीरा कहाँ काँच?
७. **कहीं** रख दो।	वह मुझ से **कहीं** धनी है। **कहीं** गिर न पड़े।

सम्बन्ध-बोधक—एक प्रकार के परसर्ग हैं। बहुत से क्रियाविशेषण ऐसे हैं जो संज्ञा के साथ प्रयुक्त होने पर सम्बन्धबोधक हो जाते हैं। उदाहरण—

क्रियाविशेषण	सम्बन्धबोधक
वह भीतर गया	वह घर के भीतर गया
वह बाहर बैठा है	वह घर के बाहर बैठा है
ऊपर चढ़ जाओ	घर के ऊपर चढ़ जाओ
नीचे बैठो	दरी के नीचे क्या है?
मैंने चारों ओर देखा	मैंने घर के चारों ओर देखा।

निम्नलिखित सम्वोवक अव्ययों के पहले **की** लगता है—

अपेक्षा, ओर, जगह, जबानी, तरफ़, तरह, भाँति, मारफ़त, वजह (से)।

निम्नलिखि के पहले **के** लगता है—

आगे, पीछे, बाद, पहले, पूर्व, अनन्तर, पश्चात्, उपरान्त, भीतर, बाहर, बीच, लगभग, तक, पर्यन्त, ऊपर, नीचे, सामने, पास, निकट, समीप, दूर, पार, आस-पास, द्वारा, हाथ, सहारे, कारण, मारे, लिए, भरोसे, सिवाय, अतिरिक्त, अन्तर्गत, बिना, बदले, समान, बराबर, तुल्य, योग्य, लायक, अनुकूल, विरुद्ध, विपरीत, प्रतिकूल, साथ, संग, समेत, सहित, अधीन, फलस्वरूप।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

क्रियाविशेषणों की भाँति ये भी कालवाचक, स्थानवाचक, दिशावाचक होते हैं।

समुच्चयबोधक अव्यय दो प्रकार के होते हैं। एक वे जिनके प्रयोग से समान कोटि के शब्द या वाक्य जोड़े जाते हैं; जैसे, राम **और** कृष्ण। राम आया **या** नहीं आया। **न** राम आया **न** मैं गया। मैं जाऊँगा, **परन्तु** वह न आयगा। पानी नहीं बरसा **इसलिए** अकाल पड़ गया।

इस वर्ग में और, तथा, एवं; अथवा, या, वा, चाहे . . . चाहे, न तो . . . न, न . . . न, न कि, पर, परन्तु, लेकिन, किन्तु, यद्यपि, जबकि, अतः, इसलिए आदि अव्यय सम्मिलित हैं।

दूसरे वे अव्यय हैं जिनके प्रयोग से आश्रित उपवाक्य बनता है, जैसे, **यदि** वह आया **तो** मैं चला जाऊँगा। उसने कहा **कि** मैं बीमार था। (चाहे) यह बात सच भी हो **तो भी** मैं विश्वास नहीं करता। **जो** करेगा **सो** भरेगा। मैं बाहर नहीं जा सका **क्योंकि** (इसलिए कि) पानी बरस रहा था। हमें खुली जगह रहना चाहिए **जिस** से हम स्वस्थ रहें।

(देखिए अगले अध्याय में संयुक्त वाक्य और मिश्र वाक्य भी)।

विस्मयादि-बोधक शब्दों के सम्बन्ध में कुछ और कहने की आवश्यकता नहीं है। मुख्य-मुख्य विस्मयादि बोधक अव्यय निम्नलिखित हैं—

१. हर्षबोधक—आहा! , वाह-वाह!, अहाहा!, धन्य-धन्य, जय, शाबाश!

२. विस्मयबोधक—हैं!, ए!, अरे!, ओहो!, सच!, क्या!

३. तिरस्कार-बोधक—छी! हट! दुर!, धिक्!, चुप!, रे!

४. स्वीकार-बोधक—हाँ!, जी हाँ!, अच्छा!, जी!, ठीक!, बहुत अच्छा!

५. अनुमोदन-बोधक—ठीक!, वाह!, ख़ूब!, हाँ-हाँ!, शाबाश!, अच्छा!

६. शोकबोधक—हाय!, हाय!, ओह!, हा!, हा-हा!, ऊह!, बाप रे!, राम-राम!, त्राहि-त्राहि!

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

७. **सम्बोधन-बोधक**—अरे!, रे!, ओ!, अजी!, लो!, अहो! हैलो!

अभ्यास

१. क्रियाविशेषण और सम्बन्धसूचक का प्रयोग-भेद स्पष्ट करो।

२. कुछ विशेषणों का क्रियाविशेषणों के रूप में प्रयोग करके दिखाओ।

३. किन्ही **दस** विस्मयादि बोधक शब्दों को लेकर वाक्य बनाओ।

४. किन्हीं **दस** समुच्चयबोधक शब्दों को वाक्यों में प्रयुक्त करो।

६. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करो—

(क) ज्यों ही गाड़ी आयी, मैं डिब्बे में घुस गया।

(ख) क्योंकि वह मोटा है, वह धीरे चलता है।

(ग) सादरपूर्वक निवेदन है।

(घ) वह कहीं भी जा सकता है।

(ङ) हाय राम! आज मैं बहुत प्रसन्न हूँ।

(च) वह घर के तरफ़ जा रहा था।

७. नीचे लिखे वाक्यों में अव्यय भरो—

(क) आप....क्यों घूम रहे हैं?

(ख) हवा बहुत....चल रही थी।

(ग)....बीस वर्ष हुए हैं।

(घ) उस नदी....एक नगर बसा है।

(ङ) धन....धर्म श्रेष्ठ है।

(च) सड़क....एक पेड़ खड़ा है।

(छ) कुछ काम करो....भूखे मर जाओगे।

(ज) सदा सत्य बोलो....झूठ बोलना पाप है।

(झ) राम आज स्कूल नहीं जायगा....वह बीमार है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

६

वाक्य-रचना

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वाक्य-रचना

१. वाक्य और उसके अंग

भाषा की वास्तविक इकाई वाक्य ही है। शब्द और अक्षर तो केवल अध्ययन के साधन हैं। भाषा की परिभाषा देते हुए पहले अध्याय में हमने कहा था कि भाषा सार्थक अभिव्यक्ति है। अक्षर तथा शब्द में विचार अथवा भाव के आदान-प्रदान की कोई सामर्थ्य नहीं है। **भा, की, सम्, रत, ति, कृ** आदि अक्षरों से; अथवा **तार, गाय, चलना**, आदि शब्दों से कोई विचार या भाव प्राप्त नहीं होता। जब तक हम अक्षरों के योग से शब्द और शब्दों के योग से वाक्य नहीं बना लेते, तब तक कोई बात नहीं बनती। यदि हम कहें कि भारत की संस्कृति प्राचीन है, तो ऊपर के अक्षर भी सार्थक हो जायेंगे। आप 'तार' का क्या अर्थ समझते हैं?—**लोहे का तार पड़ा है। मुझे बम्बई से एक तार आया। हे भगवान्, मुझे तार।** इन वाक्यों में 'तार' का अपना-अपना अर्थ स्पष्ट होता है। इसी प्रकार **गाय खड़ी है; मेरे घर में एक गाय है; गाय हमारी माता है;** अथवा **गोली चल गयी; वह अपने घर चला गया; यह कपड़ा दो वर्ष चला;** आदि वाक्यों में पड़कर ही शब्द सार्थक हुए हैं।

वाक्य के अभाव में बात अधूरी और अनिश्चित होती है। सभी लोग—चाहे वे डाक्टर हों या वकील, किसान हों चाहे जज, प्रोफ़ेसर हों चाहे दुकानदार वाक्यों का ही प्रयोग करते हैं। किन्तु शिक्षित व्यक्ति ही के वाक्य अर्थपूर्ण, भावयुक्त, और सजीले होते हैं। अशिक्षित व्यक्ति न तो व्याकरण की चिन्ता करता है, न ही शब्द-चयन की। प्रत्येक

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भाषा में वाक्य-रचना के अपने नियम होते हैं। शिष्ट और शिक्षित व्यक्ति उनका ध्यान रखता है।

निम्नलिखित वाक्यों पर विचार कीजिए—

१. **इतने में कोई लपककर आकर धक्का देकर चला गया।** इस में तीन बार 'कर' आया है और बात खटकने लगती है। इसे यों कर दिया जाय तो स्पष्ट हो जाय—

इतने में कोई लपककर आया और धक्का देकर चला गया।

२. **दिन दहाड़े डाका और चोरी करते हैं।** 'डाका करना' कोई प्रयोग नहीं है। 'डाका डालना' ठीक मुहावरा है। अतः इस वाक्य का रूप यों होना चाहिए—

दिन दहाड़े डाका डालते और चोरी करते हैं।

३. **थप्पड़ मार-मारकर तुम्हारी खाल खींच लूँगा।** थप्पड़ मारने से खाल नहीं खिंच जायगी। थप्पड़ मारने से गाल लाल हो सकते हैं। यह वाक्य अनर्गल है। 'आग ठंडी है' भी इसी तरह का बेतुका वाक्य है, भले ही यह व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध है।

४. **गिरीश ने हरीश को पीटा और मकान छोड़ देने की धमकी दी।** इस वाक्य से यह स्पष्ट नहीं होता कि मकान कौन छोड़ देगा— हरीश या गिरीश। ऐसे भ्रामक वाक्य भी अपना अर्थ देने में समर्थ नहीं होते।

५. **वह अच्छा एक लड़का है।** होना चाहिए—वह एक अच्छा लड़का है। हिन्दी में शब्दों का क्रम यही होगा।

६. **राम और सीता आयी।** इस वाक्य में लिंग-वचन का अन्वय हिन्दी की प्रकृति के अनुकूल नहीं है। होना चाहिए—**राम और सीता आये।**

वाक्य-रचना सरल, व्यवस्थित और सर्वथा व्याकरण-सम्मत होनी चाहिए। स्पष्टता, समर्थता, मधुरता तथा संतुलनात्मकता इसके अन्यतम गुण हैं। ऊपर छह वाक्यों में जो दोष दिखाये गये हैं, उनसे बचना चाहिए।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रत्येक वाक्य के दो आवश्यक अंग हैं—कर्ता **और क्रिया**। जैसे, **कुत्ता आया, लड़का बैठा** में **कुत्ता** और **लड़का** कर्त्ता हैं, **आया** और **बैठा** क्रियाएँ हैं। **उठो, जाओ** में कर्ता **तुम** है जिसे व्यक्त नहीं किया गया।

बड़े वाक्य में कुछ पद कर्ता के आश्रित हो जाते हैं, कुछ क्रिया के; जैसे **कुत्ता** (कर्ता) और **आया** (क्रिया) के आश्रित पदों को लीजिए—

कर्ता	क्रिया
मेरा कुत्ता	घर आया
मेरा काला कुत्ता	अपने घर आया
मेरा काला ईरानी कुत्ता	अभी-अभी अपने घर आया था।

कर्ता और उसके आश्रित पद या पदों को उद्देश्य कहते हैं। क्रिया और उसके आश्रित पद या पदों को विधेय कहते हैं।

उद्देश्य का अर्थ है जिसके बारे में कुछ कहा जाय, और विधेय का अर्थ है जिसमें उक्त उद्देश्य की बात का प्रतिपादन या विधान हो।

उद्देश्य के दो अंग हो सकते हैं—एक कर्ता और दूसरा उसका विस्तार। विधेय में क्रिया और उसका विस्तार हो सकते हैं। यदि क्रिया सकर्मक होगी तो कर्म भी होगा और उसका विस्तार भी हो सकता है। कभी-कभी पूरक और उसका विस्तार भी विधेय के अंग हो जाते हैं। उदाहरण:—

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

	उद्देश्य		विधेय					
	कर्ता का विस्तार	कर्ता	कर्म का विस्तार	कर्म	पूरक का विस्तार	पूरक	क्रिया का विस्तार	क्रिया
१.		हरिराम						आया
२.		हरिराम				घर		आया
३.	तुम्हारा बेटा	हरीराम			अपने	घर	होकर यहाँ	आया
४.	तुम्हारे बेटे	हरिराम ने		भाई को				पीटा
५.	,, ,,	,, ,,	मेरे छोटे	,, ,,	अपने नये	घर में	जाकर, छड़ी से	पीटा
६.	संसार का सब से ऊँचा पर्वत	हिमालय			वैसा ही	शोभाबान्	भारत के उत्तर में	खड़ा है
७.	तेरा	गाना	सब	लोगों को		अच्छा		लगता है

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

एक वाक्य में एक से अधिक विस्तार हो सकते हैं, जैसे तीसरे और पाँचवें वाक्य में क्रिया के विस्तार, अथवा पाँचवें वाक्य में कर्म के विस्तार तथा पूरक के विस्तार।

कर्ता और कर्म भी दो-दो हो सकते हैं, जैसे **राम और कृष्ण पूज्य हैं; मैंने राम को पुस्तक दी**। दूसरे वाक्य में 'पुस्तक' प्रधान कर्म और 'राम' गौण कर्म है।

प्रश्न

१. वाक्य के गुण और दोष क्या-क्या हैं? उदाहरण देकर स्पष्ट करो।

२. उद्देश्य तथा विधेय किसे कहते हैं? उदाहरण देकर समझाओ।

अभ्यास

१. निम्नलिखित शब्दों को वाक्यों में प्रयुक्त करो—

(क) पुस्तकें, खड़ा, लंगड़ा, शीघ्रातिशीघ्र, रंग, स्वभाव।

(ख) बनकर, करने से, करते-करते, लिखा-पढ़ा, चलना-फिरना।

(ग) तू, तुझे, किन्हीं, क्यों, कैसा, कैसे।

(घ) चाहिए, चाहिए था, चाहता हूँ, चाहना, चाह।

२. निम्नलिखित वाक्यों में कर्ता, कर्म या पूरक और क्रिया का विस्तार करके इन्हें फिर लिखो—

मोहन फूल लाता है।
लड़का गाड़ी लाया।
फूल अच्छे हैं।

३. निम्नलिखित में कर्ता के दो-दो विशेषण (विस्तार) जोड़ो—

छुरी काटती है।
बंदर नाचता है।
छात्र पढ़ता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

४. निम्नलिखित में क्रिया से पहले दो-दो क्रियाविशेषण जोड़ो—

मेरी माला टूट गयी।

बिजली कड़कती है।

गाड़ी आयगी।

५. निम्नलिखित में रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—

(क) सोहन....घर का उजाला है।

(ख)....स्त्रियाँ नदी पर नहाने गयीं।

(ग) वह....बुद्धिमान् और....आदमी है;।

(घ) वह....स्कूल जाता है।

(ङ)....आओ और....से बैठ जाओ।

(च)....सेना चलती है और पीछे सेनापति ....है।

(छ) वह....यहाँ से भाग गया।

(ज) तुमने....तक कितनी किताबें पढ़ी हैं।

(झ) उसने....करके उच्च पद पाया है।

(ञ) क्या आप इस संस्था के....हैं?

२. वाक्यों के प्रकार

रचना के आधार पर वाक्य के तीन और अर्थ के आधार पर आठ प्रकार माने गये हैं।

रचना का आधार

रचना के अनुसार वाक्य के तीन प्रकार ये हैं—

(१) सरल या साधारण वाक्य; (२) मिश्र या जटिल वाक्य; और (३) संयुक्त वाक्य।

जिस वाक्य में एक ही विधेय हो उसे सरल या साधारण वाक्य कहते हैं। पिछले प्रकरण में जो वाक्य दिये गये हैं, उनमें एक एक विधेय

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

है। वे सरल वाक्य हैं। ऐसे वाक्य में एक से अधिक उद्देश्य हो सकते हैं; जैसे, **राम, सीता और लक्ष्मण वन में चले गये।**

जिस वाक्य में एक सरल वाक्य हो और उसके आश्रित कोई उपवाक्य हो, उसे मिश्र वाक्य कहते हैं। उदाहरण—

मैंने सुना है कि कल कालेज बंद रहेगा।

'मैंने सुना है' प्रधान या मुख्य वाक्य है, और 'कि कल कालेज बंद रहेगा' आश्रित उपवाक्य या सहायक वाक्य है।

सहायक वाक्य के बिना मुख्य वाक्य और मुख्य वाक्य के बिना सहायक वाक्य पूर्ण नहीं होता। जैसे—**जब मैं आया था तब तुम कहाँ थे?** में किसी एक वाक्य को ले लें, वह दूसरे वाक्य की अपेक्षा रखता है। इसलिए दोनों वाक्य उपवाक्य कहलाते हैं।

आश्रित उपवाक्य के तीन भेद होते हैं—

(१) संज्ञा उपवाक्य; (२) विशेषण उपवाक्य; और (३) क्रिया-विशेषण उपवाक्य। जो आश्रित उपवाक्य संज्ञा की तरह प्रयुक्त हो, उसे संज्ञा उपवाक्य कहते हैं, जैसे **राम ने कहा कि मैं पढ़ूँगा।** यहां मुख्य उपवाक्य 'राम ने कहा' में कर्म अपेक्षित है—क्या कहा? 'मैं पढ़ूँगा' पहले वाक्य का कर्म है, इसलिए यह संज्ञा उपवाक्य है। अन्य उदाहरण—

मैं जानना चाहता हूँ कि तुम क्या लाये हो।

मेरी इच्छा थी कि मैं नेता बनता।

मुझे आशा है कि आप अवश्य आयेंगे।

उन्होंने कसम खायी कि फिर ऐसा नहीं करेंगे।

तुम जानते हो कि मैं आजकल बहुत व्यस्त हूँ।

कौन पूछ रहा था कि आज क्या तारीख़ है?

टिप्पणी—परोक्ष या प्रत्यक्ष कथन सदैव संज्ञा उपवाक्य होता है। हिन्दी में प्रत्यक्ष और परोक्ष कथन की रचना में साधारणतया कोई अंतर नहीं होता। उदाहरण—

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१. **प्रत्यक्ष कथन**—उससे कहो, "इधर आओ।"

परोक्ष कथन—उससे कहो कि इधर आओ।

२. **प्रत्यक्ष कथन**—पिता जी ने मुझसे कहा, "बाज़ार से मिठाई लाओ।"

परोक्ष कथन—पिता जी ने मुझसे कहा कि बाज़ार से मिठाई लाओ।

३. **प्रत्यक्ष कथन**—उसे फिर विचार आता था, "कहाँ जाऊँ।"

परोक्ष कथन—उसे फिर विचार आता था कि मैं कहाँ जाऊँ।

सूचना—अंग्रेज़ी के प्रभाव के कारण अब परोक्ष कथन का पुरुष प्रधान उपवाक्य के पुरुष के अनुकूल कर दिया जाता है। ऊपर के परोक्ष कथन इस प्रकार हो जायेंगे:—

१. उससे कहो कि इधर आए।

२. पिता जी ने मुझसे कहा कि मैं बाज़ार से मिठाई लाऊँ।

३. उसे फिर विचार आता था कि वह कहाँ जाए।

जो आश्रित उपवाक्य विशेषण का काम दे, उसे **विशेषण-उपवाक्य** कहते हैं; जैसे, **वह आदमी, जो कल भी आया था,** बाहर खड़ा है। इसमें प्रधान उपवाक्य के 'आदमी' का विशेषण है 'जो कल भी आया था'। इसलिए यह विशेषण उपवाक्य है।

अन्य उदाहरण—

जो गरजते हैं वे बरसते नहीं।

राम वहीं खड़ा रहा जहाँ उसे कहा गया था।

उस शाम जब आप नहीं आये थे मुझे बड़ी चिन्ता रही।

ऐसा कोई आदमी नहीं था जिसने इस खेल की सराहना न की हो।

जो आश्रित उपवाक्य क्रियाविशेषण की तरह व्यवहृत हो, उसे **क्रियाविशेषण उपवाक्य** कहा जाता है। उदाहरण—

जब पानी बरसता है तब मेंढक टर्राने लगते हैं। (कालवाचक)

जब तक मैं न आऊँ, यहीं बैठे रहना। (कालवाचक)

जहाँ चाहो बैठ जाओ। (स्थानवाचक)

जिधर वे लोग गये हैं, हम भी उधर ही जायेंगे। (दिशावाचक)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उसने वैसा ही किया, जैसा उसे बताया गया था। (रीतिवाचक)

यदि वह चाहता तो पार हो जाता। (अपेक्षाबोधक)

जिस वाक्य में एक से अधिक प्रधान वाक्य हों और इन प्रधान वाक्यों के भले ही आश्रित उपवाक्य हों या न हों, उसे **संयुक्त वाक्य** कहते हैं। उदाहरण—

हम बनारस गये और वहाँ दो दिन रहे। (दोनों प्रधान स्वतंत्र वाक्य)

हम लौटकर खाना खायेंगे या वहीं खा लेंगे। (दोनों प्रधान वाक्य)

तुमने इस बार अधिक परिश्रम किया है, इसलिए सफलता की पूर्ण आशा है; परन्तु मनुष्य के भाग्य का निर्णय ईश्वर के हाथ में हैं।

[इसमें तीन वाक्य हैं। तीनों अपने में पूर्ण और स्वाधीन हैं।]

वह आया और उसने देखा कि भीतर कौन-कौन हैं।

[इसमें तीन वाक्य हैं। पहले दो वाक्य प्रधान हैं, तीसरा दूसरे के आश्रित उपवाक्य है।]

अर्थ का आधार

अर्थ के आधार पर वाक्यों के आठ भेद किये जाते हैं—

(१) विधिवाचक, (२) निषेधवाचक, (३) आज्ञार्थक, (४) प्रश्नवाचक, (५) विस्मयादिबोधक, (६) संदेहवाचक, (७) इच्छार्थक, (८) संकेतवाचक। देखिए पृष्ठ २१७ भी।

(१) जिस वाक्य में क्रिया का होना सूचित होता है, उसे **विधिवाचक वाक्य** कहते हैं; जैसे, हमने खाना खाया। (सरल वाक्य)

जब मैं खाना खा रहा था तब वह आया। (मिश्र वाक्य)

मैंने खाना खाया और मेरा पेट भर गया। (संयुक्त वाक्य)

(२) जिस वाक्य में कार्य का निषेध पाया जाय, उसे **निषेधवाचक वाक्य** कहते हैं, जैसे हमने खाना नहीं खाया। (सरल वाक्य)

क्योंकि मैंने खाना नहीं खाया था इसलिए मैं वहाँ नहीं रुका। (मिश्र वाक्य)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मैंने खाना नहीं खाया, इसलिए मेरा पेट भी नहीं भरा। (संयुक्त वाक्य)।

मत बोलो। वह नहीं जा सकता। उसे नहीं आना चाहिए।

(३) जिस वाक्य के द्वारा किसी को आज्ञा, आदेश या उपदेश दिया जाय, अथवा प्रार्थना की जाय, उसे आज्ञार्थक वाक्य कहते हैं।

उदाहरण—जाओ। खाना खाओ। (सरल वाक्य)

कृपया घर जाइए नहीं तो अच्छा न होगा। (मिश्र वाक्य)

घर जाओ और अपना काम करो। (संयुक्त वाक्य)

तुम्हें यह काम कर लेना चाहिए।

(४) प्रश्नार्थक वाक्य में किसी से कोई बात पूछी जाती है, जैसे—

तुम क्या खा रहे हो? (सरल वाक्य)

क्या तुम जानते हो कि वहाँ कौन-कौन थे? (मिश्र वाक्य)

क्या आज छुट्टी है और स्कूल बंद रहेगा? (संयुक्त वाक्य)

(५) जिन वाक्यों में हर्ष, शोक, आश्चर्य आदि भाव प्रकट किये जाते हैं, उन्हें विस्मयादिबोधक वाक्य कहते हैं। उदाहरण—

अहा! कैसे सुहावने बादल हैं!

हाय! हम क्या थे और क्या हो गये!

(६) संदेहार्थक वाक्य वे होते हैं जिनसे संदेह, शंका, संभावना आदि की सूचना मिले। जैसे,

शायद पिता जी आ जायँ। (सरल वाक्य)

यदि वह नहीं पहुँचा तो उसे सहायता नहीं मिली होगी। (मिश्र वाक्य)

हो सकता है कि वह न जाय। (संयुक्त वाक्य)

(७) जिस वाक्य में इच्छा या शुभकामना प्रकट की गयी हो अथवा आशीर्वाद दिया गया हो, उसे इच्छावाचक वाक्य कहते हैं। जैसे,

चलो, सैर करने चलें।

भगवान् तुम्हें दीर्घायु करे।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तुम अपने कार्य में सफल रहो।

(८) जिस वाक्य में संभावना का संकेत हो, उसे **संकेतवाचक वाक्य** कहते हैं। यह सदा मिश्र वाक्य होता है। उदाहरण—

यदि नौकरी मिल गयी तो तुम्हारी सहायता करता रहूँगा।

यदि तुम खाओ तो मैं भी खाऊँ।

प्रश्न

१. रचना की दृष्टि से वाक्य के कितने भेद हैं? नाम लिखकर उदाहरण भी दो।

२. अर्थ की दृष्टि से वाक्य के भेद बताओ और प्रत्येक का एक उदाहरण भी दो।

३. आश्रित उपवाक्य का क्या तात्पर्य है? इसके कितने प्रकार होते हैं? प्रत्येक का एक उदाहरण दो।

४. प्रत्यक्ष कथन और परोक्ष कथन का अन्तर समझाओ।

अभ्यास

१. उपयुक्त उपवाक्य जोड़कर वाक्य को पूरा करो और बताओ कि पूरे वाक्य को क्या कहा जायगा।

(क) मैंने समझा कि........।

(ख) जो गरजते हैं वे........।

(ग) उसने क्यों ऐसा किया........।

(घ) यह वही मकान है जहाँ........।

(ङ) यह अजीब बात है कि........।

(च) हम तो उन्हींके साथी हैं जो........।

(छ) यह काम इतना कड़ा है कि........

(ज) तुम इतना खाओ जितना........।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(झ) संस्कृत में जो स्थान कालिदास का है........

(ञ) अध्यापक ने जानना चाहा कि........।

(ट) वह आया और........।

(ठ) आप ठीक कहते हैं किन्तु........

(ड) आपको ऐसा प्रबंध करना चाहिए कि........

(ढ) मैं घर......लौट आऊँगा।

(ण) मेरे कहने पर........।

२. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करो—

(क) घर जाओ, और अपना काम कीजिए।

(ख) कृपया यहाँ बैठने की कृपा करें।

(ग) शायद पिता जी आ जायँगे।

(घ) जिधर से आवाज़ आ रही, वहाँ हम भी जायँ।

(ङ) मेरे को आशा है कि शायद आते होंगे।

(च) तुम नहीं जानते कि मैं आजकल उतना व्यस्त था।

(छ) हम बनारस जायँगे तो आम लाते हैं।

(ज) यदि काम बन गया तो मैं आ गया।

(झ) यद्यपि वह दरिद्र है परन्तु ईमानदार हैगा।

(ञ) यह वही मकान है जिसे पिछले वर्ष देखेंगे।

३. वाक्यान्तरण

किसी बात को कहने के अनेक ढंग होते हैं। वाक्य का एक प्रकार किसी अन्य प्रकार में परिवर्तित किया जा सकता है। वाक्य-परिवर्तन में इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि वाक्य का मूल अर्थ किसी हालत में विकृत न हो। अभिव्यक्ति की विविधता, शैली की विभिन्नता, और अर्थानुसार किसी विषय पर अपने विचार को तरह-तरह से प्रकट करने की सामर्थ्य बढ़ाने के लिए इस प्रकार का अभ्यास अत्यन्त उपयोगी होगा। उदाहरण—

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(१) वाच्यान्तरण (देखिए पृ० २१६)

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
बढ़ई लकड़ी चीरता है।	बढ़ई से लकड़ी चीरी जाती है।
माली फूल नहीं लाता।	माली से फूल नहीं लाये जाते।
क्या तुम लड्डू खाओगे ?	क्या तुमसे लड्डू खाये जायँगे ?

	कर्मवाच्य	कर्तृवाच्य
(क)	यह खेल बहुधा गांवों में खेला जाता है।	इस खेल को बहुधा गांवों में खेलते हैं।
(ख)	राम के हाथों रावण मारा गया।	रामने रावण को मारा।
(ग)	तुमसे खाना नहीं खाया जा सकेगा।	तुम खाना नहीं खा सकोगे।

(२) विशेषण की तुलनावस्था का अन्तरण

(क) मोहन उतना ही अच्छा है जितना सोहन।
सोहन मोहन से अधिक अच्छा नहीं है।

(ख) लंदन संसार में सबसे बड़ा नगर है।
संसार में लंदन से बड़ा कोई नगर नहीं है।

(३) विधिवाचक और निषेधवाचक का अन्तरण

(क) वह अच्छा आदमी नहीं है।
वह बुरा आदमी है।

(ख) मैंने खाना नहीं खाया, इसलिए मेरी भूख नहीं मिटी।
मैं खाना खाता तो मेरी भूख मिटती।

(ग) उसने सब उपाय किये।
उसने कोई उपाय नहीं छोड़ा।

देखिए ऊपर (२) के अन्तर्गत भी।

(४) प्रश्नवाचक वाक्यों का अन्तरण

(क) क्या घर से बढ़कर कहीं कोई जगह है?

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

घर से बढ़कर कहीं कोई जगह नहीं है।

(ख) मुझे अब क्या करना है?
मुझे अब कुछ नहीं करना है।

(ग) महात्मा गांधी का नाम किसने नहीं सुना?
महात्मा गांधी का नाम सबने सुना है।

(५) विस्मयादिबोधक वाक्यों का अन्तरण

(क) कितना अच्छा मौसम है!
यह बहुत अच्छा मौसम है।

(ख) क्या ही सुन्दर बच्चा है!
वह बहुत ही सुन्दर बच्चा है।

(६) शब्द-भेद का परिवर्तन

(क) हम इससे गौरवान्वित हैं।
हमें इसका गौरव है।

(ख) प्रिंसिपल ने पुस्तकें चुनी थीं।
प्रिंसिपल ने पुस्तकों का चुनाव किया था।

(ग) सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकर है।
सिगरेट पीने से स्वास्थ्य को हानि पहुँचती है।

(७) सरल से मिश्र वाक्य

(क) वह शिष्ट व्यक्ति जान पड़ता है।
जान पड़ता है कि वह शिष्ट व्यक्ति है। (संज्ञा उपवाक्य)

(ख) अच्छे लड़के परिश्रमी होते हैं।
जो अच्छे लड़के होते हैं वे परिश्रमी होते हैं। (विशेषण उपवाक्य)

(ग) वह नाम के लिए दान-पुण्य करता है।
वह इसलिए दान-दुण्य करता है कि नाम हो। (क्रिया-विशेषण उपवाक्य)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(८) मिश्र से सरल वाक्य

(क) उसने कहा कि मैं निर्दोष हूँ। (संज्ञा उपवाक्य)
उसने अपनेको निर्दोष बताया।

(ख) जो लड़कियाँ परिश्रम करती हैं, वे सफल हो जाती हैं।
(विशेषण उपवाक्य)
परिश्रम करनेवाली लड़कियाँ सफल हो जाती हैं।

(ग) यद्यपि उसमें कई दुर्गुण हैं, फिर भी वह ईमानदार है।
(क्रियाविशेषण उपवाक्य)
उसमें कई दुर्गुण रहते हुए भी वह ईमानदार है।

(घ) मुझे बताओ कि तुम्हारा जन्म कहाँ और कब हुआ।
मुझे अपने जन्म का स्थान और समय बताओ।

(९) सरल से संयुक्त वाक्य

(क) सूर्योदय होने पर कुहासा जाता रहा।
सूर्योदय हुआ और कुहासा जाता रहा।

(ख) अस्वस्थ रहने के कारण वह परीक्षा में असफल रहा।
क्योंकि वह अस्वस्थ था इसलिए परीक्षा में असफल रहा।

(ग) ग़रीब होने पर भी वह है ईमानदार।
वह ग़रीब तो है, पर है ईमानदार।

(१०) संयुक्त से सरल वाक्य

(क) स्कूल बंद हो गया और लड़के घर जाने लगे।
स्कूल बंद होने पर लड़के घर जाने लगे।

(ख) वह स्टेशन पर पहुँच गया किन्तु गाड़ी नहीं पकड़ सका।
स्टेशन पर पहुँच जाने पर भी वह गाड़ी नहीं पकड़ सका।

(ग) वह घर आया और पिताजी से मिला।
वह घर आकर पिता जी से मिला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(११) संयुक्त से मिश्र वाक्य

(क) वह स्टेशन पर पहुँच गया किन्तु गाड़ी नहीं पकड़ सका।
यद्यपि वह स्टेशन पर पहुँच गया, तथापि वह गाड़ी नहीं पकड़ सका।

(ख) वह रुपया चाहता था और वह उसे मिल गया।
वह जो रुपया चाहता था उसे मिल गया।

(ग) परिश्रम करो और सफलता प्राप्त करो।
यदि परिश्रम करोगे तो सफलता प्राप्त करोगे।

(१२) मिश्र से संयुक्त वाक्य

(क) जब मेरे पास धन होगा तब मैं उसकी सहायता अवश्य करूँगा।
मेरे पास धन होने दो, और मैं उसकी सहायता अवश्य करूँगा।

(ख) यदि आप घर जायँ तो आपको आराम मिले।
घर जाइए और आराम पाइए।

(ग) ज्यों ही मैं वहाँ पहुँचा, त्योंही घंटा बजा।
मैं वहाँ पहुँचा और तुरंत घंटा बजा।

अभ्यास

१. निम्नलिखित वाक्यों का वाच्य बदलो—

(क) हनुमान् ने लंका को आग लगा दी।
(ख) माली पेड़ों को पानी देता तो मालिक उसे नौकरी से न हटाता।
(ग) मुझसे खाना नहीं खाया गया।
(घ) बदमाशों को पकड़वा दिया जाय।
(ङ) वह कल सारा काम कर लेगा।
(च) उसने देखा कि मज़दूरों से सामान उठवा लिया गया है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

२. निम्नलिखित वाक्यों को सरल वाक्यों में बदलो—

(क) अनुभव उतना ही आवश्यक है जितना परिश्रम।

(ख) ज़माना उतना ही बुरा है जितना पहले था।

(ग) ज्यों ही घंटा बजा, त्यों ही लड़के भीतर आ गये।

(घ) मैच शुरू नहीं हुआ था कि पानी बरसने लगा।

(ङ) उससे कहो कि इधर आओ।

३. निम्नलिखित निषेधात्मक वाक्यों को विधिवाचक वाक्यों में बदलो—

(क) राम ने कोई काम अधूरा नहीं छोड़ा।

(ख) कोई लड़का हरि से बढ़कर ईमानदार नहीं है।

(ग) तुम्हें इन्कार नहीं करना चाहिए।

(घ) मैच शुरू ही नहीं हुआ था कि पानी बरसने लगा।

(ङ) वह सदा उदास नहीं रहता।

४. निम्नलिखित वाक्यों का यथोचित परिवर्तन करो—

(क) क्या गधे के भी सींग होते हैं?

(ख) ऐसा कोई आदमी नहीं है जो देश से प्यार न करता हो।

(ग) हम कितने प्यासे हैं।

(घ) इस कमरे की लम्बाई पाँच फ़ुट है।

(ङ) वह चुपचाप काम करनेवाला आदमी है।

५. निम्नलिखित वाक्यों को सरल वाक्यों में परिवर्तित करो—

(क) भाई ने मुझसे कहा कि तुम कपड़ा खरीदने बाज़ार जाओ।

(ख) यद्यपि वह छोटा है तो भी वह मुझसे अधिक बलवान है।

(ग) संकट में जो साथ दे वही सच्चा मित्र है।

(घ) हो सकता है कि वह सफल न हो।

(ङ) आपको ऐसा आदमी नहीं मिलेगा जैसा वह है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

६. निम्नलिखित वाक्यों को मिश्र वाक्यों में बदलो—

(क) या तो मोहन जायगा या मैं।

(ख) मुझे खाना बनानेवाला एक नौकर चाहिए।

(ग) इन बातों से आपको इस समस्या का महत्त्व मालूम हो जायगा।

(घ) वह बहुत भला आदमी जान पड़ता है।

(ङ) परिश्रम करो और पास हो जाओ।

७. निम्नलिखित वाक्यों को संयुक्त वाक्यों में बदलो—

(क) जिसका मुझे भय था, वही हुआ।

(ख) हम यह सिद्ध कर सकते हैं कि वह ईमानदार नहीं है।

(ग) उसका अपनी ईमानदारी के कारण आदर होता है।

(घ) दंड से बचने के लिए काम पूरा करना होगा।

(ङ) पिता जी की बीमारी के कारण मैं वहाँ न जा सका।

४. पद-क्रम

वाक्य में पड़े हुए दूसरे शब्दों के साथ अपना संबंध संकेतित करनेवाले शब्दों को पद कहते हैं। जैसे, **लड़कों ने किताबें पढ़ीं** में 'लड़का' शब्द से 'लड़कों' पद बनाना पड़ा है, 'किताब' से 'किताबें' और 'पढ़ना' से 'पढ़ीं' पद बनाये गये हैं। केवल शब्द रख देने से सार्थक वाक्य नहीं बन सकता, जैसे '**लड़का किताब पढ़ना**' का कोई अर्थ नहीं है। शब्दों में जब व्याकरणगत विकार लाया जाता है, तभी वे वाक्य के उपयुक्त पद बनते हैं। इन पदों को वाक्य में किन्हीं नियमों के अनुसार उचित स्थान पर अर्थात् ठीक **क्रम** से रखना पड़ता है। हिन्दी वाक्य में पद-क्रम के नियम इस प्रकार हैं—

१. पहले कर्ता और अंत में क्रिया होती है; जैसे—

राम आया। मोहन हँस पड़ा। वह सोया। मैं जाता हूँ।

२. क्रिया का कर्म या उसका पूरक क्रिया से पहले आता है; जैसे—

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राम चावल खाता है। मोहन घर गया। आम अच्छा है।

३. यदि दो कर्म हों तो गौण कर्म पहले और मुख्य कर्म पीछे आता है; जैसे—**उसने राम को आम दिये। मैंने कृष्ण को रहस्य बता दिया।**

४. कर्ता, कर्म या क्रिया के विशेषक (विशेषण या क्रियाविशेषण) और विस्तार प्राय: पहले आते हैं; जैसे—

कर्ता—भाई; विशेषण—छोटा (भाई); विस्तार—राम का छोटा (भाई)।

कर्म—फल; विशेषण—पके (फल); विस्तार—बाज़ार से लाये हुए पके (फल)।

क्रिया—खाता है; क्रियाविशेषण—धीरे-धीरे; विस्तार—आराम से बैठकर धीरे-धीरे (खाता है)।

५. कर्ता का विशेषण विधेय के पूरक के रूप में भी आ सकता है; जैसे, **मौसम अच्छा है। वह बालक सदाचारी है।**

६. सर्वनाम से पहले विशेषण नहीं आ सकता, सर्वनाम के बाद आयगा; जैसे, **वह सुंदर है। वह नीली साड़ी है।**

७. स्थानवाचक या कालवाचक क्रियाविशेषण कर्ता के पहले या ठीक पीछे रखे जाते हैं; जैसे—**आज मौसम अच्छा है। वहाँ क्या पड़ा है? तुमने कल यहाँ खाना खाया था।**

८. निषेधात्मक क्रियाविशेषण प्राय: क्रिया से पहले आते हैं; जैसे—**आज घर नहीं जाऊँगा। तुम यह काम मत करो।**

९. प्रश्नवाचक सर्वनाम या क्रियाविशेषण प्राय: क्रिया से पहले आते हैं; जैसे, **वह कौन है? यह क्या है? उनका घर कहाँ है? आप उधर क्यों जा रहे हैं?**

१०. प्रश्नवाचक सर्वनाम जब विशेषण के रूप में प्रयुक्त हों, तो संज्ञा से पहले आयँगे। जैसे—

यहाँ कितनी कुरसियाँ हैं? यह क्या चीज़ है?

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

११. यदि उत्तर में 'हाँ' या 'नहीं' की अपेक्षा हो, तो प्रश्न के आरम्भ में 'क्या' रहेगा। जैसे—

क्या यह साड़ी नीली है? क्या तुम वहाँ गये थे?

१२. सम्बोधन और विस्मयादिबोधक शब्द प्रायः वाक्य के आदि में रखे जाते हैं। जैसे—**अरे मोहन, तुम यहाँ बैठे क्या कर रहे हो? अहा! कितना सुहावना दृश्य है!**

१३. **ने, को, से, के लिए, में, पर** आदि परसर्ग और के पीछे, के नीचे आदि सब सम्बधक अव्यय संज्ञा या सर्वनाम के बाद आते हैं। जैसे, **रामने, उसको, डंडे से, घर में, सीढ़ी के पास।**

१४. पूर्वकालिक 'कर' धातु के पीछे जुड़ता है; जैसे, **जाकर, फैलकर, छोड़-छाड़कर।**

१५. वाक्य में परसर्ग या सम्बन्धबोधक शब्दों से युक्त संज्ञा, सर्वनाम तथा 'कर' से युक्त पूर्वकालिक क्रिया प्रायः क्रियाविशेषण का काम देती है। अर्थ के क्रम के अनुसार इनका क्रम बनता चलता है। जैसे,

मैं घर **जाकर** बिस्तर में लेट गया।
मैं गाड़ी में बिस्तर **बिछाकर** लेट गया।
वहाँ **जाकर** मैंने रस्सी से उसके हाथ-पाँव बाँध दिये।
मैंने वहाँ **जाकर** रस्सी से उसके हाथ-पाँव बाँध दिये।

१६. **भी, तो, ही, भर, तक** आदि अव्यय उन्हीं शब्दों के पीछे आते हैं जिनके विषय में वे निश्चय प्रकट करते हैं। जैसे—

मैं आज अपने घर जाऊँगा।
मैं ही/भी/तो आज अपने घर जाऊँगा।
मैं आज ही/भी/तो अपने घर जाऊँगा।

अथवा, हमीं से रामने नहीं पूछा।
हमीं तक से राम ने नहीं पूछा।
हम से राम तक ने नहीं पूछा।
हम से राम ने पूछा तक नहीं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१७. यदि...तो, जब...तब, जहाँ...वहाँ, ज्योंही...त्यों ही आदि नित्यसंबंधी अव्ययों में प्रथम प्रधान वाक्य के पूर्व और दूसरे आश्रित वाक्य के पूर्व प्रयुक्त होते हैं। जैसे—

यदि जीवन में सफल होना चाहते हो तो परिश्रम करो।

जब आप आयेंगे तब वह नहीं रहेगा।

१८. यदि वाक्य में दो या दो से अधिक विशेषण हों और उनमें एक सार्वनामिक विशेषण हो, तो सार्वनामिक विशेषण पहले आयगा। जैसे—

मेरा बड़ा भाई आया है।

उनका नया मकान कहाँ है?

१९. सार्वनामिक विशेषणों में पहले निर्देश-सूचक, फिर पुरुष-वाची और फिर निजवाचक सर्वनाम आयगा। जैसे—

यह मेरा अपना घर है।

वह उसकी अपनी लड़की थी।

२०. समुच्चयबोधक अव्यय दो शब्दों या वाक्यों को जोड़ता है और उनके बीच में आता है। जैसे—

हरि और श्याम अलीगढ़ जायँगे।

राम तो जायगा किन्तु कृष्ण नहीं जा पायगा।

२१. वाक्य के विविध अंगों में तर्कसंगत निकटता होनी चाहिए। सब नियमों का एक महत्त्वपूर्ण नियम यही है कि अर्थ के प्रवाह में वाधा न पड़े। एक वाक्य लीजिए—**एक पानी का गिलास लाओ**। 'एक पानी' का कोई अर्थ नहीं; हम कहना चाहते हैं कि एक गिलास लाओ। इसलिए शब्दों का क्रम यों होगा—

पानी का एक गिलास लाओ।

एक और वाक्य लीजिए—**उसको पुस्तक देकर मैंने गोविन्द को अगला पाठ पढ़ाया**। इसमें 'उसको' कहने पर समझ में नहीं आता

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कि किसको। अतः पहले संज्ञा का उल्लेख कर लें, तभी तो सर्वनाम का अर्थ स्पष्ट होगा। यह वाक्य यों होना चाहिए—

गोविन्द को पुस्तक देकर मैंने उसे अगला पाठ पढ़ाया। इसी प्रकार '**उसका मुँह पाँच रुपये देकर बंद किया गया**' में शब्दक्रम ठीक नहीं है, क्योंकि हम कहना तो यह चाहते हैं कि उसका मुँह बंद किया गया। इसलिए यह वाक्य यों होगा—

पाँच रुपये देकर उसका मुँह बंद किया गया।

२२. आश्रित उपवाक्य को उस शब्द के तुरन्त बाद रखना चाहिए जिसकी विशेषता इसमें बतायी गयी हो; जैसे

वह लड़का, जो यहाँ आया था, पास हो गया।

मैंने कहा कि वह आदमी अच्छा है।

२३. जहाँ तक हो सके उपवाक्य की इकाई पूरी दिखाई दे; जैसे

जो आदमी कल यहां आया था, उसकी आज चोरी हो गयी है।

जब हमारी संस्कृति निर्बाध थी, तब उसने बहुत प्रगति की।

२४. द्वंद्व समासों में भी एक क्रम होता है। अधिक महत्त्वपूर्ण या छोटा शब्द पहले रखा जाता है; जैसे, **सोना-चाँदी**, **नरनारी**, **धन-धान्य**, **दस-बीस**, **देख-भाल**, **लड़ना-झगड़ना**, **स्त्री-पुरुष**, **फलो-फूलो**।

टिप्पणी—भाव की तीव्रता को प्रकट करने के लिए अथवा वाक्य के किसी अंश विशेष पर बल देने के लिए साधारण क्रम में अदला-बदली हो जाती है। उदाहरण—

वहाँ अवश्य चलेंगे सब।

हम, भई!, नहीं मान सकते।

वह हार राजा ने अपने मंत्री को दे दिया।

करूँगा नहीं कुछ भी।

कविता में तो प्रायः पदक्रम उलट-पुलट जाता है। उदाहरण—

देखता हूँ इधर जहाँ बिजलीघर है घरघराता

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

और लोग हैं हमेशा की तरह प्रतीक्षा में
बसों की या मूँगफली चबाते हुए गप में डूबे।

प्रश्न

१. पदक्रम का तात्पर्य क्या है? वाक्य में शब्दों को अपने क्रम में रखने की क्या आवश्यकता है?

२. उद्देश्य, उद्देश्य का विस्तार, विधेय और विधेय का विस्तार क्या हैं? उदाहरण देकर समझाओ।

३. प्रश्नसूचक शब्दों का वाक्यों में क्या स्थान होता है? उदाहरण भी दो।

४. क्रियाविशेषण और क्रियाविशेषण के रूप में प्रयुक्त होनेवाले अन्य पदबन्धों का वाक्य में क्या-क्या स्थान होता है? समझाकर लिखो।

अभ्यास

१. निम्नलिखित वाक्यों में पद-क्रम ठीक करो—

(क) एक चाय का प्याला पिलाओ।
(ख) कई गाँव के लोग शहर चले गये हैं।
(ग) हम इस संबंध में ठीक कोई राय नहीं दे सकते।
(घ) मैं यह काम देखूँगा कि हो सकता है या नहीं।
(ङ) यह नही वांछनीय है।
(च) यह अपनी मेरी पुस्तक है।
(छ) नया उसका कारखाना देखने चलो।
(ज) मक्खियाँ मधु कोष से निकालती हैं।
(झ) तुम यह मत काम करो।
(ञ) वह पुत्रवत् अपनी प्रजा का पालन करता था।
(ट) छोटा भाई राम का जा रहा था।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(ठ) आप इस प्रदेश की शिक्षक के रूप में सेवा कर सकते हैं।

(ड) वह लड़का जो यह काम करेगा उसे पुरस्कार दिया जायगा।

(ढ) उसका मुँह पाँच रुपये देकर बंद हो सकता था।

(ण) उनके स्थान पर प्रधानमंत्री शास्त्री जी को नियुक्त किया गया।

(त) अगले तीन दिनों में, नेताओं में जो बात चल रही थी, उसका निर्णय हो जायगा।

(थ) वह आदमी, जो यहाँ कल आया था, उसकी आज चोरी हो गयी।

(द) आप जहाँ तक हो सके इस बात का प्रयत्न करें।

(ध) यह फ़ोटो, जब नेहरू जी लखनऊ पधारे थे, उस समय लिया गया था।

(न) वहाँ बहुत से पशु और पक्षी उड़ते और चरते देखे गये।

(प) इस पुस्तक का, चित्रों का संकलन करके, प्रकाशन करना होगा।

(फ) हमारी संस्कृति जो बहुत प्राचीन है ने बड़ी उन्नति की।

(ब) यह बात संभव है वह हृदय से न माने।

(भ) यह मुझे उपहार पहली विवाह की वर्षगाँठ पर मिला था।

(म) एक पिछली गर्मियों की बात सुनाता हूँ।

५. अन्वय

अन्वय का अर्थ है 'मेल'। वाक्य में पड़कर व्याकरण की अनेक **कोटियों**—संज्ञा और विशेषण, संज्ञा या सर्वनाम और क्रिया तथा इनके **लिंग,** वचन, कारक, पुरुष, काल आदि—में परस्पर मेल होना चाहिए। **इस संबंध** में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया के प्रयोग की चर्चा पहले

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha
यथास्थान की जा चुकी है। यहाँ पर हिन्दी के अन्वय संबंधी कुछ और नियम दिये जा रहे हैं।

क. विशेषण और विशेष्य का अन्वय

१. विकारी विशेषण के लिंग-वचन अपने विशेष्य (संज्ञा) के अनुसार होते हैं। जैसे—

	पुल्लिग	स्त्रीलिंग
एकव०	काला घोड़ा	काली घोड़ी
बहुव०	काले घोड़े	काली घोड़ियाँ

अपने ग्रंथों में; अपनी रचनाओं में; हिन्दी का महत्त्व; हिन्दी की शिक्षा; दसवें दिन; दसवीं रात, आदि।

२. यदि अनेक विशेष्यों का एक ही विकारी विशेषण हो, तो उस विशेषण के लिंग-वचन तुरंत बाद में आनेवाले विशेष्य के अनुसार होंगे। जैसे—

अपनी संपत्ति, मान और मर्यादा की रक्षा के लिए।

पुराने पलंग और चारपाइयाँ। पुरानी धोतियाँ और पायजामे।

[ऐसे प्रयोगों में सम्भव हो तो सब विशेष्य एक ही लिंगवाले रखने चाहिए; जैसे, **अपनी संपत्ति, प्रतिष्ठा और मर्यादा की रक्षा के लिए**। अथवा, विशेषण को विशेष्य के अनुसार बदलकर दोहरा देना चाहिए; जैसे, **आपका जन्म और आपकी शिक्षा-दीक्षा कहाँ हुई थी**?]

३. यदि एक विशेष्य के अनेक विकारी विशेषण हों तो सभी उस विशेष्य के अनुसार होंगे। जैसे,

अच्छी और सस्ती चाय। बड़ा भला और सयाना आदमी।

गंदे और मैले-कुचैले कपड़े। नीली, पीली और हरी साड़ियाँ।

४. विधेयात्मक विशेषणों का प्रयोग भी ऊपर के नियमों के अनुसार होता है। जैसे—

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गाय काली है।   घोड़े काले हैं।

चाय अच्छी और सस्ती है। कपड़े मैले-कुचैले और फटे-पुराने हैं।

पलंग और चारपाइयाँ पुरानी हैं।

५. यदि कर्म के साथ परसर्ग लगा हो, तो विधेयात्मक विशेषण एकरूप पुल्लिग एकवचन होता है। जैसे,

इन कमरों को किसने गंदा किया ?

तुमने मेरी पुस्तकों को मैला कर दिया है।

वह मेरी इस आदत को बुरा समझता है।

ख. संज्ञा और सर्वनाम का अन्वय

६. सर्वनाम का वचन-पुरुष उस संज्ञा के अनुरूप होना चाहिए, जिसके स्थान पर इसका प्रयोग हो रहा हो। जैसे—

उर्मिला ने कहा कि मैं कुछ नहीं कर सकती।

कप्तान ने सिपाहियों से कहा कि तुम लोग इकट्ठे होकर चलो।

पिता जी आये। उनके हाथ में एक छड़ी थी जो लोहे की थी।

७. **हम**, **तुम**, **आप**, **वे**, **ये** आदि का अर्थ की दृष्टि से एकवचन के लिए भी प्रयोग होता है, किन्तु व्यवहार में इनका रूप बहुवचन ही होता है। उदाहरण—

हमें क्या पड़ी है। आप जानें और आपका काम जाने।

पिता जी आए थे। वे माता जी से कह रहे थे कि तुम भी चलो।

किन्तु एक ही व्यक्ति के लिए कभी 'तुम' और कभी 'आप', कभी 'वह' और कभी 'वे' , इसी तरह सब सर्वनाम कभी एकवचन में और कभी बहुवचन में व्यवहृत करना ठीक नहीं है। जैसे,

तुम वहाँ नहीं आते, इसलिए तुम्हीं हानि उठाओ।

आप चलेंगे तो आपको सब कुछ दिखा दूँगा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ग. कर्ता, कर्म और क्रिया का समन्वय

८. यदि कर्ता के साथ कारक चिह्न या परसर्ग न हो, तो क्रिया का लिंग, वचन और पुरुष कर्ता के अनुसार होगा। जैसे—

राम वन को जाता है।
वन में पशु-पक्षी होते हैं।
लड़की फल खाती है।
मैं आम खाऊँगा।

९. यदि कर्ता के साथ परसर्ग हो, तो क्रिया का लिंग, वचन और पुरुष कर्म के अनुसार होगा। जैसे—

राम/सीता/मैं ने पुस्तक पढ़ी।
हम/तुम/लड़की से पुस्तकें पढ़ी जाती हैं।
आप/मुझ/किसी से पत्र नहीं लिखा जायगा।

१०. यदि कर्ता के साथ और कर्म के साथ भी परसर्ग हो, तो क्रिया सदा पुंल्लिग अन्य पुरुष एकवचन में रहती है। जैसे—

पुलिस ने चोर को पीटा।
मैंने उस महिला को नहीं देखा।

११. जैसा कि ऊपर (७) में स्पष्ट किया गया है, आदरसूचक संज्ञा अथवा बहुवचन रूप के सर्वनाम के साथ क्रिया बहुवचन में प्रयुक्त होगी। जैसे—

माताजी आयँगी।
पंडित जी कलकत्ता जा रहे हैं।
आप/तुम/हम कह रहे थे कि....।

१२. एक ही तरह का अर्थ देनेवाले एकवचन वाले अनेक कर्ता परसर्ग-रहित हों, तो क्रिया एकवचन में होगी। जैसे—

यमुना की बाढ़ में उसका घरबार और माल-असबाब बह गया।

१३. यदि एक से अधिक भिन्न-भिन्न कर्ता परसर्ग-रहित हों, तो क्रिया बहुवचन में होगी। जैसे—

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राम, मोहन और सोहन खेलते हैं।

सीता और कौशल्या आ पहुँचीं।

१४. यदि ऐसे कर्ता भिन्न लिंगों में हों, तो क्रिया अन्तिम कर्ता के लिंग के अनुसार होगी। प्राणिवाचक संज्ञा के साथ क्रिया बहुवचन में होगी। जैसे—

राम के पास एक पायजामा और दो कमीज़ें थीं।

महादेव और पार्वती आयीं।

माँ और बेटा आए।

[ऐसे में पुल्लिग को क्रिया के निकट रखना अच्छा होता है।]

१५. यदि कर्म अनेक होंगे, तो अप्राणिवाचक संज्ञाओं के साथ क्रिया एकवचन में होगी। क्रिया का लिंग (१४) के अनुसार होगा। जैसे—

उसने आम और मिठाई खायी।

मैंने थैले में से एक किताब और एक कागज निकाला।

१६. यदि कर्ता कई पुरुषों में हो तो पहले अन्य पुरुष को रखना चाहिए, इसके बाद मध्यम पुरुष को और फिर उत्तम पुरुष को। क्रिया अंतिम पुरुष के अनुसार होगी। जैसे—

वह और आप आएँ।

आओ, तुम और हम खेलें।

वह, तुम और हम बाज़ार जायँगे।

सर्वनाम उक्त क्रम में न होंगे तो भी उत्तम पुरुष को क्रिया में प्राथमिकता मिलेगी। जैसे—

आओ, हम तुम खेलें।

हम, तुम और वह बाज़ार जायँगे।

घ. सम्बन्ध और सम्बन्धी का अन्वय

१७. **का, के, की** दो संज्ञाओं का अथवा सर्वनाम और संज्ञा का

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha
संबंध बताते हैं। इन संबंध-वाचक परसर्गों का लिंग-वचन वही होता है जो उत्तरपद (या सम्बन्धी पद) का होता है। जैसे—

सेठजी का घोड़ा दौड़ रहा था।

सेठजी की घोड़ियाँ दौड़ रही थीं।

राजमाता के घोड़े दौड़ रहे थे।

१८. यदि सम्बन्धी पद अनेक हों, तो संबंधवाचक परसर्ग पहले सम्बन्धी के अनुसार होता है। जैसे—

कृष्णा की बहन और पिता जा रहे थे।

[ऐसे में परसर्ग को दोहराना अच्छा रहता है—कृष्ण की बहन और उसके पिता जा रहे थे।]

१९. यदि सम्बन्ध पद के साथ कारकीय परसर्ग हो तो, 'के' का प्रयोग होगा, 'का' 'की' का नहीं। जैसे—

राम के कमरे में मत जाओ।

दूसरे के धन का अपहरण अनुचित है।

प्रश्न

१. संज्ञा और सर्वनाम के अन्वय के क्या नियम हैं? उदाहरण देकर स्पष्ट करो।

२. कर्ता और क्रिया का तथा कर्म और क्रिया का क्या मेल होता है?

३. संज्ञा और सर्वनाम का संबंध निश्चित करो।

४. विशेषण और विशेष्य के अन्वय के क्या नियम हैं? उदाहरण देकर समझाओ।

अभ्यास

१. नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करो—

(क) जितेन्द्र ने धोतियाँ और टोपी खरीदीं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(ख) तुम और वे आएँगे।
(ग) बेचारा यात्री ने बात ही नहीं की।
(घ) वहाँ पाँच स्त्रियाँ और दो बालक का वध किया गया।
(ङ) अरी लड़किये! उठ!
(च) मैं कड़ा से कड़ा काम कर सकता हूँ।
(छ) बेटी पराये घर का धन होता है।
(ज) वह किसी दूसरी की टोपी उठाकर चलता बना।
(झ) पाँचवें रात को उसका दम घुटने लगा।
(ञ) आज की कथा को ध्यान से सुननी चाहिए।
(ट) इस काम में देर लगानी स्वाभाविक थी।
(ठ) यह बात एक उदाहरण से स्पष्ट किया जा सकता है।
(ड) देश की सम्मान की रक्षा के लिए।
(ट) हमारी प्रदेश की सरकार।
(ण) गलियों को चौड़ी करना पड़ेगा।
(त) चार आदमी के लिए।
(थ) अनेक प्रकार की विद्या सीखी।
(द) अपने-अपने घरों से ले आओ।
(ध) हर एक ने टोपियाँ पहन रखी थीं।
(न) कौन आये थे? मेरा पिता।
(प) कपड़े उतार कर रख दिया।
(फ) मुझे आज्ञा दिया।
(ब) दो पुरस्कार एक विद्यार्थी को नहीं मिलेगा।
(भ) मज़दूर खूब काम करता है, क्योंकि उसे अच्छा पैसा मिले।
(म) जल्दी चलें कि मास्टर जी अप्रसन्न हो जायँ।
(य) ये लोग पूछने लगा।
(र) हम अपना प्राण दे दूँगा।
(ल) उसने एक चिड़िया का जान बचाया।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(व) मैं किताब खरीदूंगा कहकर वह बाज़ार चला गया।
(श) जो कुछ आप जानते हों बता दो।
(ष) मैंने उससे कहा, "यह काम कर लीजिए।"
(स) यदि आप किसी को भेज देते तो मैं पुस्तक दे दूँगा।
(ह) ये सब काम करना होंगे।

६. परसर्गों का प्रयोग

परसर्गों को कारक-चिह्न भी कहते हैं। हिन्दी में विभक्तियाँ तो केवल तीन हैं—प्रथमा या अविकृत, जैसे लड़का, वह, लड़की;—द्वितीया या विकृत या तिर्यक्, जैसे लड़के ने, लड़कों को, उस, लड़कियों ने/को/से;—सम्बोधन, जैसे हे लड़को! हे लड़के! हे लड़कियो!

कारक-चिह्न या परसर्ग निम्नलिखित हैं—

कर्ता—०, **ने**; जैसे, राम आया। राम ने किया।

कर्म—०, **को**; जैसे, मैंने रोटी खायी। उसने लड़के को मारा।

करण—**से, के द्वारा**; जैसे, हाथ से मारा। उसके द्वारा काम कराया गया।

सम्प्रदान—**को, के लिए**; जैसे, राम को दिया। ब्राह्मण के लिए दक्षिणा रखी गयी।

अपादान—**से**; जैसे, छत से गिरा।

सम्बन्ध—**का, के, की**; जैसे, राम का भाई। राम की बहन। राम के मित्र।

अधिकरण—**में, पर**; जैसे, घर में था। मेज़ पर पड़ा था।

में से, **पर** से, के **ऊपर**, के **नीचे** आदि सम्बन्धबोधक अव्यय भी परसर्ग हैं, किन्तु इनके कारकीय नाम नहीं हैं।

साधारणतया एक कारक के परसर्ग दूसरे कारकों या अर्थों में भी प्रयुक्त होते हैं। आगे थोड़े विस्तार से इनके विविध प्रयोगों को स्पष्ट किया जायगा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ने

१. 'ने' का प्रयोग कर्ता के साथ होता है, और यह भी तब जब क्रिया भूतकाल या भूतकाल के किसी भेद की हो और सकर्मक हो; जैसे—

राम ने रोटी खायी। राम ने काम किया था/है/होगा।

टिप्पणी—(क) लाना और समझना सकर्मक क्रियाएँ हैं। केवल इन दो के रहने पर कर्ता के साथ 'ने' नहीं लगता; जैसे, **मैं लाया, वह समझा**। (ख) छींकना और खाँसना अकर्मक क्रियाएँ हैं। लेकिन इनके कर्ता के साथ 'ने' का प्रयोग होता है; जैसे—

तुमने क्यों छींका? उसने खाँसा और कहा।

२. संयुक्त क्रिया में यदि अन्तिम क्रिया सकर्मक होगी, तभी 'ने' का प्रयोग होगा; जैसे—

श्याम ने उत्तर दे दिया। किशोर ने खाना खा लिया।

किन्तु नीचे लिखे वाक्यों में 'ने' प्रयुक्त नहीं होगा—

श्याम किताबें ले आया या ले गया।

किशोर गिर पड़ा, खा बैठा या पढ़ चुका।

को

३. 'को' सामान्यतः कर्म और सम्प्रदान कारकों में प्रयुक्त होता है। जैसे—

अपने बच्चों को वीर बनाओ।

मोहन ने अपने मित्र को दावत दी।

मैं हरि को बुलाता रहा।

४. प्रायः निर्जीव कर्म के साथ 'को' नहीं लगता। जैसे—

मैं रोटी खाता हूँ। तुम खाना बनाओ।

उसने रुपये बाँटे/दिये/बटोरे।

५. निर्जीव के साथ 'को' लगाने से कर्ता की विशेष शक्ति जतायी जाती है। तुलना कीजिए—

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मैंने यह तालाब खुदवाया। मैंने इस तालाब को खुदवाया है।

लड़के ने फल तोड़ लिये। लड़के ने फलों को तोड़ लिया।

ऐसे प्रयोग में स्थान के साथ 'दिशा' का अर्थ द्योतित होता है; जैसे, घर को चल पड़ा।

६. कुछ क्रियाएँ ऐसी हैं जिनके कर्म के साथ 'को' आवश्यक होता है; जैसे—

हिन्दू वेदों को मानते हैं।

वह अपने भाग्य को कोस रहा है।

सुरेन्द्र को भाई से बड़ा प्रेम था।

उसको कोई अधिकार नहीं है।

मुझको यह पसंद है।

७. तारीख, वार, समय की बाँट के साथ 'को' का प्रयोग होता है। उदाहरण—२५ जुलाई को, पहली रात को, सोमवार को, रात को, दोपहर को।

८. 'चाहिए', 'पड़ना', 'होना' रहने पर कर्ता के साथ 'को' लगता है। उदाहरण—

मुझको जाना चाहिए। धीरेन्द्र को हारना पड़ा।

मोहन को क्या हो गया। आज सोहन को जाना है।

९. संज्ञार्थक क्रिया के साथ 'के लिए' के अर्थ में भी 'को' का प्रयोग होता है। उदाहरण—

उसे टेलीफ़ोन करने को कहो।

नगर देखने को जी चाहता है।

जाने को (तैयार) था।

१०. यदि 'मारना' का अर्थ 'पीटना' हो तो कर्म के साथ 'को' लगता है, और यदि 'वध करना', या 'शिकार करना' अर्थ हो तो 'को' का प्रबोग नहीं होता। तुलना कीजिए—

लोगों ने चोर को मारा। लोगों ने बाघ मारा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हरि ने बैल को मारा। मछुए ने मछली मारी।

११. निम्नलिखित विविध प्रयोग भी देखिए—

(क) राधा को फ़्लू या ज़ुकाम या कोई **रोग** हो गया था।

(ख) लड़कों को लड्डू **मिले**। माँ को सूचना मिली।

(ग) भाई को **जाने दो**। बच्चे को **सोने दो**।

(घ) बच्चे को पेशाब, लड़के को चिन्ता, साथी को भूख या प्यास **लगी** है।

(ङ) मुझको किसी प्रकार का डर नहीं है।

से

१२. **साधन** के अर्थ में—हम कानों से सुनते हैं; बस से जाते हैं; चाकू से काटते हैं।

१३. **साधक** के अर्थ में, जब कर्मवाच्य या भाववाच्य हो—मुझसे कोई अपराध नहीं हुआ। ग्रामीण पशु जंगली पशुओं से मारे जाते हैं। मुझसे चला नहीं जाता।

१४. **विच्छेद** या **विलगाव** के अर्थ में—वह कमरे से बाहर चला गया। वह सबसे मुँह छिपाता है। गोकुल से मथुरा निराली है।

१५. **देशकाल की पहली सीमा**—चार दिन से। सुबह से शाम तक। गाँव से एक कोस। सिर से पैर तक। सोमवार से।

१६. **तुलना** के लिए—तुझसे वह भला है। वह सबसे छोटा है।

१७. **मूल्य** बताने के लिए—किस भाव से। रुपयों से।

१८. **कहना, पूछना, माँगना, ढकना, प्रार्थना करना** आदि क्रियाओं के रहते कर्म के साथ—मैंने उनसे कहा/पूछा/निवेदन किया/कुछ माँगा।

१९. **भूख, प्यास, जाड़े, आँख, कान, हाथ, पाँव** के साथ 'से' अथवा -ओं (बहुवचन) लगता है। जैसे—

वह भूख से या प्यास से (या भूखों, प्यासों) मर रहा है।

मैंने अपनी आँख से (या अपनी आँखों) देखा है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

२०. क्रियाविशेषण बनाने के लिए—खेद से कहना पड़ता है। नम्रता से बात करो। क्रम से, पीछे से, धीरे से, इस ढंग से, इत्यादि।

२१. किसी से प्यार, मैत्री या वैर हो सकता है। किसी से बात/मुलाक़ात/वादा/सगाई/विवाह करना।

२२. उत्पत्ति-सूचक—लोभ से क्रोध बढ़ता है। कोयला खान से निकलता है।

२३. निम्नलिखित मुहावरेदार प्रयोग उल्लेखनीय हैं—

(क) इससे **लगा** या **जान पड़ा** कि.....

(ख) दाहिनी आँख से काना; एक टाँग से लंगड़ा; सिर से नंगा।

(ग) पढ़ने से क्या लाभ?

(घ) वह काम से गया है।

(ङ) (के साथ)—गले से लगाना; खूँटे से बाँधना।

के लिए

२४. निमित्त—सेना ने युद्ध के लिए प्रयाण किया।

दुलारी जाने के लिए खड़ी हो गयी।

२५. अवधि—चार दिन के लिए बम्बई जा रहा हूँ।

२६. **देना, चाहना** आदि क्रियाओं के प्रसंग में—ब्राह्मण के लिए कुछ देना। बच्चों के लिए कुछ चाहना। मनुष्य के लिए उचित होगा।

का, के, की

२७. सम्बन्ध—राम का भाई। बहन की देवरानी। आम का पेड़। कलकत्ते का व्यापारी। ईरान की भाषा।

२८. स्वामित्व या अधिकार—यह किसकी पुस्तक है? वह श्याम का घर है।

२९. कर्तृत्व—प्रेमचन्द के उपन्यास। भारतेन्दु के नाटक।

३०. बना हुआ—सोने का हार, चाँदी की थाली, पत्थर का घर।

३१. मोल-भाव—एक रुपये का चावल। दस पैसे के टमाटर।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

३२. परिमाण—चार तोले का हार। पाँच हाथ की लाठी। एक मील की दौड़।

३३. प्रयोजन—रहने का मकान। चलने का रास्ता। पार जाने का पुल। सिलाई की मशीन।

३४. किन्हीं सम्बन्धसूचक अव्ययों के साथ—के आगे, के पीछे, के पहले, के पास।

३५. कुछ मुहावरेदार प्रयोग—

(क) महीने के महीने, दोपहर के दोपहर।

(ख) कान का कच्चा, बात का धनी, दिल का सच्चा।

(ग) वह अब आने का नहीं। (घ) एक बरस की लड़की।

(ङ) हरि के कोई सन्तान नहीं। (च) साँप का (मारा) काटा।

में

इसका मुख्य अर्थ 'भीतर का आधार' या 'आश्रय' है। शेष सब अर्थ इसी से निकले हैं।

३६. स्थानवाचक—मन्दिर में मूर्ति। वन में शेर। कुएँ में पानी।

३७. स्थितिवाचक—कार्य में लीन। वह मजे में है।

३८. कालवाची शब्दों के साथ—निकट भविष्य में एक नदी में। इतने में। दिन में आना।

३९. तुलना जिस बात की हो—सौन्दर्य में उत्तम। कुशलता में कम नहीं।

४०. मूल्य—सौ रुपयों में। घड़ी कितने में मिली?

४१. अन्तर—तुम में और उसमें क्या अच्छाई है? घर और स्कूल में। आज से चार दिन में।

४२. निर्धारण या पार्थक्य—अंधों में काना राजा। देवताओं में राम।

४३. कारण—क्रोध में। अक्ल में तेज़।

४४. निमित्त—आधा घंटा नहाने-धोने में निकल गया।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

४५. संज्ञा से क्रियाविशेषण बनाने के लिए—संक्षेप में; क्रोध में; धीमे स्वर में।

४६. मुहावरेदार प्रयोग—

(क) आठ बजने में दस मिनट।

(ख) आपस में। दो देशों में।

(ग) किसी बात में आस्था होना।

पर

यह भी आधार या आश्रय के अर्थ में प्रयुक्त होता है। 'में' का अर्थ है 'भीतर' और 'पर' का 'ऊपर'।

४७. स्थानवाचक—आँच पर रखो। सिर पर उठाओ। सड़क पर।

४८. कालवाचक—ठीक समय पर। भोजन करने पर। पत्र आने पर।

४९. अनुसरण—वह अपने बाप पर गया है। तुम अपनी बात पर पक्के रहना।

५०. निमित्त—उसने मुझे खाने पर बुलाया। उन पर जान देता है।

५१. कारण—छोटी सी बात पर लड़ पड़े। बुलाने पर वह आ गया।

५२. निरंतरता—चिट्ठियों पर चिट्ठियाँ आ रही हैं।

५३. यद्यपि—ऐसा करने पर भी।

५४. मुहावरेदार प्रयोग—

(क) किसी व्यक्ति पर विश्वास/वार/दया/क्रोध/करना।

(ख) किसी विषय पर विचार/आपत्ति करना।

(ग) इस पते पर। वक्त पर।

(घ) किसी बात पर **निर्भर/बहस**/ होना।

(ङ) किसी व्यक्ति पर कोई **उत्तरदायित्व होना** या **प्रभाव पड़ना** या **अभियोग लगाना**।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अन्य परसर्ग

५५. **के ऊपर** (थोड़ा ऊँचा)—वह राजमहल के ऊपर चला गया।
—कुएँ के ऊपर एक छप्पर डाल दिया गया।

५६. **तक**—दूसरी सीमा (स्थान और समय की)—घर से शहर तक। सुबह से शाम तक।
—(पास) वह मुझ तक नहीं पहुँचा।
—(भी) कुशलता तक नहीं पूछी।

५७. **के साथ**—(संग) वह मेरे साथ आया।
—(अतिरिक्त) इसके साथ यह भी ध्यान रहे।
—(लगा हुआ) मेरा मकान उनके मकान के साथ है।

५८. **के पीछे**—(स्थान और समय) घर के पीछे। पहले यह करो, इसके पीछे कुछ और कर लेना।
—(निमित्त) खेल के पीछे दीवाना हो रहा है।
—(वितरण) सौ के पीछे दस सफल हुए।

५९. **के आगे**—(स्थान और समय) घर के आगे। इसके आगे देखा जायगा।
—(सामने) मेरे आगे प्याला पड़ा रहने दो।

तुलना कीजिए—घर में; घर पर। इससे पहले; इसके पहले। **मेरे** पास एक नौकर है; मेरे साथ एक नौकर है। मकान के आगे; **मकान** के सामने। गाँव के परे; गाँव से परे। इसके अतिरिक्त; इसके **बिना**। काम से गया है; काम पर गया है। किसलिए जाते हो? और, **किसके** लिए जाते हो? उन लोगों से जा मिला; उन लोगों में जा मिला।

टिप्पणी—शेष परसर्गों के लिए दे० 'सम्बन्धबोधक अव्यय'।

प्रश्न

१. 'से' के भिन्न-भिन्न अर्थों के उदाहरण दो।
२. 'को' तथा 'में' के प्रयोग समझाओ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

३. 'का, के, की' तथा 'पर' को विविध वाक्यों में प्रयुक्त करके दिखाओ।

४. पिछले पृष्ठ के अन्त में 'तुलना कीजिए' के अन्तर्गत जो जोड़े दिये गये हैं, उनका अन्तर स्पष्ट करो।

अभ्यास

१. निम्नलिखित को शुद्ध करो—

(क) दस घंटे के आगे मिलियेगा।
(ख) इसका अधिकार भारत सरकार के पास नहीं है।
(ग) बीमारी के निमित्त मैं उपस्थित न हो सका।
(घ) उसका विवाह शीलादेवी के संग हुआ।
(ङ) इस समारोह का सारा दायित्व छात्रों के ऊपर है।
(च) अपराधी के पीठ के ऊपर कोड़े लगाये गये।
(छ) उस पर क्या दोष दिया जाय।
(ज) यह काम करने से जी चाहता है।
(झ) उस गाँव के भीतर दो कुएँ हैं।
(ञ) उसने गुरु के चरणों में अपना सिर रख दिया।
(ट) उसने दिन भर नाटक पढ़ लिया।
(ठ) उसने अपनी पत्नी का गला घोंटकर मार डाला।
(ड) वह यहाँ १५ जुलाई आयगा।
(ढ) उस बच्चे की दशा से मुझे दया आ गयी।
(ण) मुझसे इस काम को ज़बरदस्ती से कराना चाहते थे।
(त) उसके चाचा को लड़की हुई है।
(थ) वह कल सुबह को आ जायगा।
(द) वे अपनी मोटर को भी लाये हैं, अपनी बच्ची को भी।
(ध) मैंने एक आवश्यक कार्य करना था।
(न) मैं उसे नहीं पहचाना हूँ।
(प) वे अभी-अभी खाना खाये हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(फ) यह बात मेरे तक नहीं पहुँची।

(ब) शत्रु ने राजा के देश को आक्रमण कर दिया।

(भ) आठ बजने को दस मिनट हैं।

(म) सेना ने नगर का अधिकार कर लिया।

२. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—

(क) वृक्ष...पत्ते गिरते हैं।

(ख) मोहन...राम...नदी...डूबने...बचाया।

(ग) श्याम....पुस्तक रख दी।

(घ) वह अपने भाग्य....कोसता है।

(ङ) आप....सोच-समझ लेना चाहिए।

(च) आज उस....अपना काम दिखाना है।

(छ) इस लड़के....किसी....डर नहीं है।

(ज) बच्चे....बड़ा कष्ट है।

(झ) रोगी....दवा नहीं पी गयी।

(ञ) मैं उस....लड़ना-झगड़ना नहीं चाहता था।

(ट) इस बर्तन....मुँह कपड़े....ढँक दो।

(ठ) यह नौकर टिकने....नहीं है।

(ड) राम....इस....कोई आशा न थी।

(ढ) वह एक मील....दौड़....प्रथम रहा।

(ण) भविष्य.....मैं आप....मिलने....प्रयत्न करूँगा।

(त) मेरी घड़ी....आठ बजने....दस मिनट हैं।

(थ) आशा है कि आप....मेरे प्रस्ताव....कोई आपत्ति नहीं है।

(द) आप....पत्र आने....मैं उन....भेंट करूँगा।

(ध) दोनों भाइयों....आपस....मिल-जुलकर रहना चाहिए।

(न) मेरे कहने....भी वह अपनी जगह....नहीं उठा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(प) वादी....अभियुक्त....चोरी का अभियोग लगाया।

(फ) यहाँ....वहाँ....चार किलोमीटर की दूरी है।

(ब) शहर के....मैदान....भीड़ जमा थी।

(भ) सड़क के....बिजली....खम्भे के....गाय खड़ी थी।

(म) इस....बढ़कर मेरे....प्रसन्नता ....और क्या विषय हो सकता है?

७. विराम-चिह्न

वाक्यों, उपवाक्यों, वाक्यखंडों, अथवा शब्दों के बीच में रुकने का नाम विराम है। लिखाई में ऐसे स्थानों पर जहाँ रुकना चाहिए, वहाँ विराम-चिह्न लगाये जाते हैं। इनसे भाषा के समझने में बड़ी आसानी होती है। यदि विराम-चिह्न न लगाये जायँ, तो अर्थ स्पष्ट नहीं होता। उदाहरण के लिए 'रोको मत जान दो' का अर्थ 'रोको मत', 'जाने दो' भी हो सकता है और 'रोको', 'मत जाने दो' भी हो सकता है।

पहले अर्थ में विराम-चिह्न यों होंगे—**रोको मत, जाने दो।**

दूसरे अर्थ में विराम-चिह्न यों होंगे—**रोको, मत जाने दो।**

नीचे लिखे वाक्य का अर्थ समझिए—

कल रात एक नवयुवक मेरे पास पैरों में मौज़े और जूते, सिर पर टोपी, हाथ में छड़ी, मुँह में सिगार और कुत्ता पीछे-पीछे लिये आया।

अब देखिए कि विराम-चिह्न बदलने से कितना अन्तर पड़ता है—

कल रात एक नवयुवक मेरे पास, पैरों में मौज़े, और जूते सिर पर, टोपी हाथ में, छड़ी मुँह में, सिगार और कुत्ता पीछे-पीछे लिये, आया।

विद्यार्थियों को विराम-चिह्नों का व्यवहार सोच-समझकर करना चाहिए।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हिन्दी में निम्नलिखित विराम-चिह्नों का प्रयोग होता है—

१. पूर्ण विराम (।), अथवा (.)
२. अल्पविराम (,)
३. अर्धविराम (;)
४. प्रश्नसूचक चिह्न (?)
५. विस्मयादिसूचक-चिह्न (!)
६. संक्षेप-चिह्न (०)
७. उद्धरण-चिह्न (" ")
८. कोष्ठक ( ), [ ], { }
९. योजक-चिह्न (-)
१०. रेखिका (—)
११. विवरण-चिह्न (:—)

पूर्ण विराम (।) का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में होता है—

(१) प्रश्नों और विस्मयादिबोधक वाक्यों को छोड़कर सब वाक्यों के अन्त में; जैसे, **मोहन पढ़ता है। गंगा हिमालय से निकलती है।**

(२) अब कहीं-कहीं (।) के स्थान पर (.) दिखाई देने लगा है।

(३) दोहा, चौपाई, सवैया, कुडली, कवित्त आदि की प्रत्येक पंक्ति के बाद एक पूर्णविराम, और दूसरी पंक्ति के बाद दोहरा पूर्णविराम (।।) दिया जाता है। जैसे,

साँच बरोबर तप नहीं, झूठ बरोबर पाप।
जाके हिरदै साँच है, ताके हिरदै आप।।

अल्पविराम (,) निम्नलिखित स्थितियों में प्रयुक्त होता है—

(१) जब एक कोटि के बहुत-से शब्द, शब्दांश अथवा वाक्य इकट्ठे आ जायँ तो प्रत्येक के बीच में; जैसे—

राम, मोहन, श्याम और विजय पढ़ने जा रहे थे।

खाओ, पियो और मौज करो।

स्कूल से आकर थोड़ा आराम किया, चाय पी, बच्चों में १०-१५ मिनट जी बहलाया, और फिर पढ़ने बैठ गये।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

टिप्पणी—अन्तिम जोड़े के बीच में समुच्चयबोधक 'और' का ध्यान रहे।

'और' से पहले अल्पविराम के होने या न होने से कोई अंतर नहीं पड़ता।

(२) किसी लम्बे वाक्य में पड़े ऐसे शब्दों या पदबंधों को अलग करने के लिए जिनका वाक्य की रचना में सीधा संबंध नहीं है; जैसे—

वह तो, अच्छी तरह समझाने पर भी, नहीं मानता।

(३) जहाँ मिश्र और संयुक्त वाक्यों में आश्रित वाक्य प्रधान वाक्य के बीच में आ पड़ा हो; जैसे

यह लड़का, आपने भी देखा होगा, समझदार नहीं है।

(४) जब मिश्र वाक्य में समुच्चयबोधक अव्यय लुप्त हो, तब उसकी जगह; जैसे—

जब मैं पहुँचा, वह नहीं था। ['तब' के स्थान पर]

(५) **पर**, **परंतु**, **क्योंकि**, **इसलिए**, **फिर**, **जैसे** आदि अव्ययों से आरम्भ होनेवाले आश्रित उपवाक्यों को भी अल्पविराम के बाद लिखा जाता है। जैसे—

वह घर नहीं जा सका, क्योंकि वह बीमार पड़ गया था।

(६) **सम्बोधन**, **हाँ**, **नहीं**, **विस्मयादिबोधक शब्द** के बाद; जैसे, अरे मोहन, तुम कहाँ थे?

हाँ, मैंने अपना कार्य समाप्त कर दिया।

अच्छा, ठीक है।

राम-राम, यह भी कोई ऐसी-वैसी बात है।

(७) उद्धरण के पूर्व; जैसे—

उसने कहा, "मैं आज ही चला जाऊँगा।"

(८) तारीख़ को सन् से अलग करने के लिए; जैसे—

७ अगस्त, १९७१।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अर्ध विराम (;) का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में होता है—

(१) जब शब्दों के वर्गों को दूसरे वर्गों से अलग दिखाना हो, एवं अल्प विराम (,) लगाने से भ्रान्ति की सम्भावना हो। जैसे— में, पर और से; के नीचे, के भीतर और के सामने।

(२) प्राय: मिश्र वाक्यों में जहाँ अल्पविराम से किसी भ्रान्ति की आशंका हो। जैसे—

जो चाहे करो; बस, हमें तंग न करो।

जब वह परीक्षा में सफल हुआ, तो बड़ी ख़ुशियाँ मनायी गयीं; मिठाई बांटी गयी और लोगों ने उसे बधाई दी।

जब तक यह न हो जाय; जब तक सब छात्र इकट्ठे न हो जायँ; तब तक हम यहाँ ही रुके रहेंगे।

प्रश्नसूचक चिह्न (?) सीधे प्रश्न के वाद लगाया जाता है; जैसे,

तुम कब जाओगे ?

किताब कहाँ पड़ी है ?

क्या वह कल भी नहीं आयगा ?

टिप्पणी—याद रहे कि अप्रत्यक्ष प्रश्न के साथ इस चिह्न का प्रयोग नहीं होगा। अर्थात्, जहाँ उत्तर की अपेक्षा न हो, वहाँ प्रश्नचिह्न नहीं लगाना चाहिए। जैसे,

उसने मुझसे पूछा कि वह क्यों गया था।

विस्मयादिसूचक चिह्न का प्रयोग हर्ष, शोक, घृणा, आश्चर्य आदि भावों को व्यक्त करनेवाले शब्दों के साथ होता है। जैसे, वाह वाह ! क्या बात कही !

[देखिए पीछे अव्यय के अन्तर्गत 'विस्मयादिबोधक'।]

संक्षेप-चिह्न (०) का प्रयोग किसी शब्द के संक्षिप्त रूप के साथ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

किया जाता है; जैसे **डॉ०** ('डॉक्टर' के लिए), **पं०** ('पंडित' के लिए), **स्व०** ('स्वर्गीय' के लिए)।

टिप्पणी—बहुत से लोग (०) के स्थान पर पूर्ण विराम (.) का प्रयोग करने लगे हैं; जैसे **डॉ.**, **पं.**, **स्व.**।

उद्धरण-चिह्न ("") का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में होता है:—

(१) जब किसी के कथन को उद्धृत किया जाय; जैसे—प्रसाद जी ने ठीक ही कहा है, "नारी अबला नहीं, सबला है।"

रामचन्द्र का मत यह है—"दर्शन शास्त्र का अध्ययन मनुष्य को नीतिमान् बनाता है।"

(२) पुस्तक आदि के नाम के साथ प्राय: इकहरे चिह्न; जैसे—मैंने कालिदास का 'रघुवंश' पढ़ा है।

(३) जब किसी शब्द की विशिष्टता अथवा विलगता सूचित करनी हो; जैसे—

इस वाक्य में 'खाना' शब्द दो बार आया है।

'ख़ाना' का अर्थ 'घर' होता है।

(४) उद्धरण के अन्तर्गत कोई दूसरा उद्धरण हो तो भी इकहरे उद्धरण-चिह्न लगते हैं; जैसे,

उसने कहा, "मैंने उसे यह कहते सुना था—'घर को आग लगा दो'।"

कोष्ठकों () [] {} का प्रयोग व्याख्यात्मक अथवा प्रक्षिप्त पदों और वाक्यों के मुख्य वाक्य के बीच में आ पड़ने पर होता है। जैसे,

मेरे पिता (भगवान् उनकी आत्मा को शांति दे) अब इस संसार में नहीं रहे।

उन दिनों श्री (अब डाक्टर) श्रीपति मिश्र किसी कालेज में अध्यापक थे।

टिप्पणी—इस पुस्तक में [ ] आदि का प्रयोग भी देखिए।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

योजक चिह्न (-) का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में होता है—

(१) समास के शब्दों के बीच में; जैसे—हृदय-विदारक, जल-वायु, पद-परिचय।

(२) जब पंक्ति के अन्त में शब्द अधूरा रह जाय और उसे अगली पंक्ति में जारी रखना हो। पिछले पृष्ठ पर देखिए अध्या-पक।

रेखिका (—) योजक चिह्न से बड़ी होती है। (१) इसका प्रयोग प्रायः विवरण देने में होता है। नीचे जगह-जगह 'जैसे' या 'उदाहरण' शब्द के बाद हमने इसका प्रयोग किया है।

(२) उद्धृत वाक्य से पहले भी इसका प्रयोग होता है, जैसे— **उसने कहा—"मैं नहीं आऊँगा।"** नाटकों में इसी संदर्भ में इसका प्रयोग व्यापक रूप में मिलता है।

(३) जब वाक्य में विचार-भंग होने के बाद उसका सूत्र पुनः जोड़ा जाता है, तो भी रेखिका लगायी जाती है; जैसे—

अन्ततोगत्वा—इस कथन को संक्षेप में कहा जाय—हमने मरण-व्रत करने का निश्चय किया।

विवरण-चिह्न (:—) प्रायः रेखिका के अन्तर्गत प्रयोग (१) के स्थान पर ही होता है। जैसे—

निम्नलिखित शब्दों को वाक्यों में प्रयुक्त कीजिए :— विश्वास, भुलाना, समझकर, शान्तिपूर्ण, समस्याएँ।

विवरण-चिह्न में एक रेखिका है और एक अपूर्ण विराम (:) है, जिसका कुछ लोग स्वतन्त्र प्रयोग भी करते हैं, जैसे—

उसने कहा : "मैं नहीं जाऊँगा।"

किन्तु इससे विसर्ग (:) का भ्रम होता है, इसलिए प्रायः लोग इसका व्यवहार नहीं करते।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रश्न

१. ? , । और " " चिह्नों के क्या नाम हैं? हिन्दी में इनका क्या उपयोग है?

२. अर्धविराम, योजक चिह्न और संक्षेप-चिह्न का प्रयोग किन-किन स्थितियों में होता है? उदाहरण देकर स्पष्ट-कीजिए।

अभ्यास

नीचे लिखे अवतरणों में विराम-चिह्न लगाओ—

(क) जापान में जब शिक्षक विद्यार्थी से पूछता है तुम्हारा शरीर किस चीज़ से बना है वह उत्तर देता है जापान की मिट्टी जापान के अन्न से शिक्षक पूछता है तुम्हारा जीवन किसलिए है वह कहता है देश के लिए रूस जापान युद्ध के समय जापानी माताओं ने अद्‌भुत स्वदेश प्रेम का परिचय दिया

(ख) मूर्ख है अंधा है अरे मेरी आंखों से देख तेरी आँखें खुल जायँगी कुत्सित हृदय सौंदर्य पूर्ण हो जायगा बूढ़े किन्तु किन्तु तुम्हें अब इन सब बातों से क्या काम

(ग) शेखर भावुकता से मुझे तो सौन्दर्य ही कर्तव्य जान पड़ता है। मुझे तो जहाँ सौन्दर्य दीख पड़ता है वहाँ कविता दीख पड़ती है वहीं जीवन दीख पड़ता है स्वर बदल कर माधव तुमने सम्राट् के भवन के पास राजपथ के किनारे किनारे उस अंधी भिखमंगी को जाते कभी देखा है क्या

(घ) हालिया ने कहा इब्राहीम मैं तुम्हें नहीं मार सकती तू जा आज से मेरा और तेरा कोई सम्बन्ध नहीं रहा मैं कहाँ जाऊँगी नहीं जानती घर लौटकर नहीं जाऊँगी क्योंकि अगर वहाँ गयी तो मैं जीवित नहीं बचूँगी हाय जिस पर इतना विश्वास किया उसने धोखा दिया ईश्वर क्या तुम्हारी सृष्टि में इस झूठी सृष्टि में ईमानदारी का यही फल मिलता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

७

साहित्यिक कृतियों का भाषागत अध्ययन

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

साहित्यिक कृतियों का भाषागत अध्ययन

इस अध्याय में हम जो अध्ययन प्रस्तुत कर रहे हैं, उसके लिए हमने निम्नलिखित कृतियों को चुना है—

१. शिरीष के फूल (हजारीप्रसाद द्विवेदी)—भावात्मक निबन्ध।

२. गरुड़ध्वज (भगवतशरण उपाध्याय)—ऐतिहासिक गाथा।

३. चित्रकूट की छाया में (राहुल सांकृत्यायन)—आत्मकथा।

४. चित्रांकन (वियोगी हरि)—गद्यकाव्य।

५. आज़ाद की माताजी (बनारसीदास चतुर्वेदी)—संस्मरण।

६. बाघ से भिड़न्त (श्रीराम शर्मा)—घटना-वर्णन।

७. क्या सूझी इलेक्शन की (कृष्णदेवप्रसाद गौड़ 'बेढब बनारसी')—हास्यवार्ता।

८. स्त्री के अर्थ-स्वातन्त्र्य का प्रश्न (महादेवी वर्मा)—विचारात्मक निबन्ध

९. सरजू भैया (रामवृक्ष बेनीपुरी)—शब्द-चित्र।

१०. बन्दी पिता का पत्र (कमलापति त्रिपाठी)— निबन्धात्मक पत्र।

११. पहला रिपोर्टर (स० ही० वात्सयायन 'अज्ञेय')—ललित निबन्ध।

१२. तूफ़ान के विजेता (रांगेय राघव)—रिपोर्ताज।

१३. काठमांडू-दर्शन (नगेन्द्र)—यात्रा-संस्मरण।

१४. नये-पुराने (विष्णु प्रभाकर)—(एकपात्री) रेडियो-रूपक।

१५. क्यों रो रहे हो? (कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर')—लघुकथा।

१६. वैज्ञानिक ज्ञान और उसका उपयोग (सम्पूर्णानंद)—भाषण।

आगे के अभ्यासों अथवा अध्ययनों में इन कृतियों के क्रमांक कोष्ठक में दिये जायँगे, ताकि अध्येता चाहें तो उन कृतियों में उन-उन शब्दों, मुहावरों अथवा वाक्यों को देख सकें।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इनमें पन्द्रहवाँ निबन्ध सबसे छोटा है। इसे पहले पढ़ें। १४वीं कृति बहुत सरल है। छठा और सातवाँ लेख रोचक हैं। इनमें भी आपको विशेष कठिनाई नहीं होनी चाहिए। अब पाँचवाँ लेख पढ़ें। तदुपरान्त क्रमशः १३, १०, ९, ८, ३, ४, ११, १२, १, २, १६।

यह अध्ययन किसी पाठ्य-पुस्तक का स्थान नहीं लेगा, बल्कि पाठ्यपुस्तक के अध्ययन में सहायक होगा एवं विद्यार्थियों तथा अध्यापकों का इस बात में पथप्रदर्शन करेगा कि पुस्तक में क्या-कुछ देखना चाहिए।

हमने जो-जो पाठ्य विषय पहले उठाये हैं, उनके अध्ययन की पुष्टि भी अगले पृष्ठों में हो जायगी।

यह अध्ययन भी है, अभ्यास भी। जिसने इस पुस्तक को ध्यान से पढ़ लिया है, उसके लिए इस प्रकरण में कोई कठिनाई नहीं होगी। विद्यार्थियों को ये अभ्यास लिखकर तैयार करने चाहिए।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वर्तनी

१. श्रुत लेखन के लिए

ष-वाले शब्द—शिरीष (१), आषाढ़ (१), कृषीवल (१), आकर्षक (२), विशेष (२), अभिलाषा (२), आकर्षण (३), आकर्षित (४), सेवा-सुश्रूषा (३), पारितोषिक (४), कलुषित (४), भीषण (४), शीर्षस्थान (४), भूषण (४), विश्लेषण (६), ज्योतिषी (७), घोषणा-पत्र (७), विषमता (८), वैषम्य (८), विभीषिका (१०), ऋषि-कुल (११), ऋषि (११), भीषण (१२), उपनिषद् (१६), द्वेष (१६)।

आधा ष—पुष्प (१), दुष्यन्त (१), वैष्णव (२), श्रेष्ठ (२), विष्णु (२), सुष्ठु (२), विनष्ट (२), प्रतिष्ठित (३), हृष्टपुष्ट (४), भीष्म-प्रतिज्ञा (५), भविष्य (५), धृष्टता (६), प्रतिष्ठा (७), घनिष्ठ (७), चेष्टा (७), भविष्य (१०), दृष्टिपात (१०), निष्ठुरता (१०), दृष्टिकोण (१०), मस्तिष्क (१०), पुष्ट (११), द्रष्टा (११), स्रष्टा (११), राष्ट्र (१२), पृष्ठभूमि (१३), आकृष्ट (१६), सन्तुष्ट (१६), इर्ष्या (१६)।

श-वाले कठिन शब्द—नश्वर (१०), आश्वासन (९), विश्लेषण (६), शीर्षस्थान (४), शिखा (४), विशेष (२), तक्षशिला (२), प्रशंसा (३)।

क्ष-वाले शब्द—अपेक्षाकृत (१), पक्षियों (१), तक्षशिला (२), महत्त्वाकांक्षा (२), समक्ष (२), विपक्षी (२), क्षुद्र (२), क्षण (२), क्षति (२), विचक्षण (२), भिक्षा (२), रुद्राक्ष (३), उपलक्ष्य (३), क्षोभ (३), प्रतीक्षा (५), विक्षिप्त (५), उपेक्षा (५), परोक्ष (७),

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दीक्षित (८), सूक्ष्म (८), सापेक्षता (८), भिक्षा (८), उपेक्षित (१०), क्षणिक (१०), पक्षपात (११), समकक्ष (११), अक्षय (१२), अपेक्षा (१३), धर्मनिरपेक्षता (१३), दीक्षान्त-भवन (१३), नक्षत्र (१६), अन्तरिक्ष-यात्रा (१६), प्रतीक्षित (१६)।

ण-वाले शब्द—मृणाल (१), क्षण (२), विष्णु (२), विचक्षण (२), आकर्षण (३), भूषण (४), कृपाण (४), ऋणी (५), पुण्य (५), आक्रमण (६), विश्लेषण (६), स्पृहणीय (८), क्षणिक (१०), संस्मरण (११), परिणाम (११), भीषण (१२), कल्याण (१२), भाषण (१३)।

ऋ-वाले शब्द—कृषीबल (१), अपेक्षाकृत (१), हृदय (२), भृकुटी (२), हृष्टपुष्ट (४), सहृदयता (५), ऋणी (५), स्पृहणीय (८), कृतघ्नता (९), दृष्टिपात (१०), मृत्यु (१०), ऋषि (११), पृथ्वी (१३), पृष्ठभूमि (१३), आकृष्ट (१६)।

अन्य संयुक्त व्यंजन—वनस्थली (१), अद्भुत (१), विस्मय (१), लिप्सा (१), वनस्पति-शास्त्री (१), ब्रह्मा (१), स्थिर (१), परिस्थितियाँ (२), श्रेष्ठ (२), महत्त्वाकांक्षा (२), साम्राज्य (२), स्मारक (२), शक्तियाँ (२), पर्याप्त (२), सत्वरता (२), अस्वाभाविक (३), ब्रह्मचारी (३), रुद्राक्ष (३), विरुद्ध (३), गह्वर (४), वह्निशिक्षा (४), विक्षिप्त (५), श्रद्धेय (५), स्रोत (५), श्रद्धांजलि (५), विद्यमान (५), सर्वथा (५), स्वर्गीय (५), विह्वल (४), द्वारिका जी (५), धनाढ्य (५), वस्तु (६), आक्रमण (६), उत्साहवर्द्धक (७), शक्ति (८), स्पृहणीय (८), प्रतिद्वन्द्विता (८), व्यय (८), वयस्क (८), स्थिति (८), स्नेह (८), शिनाख्त (९), कृतघ्नता (९), मृत्यु (१०), सहस्राब्दी (१०), असह्यावस्था (१०), प्रतिज्ञा (१०), अंधकाराच्छन्न (१०), स्वतःप्रमाण (११), संस्मरण (११), कार्यकर्ता (१२), संयुक्त (१२), पृथ्वी (१३), आह्लाद (१३), पर्याप्त (१६), सन्देहास्पद (१६)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

२. छपाई की भूलें

निम्नलिखित में अशुद्धियों को ठीक कर लो :--

शिरीप (१), इतता कोमल और इतना कठोर (१) कबीर कहुत-कुछ इस शिरीष के समान ही थे। (१), समय के परिर्तन से (१), कालिदास संस्कृत के विश्वविख्यात कवि थे (१-शब्दार्थ और टिप्पणी से), अवदूत (एक सम्प्रदाय विशेष के योगी-१-शब्दार्थ और टिप्पणी से), अग्रिमित्र और वसुमित्र (२-शब्दार्थ और टिप्पणी से), पह अन्तलिखित का विश्वासपात्र था (२), वसुकित्र हँसा (२), सामाजाचार (२), विद्यार्थी , अध्मापक और साधारण साधु (३), बीमार सानुओं की सेवा-सुश्रूषा होवे (३), बिरुद्ध (३), जो अल्फी के रूप में पपिणत हो गया (३), एम कविता में (३), कपड़ा भींग गया है (३), उनकी छठा सचमुच निराली थी (४), नलो से (४), मेरा जी . . पत्थप और लोहे से भी कड़ा है (५), फिकिर (५), चन्द्रशेखर का धर से भागना (५), वह नही सूखा (५), हाथ बन्दूक पर रखे हुए आगे बड़ा (६), वस्तु (६), शेर जंगले में स्वाभिमान से घूमता-फिरता है (८); फर्लाग (६), काँटो मे (६), स्त्री-पुरुप (८), आत्म-मिर्भरता (८), सरजू भैया नहीं, सरजू, भैया (९), काला कुचैला (९), नही (९), दरवाजा (९), अंग-अंग की शिराएँ उभड़ौं (९), चिखचिलाती दुपहरिया (९), आश्चर्यमयी (१०), समनौत्सव (१०), यमपुरी भेजकर यमराम से साक्षात् (११), फुहर-सी (१२), फिरोजावाद वगहरा में (१२), मेरी धारणा (१३), अपराह्ण (१३), वह दिगन्तव्यापी कलवर (१३), प्रलय-समाधि भग नहीं हुई थी (१३), श्रद्घा (१३), निम्नाकोटि (१६), इन सथ्यों की सत्यता (१६), तथ्यों का परीक्षा करनी चापिए (१६), क्योंकि (१६), ईंधन (१६), उसके कही बाद (१६), वैज्ञानिक (१६), महत्त्वपूर्ण (१६)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

३. पंचमाक्षर या अनुस्वार

क. निम्नलिखित में जिन पंचाक्षरों (ङ ञ् ण् न् म्) के स्थान पर अनुस्वार हो सकता हो, उन्हें अनुस्वार-सहित लिखो; जैसे पन्द्रह-पंद्रह, किन्तु धन्य=धन्य (धंय नहीं):—

पसन्द (१), नितान्त (१), वसन्त (१), वायुमण्डल (१), उपालम्भ (१), शकुन्तला (१), सुन्दर (१), सौन्दर्य (१), गण्डस्थल (१), गन्तव्य (१), सम्भव (१), सम्भ्रान्त (२), कन्या (२), संन्यास (२), अकर्मण्यता (२), अन्य (२), मन्त्रियों ने (२), स्वतन्त्रता (२), सम्भावना (२), सन्देश (२), विलम्ब (२), महन्त (३), परम्परा (३), दम्पती (३), अभिनन्दन (३), सम्बन्ध (३), नन्हे (४), कङ्काल (४), सान्त्वना (५), तन्दुरुस्त (५), सन्तोष (५), युगान्तर (१२), तमन्नाएँ (१४)।

ख. निम्नलिखित में जहाँ संभव हो अनुस्वार के स्थान पर पंचमाक्षर लगाओ:—

भयंकर (१), तंतुजाल (१), छंद (१), तुरंग (२), क्योंकि (२), नन्हें-नन्हें (४), अंधकार (१०)।

सन्धि

क. सन्धि-विच्छेद करो:—

निर्धूम (१), शरच्चन्द्र (१), राजोद्यान (१), तन्मय (२), महत्त्व (२), निस्सन्देह (२), प्रतिकारार्थ (२), अन्तर्लीन (३), निश्चेतन (३), मनोमुग्धकारी (४), स्वाध्याय (४), स्वागत (५), प्रत्येक (७), उच्छृंखल (८), उत्पात (१०), उद्धृत (१०), उन्मूलन (१०), अधिकांश (१२), निस्तब्ध (१२), उत्कर्ष (१३), सदैव (१६), उत्तरोत्तर (१६), स्वेच्छा (१६), उज्ज्वल (१६)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ख. निम्नलिखित में सन्धि करो:—

सत् चित अनान्द (२), श्रेयः कर (२), उत् शृंखल (२), मध्य अह्न (३), निः चेतन (३), दुःबल (३), निः मल (४), तपः धन (४), निः नय (७), मनः योग (७), पुनः विवाह (८), द्रव्य उपार्जन (८), अन्तः करण (१०), प्रति छाया (१०), निः सहाय (१२), उत् तेजना (१३), सु अवसर (१६), ज्ञान उन्नति (१६), दृक् विषय (१६), प्रति स्थापित (१६)।

समास

निम्नलिखित समासयुक्त शब्दों का विग्रह करके समास का नाम बताओ—

अग्निकुण्ड (१), कालजयी (१), वृक्ष-वाटिका (१), अधिकार-लिप्सा (१), विस्मय-विमूढ़ (१), अग्निदाह (१), अभ्रभेदी (१), महत्त्वाकांक्षा (१), आयुधजीवी (२), मन्त्रिपरिषद् (२), रन्ध्र-प्रहार (२), विश्रामानन्तर (२), फलस्वरूप (२), हानि-लाभ (२), कृष्ण-काय (३), देशाटन (३), गुणानुवाद (३), झोली-चुक्क (३), गगन-स्पर्शी (४), विषाक्त (४), अस्थि-कंकाल (४), धूलि-धूसरित (४), रक्त-रंजित (४), केलि-कल्लोल (४), चिरस्मरणीय (५), चिरपरि-चित (५), कृतज्ञतापूर्ण (५), चन्द्रशेखर (५), बाल्यावस्था (५), हृदयहीन (६), उदरपूर्ति (६), जीवन-ज्योति (६), दृष्टिगोचर (६), दिग्दर्शन (६), अन्धानुगामी (८), स्वेच्छा (८), आत्मनिर्भरता (८), भुखमरे (९), धर्मपत्नी (९), उल्लासभरी (१०), बंधनमुक्त (१०), अंधकाराच्छन्न (१०), पंक्तिबद्ध (१०), संवाददाता (११), समस्था-नीय (११), पूर्वग्रही (११), कार्यकर्ता (१२), लोक-कल्याण (१२), त्रिनेत्र (१३), आत्मचिन्तन (१३), अर्धवृत्त (१३), दूतावास (१३), शोध-व्यवस्था (१३), कण्ठावरोध (१४), देशभक्ति (१५), कृषि-प्रधान (१६)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उपसर्ग

निम्नलिखित में से उपसर्ग (पूर्वप्रत्यय) अलग करो —

बेपरवाह (१), सरस (१), अनासक्त (१), अनाविल (१), उन्मुक्त (१), उपालम्भ (१), सहृदय (१), अभिभूत (१), उद्दण्ड (२), निर्धारित (२), प्रादुर्भाव (२), अभिलाषा (२), आग्रह (२), विलम्ब (२), अहितकर (२), सरोष (२), अनुचित (२), अनिवार्य (२), परिक्रमा (३), सकलत्र (३), सपरिग्रह (३), बेसरोसामान (३), प्रतिभा (३), दरअसल (५), दुर्भाग्य (७), अभिशाप (८), उपेक्षणीय (८), बेतहासा (९), आश्वासन (९), अस्थायी (१०), आक्रुष्ट (१०), अवतीर्ण (१०), आकर्षण (१३), सतर्क (१३), बाकायदा (१३), प्रवाद (१३), प्राध्यापक (१३), प्रवचन (१३), सक्रिय (१६), उपनिषद् (१६)।

प्रत्यय

१. संज्ञार्थक

निम्नलिखित में से मूल शब्द को अलग करो —

-ता कोमलता (१), स्थिरप्रज्ञता (१), दूरदर्शिता (२), सार्थकता (२), मानवता (२), सार्थकता (२, १०), नीतिमत्ता (२), स्वाधीनता (५), अस्वाभाविकता (८), उपयोगिता (१०), भावुकता (१०), मनुष्यता (१०), पत्रकारिता (११), आधुनिकता (११), उत्सुकता (१२), व्यस्तता (१३), विश्वसनीयता (१६)।

-त्व विश्व-बन्धुत्व (२), स्थायित्व (४), व्यक्तित्व (८), सहधर्मिणीत्व (८), गृहिणीत्व (८), मातृत्व (८), अस्तित्व (८), दासत्व (८), प्रतिनिधित्व (१०), एकाकित्व (१०), समपदत्व (११)।

-अ (वृद्धिसहित) गौरव (७), कौशल (११), पौरुष (१३), सौहार्द (१३)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

-य (वृद्धिसहित) कार्पण्य (१), सौन्दर्य (१), शौर्य, दौत्य (२), सख्य (२), वैषम्य (२), वैराग्य (३), तारुण्य (३), दारिद्रय (३), दैन्य (३), वात्सल्य (५), स्वास्थ्य (५), साम्य (८), अनौचित्य (८), सामर्थ्य (१०), धैर्य (१०), नैकट्य (१३), वैचित्र्य (१३), याथार्थ्य (१६)।

-ति ख्याति (२), विरक्ति (३), तृप्ति (१०), स्मृति (१०), अभिव्यक्ति (१०), स्थिति (१०), अनुभूति (१०), आवृत्ति (११)।

-करण प्रकटीकरण (१०), स्पष्टीकरण (१६)।

-इमा गरिमा (८), हरीतिमा (१३)।

अन्य—क्रान्तिदर्शी (११)—क्रान्तदर्शी अशुद्ध है। कर्णधार (१२), सर्जन (११), अर्चना (२), बहुधन्धीपन (५)।

२. विशेषणार्थक

मूल शब्द अलग करके लिखो—

-इक (वृद्धिसहित) सार्वजनिक (३), असामयिक (४), आकस्मिक (५), स्वाभाविक (५), आर्थिक (८), वैवाहिक (८), पैतृक (८), धार्मिक (८), सामाजिक (८), व्यावहारिक (८), मानसिक (८), क्षणिक (१०), आंतरिक (१०), सामूहिक (१०), दार्शनिक (११), सैद्धान्तिक (११), सैनिक (११), प्रामाणिक (११), पारस्परिक (१३), असाम्प्रदायिक (१३), मनोवैज्ञानिक (१३), वैदेशिक (१३), साहित्यिक (१३), आरम्भिक (१४), वैज्ञानिक (१६), दार्शनिक (१६), शारीरिक (१६), यान्त्रिक (१६), मौलिक (१६), आध्यात्मिक (१६)।

-आत्मक द्वन्द्वात्मक (१०), तुलनात्मक (१३), प्रयोगात्मक (१६), सन्देहात्मक (१६)।

कृत् के प्रकार मुग्ध (१), विदग्ध (१) मुकुलित (४), निराश्रित (५), दीप्त (१०), स्थापित (१०), अपर्याप्त (१०)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

-अनीय प्रशंसनीय (४), अनुकरणीय (९), अनुसरणीय (९), वंदनीय (९), पूजनीय (९), दर्शनीय (१०)।

-इय राष्ट्रीय (१६)।

-य ग्राह्य (१३), जघन्य (१०), श्लाघ्य (८), वन्य (३)।

-विषयक ऋतुविषयक (१६)।

-जनक मंगल-जनक (१), लज्जाजनक (५)।

-अक हानिकारक (२), मोहक (१०), आकर्षक (१०)।

-पूर्ण दोषपूर्ण।

-मय आश्चर्यमय (१०), विभिन्नतामय (१०)।

अन्य—मृदुल (३), तुन्दिल (१), परवर्ती (१), मेधावी (८), सुष्ठु (२), स्त्रैण (४), क्षात्र (४), पौरस्त्य (२), छायादार (१)।

३: क्रियाविशेषणार्थक

-पूर्वक सुगमतापूर्वक (८), सम्मानपूर्वक (१०), गम्भीरतापूर्वक (१०)।

-तः फलतः (१०), सामान्यतः (१३), वस्तुतः, परिणामतः।

अन्य—सहसा।

शब्दार्थ

१. पर्याय

निम्नलिखित के पर्याय बताओ—

नितान्त (१), मसृण (१), भयंकर (१), विस्मय (१); परुष (२), ख्याति (२), क्षुद्र (२), दृप्त (२), समक्ष (२), शौर्य (२), विश्राम (२), विलम्ब (२), सख्य (२), श्रेयस्कर (२), रोष (२), विपत्ति (२); दरख्त (३), मध्याह्न (३), वन्य (३), दुर्बल (३); पारितोषिक (४), भीषण (४), प्राची (४); वैधव्य (५), विक्षिप्त (५), श्रेष्ठ (५), धनाढ्य (५); यातना (६), मूक (६), चौकन्ना (६); प्रत्येक (७), मेधावी (८), सहधर्मिणी (८), स्नेह (८), भिक्षा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(८); शिनाख्त (९); सामर्थ्य (१०), सतत (१०), निष्ठुर (१०), अवनि (१०), जघन्य (१०), प्रतिच्छाया (१०); समकक्ष (११); शुष्क (१२), सर्टिफ़िकेट (१२), सहसा (१२); सतर्क (१३), पृथ्वी (१३), त्रिनेत्र (१३), क्लास (१३), युगपत् (१३), प्राध्यापक (१३); तमन्ना (१४); अन्तिम (१५); धारासभा (१६), अनुसन्धान (१६)।

निम्नलिखित में क्या अन्तर है?:—

उत्पात-होहल्ला; ग्रह-नक्षत्र; भयंकर-डरावना।

२. विलोमार्थक शब्द

निम्नलिखित के विपरीतार्थक शब्द बताओ—

निश्चित (१), शुरू (१), परवर्ती (१), सरस (१), स्थिर (१), कार्पण्य (१), परुष (२), स्वतन्त्रता (२), दृप्त (२), शौर्य (२), विशेष (२), हानि (२), वैषम्य (२); आकर्षण (३), निर्भीक (३), मृदुल (३), प्रशंसा (३); नन्हें-नन्हें (४), निर्जीव (४); ऋणी (५), निराश्रित (५), तन्दुरुस्त (५), स्वाधीनता (५), श्रेष्ठ (५); मूक (६), विश्लेषण (६); दुर्भाग्य (७), परोक्ष (७), उत्साहवर्द्धक (७); सुगमता (८), व्यय (८), वयस्क (८), अनौचित्य (८), अस्तित्व, सापेक्षता (८), आत्मनिर्भरता (८); काला-कुचैला (९), कृतघ्नता (९); सम्मान (१०), क्षणिक (१०), सार्थकता (१०), निष्ठुरता (१०), आंतरिक (१०), सामूहिक (१०), विभिन्नता (१०); अँधियाला (१२), अक्षय (१२); व्यस्त (१३), बाकायदा (१३), सामान्यतः (१३); प्रारम्भिक (१४); संघर्ष (१५); सक्रिय (१६), व्यावहारिक (१६), अनिवार्य (१६), सफलता (१६)।

३. अनेकार्थक शब्द

मंगल (१), अधिकार (१), छंद (१) धूप (१); छुट्टी (२), सन्देश (२), अवकाश (२), फल (२), अर्थ (२); सूखा (५); आशय (७); दूसरा (९), सर्जन (११); काफी (१३); मूल (१६)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

४. अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द

(१) जो बिना धुएँ के हो (निर्धूम), मंगल या कल्याण को उत्पन्न करनेवाला (मंगल-जनक), जिसकी तोंद बढ़ी हुई हो (तुन्दिल), जिसमें कोई आसक्ति न हो (अनासक्त), जिसकी प्रज्ञा-बुद्धि स्थिर हो (स्थिर-प्रज्ञ)। (२) आयुध या शस्त्र से जीविका चलानेवाला (आयुधजीवी), प्रखर है बुद्धि जिसकी (प्रखरबुद्धि), जिसमें कोई सन्देह नहीं (निस्सन्देह), स्मारक के रूप में (स्मारकस्वरूप)। (३) जिसे कोई भय न हो (निर्भीक), जो सारी जनता के लिए हो (सार्वजनिक), जिसे एकान्त प्यारा है (एकान्तप्रिय)। (४) आकाश को स्पर्श करनेवाला (गगन-स्पर्शी), मन को मुग्ध करने वाला (मनोमुग्धकारी), आधी खिली हुई (अर्धमुकुलित)। (५) जिसका स्मरण चिर काल तक होना चाहिए (चिरस्मरणीय)। (८) अंधाधुंध अनुगमन करने वाला (अन्धा-नुगामी), जन्म देने वाली (जन्मदात्री), श्लाघा करने योग्य (श्लाघ्य), दादा-परदादा से प्राप्त (पैतृक), जिसकी श्रृंखला या मर्यादा न रह गयी हो (उच्छृंखल), अपने पर निर्भर रहना (आत्मनिर्भरता)। (९) भूख से मरा हुआ (भुखमरा), वंदना करने योग्य (वंदनीय), किसी के किये को न मानना (कृतघ्नता)। (१०) जिस पर अंधकार छाया हुआ हो (अंधकाराच्छन्न), मोह लेनेवाला (मोहक)। (११) सब अंगों को समेटने वाला (सर्वांगीण), आने वाली क्रांति का दर्शन करने-वाला (क्रांतिदर्शी), अपने आप में जो प्रमाण हो (स्वतःप्रमाण)। (१२) जिसका विश्वास समाज को सत्ता सौंप देने में है (समाजवादी), जिसका कोई सहायक न हो (निस्सहाय)। (१३) दिशाओं के अन्त तक जो व्याप्त है (दिगन्तव्यापी), जिस बात का किसी सम्प्रदाय से संबंध न हो (असाम्प्रदायिक), हिम पड़ने से धवल (हिमधवल)। (१६) न्याय की दृष्टि से (न्यायतः), जिसमें कृषि की प्रधानता हो (कृषिप्रधान), जिसकी चिरकाल तक प्रतीक्षा रही हो (चिरप्रतीक्षित)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

५. अर्थ और प्रयोग

निम्नलिखित का अर्थ बताकर इन्हें वाक्यों में प्रयुक्त करो :—

(१) अधिकार-लिप्सा, विस्मय-विमूढ़, कृषीवल, अपेक्षाकृत, कालजयी, अग्रभेदी, घन मसृण हरीतिमा, अनाविल, विदग्ध प्रेमी, फक्कड़ाना मस्ती।

(२) दृप्त, वास्तु-विधान, नीति-सत्वरता, ओतप्रोत, श्वान-निद्रा, प्राचीर, कार्य-चपलता, अनुनय, रन्ध्र-प्रहार, निमन्त्रित, क्षति, सम्भ्रान्त, अकर्मण्यता, महत्त्वाकांक्षा, साम्राज्येतर शक्तियाँ, फलस्वरूप, विश्रामानन्तर, हानिकारक, विचक्षण, अधिकाररज्जु, साधुवाद।

(३) सार्वजनिक, अन्तर्लीन, मध्याह्न, तारुण्य, एकान्तप्रिय, मधुच्छत्र, उपलक्ष्य, गुणानुवाद, मुबाहिसा, सपरिग्रह, गुलरोगन, झोलीचुक्क, नाहक, मुहिम।

(४) असामयिक, स्थायित्व, गगनस्पर्शी, मदविह्वला, लावण्यवती, शीर्षस्थानीय, धूलिधूसरित, वह्निशिखा, कलुषित, अर्धमुकुलित, प्राची, रक्तरंजित, मनोमुग्धकारी।

(५) चिरस्मरणीय, श्रद्धेय, चिरपरिचित, सर्वथा, कृतज्ञतापूर्ण, भीष्मप्रतिज्ञा, वैधव्य, निराश्रित, धनाढ्य, विक्षिप्त।

(६) मुखाकृति, अन्तर्वेदना, मूक यातना, उदरपूर्ति, जीवन-ज्योति, बलि-पशु, कर्म-विपाक, दृष्टिगोचर, दिग्दर्शन, धृष्टता, गृद्ध दृष्टि।

(७) परोक्ष, मनोयोग, प्रासाद।

(८) अंधानुगामी, पक्षपातिनी, सुगमतापूर्वक, प्रतिद्वन्द्विता, जन्मदात्री, सहधर्मिणीत्व, स्पृहणीय, द्रव्योपार्जन, यौतुक, पुनर्विवाह, वयस्क, विषमता, अनौचित्य, गरिमा, उच्छृंखल, उपेक्षणीय, सीमातीत।

(९) निस्सन्देह, बेतहाशा, शिनाख्त, अनुसरणीय, आश्वासन, कृतघ्नता, गुमाश्ता, बमभोला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(१०) समाधिस्थ, अंधकाराच्छन्न, उपेक्षित, उपयोगिता, विक्षोभ, सहस्राब्दी, सतत दीप्त, असह्यावस्था, पुनरावृत्ति, अवनि, प्रत्युत, आयोजन, आंतरिक, एकाकित्व, कदाचित्, अवचेतन, विभिन्नतामय, प्रतिच्छाया।

(११) दार्शनिक, प्रतिचित्र, खामियाँ, आवृत्ति दोष, न्यस्त स्वार्थ, पूर्वग्रही, क्रान्तिदर्शी, वंशानुक्रम, स्वतः प्रमाण, समकक्ष, द्रष्टा।

(१२) विद्रूप, उत्सुकता, निस्सहाय, लोक-कल्याण, कर्णधार, युगान्तर, सहसा, अक्षय।

(१३) उत्तेजना, प्रतिवाद, दृष्टिपथ, नैकट्य, अपराह्ण, वृक्ष-राजि, शुभ्र शान्ति, प्रत्यभिज्ञा दर्शन, आत्मसात्, आतिथ्य, चर्मचक्षु, सामन्तीय, पौरुष, वैचित्र्य, धर्मनिरपेक्षता, तालिका, निदर्शन, चतुर्दिक्, युगपत्, देव-विग्रह, इतिवृत, कण्ठस्थ, राजदम्पती, सौहार्दपूर्ण, प्रवचन।

(१४)–(१५) संघर्षमयी, भावावेश, अपवर्ग।

(१६) मूर्धन्य, ज्ञानोन्नति, वस्तुतः, दृग्विषय, याथार्थ्य, अन्तरिक्ष-यात्रा, गुरुत्वाकर्षण, निष्कर्ष, शिवेतरक्षति, अपर्याप्त, पंचांग, स्पष्टीकरण, वेधशाला।

व्याकरण*

बहुवचन बनाओ—

शक्ति (१), परिस्थिति (२), शताब्दी (८), कठिनाई (८), प्रवृत्ति (१०), संस्कृति (१०), खामी (११), पगडंडी (१२), सुविधा (१३), हिलोर (१३), मंगल-प्रशस्ति (१३), स्त्री (१५), नेता (१६), समस्या (१६), धारासभा (१६)।

'पति' में ह्रस्व इ है, 'दम्पती' में दीर्घ ई क्यों है?

---

*व्याकरण-संबंधी विस्तृत प्रयोग आगे 'वाक्य-विचार' के अन्तर्गत मिलेंगे।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पुल्लिग बनाओ—

चित्ताकर्षिणी (४), गृहिणी (६), सहधर्मिणी (८), युवती (८), पत्नी (८), स्फूर्तिमती (८), सौभाग्यशालिनी (९)।

स्त्रीलिंग रूप बनाओ—

मानी (४), प्रलयंकारी (४), जन्मदाता (८), अधिकारी (८), अनुगामी (८), तपस्वी (८), संगी (८), उपयोगी (८), ऐश्वर्यशाली (८), साम्राज्यवादी (१०), -धारी (१२), ब्रह्मचारी (१३), संघर्ष-मय (१५)।

वाक्य-विचार

१. अर्थ स्पष्ट करोः—

कबीर बहुत-कुछ इस शिरीष के समान ही थे (१)।

कबीरदास को इस तरह पन्द्रह दिन के लिए लचक उठना पसन्द नहीं था। (१)

शिरीष अवधूत की भांति जीवन की अजेयता का मन्त्र-प्रचार करता है। (१)

घन मसृण हरीतिमा से परिवेष्ठित वृक्ष-वाटिका। (१)

जरा और मृत्यु ये दोनों ही जगत् के अतिपरिचित और अति-प्रामाणिक सत्य हैं। (१)

न ऊधो का लेना न माधो का देना। (१)

दुरंत प्राणधारा और सर्वव्यापक कालाग्नि का संघर्ष निरन्तर चल रहा है। (१)

शकुन्तला कालिदास के हृदय से निकली थी। (१)

वे अपना भावरस उस अनासक्त कृषीबल की भाँति खींच लेते थे जो निर्दलित इक्षुदण्ड से रस निकाल लेता है। (१)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मन्त्री ने विश्राम के अर्थ कुछ न कहा होगा। (२)

कहीं वह भी संन्यस्त न हो जाय। (२)

विश्रामरहित लोकतंत्र की अधिकार-रज्जु। (२)

भृकुटी भी कुछ वक्र हो गयी थी। (२)

पूत माँगने गयी पति खो आयी। (२)

वह विदिशा का स्तम्भ न मगध साम्राज्य के ऐश्वर्य का स्मारक हुआ, न युवराज का कीर्तिस्तम्भ, वरन् परम भागवत हेलिओदोर द्वारा प्रतिष्ठित वह वासुदेव विष्णु का गरुड़-ध्वज हुआ। (२)

खाने के दाँत और दिखाने के और। (२)

बाह्य योग और आन्तर योग। (२)

पिछवारे के पहाड़ के पाषाण-पार्श्व पर काले-काले बड़े-बड़ेम धुच्छत्र लटकते दिखलायी पड़े। (३)

वज्र टूट पड़ा है। (४)

पुण्य लूट लिया है। (५)

अंतिम श्वास ले रहा था। (६)

बाघ जंगल का कूटनीतिज्ञ चाणक्य है। (६)

उसकी मुखाकृति उसकी अन्तर्वेदना की द्योतक थी। (६)

अपनी राह ली। (६)

उसके मार्ग को काटकर छिपकर बैठ जाऊँगा। (६)

समय चुकने पर पछताना होगा। (७)

खुद हाथ-हथफेर में व्यस्त रहते। (९)

काजी जी दुबले क्यों—शहर के अंदेश से। (९)

उनके पास न सिर्फ लक्ष्मी, बल्कि दुर्गा भी हैं। (९)

आपसे बाजाब्ता हैंडनोट क्या कराया जाए? (९)

काठ मार गया हो। (१०)

स्वर-लहरी कहीं पास के बैरक से प्रवाहित हो रही है। (१०)

वे सब एक सूत्र में पिरोये हुए हैं। (१०)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उनके लिए कहाँ है वसन्त और कहाँ है सावन का मेघगर्जन ? (१०)

देश के करोड़ों नर-नारियों की नपुंसकता लज्जा का उद्रेक कर रही थी। (१०)

आगा-पीछा न करेंगे। (१०)

भयावनी आशंका और भीषण विक्षोभ के दिन थे। (१०)

कलेजा फट जाता है। (१०)

आप न्यस्त स्वार्थों के गुर्गे हैं। (११)

होठों पर विद्रूप, शुष्क विद्रूप काँप उठा था। (१२)

आस्तीन का साँप है। (१२)

नीचे सघन वृक्ष-राजि से मण्डित विस्तीर्ण कान्तार था। (१३)

काठमांडू काष्ठमण्डप का ही तद्भव रूप है। (१३)

स्वर्णपत्र से मण्डित विशाल प्रतिमा थी। (१३)

वह चिर-सहज प्रहरी की भाँति चतुर्दिक दृक्पात कर रहा था। (१३)

केवल शब्द-ब्रह्म का सम्पर्क ही भक्तों के लिए पर्याप्त था। (१३)

कुहरे के झीने आवरण में हिम-धवल शिखरों की शोभा कुछ और ही थी। (१३)

वह अपनी कला को अंतिम स्पर्श दे रहा था। (१५)

ये व्यक्ति विज्ञान के क्षेत्र में मूर्धन्य आसनों पर प्रतिष्ठित हैं। (१६)

इन नुस्खों का प्रयोग ही संदेहात्मक नहीं है बल्कि याथार्थ्य से जिनका भेद भी संदेहात्मक है। (१६)

अन्ताराष्ट्रीय इर्ष्याद्वेष कुछ दिनों के लिए चिरवांछित अवकाश ग्रहण कर ले। (१६)

पूंजीक्षेत्र के अधिपति बहुत शक्तिशाली होते हैं। (१६)

२. निम्नलिखित पैराग्राफ़ पढ़कर उसका भावार्थ अपने शब्दों में लिखो :—

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शिरीष के फूल—पृ० २ पर पहला पैरा; पृ० ३, अंतिम पंक्ति से शुरू होनेवाला पैरा; पृ० ६, श्लोक के बाद का पैरा।

गरुड़ध्वज—पृ० पैरा १, २; पृ० १३ पर बड़ा पैरा।

चित्रकूट की छाया में—पृ० २५, पृ० २८।

चित्रांकन—दूसरा पैरा, अन्तिम पैरा।

आज़ाद की माताजी—पृ० ३९ पर बड़ा पैरा।

बाघ से भिड़न्त—पृ० ५३, अन्तिम पैरा।

क्या सूझी एलेक्शन की—पृ० ५६, तीसरा पैरा।

स्त्री के अर्थस्वातन्त्र्य का प्रश्न—पहला पैरा, पृ० ६२, तीसरा और अन्तिम पैरा; पृ० ६५, दूसरा (बड़ा) पैरा।

सरजू भैया—पृ० ७१ नया पैरा।

बन्दी पिता का पत्र—पहला और दूसरा पैरा, पृ० ८० का अंतिम पैरा।

पहला रिपोर्टर—पहला पैरा, पृ० ९१ नया पैरा।

काठमांडू-दर्शन—पहला और दूसरा पैरा, पृ० ११७।

वैज्ञानिक ज्ञान और उसका उपयोग—पृ० १३९, नया पैरा; पृ० १४१-१४३, पृ० १४५, अंतिम पैरा।

३. निम्नलिखित वाक्यों को सुधारकर लिखो—

(१) कम फूल इस प्रकार की गर्मी में फूल सकने की हिम्मत करते हैं। (क्रम)।

निश्चित रूप से मस्त बना रहता है। (वर्तनी)

कालिदास ने यह बात शुरू-शुरू में प्रचार की होगी। (व्याकरण)

एक ने वेदों को दिया, दूसरे ने रामायण को और तीसरे ने महाभारत को। (परसर्ग)

(२) अग्निमित्र के बाद मगध का समाट् उसका भाई हुआ। (क्रम)

युवराज फिर भेजा जाय। (परसर्ग)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उन सबकी क्षति वे स्वर्ण में पूर्ण करने को प्रस्तुत हैं। (परसर्ग)

भले प्रकार बँधे हुए हैं। (लिंग)

यवनराज को यह भले प्रकार विदित है। (लिंग)

सम्राट के प्रजारंजक धर्म। (वर्तनी)

(३) झुंड की झुंड मछलियां तैरती थीं। (शब्द-चयन)

इनकी गगभग डेढ़ सौ पुस्तकें हैं। (प्रेस की भूल)

शिर बहुत ज़ोर से दर्द करने लगा। (शब्द-चयन)

एक कुटी मिली, जिसे किसी एकान्तप्रिय योगी ने बनवायी थी। (क्रिया)

फटे कपड़ोंगाली स्त्रियों के साथ। (प्रेस की भूल)

भालू भी इन छत्तों की मधु को खाता है। (लिंग)

हम लोग इसे वेदान्तसूत्रों पर परमानन्द-भाष्य कहकर इसे प्रकाशित करेंगे। (सर्वनाम की पुनरावृत्ति)

पिछवारे के पहाड़ के पाषाण। (ग्रामीण शब्द)

यह अपमान उन्हें साधु का स्वतन्त्र जीवन--जो कि साधकावस्था में अपने को तैयार करने के लिए बहुत सहायक हो सकता है--छुड़ा, गृहस्थी के जंजाल में फँसा देगा। (शिथिल वाक्य)

साथी को कहा। (परसर्ग)

साहेब को प्रदान किये जावें। (शब्द-चयन)

(४) जहाँ पक्षी उड़ रहे हो। (वचन)

(६) जाने के लिए हाथ-पैर पीटे। (क्रिया-चयन)

पीछे से बाघ के घसीटने की सरसराहट हो रही थी। (क्रियार्थक संज्ञा)

बन्दूक की तलाशी प्रातःकाल के लिए रखी गयी। (शब्द-प्रयोग)

(७) क्षेत्र में आ गये है। (वचन)

वह छः बजे से नौ बजे रात तक को गायब रहते हैं। (परसर्ग)

दो-तीन उन साथियों को लिया। (क्रम)

वह अपनी तेल में सनी लुंगी पहने। (क्रम)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(८) स्त्री पुरुष से सहायता बिना माँगे हुए ही जीवन-पथ पर आगे बढ़ सके। (शब्दक्रम)

(९) एक तरफ़ मकान नहीं, सिर्फ टट्टी खड़ाकर छोटा-सा आँगन निकाला हुआ। (लंगड़ा वाक्य)

सरजू भैया को छोटा भाई नहीं रहा। (परसर्ग)

सरजू की यह हालत दूसरों के चलते हो गयी है। (शब्द चयन)

जो भी दुखिया आया, अपनी विपदा बतायी, उसे देवता-सा दे दिया। (शिथिल वाक्य)

वह चतुर, फुर्तीला और कामकाजू आदमी हैं। (सर्वनाम-वचन)

सरजू भैया के पाँच सन्ताने हुई। (वचन)

किसी की मौत हो जाने पर, यदि वह अँधेरी रात में हो, सरजू को यह करना पड़ता है। (भद्दा वाक्य)

इस नर-रत्न की कद्र कहाँ तक होगी। (उलटा अर्थ)

इन्हें जब-तक झंझटों में डालने की कोशिश होती थी। (प्रेस की भूल)

आँखों से आँसू जा रहे हैं। (क्रिया)

धन का धौंस जमा। (लिंग)

वह रुपये ले आये। मैंने खर्च कर दिया। (वचन)

रुपये नहीं माँगा। (वचन)

अंग-अंग हिलने-डुलने लगते हैं। (वचन)

(१०) सही स्मृति जीवन की शक्ति का स्रोत होता है। (लिंग)

उनके जान में। (लिंग)

यह ऐसा टीका लगाते हैं कि सब ठीक हो गये। (काल)

(१२) डाक्टर आलू एक अजीब पत्ते के साथ पकाता था। (क्रम)

कौन डाक्टर हो आप। (क्रिया)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वदन पर छाजन है, वह मर रहे हैं, ताकत नहीं है। (अस्पष्ट)

(१४) वह पिता भी बनता है, माँ के साथ उसे किसी और से भी प्यार करना पड़ता है। (सम्बन्ध-बोधक)

(१५) अन्तिम स्पर्श दे ही रहा था। (शब्द-चयन)

(१६) वैज्ञानिकों की ओर आशा लगाये बैठे हैं। (सम्बन्ध-बोधक)

नेतागण (शब्दनिर्माण)

डॉ० राम स्वरूप आर्य, बिजनौर की स्मृति में सादर भेंट—
हरप्यारी देवी, चन्द्रप्रकाश आर्य
संतोष कुमारी, रवि प्रकाश आर्य

विरामचिह्न

सुधारकर लिखो:—

लकड़ी तो, मठ से मिल गयी। (३)

इसके अतिरिक्त एक और, बात थी। (३)

माताजी की भूख जाती रही है ? (५)

उस चिरंतन रसधार का उद्‌गम है, मनुष्य का हृदय। (१०)

उसने, दवा तो मिलती न थी, अपने ऊपर झाड़-फूंक करवा ली। (१२)

कौन, डाक्टर हो आप ?

अब सुना कि उन्होंने क्या काम किया ? (१२)

अरे कोई भी ताली नहीं बजाता। (१२)

सुन्दर होने न होने, का क्या अर्थ ? (१३)

सत्य की अंत में विजय निश्चित है और आपकी राय माननी ही होगी निस्संदेह, साधनों के अभाव से कठिनाइयाँ हैं किन्तु आपको भी उससे आपके दायित्व में कमी नहीं आती। (१६)

उनका भी इस बारे में एक बहुत बड़ा उत्तरदायित्व है हालांकि वैज्ञानिक ज्ञान का उपयोग उनकी समस्याओं से सीधे सम्बन्धित है किन्तु उन्हें मालूम होना चाहिए यदि ज्ञान ही उपस्थित नहीं है तो उसके उपयोग का प्रश्न ही नहीं उठता। (१६)

Library
18 498
Gurukula Kangri Vishwavidyalaya University, Haridwar

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

R.P.S पुस्तकालय

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्ग संख्या 097 ARY-H आगत संख्या 189498

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब शुल्क लगेगा।

097

185498

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

- इतनी भरपूर साम
में नहीं मिलेगी।
- प्रत्येक प्रसंग के उप
दिये गये हैं।
- हमारा दावा है कि
मित पाठ करनेवाले
कठिनाई नहीं रह
- यह पुस्तक अध्या
षदों को हिन्दी भाष
रित करने में भी
इसमें वह सब साम
का सामान्य ज्ञान
आवश्यक है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

- इसमें भाषा के तत्त्वों पर बहुत गहराई और विस्तार से विचार किया गया है। उदाहरण और सूचियाँ बड़े परिश्रम से एकत्र की गयी हैं।
- पुस्तक की शैली सुबोध और सुगम है।
- इतनी भरपूर सामग्री किसी एक पुस्तक में नहीं मिलेगी।
- प्रत्येक प्रसंग के उपरान्त प्रश्न और अभ्यास दिये गये हैं।
- हमारा दावा है कि इस पुस्तक का नियमित पाठ करनेवाले की भाषासंबंधी कोई कठिनाई नहीं रह जायगी।
- यह पुस्तक अध्यापकों और शिक्षा-परिषदों को हिन्दी भाषा का पाठ्यक्रम निर्धारित करने में भी सहायक होगी, क्योंकि इसमें वह सब सामग्री संगृहीत है जो हिन्दी का सामान्य ज्ञान प्राप्त करने के लिए आवश्यक है।
- पुस्तक भाषा पर है, इसलिए शुद्ध छपाई, शुद्ध वर्तनी और शुद्ध प्रयोगों का विशेष ध्यान रखा गया है।

मूल्य : ६.००

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हिन्दी भाषा को शुद्ध रूप में सिखाने वाली श्रेष्ठ पुस्तकें

- **अच्छी हिन्दी**
  आचार्य रामचन्द्र वर्मा — ६.५०
- **हिन्दी प्रयोग**
  आचार्य रामचन्द्र वर्मा — ३.५०
- **शुद्ध हिन्दी**
  डा० हरदेव वाहरी — ३.५०
- **भाषा विज्ञान और हिन्दी**
  डा० सरयूप्रसाद अग्रवाल — ८.५०
- **पाणिनी के उत्तराधिकारी**
  डा० उदयनारायण तिवारी — १२.००
- **व्यावहारिक हिन्दी व्याकरण**
  डा० हरदेव वाहरी — प्रेस में
- **परिनिष्ठित हिन्दी का वर्णनात्मक विश्लेषण**
  डा० महावीरसरन जैन — प्रेस में
- **परिनिष्ठित हिन्दी का व्याकरणिक अध्ययन**
  डा० महावीरसरन जैन — प्रेस में
- **परिनिष्ठित हिन्दी का ध्वनि ग्रामिक अध्ययन**
  डा० महावीरसरन जैन — प्रेस में
- **हिन्दी के विकास में अपभ्रंश का योग**
  डा० नामवर सिंह — १२.५०
- **Teach Yourself Hindi**
  डा० हरदेव वाहरी — प्रेस में

लोकभारती प्रकाशन

१५-ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद-१

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.